श्रीः ।

श्रीयुतगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृतकरणग्रन्थ ।

ग्रहलाघव ।

लीलावती-बृहत्संहिता आदिग्रन्थोंके अनु-
वादक मुरादाबादनिवासी-
भारद्वाजपण्डित रामस्वरूपशर्म्मकृत

अन्वय-भाषाटीका-और उदाहरण सहित ।

तिसको

श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासने अपने
मुम्बयीस्थ

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेमें छापकर प्रकाशित किया

प्रथमावृत्ति.

संवत् १९५२ शके १८१७.

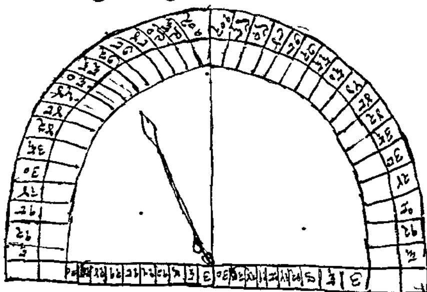
धन्यवादः ।



सन्त्वसंख्याता धन्यवादाः श्रीयुतविद्गुणग्राहकाय वेदशास्त्रादिग्रन्थोद्धारकाय तोषितभूसुराय श्रीवेङ्कटेशचरणकञ्जालये श्रेष्ठिश्रीकृष्णादासात्मजखेमराजगुप्ताय येन लीलावत्यादिग्रन्थानां भाषाव्याख्याप्रकाशनान्तरं दानमानादिना सन्तोष्याहमस्य वर्य्यस्य श्रीगणेश दैवज्ञकृतग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थस्य सान्वयभाषाव्याख्यायै प्रेरितो ग्रन्थमेनमन्वयसनाथितभाषाव्याख्यालङ्कृतं कर्त्तुं प्राभूवम्।ईदृक्परोपकारकरणचणान् मनुजाभरणान् सपरिवारांश्चिरायुषः कुर्य्याद्यज्ञेश्वरः।

स एव पण्डितो रामस्वरूपः ।

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ तुरीय यन्त्रोपरि इष्टः
भू गोल यन्त्रस्य तुरीय भागे ॥ सूर्यस्य बिम्बोपरि लम्बचि
भागा विरेखो गुणोऽश भुजाश्च ॥ दिनार्द्ध नक्षा घटिकाश्च



भूमिका।

"अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्तजगदाधारमूर्त्तये ब्रह्मणे नमः॥"

ज्योतिषशास्त्र आर्य्यावर्त्तनिवासी हिन्दुओंका सर्वस्वधन है, ज्योतिषके न होनेसे हिन्दुओंका एकक्षणभी कार्य्य नहीं चलसक्ता, जिस समय जीव गर्भमें आताहै उस समयसे लेकर मृत्युकालपर्य्यन्त क्या मृत्युकालके अनन्तरभी ज्योतिषशास्त्रसे हिन्दूसन्तानका सम्बन्ध रहताहै, हिन्दुओंको प्रत्येक कार्य्यमें ज्योतिषकी सहायता लेनी पड़तीहै, इसकारण प्रत्येक हिन्दूको [illegible]

"सिद्धान्तसंहिताहोरारूपस्कन्धत्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्॥
विनैतदखिलं श्रौतस्मार्त्तं कर्म्म न सिद्ध्यति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्म्मितं पुरा॥
अत एव द्विजैरेतदध्येतव्यं प्रयत्नतः।"

अर्थात्–सिद्धान्त, संहिता और होरा-रूप ज्योतिःशास्त्र वेदका निर्मल [illegible]

पशास्त्रके अनुसार वर्त्ताव करनेसे अनेक प्रकारकी सम्पदा प्राप्त होतीहै; इस ज्यौतिषशास्त्रको जाननेवाला जन्म-मृत्यु-सुख-दुःख-रोग-शोक और वृष्टि आदिका यथावत् वृत्तान्त कहसक्ताहै, इसकारणही ज्यौतिषशास्त्र अहङ्कार करके कहताहै कि–

" विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
सफलं ज्यौतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ "

अर्थात्-ज्यौतिषशास्त्रके सिवाय अन्य शास्त्रोंमें विवादके सिवाय कोई फल नहीं है सफल है तो ज्यौतिष शास्त्रहै, जिसके साक्षी सूर्य और चन्द्र-
माहें, ... णय करना
विद्व ... हना होगा
कि ज ... ीय बुद्धि
मानें ... ाटिकसो-
सायटीके एक सभासद बेन्टली (John Bentley) ने हिन्दुओंके अनेक ज्यौतिष ग्रन्थ और ग्रन्थकर्त्ताओंका तथा प्रसङ्गसे पौराणिक अनेक विषयोंका वृत्तान्त निरूपण करनेके लिये अपने अमूल्य समयको व्यय करके जो (Historical View of the Hindu astronomy) पुस्तक लिखाहै, उसके प्रारम्भमेंही ज्यौतिषशास्त्रके उत्पत्तिसमयका निर्णय करनेमें असमर्थ होकर लिखाहै–(The early part of astronomy among the Hindus like that of other nations is involved in great obscurity. We can find

...

-perly so called) किन्तु रिचर्ड ए प्रक्टर (Richard and Proctor) ऐङ्गलैण्डीय विद्वानोंमें कुछ साधारण मनुष्य नहींहै, उन्होंने प्राचीन ज्योतिषका इतिहास लिखते समय (Encyclopedia Britannia.) अपने पुस्तकमें लिखाहै–(The claims of the Indians rest on a more solid foundation. We are in possession of the tables from which they compute the eclipses and places of the planet and the method by

...

lestial phenomena with considerable exactness and which therefore could only be produced by a people for advanced in sceince.)

ग्रहलाघव is a करणग्रन्थ Helpful for preparing पञ्चाङ्ग

गणेशदैवज्ञ.

इस ग्रन्थके कर्ता गणेशदैवज्ञके पिताका नाम केशव था और इन्होंने पितासे विद्या पढ़ीथी, इनकी माताका नाम लक्ष्मी था, यह गणेशदैवज्ञ भारतवर्षमें गणेशका अवतार थे ऐसी जनश्रुतिहै, इन्होंने तेरह वर्षकी अवस्थामें 'ग्रहलाघव' नामक इस ग्रन्थकी रचना करीथी, ऐसी चिरकालसे जनश्रुतिहै, 'ग्रहलाघव' के बनानेका समय ग्रहलाघवीय अहर्गणके लानेसे १४४२ शकहै, तिसकारण गणेशदैवज्ञके जन्मका समय १४२९ शकेके और धोरैहै, यह गणेशदैवज्ञ गणितविद्यामें अत्यन्त प्रवीणथे ॥

इन महाशयने जितने ग्रन्थोंकी रचना करीहै उनका परिचय नृसिंहदैवज्ञने स्वरचित ग्रहलाघवकी टीकामें लिखाहै, जैसे–

"कृत्वादौ ग्रहलाघवं लघुबृहत्तिथ्यादिचिन्तामणि
सत्सिद्धान्तशिरोमणेश्च विवृतिं लीलावतीव्याकृतिम् ।
श्रीवृन्दावनटीकिकां च विवृतिं मौहूर्त्ततत्त्वस्य वै
सच्छ्राद्धादिविनिर्णयं सुविवृतिं छन्दोर्णवाख्यस्य वै ॥
सुधीरञ्जनं तर्जनीयन्त्रकं च सुकृष्णाष्टमी निर्णयं होलिकायाः ।
लघूपाययातांस्तथान्यानपूर्वान्गणेशो गुरुर्ब्रह्मनिर्वाणमापत् ॥"

इस लिखनेसे मालूम होताहै कि गणेशदैवज्ञने ग्रहलाघव १ लघुतिथिचिन्तामणि २ बृहत्तिथिचिन्तामणि ३ सिद्धान्तशिरोमणिकी टीका ४ लीलावतीकी टीका ५ विवाहवृन्दावनकी टीका ६ मुहूर्त्ततत्त्वकी टीका ७ श्राद्धादिनिर्णय ८ छन्दोर्णवकी टीका ९ सुधीरञ्जनी १० तर्जनीयन्त्र ११ कृष्णजन्माष्टमीनिर्णय १२ होलिकानिर्णय १३ आदिग्रन्थोंकी रचना करी उनमेंसे ग्रहलाघव–लघुतिथिचिन्तामणि–बृहत्तिथिचिन्तामणि–लीलावती– विवाहवृन्दावन–और मुहूर्त्ततत्त्वटीका–इतने ग्रन्थ प्रसिद्ध है तिनमें ग्रहलाघवका विद्वान् बहुत आदर करतेहैं, और ग्रहलाघव प्रायः सर्वत्र छपाहुआ और लिखा हुआ मिलताहै, और इसके ऊपर टीकेभी बहुत पण्डितोंने कियेहैं, अन्यग्रन्थोंके मिलनेमें कठिनता पड़तीहै, इनकी रचीहुई लीलावतीकी टीकाका नाम 'बुद्धिविलासिनी' है, इनके बनाएहुए पद्योंके देखनेसे काव्यसाहित्यादिके विषयमेंभी यह अतिप्रवीण प्रतीत होवेहैं, इन्होंने अपने पिता केशवसे साठवर्षके अनन्तर ग्रहोंका अन्तर देखकर शाके १४४२ में नवीन रीतिसे गणना करके इसग्रन्थको रचाहै ॥

काशीस्थराजकीयप्रधानपाठशालापरी-
क्षोत्तीर्णः पण्डितरामस्वरूपशर्म्मा
मुरादाबाद. N. W. P.

श्रीः ।

अथ ग्रहलाघवकी अनुक्रमणिका ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता.

श्रीः ।

श्रीगणेशदैवज्ञकृत–

ग्रहलाघव ।

पण्डितरामस्वरूपकृत–

सान्वय–और–सोदाहरणभाषाटीका–

सहित ।

श्रीगणेशं नमस्कृत्य पार्वतीनन्दनं परम् ॥
श्रीगणेशकृतौ कुर्वे भाषां तत्त्वप्रकाशिकाम् ॥१॥

इष्टदेवताको नमस्काररूप मङ्गलाचरण "वसन्ततिलका" छन्दमें लिखतेहैं–

ज्योतिःप्रबोधजननी परिशोध्य चित्तं तत्सूक्तकर्म्म-
चरणैर्गहनार्थपूर्णा । स्वल्पाक्षरापि च तदंशकृतै-
रुपायैर्व्यक्तीकृता जयति केशववाक्श्रुतिश्च ॥ १ ॥

अन्वयः–तत्सूक्तकर्म्मचरणैः चित्तम् परिशोध्य ज्योतिःप्रबोधजननी, स्वल्पाक्षरा अपि गहनार्थपूर्णा, च तदंशकृतैः उपायैः व्यक्तीकृता, केशववाक् श्रुतिः च जयति ॥ १ ॥

अर्थः–वेदकेविषे भलीप्रकार वर्णनकरेहुए स्नान, दान, जप, होमादि सुन्दर कर्मोंके द्वारा चित्तको निर्म्मलकरके मुमुक्षुपुरुषोंके अर्थ ज्योतिःस्वरूपब्रह्मका ज्ञान करानेवाली, तथा थोड़े अक्षर और गम्भीरअर्थयुक्त, रावण आदिकोंकरके रचनाकिये हुए भाष्योंसे स्पष्टकरीहुई जो भगवत्के मुखसे उत्पन्न होनेवाली वेदवाणी है सो सर्वोत्कर्षकरके युक्तहै । अथवा–वेदोंको प्रमाणमाननेवाले केशवनामकपिताके रचनाकियेहुए ग्रहकौतुकआदि ग्रंथोंमें कहेहुए ग्रहसाधनआदि कर्म्मोंके द्वारा चित्तको निर्म्मलकरके नक्षत्रआदिकोंके ज्ञानको उत्पन्न करनेवाली, तथा थोड़ेअक्षर और बहुत अर्थवाली, और केश-

वके पुत्र तथा शिष्यादिकोंके बनायेहुए अनेकटीकाओंसे स्पष्ट करीहुई केशवनामवाले पिताके मुखसे उत्पन्नहुई वाणी सर्वोत्कर्षयुक्तहै ॥ १ ॥

अब अपने करणग्रन्थ और रामावतार विष्णुभगवानकी समताको द्योतनकरतेहुए "औपच्छन्दसिक" छन्दमें मङ्गलाचरण लिखतेहैं–

परिभग्नसमौर्विकेशचापं दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुम् ॥
सुफलप्रदमात्तनृप्रभं तत्स्मर रामं करणं च विष्णुरूपम् २

अन्वयः–परिभग्नसमौर्विकेशचापम्, दृढगुणहारलसत्सुवृत्तबाहुम्, सुफलप्रदम्, आत्तनृप्रभम्, तत्, विष्णुरूपम्, रामम्, करणम्, च, स्मर ।२॥

अर्थः–(हेशिष्य! ग्रन्थके आरम्भकरनेके समय) प्रत्यश्चासहित शिवजीका धनुष तोड़नेवाले, मोतियोंके हारसे शोभायमान, सुन्दरभुजावाले, मुक्ति आदि शुभफल देनेवाले, मनुष्यशरीर धारणकरनेवाले, उन सर्वजनप्रसिद्ध विष्णुभगवान्के अवतार श्रीरामचन्द्रजी महाराजको स्मरणकर ॥ अथवा–(हेगणक!) जिसमें ज्या और चाप इनको त्यागदियाहै, जिसमें अपवर्तित अर्थात् संक्षिप्त गुणक और भाजक हैं, जिसमें चन्द्रमाका मन्द केन्द्र और भुजरूपवृत्त भलीप्रकार वर्णितहै, मन्दफलशीघ्रफलआदिको देनेवाले अथवा चन्द्रग्रहणादिका ज्ञान देनेवाले, जिसमें शङ्कुकी छाया ग्रहणकरीहै ऐसे नानाप्रकारके छन्दोंसे शोभायमान वक्ष्यमाण करणग्रन्थको स्मरणकर २॥

अब गर्गाचार्य्यभास्कराचार्य्यादिकोंके रचनाकरेहुए करणकुतूहलादिग्रन्थोंके होनेपरभी इसग्रन्थके रचना करनेकी आवश्यकता "वसन्ततिलका" छन्दमें कहतेहैं–

यद्यप्यकार्षुरुरवः करणानि धीरास्तेषु ज्यकाधनुरपास्य न सिद्धिरस्मात् । ज्याचापकर्म्मरहितं सुलघुप्रकारं कर्त्तुं ग्रहप्रकरणं स्फुटमुद्यतोऽस्मि ॥ ३ ॥

अन्वयः–यद्यपि, उरवः, धीराः, करणानि, अकार्षुः,(तथापि),तेषु, ज्यकाधनुः, अपास्य, सिद्धिः, न, अस्मात्, (अहम्), ज्याचापकर्म्मरहितम्, सुलघुप्रकारम्, स्फुटम्, ग्रहप्रकरणम्, कर्तुम्, उद्यतः,अस्मि,३

अर्थः–यद्यपि, वृद्ध, धैर्य्यवान्, गर्गऋषि और भास्कराचार्य आदिकोंने, करणग्रन्थ, रचना किये हैं, (तथापि,) उनग्रन्थोंमें ज्याचापको त्यागकर, ग्रहआदिकी सिद्धि नहीं होतीहै, इसकारण (मैं गणेशदैवज्ञ) ज्याचाप-

क्रिया रहित, बहुत अर्थको देनेवाले संक्षिप्त और स्पष्ट अर्थवाले ग्रहसम्बन्धी ग्रहण-उदय-अस्तादि क्रियाओंके साधनेवाले ग्रन्थको, करनेको उद्यत हुआहूँ ॥ ३ ॥

अब ग्रहस्पष्ट आदि कार्य्य करनेके निमित्त अहर्गण जाननेकी रीति दो-श्लोकोंसे कहतेहैं-

द्व्यब्ध्यब्धीन्द्रोनितशक ईशहृत्फलं स्याच्चकाख्यं
रविहतशेषकं तु युक्तम्। चैत्राद्यैः पृथगमुतः सद्द-
ग्घ्नचक्राद्दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ ४ ॥
खत्रिघ्नं गततिथियुङ्निरग्रचक्रांगांशाढ्यं पृथगमु-
तोऽब्धिपट्कलब्धैः। ऊनाहैर्वियुतमहर्गणोभवेद्वै वारः
स्याच्छरहतचक्रयुग्गणोऽज्जात् ॥ ५ ॥

अन्वयः-द्व्यब्ध्यब्धीन्द्रोनितशकः, ईशहृत, (कार्य्यः); फलम्, चक्राख्यम्, स्यात्, । रविहतशेषकम्, तु, चैत्राद्यैः, युक्तम्, पृथक्, (स्थाप्यम्), सद्दग्घ्नचक्रात्, दिग्युक्तात्, अमुतः, अमरफलाधिमासयुक्तम्, खत्रिघ्नम्, गततिथियुक्, निरग्रचक्रांगांशाढ्यम्, पृथक्, (स्थाप्यम्), अमुतः, अब्धिपट्कलब्धैः, ऊनाहैः, वियुतम्, अहर्गणः, भवेत्, । वै, गणः, शरहतचक्रयुक्, अज्जात्, वारः, स्यात्, ॥ ४ ॥ ५ ॥

अर्थः-वर्त्तमान शाकामें १४४२ एक सहस्र चारसौ बयालीस घटावे जो शेष रहै, उसमें ११ ग्यारहका भाग देय जो लब्धि मिलै वह चक्र कहाता है, भाग देनेसे जो शेष बचे उसको १२ बारहसे गुणा करै जो गुणन फल होय उसमें चैत्रादि मास अर्थात् चैत्रशुक्ल प्रतिपदासे लेकर इष्टकालपर्य्यन्त जो गत मास हों उनको जोड़ देय (यह मध्यम मासगण कहलाताहै) इसको दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें द्विगुणित चक्र और दश १० से युक्त करदेय तब जो अङ्क हों उनमें ३३ तैंतीसका भाग देय जो लब्धि मिलै उसको (अधिमास कहते हैं) द्वितीय स्थानमें लिखे हुए मध्यममासगणमें युक्तकर देय तब जो अङ्क हों उनको तीस ३० से गुणाकरदेय जो गुणन फल हो उसमें गततिथि अर्थात् शुक्लप्रतिपदासे लेकर इष्ट दिनपर्य्यन्तकी गततिथि युक्त-करके, चक्रमें छः ६ का भाग देय जो शेष बचे उसको छोड़देय जो लब्धि

हो वहभी गततिथि युक्तकरेहुए अङ्कोंमें युक्त करदेय (यह मध्यम अहर्गण कहाताहै) इसको दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें ६४ चौसठका भाग देय जो लब्धिहो वह क्षय दिवस होते हैं इन क्षय दिवसोंको द्वितीय स्थानमें घटा देय जो शेष रहै वह अहर्गण (दिनोंकी संख्या) होताहै ॥ पूर्वोक्त चक्रको ५ पाँचसे गुणाकरके जो गुणन फल मिले उसमें अहर्गण युक्त करके ७ सातका भाग देय जो शेष बचे उससे चन्द्रवार आदि दिनोंका बोध करै अर्थात् यदि ० शून्य शेष होय तौ सोमवार जानै १ एक शेष होय तौ भौमवार जानै २ दो शेष होय तौ बुधवार इत्यादि जानै ॥ ४ ॥ ५ ॥

विशेषरीति–इसरीतिसे इष्टवार मिलताहै कदाचित् इसप्रकार इष्टवार नहीं मिले तौ अहर्गणमें १ एक युक्त करदेय या १ एक घटा देय तब अहर्गणोत्पन्नवार और इष्टवार बराबर मिलेगा। इसप्रकार अहर्गण स्पष्ट होताहै।

उदाहरण.

शाके १५३४ वैशाख शुक्ल १५ सोमवार घड़ी ५४ पल १० विशाखानक्षत्र घड़ी ३९ पल ५५ वरीयान् योग घड़ी० पल ९ उस दिन चन्द्रग्रहणका पंच कितना होगा यह बात जाननेके निमित्त अहर्गण सिद्ध करते हैं–

यहाँ शाके १५३४ में १४४२ को घटाया तब ९२ बानवे शेषरहे इसमें ११ ग्यारहका भाग दिया तब ८ आठ लब्धि हुए इसका नाम चक्रहै, शेष बचे ४ चारको १२ बारहसे गुणा करा तौ ४८ अड़तालीस हुए इस चैत्रादि गतमास १ एक जोड़ा तब ४९ उनन्चास हुए यह मध्यममासगण कहाताहै इनको दो स्थानमें द्विगुणित चक्र १६ सोलह और १० दश युक्त करा तौ ७५ पिछहत्तर हुए इसमें ३३ तेंतीसका भाग दिया तब २ दो लब्धि हुए यह अधिक मास कहाताहै इसको द्वितीय स्थानके अङ्क ४९ में युक्त किया तब ५१ इक्यावन हुए यह मासगण कहाताहै इसको ३० तीससे गुणा किया तब १५३० एक सहस्र पाँचसौ तीस हुए इसमें गततिथि १४ चौदहको युक्त किया और छःया भाग दियेहुए चक्रकी लब्धि १ को युक्त किया तब १५४५ एकस-

... लब्धि यह क्षय दिवस कहलाते हैं इसको द्वितीय स्थानमें लिखे हुए मध्यम अहर्गणमें घटाया तब १५२१ एकसहस्र पाँचसौ इक्कीस बचे यही अहर्गणहै १५२१ इस अहर्गणमें पाँचसे गुणाकरेहुए चक्र ४० चालीसको युक्त करदिया तब १५६१ एकहजार पाँचसौ इकसठ हुए इसमें सात ७ का भाग दिया तब शून्य ० शेष बचा इसकारण अहर्गणोत्पन्न वार आया यही इष्टवारहै।

३६ मध्यममासगण
१ अधिकमास
३७ मासगण
३०
१११०
० गततिथि
१० च० – ६=१
११११ मध्यमअहर्गण

६४) ११११ मध्यमअहर्गण
१७ क्षयदिवस
१०९४ अभीष्टवारलानेकेनि
मित्तइसमें —१०९४
१ एक और
मिलाया तौ १०९५ स्पष्ट अहर्गण
हुआ.

उदाहरण २ द्वितीय.

शाके १५३० इसवर्षमें भाद्रपद अधिकमास है तहाँ कार्तिक शुक्ल प्रति पदा शनिवारमें अहर्गण साधते है ॥

१५३० शाके
१४४२
११) ८८ (८ च०
८८
० शेष
१२
०
७ ग० मा०
७ म० मा० ग०
२ अधिकमास
९ मा० ग०
३०
२७०
० ग० ति०
च० ८ – ६ = १
२७१ म० अहर्गण

७ म० मा० ग०
च० ८×२=१६
१०
३३) ३३
१ अधिकमास–

यहाँ अधिक मास लब्ध नहीं होताहै, तथापि ग्रहण किया तब अधिमास हुए २॥

६४) २७१ म० अहर्गण
४ क्षय दिवस
२६७ अहर्गण,

अभीष्टवारलानेके निमित्त इसमें एक घटाया तब शनिवार मिला अत एव २६६ ही ठीक अहर्गण है ॥ यही वार्ता श्रीभास्कराचार्यने अपने सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखी है

अब सूर्य्य और चन्द्रमाआदि ग्रहोंके ध्रुवाङ्क लिखते हैं–

खविधुतानभवास्तरणेर्ध्रुवः खमनला रसवार्द्धिय ईश्वराः । सितरुचो भमुखोथ खगायमौ शरकृता गदितो विधुतुङ्गजः ॥ ६ ॥ शैला द्वौ खशरा अगोः क्षितिभुवो भूतत्त्वदन्ताविदः केन्द्रस्याब्धिगुणोडवः सुरगुरोः खं पञ्चमा वस्विलाः । द्राक्केन्द्रस्य भृगोः कुशक्रयमला राश्यादिकोऽथो शनेः शैलाः पञ्च भुवो यमाब्धय इमेऽथ क्षेपकः कथ्यते ॥ ७ ॥

अन्वयः–खविधुतानभवाः, तरणेः, भमुखः, ध्रुवः, (भवति), । खम्, अनलाः, रसवार्द्धयः, ईश्वराः, सितरुचः, (ध्रुवः, भवति) । अथ, खगाः, यमौ, शरकृताः, विधुतुंगजः, (ध्रुवः), गदितः ॥ ६ ॥ शैलाः, द्वौ, खशराः, अगोः, (ध्रुवः, भवति), भूतत्वदन्ताः, क्षितिभुवः, (ध्रुवः, भवति), । अब्धिगुणोडवः, केन्द्रस्य, विदः, (ध्रुवः, भवति) । खम्, पञ्चमाः, वस्विलाः, सुरगुरोः, (ध्रुवः, भवति) । कुशक्रयमलाः, द्राक्केन्द्रस्य, भृगोः, (ध्रुवः, भवति) । अथ शैलाः, पञ्चभुवः, यमाब्धयः, इमे, शनेः, राश्यादिकः, (ध्रुवः, भवति) । अथ, क्षेपकः, कथ्यते ॥ ६ ॥ ७ ॥

अर्थः–ख कहिये शून्य० विधु कहिये एक १ तान कहिये ४९ भव कहिये ग्यारह ११ यह सूर्य्यका राश्यादि ध्रुव होता है । ख कहिये० अनल कहिये ३ रसवार्द्धि कहिये ४६ ईश्वर कहिये ग्यारह ११ यह चन्द्रमाका ध्रुव होताहै । खग कहिये ९ यम कहिये २ शरकृता कहिये ४५ यह चन्द्रमाके मन्दोच्चका ध्रुव होताहै । कुलाचल कहिये ७ और दो २ खशर कहिये ५० यह राहुका ध्रुव होताहै । भू कहिये १ तत्व कहिये २५ दन्त कहिये ३२ यह मङ्गलका ध्रुव होता है । अब्धि कहिये ४ गुण कहिये ३ उडु कहिये २७ यह केन्द्रबुधका ध्रुव है । ख कहिये० पञ्चम कहिये २६ वस्विल कहिये १८ यह गुरुका ध्रुव है । कु कहिये १ शक्र कहिये १४ यमल कहिये २ यह शुक्रकेन्द्रका ध्रुव होता है । और शैल कहिये सात ७ पंचभू कहिये १५ यमाब्धि कहिये ४२ यह शनिका ध्रुव होताहै ।

३६ मध्यममासगण
१ अधिकमास
३७ मासगण
३०
१११०
० गततिथि
१० च० ÷ ६=१
१११। मध्यमअहर्गण

६४) ११११ मध्यमअहर्गण
१७ क्षयदिवस
१०९४ अभीष्टवारलानेकेनि-
मित्तइसमें — १०९४
१ एक और
मिलाया तो १०९५ स्पष्ट अहर्गण
हुआ.

उदाहरण २ द्वितीय.

शाके १५३० इसवर्षमें भाद्रपद अधिकमास है तहाँ कार्तिक शुक्ल प्रति-
पदा शनिवारमें अहर्गण साधते हैं ॥

१५३० शाके
१४४२
११) ८८ (८ च०
८८
० शेष
१२
०
७ ग० मा०
७ म० मा० ग०
२ अधिकमास
९ मा० ग०
३०
२७०
० ग० ति०
च० ८ ÷ ६ = १
२७१ म० अहर्गण

७ म० मा० ग०
च० ८ × २=१६
१०
३३) ३३
१ अधिकमास–

यहाँ अधिक मास लब्ध नहीं
होताहै, तथापि ग्रहण किया
तब अधिमास हुए २॥

६४) २७१ म० अहर्गण
४ क्षय दिवस
२६७ अहर्गण,

अभीष्टवारलानेके निमित्त इसमें एक
घटाया तब शनिवार मिला अत
एव २६६ ही ठीक अहर्गण है ॥
यही वार्ता श्रीभास्कराचार्यने अपने
सिद्धान्तशिरोमणिमें लिखी है

अब सूर्य्य और चन्द्रमाआदि ग्रहोंके ध्रुवाङ्क लिखते हैं—

खविधुतानभवास्तरणेर्ध्रुवः खमनला रसवार्द्धय ईश्वराः। सितरुचो भमुखोथ खगायमौ शरकृता गदितो विधुतुङ्गजः॥ ६॥ शैला द्वौ खशरा अगोः क्षितिभुवो भूतत्वदन्ताविदः केन्द्रस्याब्धिगुणोडवः सुरगुरोः खं पञ्चमा वस्विलाः। द्राक्केन्द्रस्य भृगोः कुशक्रयमला राश्यादिकोऽथो शनेः शैलाः पञ्च भुवो यमाब्धय इमेऽथ क्षेपकः कथ्यते॥ ७॥

अन्वयः—खविधुतानभवाः, तरणेः, भमुखः, ध्रुवः, (भवति), । खम्, अनलाः, रसवार्द्धयः, ईश्वराः, सितरुचः, (ध्रुवः, भवति)। अथ, खगाः, यमौ, शरकृताः, विधुतुंगजः, (ध्रुवः), गदितः॥ ६॥ शैलाः, द्वौ, खशराः, अगोः, (ध्रुवः, भवति), भूतत्वदन्ताः, क्षितिभुवः, (ध्रुवः, भवति), । अब्धिगुणोडवः, केन्द्रस्य, विदः, (ध्रुवः, भवति)। खम्, पञ्चमाः, वस्विलाः, सुरगुरोः, (ध्रुवः, भवति)। कुशक्रयमलाः, द्राक्केन्द्रस्य, भृगोः, (ध्रुवः, भवति)। अथ शैलाः, पञ्चभुवः, यमाब्धयः, इमे, शनेः राश्यादिकः, (ध्रुवः, भवति)। अथ, क्षेपकः, कथ्यते॥ ६॥ ७॥

अर्थः—ख कहिये शून्य० विधु कहिये एक १ तान कहिये ४९ भव कहिये ग्यारह ११ यह सूर्य्यका राश्यादि ध्रुव होता है। ख कहिये० अनल कहिये ३ रसवार्द्धि कहिये ४६ ईश्वर कहिये ग्यारह११यह चन्द्रमाका ध्रुव होताहै। खग कहिये ९ यम कहिये २ शरकृता कहिये ४५ यह चन्द्रमाके मन्दोच्चका ध्रुव होताहै। कुलाचल कहिये ७ और दो २ खशर कहिये ५० यह राहुका ध्रुव होताहै। भू कहिये १ तत्व कहिये २५ दन्त कहिये ३२ यह मङ्गलका ध्रुव होता है। अब्धि कहिये ४ गुण कहिये ३ उडु कहिये २७ यह केन्द्रबुधका ध्रुव है। ख कहिये० पञ्चम कहिये २६ वस्विल कहिये १८ यह गुरुका ध्रुव है। कु कहिये १ शक्र कहिये १४ यमल कहिये २ यह शुक्रकेन्द्रका ध्रुव होता है। और शैल कहिये सात ७ पंचभू कहिये १५ यमाब्धि कहिये ४२ यह शनिका ध्रुव होताहै।

यह सब यन्त्रके द्वारा स्पष्ट करके दिखाते हैं ॥

नाम	रवि	चन्द्र	मन्दोच्च	राहु	मङ्गल	बुधकें	गुरु	शुक्रकें	शनि
राशि	०	०	९	७	१	४	०	१	७
अंश	१	३	२	२	२५	३	२६	१४	१५
कला	४९	४६	४५	५०	३२	२७	१८	२	४२
विकला	११	११	०	०	०	०	०	०	०

इसके अनन्तर क्षेपक कहते है ॥ ६ ॥ ७ ॥

रुद्रा गोऽब्जाःकुवेदास्तपन इह विधौ शूलिनो गोभुवः षट् तुङ्गेक्षात्यष्टिदेवास्तमसि खमुडवोऽष्टाभ्रयोऽथो महीजे । दिक्छैलाष्टौ ज्ञकेन्द्रे विभकलनवभं पूजितेऽद्र्यश्विभूपाः शौक्रे केन्द्रे ग्रहाद्योऽद्रिनखनवशनौ गोतिथिस्वर्गतुल्यः ॥ ८ ॥

अन्वयः-रुद्राः, गोऽब्जाः, कुवेदाः, तपने ग्रहाद्यः (क्षेपकः, स्यात्) । शूलिनः, गोभुवः, षट्, इह, विधौ, (क्षेपकः, भवति) । अक्षात्यष्टिदेवाः, तुंगे, (क्षेपकः, भवति) । खम्, उडवः, अष्टाभ्रयः, तमसि, (क्षेपकः, भवति) । अथो दिक्छैलाष्टौ, महीजे, (क्षेपकः भवति) । भविकलनवभम्, ज्ञकेन्द्रे, (क्षेपकः, भवति) । अद्र्यश्विभूपाः पूजिते, (क्षेपकः, भवति) । अद्रिनखनव, शौक्रे, केन्द्रे, (क्षेपकः, भवति) । गोतिथिस्वर्गतुल्यः, शनौ, (क्षेपकः, भवति) ॥ ८ ॥

अर्थः-रुद्र कहिये ११ गोऽब्ज कहिये १९ कुवेदा कहिये ४१ यह सूर्यमें (क्षेपक होताहै ।) शूलिनः कहिये ११ गोभुवः कहिये १९ और ६ यह चन्द्रमामें क्षेपक होता है । अक्ष कहिये ५ अत्यष्टयः कहिये १७ देव कहिये ३३ यह चन्द्रमाके मन्दोच्चमें क्षेपक होताहै । ख कहिये० उडु कहिये २७ अष्टाभ्रयः कहिये ३८ यह राहुमें क्षेपक होता है । और दिक कहिये १० शैल कहिये ७ अष्ट कहिये ८ यह मङ्गलमें क्षेपक होता है । ज्ञ है भकला कहिये २७ कला जिनमें ऐसी जो नौ ९ राशि अर्थात आठराशि ८ उन्तीस कला २९ तैंतीस विकला ३३ यह केन्द्र बुधमें क्षेपक होता है । अद्रि कहिये ७ अश्विनौ कहिये २ भूप कहिये १६ यह गुरुमें क्षेपक होताहै । अद्रि कहिये ७ नख कहिये २०

और ९ यह केन्द्र शुक्रमें क्षेपक होताहै । गो कहिये ९ तिथि कहिये १५ स्वर्ग कहिये २१ यह शनिमें राश्यादिक्षेपक होताहै ॥ ८ ॥

यह सब यन्त्रके द्वारा स्पष्टकरके दिखातेहैं ॥ क्षेपाङ्क ।

नाम	रवि	चन्द्र	चन्द्रोच्च	राहु	मङ्गल	बुधकेन्द्र	गुरु	शुक्रके०	शनि
राशि	११	११	५	०	१०	८	७	७	९
अंश	१९	१९	१७	२७	७	२९	२	२०	१५
कला	४१	६	३३	३८	८	३३	१६	९	२१
विकला	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अब अहर्गणसे मध्यमग्रहलानेकी रीति लिखतेहैं-

दिनगणभवखेटश्चक्रनिघ्नध्रुवोनो दिवसकृदुदयेस्वक्षेपयुङ्मध्यमः स्यात् । निजनिजपुररेखान्तःस्थिताद्योजनौघाद्रसलवमितलिप्ताः स्वर्णमिन्दौ परे प्राक्॥९॥

अन्वयः-चक्रनिघ्नध्रुवोनः, स्वक्षेपयुक्, दिनगणभवखेटः, दिवसकृदुदये, मध्यमः, स्यात् ॥ निजनिजपुररेखान्तःस्थितात्, योजनौघात्, रसलवमितलिप्ताः, परे, प्राक्, इन्दौ, स्वर्णम्, (भवति) ॥ ९॥

अर्थः-आगे कहीहुई रीतिके अनुसार अहर्गणसे लायेहुए ग्रहमें चक्रसे गुणाकियेहुए ध्रुवको घटादेय जो शेषरहै उसमें अपना क्षेपक युक्तकरदेय तब जो अङ्क होय वह सूर्यके उदयकालमें मध्यमग्रह होताहै ॥

अपने अपने नगरसे दक्षिणोत्तररेखा जितनी योजनहोय उस योजनसंख्यामें ६ छःका भागदेय जो लब्धिहोय सो कलाविकलादि होतीहै,वह अपना नगर दक्षिणोत्तर रेखासे पश्चिम होय तौ धन और पूर्व होय तौ ऋण जानना। इसको रेखान्तरसंस्कार और प्रथमफलसंस्कार कहतेहैं ॥ ९ ॥

मध्यम ग्रहलानेकी रीतिमें यह ध्यान रखना चाहिये कि ग्यारह वर्षपर्यन्त चक्र एकही रहताहै ॥ और क्षेपकाङ्कमें चक्रसे गुणाकियाहुआ ध्रुवक घटावै जो शेष रहै उसको अहर्गणोत्पन्न ग्रहमें मिलादेय । इस शेषको ध्रुवोनक्षेपक कहतेहैं ॥ इस विषयका उदाहरण लिखतेहैं-

उदाहरण.

सूर्यका ध्रुवाङ्क ० राशि १ अंश ४९ कला और ११ विकलाहैं, इसको × चन्द्र ८ से गुणाकरा तौ०राशि १४ अंश ३३ कला और २८ विकलाहुआ,

इसको क्षेपकांक ११ राशि १९ अंश ४१ कला ०विकलामें घटाया सो ११ राशि ५ अंश ७ कला ३२ विकला यह सूर्यका ध्रुवोनक्षेपक हुआ, इसीरीतिसे सम्पूर्ण ग्रहोंका ध्रुवोनक्षेपक जानना चाहिये, सोई हम स्पष्टरीतिसे कोष्टकमें लिखतेहैं- ध्रुवोनक्षेपक ८-चक्र

नाम	सूर्य्य	चन्द्र	चन्द्रोच्च	राहु	मङ्गल	बुधकें०	गुरु	शुक्रकेंद्र	शनि
रा०	११	१०	४	४	७	०	०	७	९
अं०	५	१८	२५	४	१२	१	१	२७	९
क०	७	५६	३३	५८	५२	५७	५२	५३	४५
वि०	३२१	३२	०	०	०	०	०	०	०

अब मध्यमरवि जाननेकी रीति लिखतेहैं-

स्वखनगलवहीनो द्युव्रजोर्कज्ञशुक्राः खतिथिहृतगणोनो लिप्तिकास्वंशकाद्याः ॥ ऽऽ ॥

अन्वयः-स्वखनगलवहीनः,द्युव्रजः,लिप्तिकासु,खतिथिहृतगणोनः, (कार्य्यः, तदा), अंशकाद्याः, अर्कज्ञशुक्राः, (स्युः) ॥ ऽऽ ॥

अर्थः-अहर्गणमें खनगलव कहिये ७० सत्तरका भागदेय तब जो लब्धि होय सो अंशादि होतीहै। इस लब्धिको अंशात्मक मानेहुए अहर्गणमें घटावै, जो शेषरहै उसको कलादिमें। अहर्गणसे १५० का भागदेकर जो लब्धिहोय उसको कलाआदि मानकर घटादेय तब जो शेषरहै सो अहर्गणोत्पन्न रवि बुध और शुक्र होतेहैं इनको "दिनगणभवेत्यादि" रीतिसे अथवा अपना अपना ध्रुवोनक्षेपक मिलाकर मध्यम रवि-मध्यम बुध-और मध्यम शुक्र बनालेय ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ में ७० का भागदिया तब लब्धि=२१ हुए इनको अंशमानना चाहिये, शेष बचे ५१ इनको ६० गुणाकिया तब ३०६० हुए इसमें ७० का भागदिया तब ४३ लब्धि हुए इनको कलामानना चाहिये शेषबचे ५५ इनको ६० से गुणाकिया तब ३००० हुए इसमें ७० का भागदिया तब ४२ लब्धि हुए इनको विकला मानै इसप्रकार अहर्गणमें सत्तरका भाग देनेसे २१ अंश ४३ कला ४२ वि० लब्धि हुए इनको अंशात्मक अहर्गण (१५२१ अंश) में घटाया तब १४९९ अंश १६ कला १८ विकला बचे। इनकी कलादि १६ क० १८ वि० में। (अहर्गण १५२१)

में १५० का भाग दिया तौ लब्धि हुए १० इनको कलात्मक मानै शेष रहै २१ इनको ६० से गुणा करा तौ१२६० हुए इनमें१५०का भागदिया तौ लब्धि हुए ८ इनको विकलात्मक माना इसप्रकार लब्धि हुए १० कला ८ विकला इनको ऊपरके अंशोंको छोड़कर कलादिमें घटाया तब शेष रहे १४९९ अंश ६ कला १० विकला । (ऐसी रीतिहै कि अंशोंमें ३० का भाग देकर जो शेष बचै वह अंश होतेहैं और जो लब्धि मिलै वह राशि होतीहैं यदि बारहसे अधिक लब्धि आवै तौ लब्धिमें बारहका भाग देकर जो शेष रहै उसको राशि मानै और लब्धिको त्याग देय) इसकारण यहाँ १४९९ अंशोंमें ३० का भाग दिया तब शेष रहे २९ यह अंश हुए और लब्धि मिले ४९ यह बारहसे अधिक है इस कारण बारह १२ का भाग दिया तौ शेष रहा १ यह राशि हुई और लब्धिको त्याग दिया इसप्रकार करनेसे १ रा० २९ अं० ६ क० १० वि० यह अहर्गणोत्पन्न सूर्य्य हुआ इसमें ऊपर कही हुई " दिनगणभवेत्यादि " रीतिके अनुसार ० । १ । ४९ । ११ × ८ = ० । १४ । ३३ । २८ चक्रसे गुणाकरे हुए ध्रुवाङ्कको घटाया $\frac{१}{०}$ । $\frac{२९}{१४}$ । $\frac{६}{३३}$ । $\frac{१०}{२८}$ तब शेष रहे १ । १४ । ३२ । ४२ इसमें सूर्य्यके ११ । १९ । ४१ । ० क्षेपकाङ्कको जोड़ दिया तौ १ । ४ । १३ । ४२ हुए यह मध्यम रवि हुआ । अथवा अहर्गणोत्पन्न रवि १ । २९ । ६ । १० में रविका ध्रुवोनक्षेपक ११ । ५ । ७ । ३२ जोड़ दिया तब १३ । ४ । १३ । ४२ हुए यहाँ राशि बारहसे अधिक है इस कारण राशियों १३ में बारहका भाग देकर शेष एकको राशि माना तब वही १ । ४ । १३ । ४२ मध्यम रवि होगया ॥

अब मध्यमचन्द्र लानेकी रीति लिखते हैं–

१४ ६७
गणमनुहतिरिन्दुः स्वाद्रिभूभागहीनः खमनुहृतगणोनोलिप्तिकास्वंशपूर्वः ॥ १० ॥

अन्वयः–स्वाद्रिभूभागहीनः, गणमनुहतिः, लिप्तिकासु, खमनुहृतगणोनः, (कार्य्यः), (तदा). अंशपूर्वः इन्दुः, (भवति) ॥ १० ॥

अर्थः–अहर्गणको १४ से गुणा करै जो गुणनफल हो उसको अंशादि जानै उसमें अहर्गणमें १७ का भाग देकर जो अंशादि मिले सो घटादेय तब जो शेष रहै उसको कलादिमें अहर्गणसे १४० का भाग देकर जो लब्धि होय उसको कला आदि मानकर घटादेय तब अहर्गणोत्पन्न चन्द्र होता है तदनन्तर उक्त क्रिया करनेसे मध्यम चन्द्र होताहै ॥ १० ॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ को १४ से गुणाकरा तौ २१२९४ अंशात्मक हुए इनमें अहर्गण १५२१ में १७ भाग देनेसे प्राप्त हुई लब्धि १२५२ अंश ३५ कला १७ विकलाको घटाया २१२९४/१२५२ । ३५ । १७ । तब २००४१ अंश २४ कला ४३ विकला शेष रहा तब अहर्गण १५२१ में १४० भाग देकर लब्धि हुए कलादि १० कला ५१ विकला इनको ऊपरके शेषके कलादिमें घटाया २००४१ । २४/१० । ४३/५१ । तब शेष रहे २००४१ । १३ । ५२ । अंशोंमें तीसका भाग देकर पूर्वोक्तरीतिके अनुसार राशि करीं तौ ८रा० १ अं० १३ क० ५२ वि० यह अहर्गणोत्पन्न चन्द्र हुआ इसमें ऊपर " दिनगणभवेत्यादि " कही हुई रीतिके अनुसार चन्द्रके ध्रुव । ३ । ४६ । ११ को चक्र ८ से गुणाकरा तब १ । ० । ९ । २८ । हुआ इसको अहर्गणोत्पन्न चन्द्र ८ । १ । १३ । ५२ में घटाया तब ७ । १ । ४ । २४ शेष रहे इसमें चन्द्रका क्षेपक ११ । १९ । ६ । ० जोड़ा तब ६ । २० । १० । २४ यह मध्यम चन्द्र हुआ । अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमें चन्द्रमाका ध्रुवोनक्षेपक युक्त करनेसेभी यही मध्यमचन्द्र होताहै ॥

अब चन्द्रोच्चसाधनेकी रीति लिखते हैं–

नवहृतदिनसंघश्चन्द्रतुङ्गं लवाद्यं भवति खनगभक्तद्युव्रजोपेतलिप्तम् । ऽऽ ।

अन्वयः–नवहृतदिनसंघः, खनगभक्तद्युव्रजोपेतलिप्तम्, लवाद्यम्, चन्द्रतुङ्गम्, (भवति) ॥

अर्थः–अहर्गणमें ९ का भाग देकर जो अंशादि लब्धि होय उस । अहर्गणमें ७० का भागदेकर जो कलादि लब्धि मिले सो जोड़ देय तब अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च होताहै । तब ऊपरोक्त रीतिके अनुसार चन्द्रोच्च साधे ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ में नौ ९ का भाग दिया तब लब्धि हुए अंशादि १६९ अंश० ०कला ० विकला इसमें । अहर्गण १५२१ में ७० का भाग देकर लब्धि हुए कलादि २१ कला ४३ विकलाको जोड़ दिया तब १६९ अं० २१ क० ४३ वि० हुए । इसमेंके अंशोंमें तीस ३० का भाग देकर पूर्वोक्त रीतिके अनुसार राशि बनाई तब ५ राशि १९ अंश २१ कला ४३ विकला यह अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च हुआ तब ऊपरोक्त " दिनगणभवेत्यादि " रीतिके अनुसार चन्द्रोच्चके ध्रुव ०। २ । ४५ । ० । को चक्र ८ से गुणाकरा तब ० । २२ । ० । ० । हुआ इसको

अहर्गणोत्पन्नचन्द्रोच्च ५ । १९ । २१ । ४३ में घटाया तब ४ । २७ । २१ । ४३ हुआ इसमें क्षेपकाङ्क ५ । १७ । ३३ । ० जोड़े तब १० । १४ । ५४ । ४३ यह चन्द्रोच्च हुआ ॥

अब मध्यम राहुके लानेकी रीति लिखते हैं—

नवकुभिरिषुवेदैर्घस्रसंघाद्द्विधातात्फललवकलिकैक्यं स्यादगुश्चक्रशुद्धः ॥ ११ ॥

अन्वयः—नवकुभिः, इषुवेदैः, द्विधा, घस्रसंघात्, आतात्, फललवकलिकैक्यम्, चक्रशुद्धः, अगुः, स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थः-अहर्गणको दो स्थानमें लिखै, एक स्थानमें उन्नीसका भाग देय जो लब्धि होय उसको अंशादि मानै । फिर दूसरे स्थानमें लिखे हुए अहर्गणमें ४५ पैंतालीसका भाग देय जो लब्धिहो उसको कलादि मानै इन दोनों लब्धियोंको जोड़ लेय तब जो अङ्क हों उनको चक्र कहिये १२ बारह राशिमें घटावै जो शेष रहै उसको अहर्गणोत्पन्न राहु जानै । तदनन्तर ऊपरोक्त रीतिके अनुसार राहु साधै ॥ ११ ॥

उदाहरण.

अहर्गणको १५२१ । १५२१ दो स्थानमें लिखा एक स्थानमें १९ का भागदिया तौ ८० अं० ३ क० ९ विकला यह अंशादि लब्धि हुई । फिर दूसरे स्थानमें लिखे हुए अहर्गणमें ४५ का भाग दिया तब ३३ कला ४८ विकला यह कलादि लब्धिहुई । इनदोनों लब्धियों ०/० । ८०/०० । ३/३३ । ९/४८ को जोड़ा तब ८० अं. ३६ क. ५७ वि. हुआ इसको १२ राशिमें घटाया तब शेषरहे९ । ९ । २३ । ३ यही अहर्गणोत्पन्न राहु हुआ । इसमें पूर्वोक्तरीतिसे राहुके ध्रुवक २ । ५० । ० को चक्र ८ से गुणाकरा तब ८ । २२ । ४० । ० हुए इसको घटाया तब ० । १६ ४३ । ३ शेषरहे इसमें राहुके क्षेपकाङ्क ० । २७ । ३८ । ० को जोड़ा तब १ । १४ । २१ । ३ यह राहु हुआ अहर्गणोत्पन्न राहुमें राहुका ध्रुवोनक्षेपक मिलानेसेभी यह राहु आताहै ॥

अब मध्यम मङ्गललानेकी रीति लिखतेहैं—

दिग्घ्नो द्विधादिनगणोऽङ्ककुभिस्त्रिशैलैर्भक्तःफलांशककलाविवरं कुजः स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अन्वयः—दिग्घ्नः, दिनगणः, द्विधा, अंककुभिः, त्रिशैलैः, भक्तः, (कार्य्यः), ततः, फलांशककलाविवरम्, कुजः, (स्यात्) ॥ ऽऽ ॥

अर्थः-अहर्गणको दिक् कहिये दशसे गुणा करके दोस्थानमें लिखे एक स्थानमें उन्नीसका भागदेय जो लब्धि मिले उसको अंशादि माने, फिर दूसरे स्थानके गुणाकरेहुए अहर्गणमें ७३ का भागदेय जो लब्धि मिले उसको कला आदि जाने । इसप्रकार अंशादि और कला दोनों लब्धियोंका जो अन्तर होय उसको अहर्गणोत्पन्न मङ्गल जाने फिर पूर्वोक्तरीतिके अनुसार मध्यम मङ्गल लावे ॥ ११ ॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ को १० से गुणाकरा तब १५२१० हुए इनको दो स्थानमें लिखा १५२१०।१५२१०। फिर एकस्थानमें १९ का भागदिया तब अंशादि लब्धि हुई ८०० अं. ३१ क. ३४ वि. फिर दूसरे स्थानमें ७३ का भागदिया तब कलादि लब्धि हुई २०८ क. २१ वि. इन दोनों लब्धियोंका अन्तर किया $\frac{८००}{}$ । $\frac{३१}{२०८}$ । $\frac{३४}{२१}$ तब ७९७ अं. ३ क. १३ । वि. शेषरहे यहाँ ३० का भागदेकर पूर्वोक्तरीतिसे अंशोंकी राशि करीं तब २ रा. १७ अं. ३ कला १३ वि. यह अहर्गणोत्पन्न मङ्गल हुआ। तब ऊपरकहीहुई रीति " दिनगणभवेत्यादि " के अनुसार मङ्गलके ध्रुव १ । २५ । ३२. को चक्र ८ से गुणाकरा तब २ । २४ । १६ हुए इसको अहर्गणोत्पन्न मङ्गल २ । १७ । ३ । १३ में घटाया तब ११ । २२ । ४७।१३ शेषरहे इनमें मङ्गलके क्षेपकाङ्क जोड़दिये $\frac{११}{१०}$ । $\frac{२२}{७}$ । $\frac{४७}{८}$ । $\frac{१३}{०}$ तब ९ । २९ । ५५ । १३ यह मध्यम मङ्गल हुआ ॥

अथ बुधकेन्द्रके लानेकी रीति लिखतेहैं-

त्रिघ्नो गणः स्ववसुहग्लवयुग्ज्ञशीघ्रकेन्द्रं लवाद्यमहिगुणाप्तगणोनलिप्तम् ॥ १२ ॥

अन्वयः-त्रिघ्नः, गणः, स्ववसुहग्लवयुक्, अहि गुणाप्तगणोनलिप्तम्, लवादि, ज्ञशीघ्रकेन्द्रम्. (स्यात्) ॥ १२ ॥

अर्थः-अहर्गणको ३ तीनसे गुणाकरके जो गुणन फलहो उसको अंशात्मकमाने, उसमें १८ का भागदिया तब जो लब्धिमिले उसको अंशादिमाने, वह उस पूर्वोक्त गुणनफलमें युक्तकरदेय और उसमें । अहर्गणमें ३८ का भागदेकर जो कलादि लब्धिमिले उसको घटादेय जो शेषरहै सो अहर्गणोत्पन्न बुधकेन्द्र होताहै, तदनन्तर पूर्वोक्तरीतिके अनुसार केन्द्र बुधसाधै॥१२॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ को ३ से गुणाकिया तब ४५६३ अंशात्मक हुये इनमें १८ का भागदिया तब अंशादि लब्धिहुई २५३ । ३७ । ५१ इसमें तीनसे गुणांकरे

अंशात्मक अहर्गण ४५६३ में जोड़दिया तब ४७२५। ५७। ५१ हुए इनमें अहर्गण १५२१ में ३८ का भागदेकर जो कलादि लब्धि हुई ४० क. १ वि. इसको कलाओंमें घटाया ४७२५। ५७। ५१ तब ४७२५। १७। ५०। यहाँ ३० का भागदेकर पूर्वोक्तरीतिसे अंशोंकी राशि करी तब १ रा. १५ अं. १७ क. ५० वि. यह अहर्गणोत्पन्न बुधकेन्द्र हुआ इसमें पूर्वोक्त "दिनगणेत्यादि" रीतिके अनुसार बुधकेन्द्रके ध्रुव ४। ३। २७। ० को चक्र ८ से गुणाकिया तब ८। २७। ३६ हुआ इसको घटाया १। १५। १७। ५० तब ४। १७। ४१। ५०। हुआ इसमें बुधकेन्द्रके क्षेपक ८। २९। ३३ को जोड़ा तब १। १७। १४। ५० यह बुधकेन्द्र हुआ॥

अथ मध्यम गुरुके साधन करनेकी रीति लिखतेहैं-

द्युपिण्डोर्कभक्तो लवाद्यो गुरुः स्यादद्यु पिण्डात्ख-शैलाप्तलिप्ताविहीनः॥ ११॥

अन्वयः-अर्कभक्तः द्युपिण्डः द्युपिण्डात् खशैलाप्तलिप्ताविहीनः लवाद्यः गुरुः स्यात्॥ ११॥

अर्थः-अहर्गणमें बारहका भागदेकर जो अंशादि लब्धिहो उनमें अहर्गणमें ७० का भागदेकर जो कलादि लब्धि होय उसको घटादेय जो शेषरहै, सो अहर्गणोत्पन्न गुरु होताहै इससे पूर्वोक्तरीतिके अनुसार मध्यम गुरु साधनकरे॥ ११॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ में बारह १२ का भागदिया तब अंशादि लब्धहुए १२६ अं. ४५ क. ० वि.। अहर्गण १५२१ में ७० का भागदिया तब कलादिलब्धि २१ क. ४३ वि. हुए इनको अंशादि लब्धिमें घटाया तब १२६ अं. २३ क. १७ वि. यह शेष रहा यही अहर्गणोत्पन्न गुरु हुआ। तब पूर्वोक्त रीतिके अनुसार अंशोंमें ३० का भाग देकर राशि बनाई तब ४ रा० ६ अं० २३ क० १७ वि० यह अहर्गणोत्पन्न गुरु हुआ। तब गुरुके ध्रुव ०। २६। १८। ० को चक्र ८ से गुणा करनेसे ७। ०। २४ हुए इसको अहर्गणोत्पन्न गुरुमें घटाया तब ९। ५। ५९। १७ शेष रहा इसे गुरुका क्षेपक ७। २। १६। ० जोड़ा तब ४। ८। १५। १७ यह मध्यम गुरु हुआ॥

अथ केन्द्र शुक्रलानेकी रीति लिखते हैं-

त्रिनिघ्नद्युपिण्डाद्द्विधाक्षैः क्रिभाप्तैरवाप्तांशयोगो भृ-गोराशुकेन्द्रम्॥ १२॥

अन्वयः-त्रिनिघ्नद्युपिण्डात् अक्षैः क्रिभाप्तैः द्विधा अवाप्तांश-योगः भृगोः आशुकेन्द्रम् (भवति)॥

अर्थ-अहर्गणको तीनसे गुणाकरके जो गुणन फल मिले उसको दो स्थानमें लिखकर एक स्थान पाँचका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको अंशादि जाने। फिर दूसरे स्थानमें लिखेहुए गुणित अहर्गणमें एक सौ इक्यासीका भाग देय जो लब्धि मिले उसको अंशादि माने। तदनन्तर दोनों लब्धियोंका योग करे तब अहर्गणोत्पन्न केन्द्र शुक्र होताहै। तदनन्तर ऊपरोक्तरीतिके अनुसार शुक्रकेन्द्र लावे ॥ १३ ॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ को ३ तीनसे गुणा करा तौ ४५६३ हुए इनको दो स्थानमें लिखा ४५६३। ४५६३ फिर एक स्थानमें ५ पाँचका भाग दिया तब लब्धि हुए अंशादि ९१२ अं० ३६ क० ० वि० हुए॥ फिर दूसरे स्थानमें १८१ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि मिले २५ अं० १२ क० ३५ वि०। इन दोनों लब्धियों ९१२। ३६। ३५ को जोड़ा तब ९३७। ४८। ३५ हुए। यहाँ अंशोंमें तीस ३० का भाग देकर राशि बनाई तब ७ राशि ७ अंश ४८ कला ३५ विकला यह अहर्गणोत्पन्न केन्द्र शुक्र हुए। तदनन्तर पूर्वोक्त "दिनगणभवेत्यादि" रीतिके अनुसार केन्द्र शुक्रके ध्रुव १। १४। २। ० को चक्र ८से गुणा करा तब ११। २२। १६। ० हुए इसको अहर्गणोत्पन्न केन्द्र शुक्र ७। ७। ४८। ३५ में घटाया तब ७। १५। ३२। ३५ शेषरहे इसमें शुक्रकेन्द्रके क्षेपक ७। २०। ९। ० को जोड़ा तब ३। ५। ४१। ३५ यह केन्द्रशुक्र हुआ। अहर्गणोत्पन्न केन्द्रशुक्रमें केन्द्रशुक्रका ध्रुवोनक्षेपक मिलानेसेभी यही केन्द्रशुक्र होताहै ॥

अब मध्यम शनि लानेकी रीति लिखते है-

खाग्न्युद्धृतोदिनगणोंशमुखः शनिः स्यात्षट्प-
ञ्चभूद्धृतगणात्फललिप्तिकाढ्यः ॥ ५५ ॥

अन्वयः-खाग्न्युद्धृतः, दिनगणः, षट्पञ्चभूहृतगणात्, फललिप्तिकाढ्यः, अंशमुखः, शनिः, स्यात् ॥ ५५ ॥

अर्थ-अहर्गणमें ३० का भागदेकर जो लब्धि मिले उसको अंशादि जाने उसमें। अहर्गणमें फिर १५६ एक सौ छप्पनका भाग देकर जो कलादि लब्धि मिले उसको जोड़ देय तब अहर्गणोत्पन्न शनि होताहै उससे पूर्वोक्तरीतिसे मध्यम शनि लावै ॥ ५५ ॥

उदाहरण.

अहर्गण १५२१ में ३० का भाग दिया तौ लब्धि हुए अंशादि ५० अं० ४२ क० हुए तदनन्तर अहर्गण १५२१ में १५६ का भाग दिया तब लब्धि हुए९ क०

४५ वि० इन दोनों लब्धियोंको जोड़ा तो ५० । ५१ । ४५ हुए यहाँ अंशों ५० में तीसका भाग देकर राशि बनाई तब १ । २० । ५१ । ४५ यह अहर्गणोत्पन्न शनि हुआ। तदनन्तर पूर्व कही हुई "दिनगणेत्यादि" रीतिके अनुसार शनिके ध्रुव ७ । १५ । ४२ । ० को चक्र ८ से गुणा करा तब ० । ५ । ३६ । ० इसको अहर्गणोत्पन्न शनि १ । २० । ५१ । ४५ में घटाया तब १ । १५ । १५ । ४५ रहे इनमें शनिका क्षेपक ९ । १५ । २१ । ० जोड़ा तब ११ । ० । ३६ । ४५यह मध्यम शनि हुआ। अहर्गणोत्पन्न शनिमें शनिका ध्रुवोनक्षेपक युक्त करनेसेभी मध्यम शनि बनता है ॥

इसप्रकार मध्यम ग्रहोंको साधकर डेढ़ श्लोकमें मध्यम ग्रहोंकी कलादि दिनगति लिखते हैं-

गोक्षागजारविगतिः शशिनोऽभ्रगोश्वाः पञ्चाग्नयोऽथ षड़िलाब्धय उच्चभुक्तिः ॥ १४ ॥ राहोस्त्रयंकुशशिनोऽसृज इन्दुरामास्तर्काश्विनाञ्चलकेन्द्रजवोऽर्य हिस्माः । लिप्ताजिना विकलिकाश्च गुरोः शराः खं शुक्राशुकेन्द्रगतिरद्रिगुणाः शनेर्द्वे ॥ १५ ॥

अन्वयः-गोऽक्षाः,गजाः,रविगतिः, (अस्ति)।अभ्रगोश्वाः,पञ्चाग्नयः, शशिनः, (गतिः,अस्ति) । अथ, षट्, इलाब्धयः,उच्चभुक्तिः, (अस्ति) । त्रयम्, कुशशिनः, राहोः, (गतिः, अस्ति), इन्दुरामाः, तर्काश्विनः, असृजः, (गतिः, अस्ति)। अर्य्यहिस्माः, लिप्ताः, जिनाः, विकलिकाः, ञ्चलकेन्द्रजवः, (अस्ति) । शराः-खम्, गुरोः, (गतिः, अस्ति)। इन्द्रियगुणाः, शुक्राशुकेन्द्रगतिः, (अस्ति) । द्वे, शनेः, (गतिः, अस्ति) ॥ १४ ॥ १५ ॥

अर्थ-गोकहिये नौ ९ अक्षकहिये ५ पाँच अर्थात् ५९ कला और गज कहिये ८ आठ विकला यह सूर्य्य मध्यम गति है। अभ्र कहिये शून्य ० गो कहिये नौ ९ अश्व कहिये ७ अर्थात् ७९० कला और पाँच ५ अग्नि कहिये ३ तीन अर्थात् ३५ विकला चन्द्रमाकी मध्यम गतिहै। और षट् कहिये ६ छः कला तथा इला कहिये १ एक अब्धि कहिये ४ चार अर्थात् ४१ विकला यह चन्द्रोच्चकी मध्यम गतिहै। तीन ३ कला कु कहिये १ एक शशि कहिये १ एक, अर्थात् ११ विकला यह राहुकी मध्यम गतिहै। इन्दु कहिये १ एक राम कहिये ३ तीन अर्थात् ३१ कला और तर्क कहिये ६ छः अश्विन् कहिये २ दो अर्थात्२६विकला

यह मंगलकी मध्यमगति है । अरिकहिये ६ छः अहि कहिये ८ आठ क्ष्माकहिये १ एक अर्थात् १८६ कला और जिन कहिये २४ चौवीस विकला यह बुधकेन्द्रकी मध्यम गतिहै । शरकहिये ५ पाँच कला और खकहिये ० शून्य विकला गुरुकी मध्यमगतिहै । अद्रि कहिये ७ सात गुणकहिये ३ तीन अर्थात् ३७ कला शुक्रकेन्द्रकी मध्यम गतिहै । २ दो कला शनिकी मध्यम गतिहै ॥ १४ ॥ १५॥ यह सब नीचे कोठामें स्पष्ट रीतिसे लिखतेहैं-

नाम	रवि	चन्द्र	चन्द्रोच्च	राहु	मङ्गल	बुधकेन्द्र	गुरु	शुक्रके.	शनि
कला	५९	७९०	६	३	३१	१८६	५	३७	२
विकला	८	३५	४१	११	२६	२४	०	०	०

कौनग्रह किस ग्रन्थके अनुसार लानेसे वेधसे मिलताहै यह विषय लिखतेहैं-

सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्कलिकोनाब्जो गुरुस्त्वार्य्यजोऽसृग्राहू च कजज्ञकेन्द्रकमथार्य्ये सपुभागः शनिः । शौक्रं केन्द्रमजार्य्यमध्यगमितीमे यान्ति दृक्तुल्यतां सिद्धैस्तैरिह पर्वधर्म्मनयसत्कार्य्यादिकं त्वादिशेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः-अर्कः, सौरः, (घटते) । विधूच्चम, (सौरपक्षीयम्, घटते) । अङ्ककलिकोनाब्जः, अपि, (सौरः, घटते) । गुरुः, तु, आर्य्यजः, (घटते) । असृक्-राहू, च, (आर्य्यपक्षीयौ, घटेते) । कजज्ञकेन्द्रम्, (घटते) । अथ सपुभागः, शनिः, आर्य्ये, (घटते) । शौक्रम्, केन्द्रम्, अजार्य्यमध्यगम, (घटते) । इति, इमे, दृक्तुल्यताम्, यान्ति । इह, तु, सिद्धैः, तैः, पर्वधर्म्मनयसत्कार्य्यादिकम्, आदिशेत् ॥ १६ ॥

साधाकरलेय । इसप्रकार पूर्वोक्त ग्रन्थोंके अनुसार साधेहुए यह ग्रह वेधसे मिलजातेहैं । इसंग्रन्थमें पूर्वोक्तरीतियोंके अनुसार ग्रह साधकर ग्रहणादि- पर्व, व्रतादि धर्म्मकार्य्य, नीतिकार्य्य, और विवाहादि मङ्गलकार्य्य आदिको कहै ॥ १६ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तर-
देशीयमुरादाबादपत्तनवास्तव्यगौड़वंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डित-
रामस्वरूपशर्म्मणा विरचितया विस्तृतोदाहरणसनाथीकृतान्वयस-
मन्वितया भाषाव्याख्यया सहितो मध्यमग्रहसाधनाधिकारः
समाप्तिमितः ॥ १ ॥

अथ रविचन्द्रस्पष्टीकरणपञ्चाङ्गानय- नाधिकारो व्याख्यायते ।

तहाँ प्रथम भुज-कोटि-पद-सूर्य्यमन्दोच्च-केन्द्र-और रविमन्द फल साधनेकी रीति लिखतेहैं-

दोस्त्रिभोनं त्रिभोर्ध्वं विशोध्यं रसैश्चक्रतोङ्काधिकं स्याद्भुजोनं त्रिभम् । कोटिरेकैककं त्रित्रिभैः स्यात्पदं सूर्य्यमन्दोच्चमष्टाद्रयोंशा भवेत् ॥ १७ ॥ मन्दोच्चं ग्रहवर्जितं निगदितं केन्द्रं तदाख्यं बुधैः केन्द्रे स्यात्स्वमृणं फलं क्रियतुलाद्येथो विधेयं रवेः । केन्द्रेतद्भुजभागखेचरलवोनघ्ना नखास्ते पृथक् तद्भांशोननगेषुभिः परिहृतास्तेंशादिकं स्यात्फलम् ॥१८॥

अन्वयः-त्रिभोनम्, (केन्द्रम्), दोः, (भवति) । त्रिभोर्ध्वम्, रसैः, विशोध्यम्, (तदा, दोः, स्यात्) । अङ्काधिकम्, चक्रतः, (विशोध्यम्, तदा, दोः) स्यात् । भुजोनम्, त्रिभम्, कोटिः, (स्यात्) । त्रित्रिभैः, एकैकम्, पदम्, स्यात् । अष्टाद्रयः, अंशाः, सूर्य्यमन्दोच्चम्, भवेत् । ग्रहवर्जितम्, मन्दोच्चम्, बुधैः, तदाख्यम्, केन्द्रम्, निगदितम् । क्रियतुलाद्ये, केन्द्रे, स्वम्, ऋणम्, फलम्, स्यात् । अथ, रवेः, केन्द्रम्,

विधेयम्, । तद्भुजभागखेचरलवोनघ्नाः, नखाः, (कार्याः) ते, पृथक्, (स्थाप्याः) तद्दोंशोननगेषुभिः, परिहृताः, ते, अंशादिकम्, फलम्, स्यात् ॥ १७ ॥ १८ ॥

अर्थः-केन्द्र किंवा ग्रहादिक तीनराशिकी अपेक्षा कम हो तौ भुज होताहै। और तीन राशिकी अपेक्षा अधिक होय तौ छः राशिमें घटाकर जो शेपरहै वह भुज होताहै। नौसे अधिक होय तौ बारह राशिमें घटाकर जो शेपरहै वह भुज होताहै। तीन राशिमें भुज घटाकर जो-शेपरहै सो कोटि होतीहै। तीन तीन राशिका एक एक पद होताहै। २.रा. १८ अं. ० क. ० विकला यह रविका मन्दोच्च होताहै । मन्दोच्चमें ग्रह घटादेय जो शेपरहै सो मन्दकेन्द्र होताहै-(और शीघ्रोच्चमें ग्रह घटाकर जो शेपरहै सो शीघ्रकेन्द्र होताहै)। मेप आदि छः केन्द्रमें धन मन्द फल होताहै (अथवा शीघ्रफल होताहै)। तुला आदि छः केन्द्रमें ऋण मन्द फल होताहै । रविका मन्दकेन्द्र उक्तरीतिसे लावै । रविका केन्द्र लाकर उसके भुजकरे, और उन भुजोंके अंशकरे, उनमें नौ ९ का भाग देय जो लब्धि मिलै उसको बीस अंशमें घटावे जो शेपरहै उसको ऊपरोक्त नवमांशसे गुणा करदेय जो गुणन फल होय उसको अलग एकान्त स्थानमें लिखे। फिर नौ ९ का भाग देय जो लब्धि होय उसको ५७ अंशमें घटावै जो शेपरहै उसका अलग एकान्तमें लिखे हुए पूर्वोक्त अंशादिमें भाग देय जो लब्धि होय उसको अंशादि मन्दफल जानै । यह मन्दफल केन्द्र मेप राशिसे तुलराशिपर्य्यन्तके भीतर होय तौ धन, और तुलराशिसे लेकर मेपपर्य्यन्त ६राशिके भीतर होय तौ ऋण जानै। तदनन्तर यदि यह मन्दफल मध्यम रविमें धन होय तौ युक्त करदेय और ऋण होय तौ घटादेय तब मन्द स्पष्ट रवि होताहै ॥ १७॥ १८॥

उदाहरण.

रविके मन्दोच्च २ रा० १८ अं० ० क० ० वि० है, इसमें मध्यमरवि १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० घटाया तौ शेप रहा १ रा० १३ अं० ४६ क० १८ वि० यह रविका केन्द्र हुआ,यह केन्द्र तीन राशिसे कमहै,इसकारण भुजहै। इसमें जो राशि है उसके अंश करके अंशोंमें जोडे तब ४३ अं० ४६ क० १८वि० हुए इनमें नौ ९ का भागदिया तब लब्धि हुए ४ अं० ५१ क० ४८ वि० इनको २० अंशमें घटाया तब शेपरहे १५ अं० ८ क० १२ वि० इनको भुजके नवमांश४अं० ५१क० ४८ वि० से गुणा करा तब ७३ अं० ३६ क० ५२ वि० हुए इनको दो स्थानमें लिखा एक स्थानमें ९ नौका भाग दिया तब ८ अं० १० क० ४५ वि० लब्धि हुए इनको ५७ अंशमें घटाया तब शेपरहे ४८ अं० ४९ क० १५ विकला इनका

दूसरे स्थानमें लिखे हुए ७३ अं० ३६ क० ५२ वि० में भाग देनेके लिये

भाज्य	भाजक
७३ अं० ३६ क० ५२ वि०	४८ अं० ४९ क० १५ वि०

इन दोनोंकी कला करीं तब

भाज्य	भाजक
२६५०१२	१७५७५५

हुए। फिर भाज्य २६५०१२ में १७५७५५ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई १ अं० ३० क० २८ वि० यह रविका मन्द फल हुआ। यह धन है क्यों कि केन्द्र मेषादि छः राशिसे कम है ॥ इसकारण इस १ अं० ३० क० २८ वि० मन्दफलको मध्यमरवि १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त किया तब १ रा० ५ अं० ४४ क० १० वि० यह मन्दस्पष्ट रवि हुआ ॥

अब पलभा और चरखण्डलानेकी रीति लिखतेहैं–

मेषादिगेसायनभागसूर्य्ये दिनार्द्धजाभापलभाभवेत्सा। त्रिस्थाहता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चरार्द्धानिगुणोद्धृतान्त्या॥ १९॥

अन्वयः–सायनभागसूर्य्ये, मेषादिगे, (सति), या, दिनार्द्धजा, भा, सा, पलभा, भवेत्। (सा), त्रिस्था, दशभिः, भुजङ्गैः, दिग्भिः, हता, (ततः), अन्त्या, गुणोद्धृता, (कार्य्या)। (तदा), चरार्द्धानि, स्युः ॥ १९॥

अर्थः–जिस दिन अयनांशसहित सूर्य्य राशि अंश कला विकलासे शून्य होय उसदिन मध्यान्हके समय समान भूमिपर बारह अंगुलका शङ्कु रक्खे जो छाया पड़े उसको पलभा कहतेहैं। तिस पलभाको तीन स्थानमें लिखकर क्रमसे १०। ८। १० से गुणाकरे, अन्तके तीसरे गुणन फलमें ३ तीनका भाग देय तब क्रमसे तीन चरखण्ड होतेहैं ॥ १९॥ कुछ प्रसिद्ध स्थानोंकी पलभा ग्रन्थके अन्तमें लिखेंगे ॥

उदाहरण.

काशीकी पलभा ५ अङ्गुल ४५ प्रतिअङ्गुलहै इसको पहले १० से गुणा करा, तब ५७ अंगुल ३० प्रतिअङ्गुल यह प्रथम चरखण्ड हुआ। फिर पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ८ से गुणा करा तब ४६ अंगुल ० प्रतिअंगुल यह द्वितीय चरखण्ड हुआ। फिर पलभा ५ अंगुल ४५ अंगुलको १० दशसे गुणा करा तब ५७ अंगुल ३० प्रतिअंगुल हुआ इसमें ३ का भागदिया तब १९ अंगुल १० प्रति अंगुल तीसरा चरखण्ड हुआ। इसप्रकार प्रथम चरखण्ड ५७ अं० ३० प्र० हुआ, दूसरा चरखण्ड ४६ अं० हुआ, तीसरा चरखण्ड १९ अं० १० प्र० हुआ ॥

अब चर, चरसंस्कार, भुजफलसंस्कार और अयनांश लिखतेहैं-

स्यात्सायनोष्णांशुभुजर्क्षसंख्यचरार्द्धयोगो लवभोग्यघातात्। खाग्न्याप्तियुक्तस्तु चरं धनर्णं तुलाजपङ्भे तपनेऽन्यथास्ते ॥ २० ॥ देयं तच्चरमरुणे विलिप्तिकासु मध्येन्दौ द्विगुणनवोद्धृतं कलासु। भाप्तं तद्द्युमणिफलं लवेऽथ वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसहृतः शकोऽयनांशाः ॥ २१ ॥

अन्वयः-सायनोष्णांशुभुजर्क्षसंख्यचरार्द्धयोगः, लवभोग्यघातात्, खाग्न्याप्तियुक्तः, चरम्, स्यात् । (तत्), तु, तपने, तुलाजपद्के, धनर्णम्, (स्यात्) । अस्ते, अन्यथा ॥ २० ॥ तत्, चरम्, अरुणे, विलिप्तिकासु, देयम् । (तत्-एव), द्विगुणनवोद्धृतम्, मध्येन्दौ, कलासु, (देयम्)। भाप्तम्, (यत्), द्युमणिफलम्, तत् (अपि), लवे, (देयम्) ॥अथ,शकः,वेदाब्ध्यब्ध्यूनः,(ततः),खरसहृतः,अयनांशाः,स्युः ॥ २१ ॥

अर्थः-सायनरविकी पूर्वोक्तकेन्द्रसे भुजलानेकी रीतिके अनुसार भुज लावे, वह भुज यदि राशि शून्य होय तब अंशोंको छोड़कर केवल अंशादिमात्रको प्रथम चरखण्डसे गुणा करै। और यदि भुजमें एक राशि होय तौ राशिको छोड़कर अंशादिको द्वितीय चरखण्डसे गुणा करै । और यदि भुजमें दो राशि होय तौ राशि छोड़कर केवल अंशादि मात्रको तृतीय चरखण्डसे गुणाकरै जो गुणनफल हो उसमें ३० तीसका भाग देय जो लब्धि मिलै उसमें जिस चरखण्डसे गुणा कराहो उससे पहला चरखण्ड जोड़देय तब चर होताहै ॥ वह सायन मेषादि छः राशिसे कम होय तौ ऋण होताहै। और छः राशिसे अधिक तुलादि छः राशिके भीतर होय तौ धन होता है। यदि सायंकालीन ग्रह करना होय तौ चरको विपरीत ग्रहणकरै अर्थात् सायनरवि मेषादि छः राशियोंके भीतर होय तौ धन, और तुलादि छः राशिके भीतर होय तौ ऋण, जानै ॥ २० ॥ वह चर यदि धन होय तौ मन्दस्पष्ट रविकी विकलाओंमें युक्तकरदे और ऋणहोय तौ घटादेय । तब स्पष्ट रवि होताहै। चरको २ से गुणाकरके नौका भागदेय जो लब्धि होय उसको चरकी समान धनऋण समझै और मन्दस्पष्ट रविकी कलाओंमें युक्त करदेय (इसको चरसंस्कार और द्वितीयफलसंस्कार कहतेहैं ।) रविके मन्दफलमें सत्ताई-

सका भागदेकर जो लब्धि होय उसकोभी चरकी समान धनऋणमाने और मन्दस्पष्ट रविके अंशोंमें युक्तकरदेय (इसको मन्दफलसंस्कार और तृतीयफलसंस्कारभी कहतेहैं । इनदोनों रीतियोंका चन्द्रस्पष्ट करनेमें काम पड़ताहै)। शालिवाहनशकेमें चारसौ चौवालीस४४४ घटादेय जो शेषरहै वह कलाहोतीहैं उनमें साठका भागदेय जो लब्धिमिले सो अयनांश होताहै । अयनांशको मन्दस्पष्टरविमें मिलादेय तब सायनरवि होताहै ॥ २१ ॥

उदाहरण.

शाके १५३४ में ४४४ घटाये तब शेषरहे१०९०यह कलाहैं, इनमें६०का भाग दिया तौलब्धिहुई १८ अं. १० कला यह अयनांशहै, इसको मन्दस्पष्ट रवि १ रा. ५ अं. ४४ क. १० वि. में युक्त किया तब १ रा. २३ अं. ५४ क. १० वि. यह सायनरवि हुआ । यह सायन रवि तीन राशिके भीतरहै इसकारण यह भुज है । अब इस १ रा. २३ अं ५४ क. १० वि. भुजमें एकराशि है इसकारण अंशादिकों (२३ अं. ५४ क. १० वि.) को द्वितीय चरखण्ड ४६ से गुणाकरा तब गुणनफल १०९९ अं. ३१ क. ४० वि. हुआ इसमें ३० का भागदिया तब लब्धिहुई ३६ विकला ३९ प्रतिविकला प्रथम चरखण्डसे गुणाकराथा, इसकारण द्वितीय चरखण्ड ५७ को लब्धि ३६ वि. ३९ प्रतिविकलामें युक्त किया तब९३विकला३९प्रतिविकला यह चर हुआ । यह ऋणहै क्योंकि सायनरविमेषादि छःके भीतरहै । इसकारण मन्द स्पष्टरवि १ राशि ५ अंश ४४ कला १० विकलामें चर ९३ वि. अर्थात् १ क. ३३ विकलाको घटाया तब शेषरहा १ रा. ५ अं. ४२ क. ३७ वि. यह स्पष्टरवि हुआ ॥

अब दिनमान रात्रिमान और अक्षांश लानेकी रीति लिखतेहैं–

गोलौ स्तः सौम्ययाम्यौ क्रियघटरसभे खेचरेऽथायने ते नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथचरपलयुतोनास्तु पञ्चेन्दुनाड्यः । घस्रार्द्धं गोलयोः स्यात्तदयुतखगुणाः स्यान्निशार्द्धन्त्वथाक्षच्छायेपुघ्न्यक्षभायाः कृतिदशमलवोने यमाशापलांशाः ॥ २२ ॥

अन्वयः–खेचरे, क्रियघटरसभे, सौम्ययाम्यौ, गोलौ, स्तः । अथ, नक्रात्, कर्कात्, च, षड्भे, ते, अयने, (स्तः) । अथ, तु, पञ्चेन्दुनाड्यः, चरपलयुतोनाः, (कार्य्याः) । (तदा), घस्रार्द्धम्, स्यात् । तदयुत-

खगुणाः, निशार्द्धम्, स्यात् । अथ, तु, इषुघ्नी, अक्षच्छाया, अक्षभायाः, कृतिदशमलवोना, (कार्य्या), इयम्, आशापलांशाः, (स्युः) ॥ २२ ॥

अर्थः–यदि सायनरवि मेषादि छः राशिके अन्तर्गत होय तौ उसको उत्तर गोलीय कहतेहैं, और यदि सायनरवि तुलादि छः राशिके अन्तर्गत होयतौ उसको दक्षिणगोलीय कहतेहैं। तिसीप्रकार यदि सायनरवि मकरादि छः राशिके अन्तर्गत होय तौ उसको उत्तरायण कहतेहैं, और यदि कर्कादि छः राशिके भीतर होय तौ दक्षिणायन कहतेहैं, पीछे लायेहुए पलात्मक चरको यदि सायनरवि उत्तरगोलीय होय तौ १५ पन्द्रह घड़ीमें युक्त करै, और सायनरवि दक्षिणगोलीय होय तौ पलात्मकचर १५ पन्द्रह घड़ीमें घटादेय। जो शेषरहै सो दिनार्द्ध होताहै। उसदिनार्द्धको ३० तीस घड़ीमें घटादेय तब जो शेष रहै सो रात्र्यर्द्ध होताहै। तदनन्तर दिनार्द्धको द्विगुणित करनेसे दिनमान होताहै, और रात्र्यर्द्धको द्विगुणित करनेसे रात्रिमान होताहै। और दिनमान तथा रात्रिमानको जोड़नेसे अहोरात्रमान होताहै।

पलभाको पाँचसे गुणाकरकै जो गुणनफल मिलै उसको अंशात्मक मानै उसमें पलभाके वर्गका दशवाँ भाग अंशात्मक, घटादेय जो शेषरहै वह अक्षांश होताहै। (अक्षांश सर्वदा दक्षिण होताहै, क्योंकि हिन्दुस्थानके दक्षिण विषुवद्वृत्तरेखाहै) ॥ २२ ॥

उदाहरण.

पलात्मकचर ९३ यह सायनरवि उत्तरगोलीय है क्योंकि मेषादि छः राशिके अन्तर्गतहै इसकारण चर ९३ को १५ घड़ीमें युक्तकिया तब १६ घड़ी ३३ पल यह दिनार्द्ध हुआ। इसदिनार्द्ध १६ घ. ३३ प. को ३० घड़ीमें घटाया तब शेषरहा १३ घ. २७ पल यह रात्र्यर्द्ध हुआ। दिनार्द्ध १६ घ. ३३ प. को द्विगुणित किया तब ३३ घ. ६ पल यह दिनमान हुआ। और रात्र्यर्द्ध १३ घ. २७ को द्विगुणित कियातब २६ घड़ी ५४ पल यह रात्रिमान हुआ। दिनमान और रात्रिमानको जोड़ा तब ६० घड़ी अहोरात्रमान हुआ ॥

पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ५ से गुणाकरा तब २८ अं. ४५ कला हुआ। तब पलभा ५। ४५ का वर्गकिया तौ ३३। ३ हुआ इसमें दशका भाग दिया तब ३ अं. १८ क. १८ वि. लब्धि हुए इनको पाँचसे गुणाकरीहुई पलभा २८ अं. ४५ क. में घटाया तब २५ अं. २६ क. ४२ वि. यह काशीका दक्षिण अक्षांश हुआ ॥

अथ त्रिफल स्पष्ट करनेका विषय लिखतेहैं ॥

पीछेकहे हुए ९ श्लोकका उत्तरार्द्ध—अपने अपने नगरसे दक्षिणोत्तर रेखा जितनी योजन दूर होय उसयोजनसंख्यामें छःका भागदेय तब जोकला

द्लब्धि होय वह,अपना नगर दक्षिणोत्तर रेखासे पश्चिमहोय तौ धन और पूर्व होय तौ ऋणहोतीहै, इसको रेखान्तरसंस्कार और प्रथम फल संस्कार कहते हैं श्लोक २१ द्वितीयचरण—चरको दोसे गुणाकरके नौका भागदेय जो लब्धिहोय उसको कलादि जानै उसको चरका धन या ऋण जानै इसको चरसंस्कार और द्वितीयफलसंस्कार कहतेहैं ॥

श्लोक २१ तृतीयचरण—रविके मन्दफलमें २७ का भाग देकर जो लब्धि होय उसको अंशादि जानै इसको रविके मन्दफलका धन अथवा ऋणजानै, इसको मन्दफलसंस्कार और तृतीयफलसंस्कार कहतेहैं ॥

इनतीनों फलोंको जोड़कर जो धन अथवा ऋण हो उसको मध्यम चन्द्रमें धन अथवा ऋणकरै तव त्रिफलसंस्कृत चन्द्र होताहै ॥

उदाहरण.

काशीपुरी दक्षिणोत्तर रेखाके पूर्व ६४ योजनहै इसकारण ६४ योजनमें ६ का भागदिया तव १० कला ४० विकला यह प्रथम फलसंस्कार ऋणहै ॥

चर ९३।३९ को २ से गुणाकरा तव १८७।१८ यह हुआ. इसमें ९ का भागदिया तव २० कला ४८ विकला यह चरका ऋणहै ॥

रविके मन्दफल १ अंश ३० कला २८ विकला इसमें २७ सत्ताईसका भागदिया तव लब्धिहुई ० अं. ३ क. २१ विकला यह तृतीयफलसंस्कार और मन्दफल धन है ॥

अव ऋण

(१)-१० क. ४० वि. रा. अं. क. वि.

(२)-२० क. ४८ वि. मध्यमचन्द्र- ६ २० १० २४

जोड़-३१ क. २८ वि. इनको मध्यमचन्द्रमें ऋणकरा-ऋण ३१ २८

शेष ६. १९. ३८. ५६

६ रा. १९ अं. ३८ क. ५६ वि. इस शेषमें धन ३ क. २१ वि. को युक्तकरा तव हुए ६ रा. १९ अं. ४२ क. १७ वि. यह त्रिफल संस्कृत चन्द्र हुआ ॥

अब स्पष्ट चन्द्र लानेकी रीति लिखतेहैं—

विधोःकेन्द्रदोर्भागषष्ठोननिघ्नाः खरामाः पृथक् तन्न खांशोनितैश्च। रसाक्षैर्हतास्ते लवाद्यं फलं स्याद्रवीन्दू स्फुटौ संस्कृतौ स्तश्च ताभ्याम् ॥ २३ ॥

अन्वयः-विधोः, केन्द्रदोर्भागषष्ठोननिघ्नाः, खरामाः, पृथक्, (स्थाप्याः), तन्नखांशोनितैः, रसाक्षैः, हताः, ते, च, लवाद्यम्, फलम्, स्यात्। ताभ्याम्, च, संस्कृतौ, स्फुटौ, रवीन्दू, स्तः ॥ २३ ॥

अर्थः--चन्द्रोच्चमें त्रिफलसंस्कृत चन्द्र घटावे जो शेष बचे वह चन्द्रमाका केन्द्र होताहै, तब केन्द्रके भुजकरके उसके अंशकरे और उनमें छःका भाग देय जो लब्धि होय उसको अंशादि माने और ३० तीस अंशमें उसको घटादेय तब जो शेषरहे वह और आईहुई लब्धिको गुणाकरे जो गुणनफल होय उसमें बीसका भागदेय जो शेष बचे उसको अंशादि माने और उसको ५६ में घटावे जो शेषरहै उसमें पूर्वोक्त गुणनफलका भागदेय तब जो लब्धि हो सो अंशादिरूप चन्द्रमाका मन्द फल होताहै । वह केन्द्र मेषादि छः राशिके भीतर होय तो धन जाने, और तुलादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण जाने । तदनन्तर यदि मन्दफल ऋण होय तो त्रिफल चन्द्रमें घटा देय, और धन होय तो युक्त करदेय तब स्पष्ट चन्द्र होताहै ॥ २३ ॥

उदाहरण.

चन्द्रोच्च १० रा० १४ अं० ५४ क० ४३ वि० में त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ६ रा० १९ अं० ४२ क० १७ वि० को घटाया तब शेषरहे ३ रा० २५ अं० १२ क० २६ वि० यह केन्द्र हुआ इसको छः ६ राशिमें घटाया तब शेषरहे २ रा० ४ अं० ४७ क० ३४ वि० यह भुज हुआ अर्थात् ६४ अं० ४७ क० ३४ विकला यह अंशादि भुज हुआ इसमें ६ का भागदिया तब लब्धि हुई १० अं० ४७ क० ५५ वि० इसको ३० अंशमें घटाया तब शेषरहे १९ अं०१२क० ५वि० इसको ऊपर छः ६ का भाग देनेसे आई हुई लब्धि १० अं० ४७ क० ५५ वि० से गुणाकरा तब गुणनफल २०७अं० २० क० ५४ वि० हुआ इसमें २० का भागदिया तब लब्धि हुई १० अं० २२ क० ३ वि० इसको ५६ में घटाया तब शेषरहा ४५ अं० ३७ क० ५७ वि० इसका ऊपरोक्त गुणनफल २०७ अं० २० क० ५४ वि० में भागदेना चाहाँ तब भाजक हुआ १६४२७७ वि०/.भाज्य हुआ ७४६४५४ । भागदिया तब लब्धि हुई-४ अंश ३२ कला ३७ विकला यह मन्दफलहै, और केन्द्र मेषादि ६ राशिके भीतर है इसकारण धनहै अत एव इसको त्रिफल संस्कृत चन्द्र ६ रा० १९ अं० ४२ क० १७ वि० में युक्तकिया तब ६ रा० २४ अं० १४ क० ५४ विकला यह स्पष्ट चन्द्र हुआ॥

अब रवि और चन्द्रका गतिस्पष्टीकरण लिखतेहैं-

केन्द्रस्य कोटिलवखाश्विलवोननिघ्ना रुद्रारवेस्त्रिकुहृताः शशिनो द्विनिघ्नाः । स्वांगांशकेन सहिताश्च गतौ धनर्णं केन्द्रे कुलीरमृगषड्गते स्फुटा सा ॥ २४ ॥

अन्वयः-रुद्राः, केन्द्रस्य, कोटिलवखाश्विलवोननिघ्नाः,, (कार्य्याः)

(ते), रवेः, (चेत्, तर्हि), त्रिकुहताः, कार्य्याः, (तदा, रवेः, कलाद्यम्, गतिफलम्, स्यात्,)। (चेत्), शशिनः, (तर्हि,), द्विनिघ्नाः, (कार्य्याः, ततः), स्वाङ्गांशकेन, सहिताः, च, (कार्य्याः, तदा, चन्द्रगतेः, कलाद्यम्, फलम्, स्यात्)। कुलीरमृगपङ्कगते, केन्द्रे, गतौ, धनर्णम्, (भवतः), सा, स्फुटा, (गतिः, भवति) ॥ २४ ॥

अर्थः-रविका केन्द्र लेकर उसके भुजकरै, और भुजसे कोटि लावै, उस कोटिके अंशकरै, फिर उन अशोंमें २० का भागदेय, जो लब्धि आवै उसको अंशआदि जानै। उस लब्धिको ११ अंशमें घटावै जो शेषरहै वह और लब्धि-को परस्पर गुणा करै, तब जो गुणनफल होय उसमें १३ का भागदेय जो लब्धि आवै उसको कलादि जानै, वह कलादि रविका गतिफल होताहै, वह केन्द्र कर्कादि छः राशिके अन्तर्गत होय तौ धन और मकर आदि छः राशिके अन्त-र्गत होय तौ ऋण जानै। तदनन्तर उस गतिफलको रविकी मध्यम गतिमें धन ऋण करै तव रविकी स्पष्टगति होतीहै ॥

चन्द्रमाका केन्द्र लाकर उसके भुजकरै और तिसभुजासे कोटि लाकर उसके अंश करै. फिर उन अंशोंमें तीस ३० का भागदेय जो लब्धि मिलै उसको कलादि मानै और ग्यारह ११ कलामें घटादेय जो शेष रहै उसको लब्धिसे गुणाकरै जो गुणनफल होय उसको दो २ से गुणाकरै तब जो गुणन-फल होय उसमें छःका भागदेय जो लब्धि होय उसको उसमें युक्तकरदेय तब कलादि गतिफल होताहै. वह केन्द्र कर्कादि छः राशिके भीतर होय तौ धन और मकर आदि छः राशिके भीतर होय तौ ऋण होताहै ऐसा जानै फिर इस गतिफलको चन्द्रमाकी मध्यम गतिमें धन या ऋण करै तब चन्द्रमाकी स्पष्टगति होतीहै ॥ २४ ॥

उदाहरण.

रविकेन्द्र १ राशि १३ अंश ४६ कला १८ विकला यह तीन राशिके अ-न्तर्गतहै, इसकारण यह भुजहुआ इसको तीन ३ राशिमें घटाया तब शेष-रहा १ राशि १६ अंश १३ कला ४२ विकला यह कोटि हुई, कोटिके अंश ४६ अंश १३ कला ४२ विकला हुए इसमें २० का भागदिया तब लब्धिमिले २ अंश १८ कला ४१ विकला, इसको ग्यारह ११ अशमें घटाया तब शेषरहे ८ अंश ४१ कला १९ विकला इसको ऊपरकी लब्धि २ अंश १८ कला ४१ वि-कलासे गुणाकरा तब २० अंश ४ कला ५७ विकला हुआ, इसमें तेरह १३ का भागदिया तब लब्धिमिली १ कला ३२ विकला यह रविका गतिफल हुआ, यह केन्द्र मकर आदिछः राशिके अन्तर्गहै इसकारण ऋणहै. इसको

रविकी मध्यमगति ५९ कला ८ विकलामें घटाया तब ५७ कला ३६ विकला यह रविकी स्पष्टगति हुई ॥

चन्द्रमाका केन्द्र ३ राशि २५ अंश १२ कला २६ विकला है इसको ६ छः राशिमें घटाया तब २ राशि ४ अंश ४७ कला ३४ विकला यह भुज हुआ, इसको तीन ३ राशिमें उठाया तब शेषरहा ० राशि २५ अंश १२ कला २६ विकला यह कोटि और यही कोट्यंश हुए इसमें २० बीसका भागदिया तब लब्धि १ कला १५ विकला हुई, इसको ग्यारह११कलामें घटाया तब९ कला ४५ विकला रही इसको ऊपरकीलब्धि १ कला १५ विकलासे गुणाकरा तब १२ कला ११ विकला हुआ इसको दो २ से गुणाकरा तब २४ कला २२ विकला इसमें छः ६ का भागदिया तब ४ कला ३ धिकला लब्धिहुए इसमें ऊपरोक्त गुणनफलको युक्त करा तब २८ कला २५ विकला यह गतिफल हुआ। यह केन्द्र कर्कादि छःराशिके अन्तर्गत होनेके कारण धन है इसकारण इसको चन्द्रमाकी मध्यमगति ७९० कला ३५ विकलामें युक्त करा तब ८१९ कला ० विकला हुआ यही चन्द्रमाकी स्पष्टगति हुई ॥

अब तिथि करण नक्षत्र और योग साधनेकी रीति दो श्लोकोंमें कहतेहैं-

भक्ताव्यर्कविधोर्लवा यमकुभिर्याताऽतिथिः स्यात्फलं
शेषं यातमिदं हरात्प्रपतितं भोग्यं विलिप्तास्तयोः।
भुक्त्योरन्तरभाजिताश्च घटिकायातैष्यिकाः स्युः
क्रमात्पूर्वार्द्धेकरणं ववाद्गततिथिर्द्विघ्नाद्वितष्टा भवेत् ॥ २५॥ तत्सैकंत्वपरेदलेऽथ शकुनेः स्युः कृष्णभूतोत्तरादर्धाच्चाथ विधोश्च सार्कसितगोर्लिप्ताः खखाष्टोद्धृताः ॥ यातैस्तोभयुती क्रमाद्गगनपण्णिघ्नेगतैष्येतयोरिन्दोर्भुक्तिहृते जवैक्यविहृते यातैष्यनाड्यः क्रमात् ॥ २६ ॥

अन्वयः-व्यर्कविधोः, लवाः, (कार्य्याः, ते,) यमकुभिः, भक्ताः, (कार्य्याः), फलम्, यातातिथिः, स्यात्, । शेषम्, (अपि), यातम्। इदम्, हरात्, प्रपतितम्, भोग्यम्, स्यात्। तयोः, विलिप्ताः, भुक्त्योः- अन्तरभाजिताः, (कार्य्याः, तदा, लब्धिः), क्रमात्, यातैष्यिकाः,

घटिकाः, स्युः । द्विघ्नी, (ततः), अद्रितष्टा, गततिथिः, बवात्, तिथेः, पूर्वार्द्धे, करणम्, भवेत् । सैकम्, तु, तत्, अपरे, दले, करणम्, (स्यात्) । अथ, कृष्णभूतोत्तरार्द्धात्, च, शकुनेः, स्युः । अथ, विधोः, सार्कसितगोः, च, लिप्ताः, खखाष्टोद्धृताः, (कार्य्याः), (फलम्), क्रमात्, याते, भयुती, स्तः । तयोः, गतैष्ये, गगनपण्निघ्ने, इन्दोः, भुक्तिहृते, (ततः), जवैक्यविहृते, (तदा) क्रमात्, गतैष्यनाड्यः, (स्युः) ॥ २५ ॥ २६ ॥

अर्थ:-स्पष्टचन्द्रमें स्पष्टरविको घटादेय जो शेषरहै उसके अंश करलेय, अंशोंमें बारह १२ का भागदेय, जो लब्धिमिले सो गततिथि होतीहै । और जो शेष अंशात्मक रहै वह भुक्ततिथि अर्थात् तिथिका व्यतीत भाग होताहै । इस भुक्ततिथिको पूर्वोक्त भाजक अङ्क अर्थात् बारह १२ अंशमें घटावै जो शेषरहै सोभोग्यतिथि अर्थात् तिथिका आगामी भाग होताहै, तदनन्तर भुक्ततिथि और भोग्यतिथि दोनोंकी अलग २ विकला करलेय उन विकलाओंमें दोनों स्थानमें अलग अलग साठ ६० से गुणाकरै जो गुणनफल होय उसमें क्रमसे रवि और चन्द्रमाकी स्पष्टगतिके अन्तरकी विकलाओंका भागदेय जो लब्धिमिले उसको घटीआदि जानै अर्थात् वह क्रमसे भुक्ततिथि और भोग्य तिथिकी घटिका होतीहैं ॥

गततिथिकी संख्याको दोसे गुणाकरकै सातका भाग देय जो लब्धि मिलै उसको छोड़देय और भाग देनेसे जो शेषबचरहै उसको ग्रहणकरै वह बवकरणसे गणना करकै तिथिके पूर्वार्द्धमें करण होताहै, और उस शेषमें एक युक्तकरदेय तो वह बव करणसे गणना करकै तिथिके उत्तरार्द्धमें करण होताहै । (तदनन्तर तिथिकी भुक्त और भोग्य घटिकाआदिका योगकरै उसका आधाकरै और उस आधेमें भुक्त घटिका घटादेय जो शेषरहै सो करणकी घटिका आदि होती है । यदि तिथिकी भुक्त घटिका ३० तीस घटिकासे अधिक होय तो तिथिके भुक्त भोग्यकी घटिकाओंमेंसे भुक्तघटिका घटाकर जो शेषरहै सो करणकी घटिका होतीहै) प्रतिमास कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके उत्तरार्द्धमें शकुनि करण और अमावास्याके पूर्वार्द्धमें चतुष्पद्करण और उत्तरार्द्धमें नाग करण तथा शुक्लप्रतिपदाके पूर्वार्द्धमें किंस्तुघ्न ही करण होताहै ॥

स्पष्टचन्द्रकी कला करकै उनमें आठसौका भागदेयजो लब्धि मिलै वह गत नक्षत्र होताहै और भागदेकर जो कलादि शेष रहै वह गतनक्षत्रमें आ-

१ एक तिथिमें दोकरण होते हैं. पश्चार्द्धमें तिथि तीस ३० घड़ीसे कम होय तो उत्तरार्द्धके करणकी भोग्य घटिका लिखै. और यदि ३० घड़ीसे अधिक होय तो पूर्वार्द्धके करणकी भोग्य घटिका लिखै ॥

गेके नक्षत्रका गतभाग अर्थात् भुक्त होताहै उसको आठसौ कलामें घटावै जो शेष रहै सो भोग्य नक्षत्र अर्थात् नक्षत्रका गत भाग होताहै तदनन्तर भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्र इन दोनोंकी विकला करके प्रत्येकको साठसे गुणाकरै जो गुणनफल मिलै उसमें चन्द्र स्पष्ट गतिकी विकलाओंका भागदेय जो घटिकादि लब्धि होय वह क्रमसे भुक्त नक्षत्र और भोग्य नक्षत्रकी घटिका होतीहै ॥

स्पष्ट रवि और चन्द्रमा दोनोंके योगकी कला करकै आठसौका भागदेय जो लब्धि मिलै वह गतयोग होताहै और जो शेष कलादि बचै वह भुक्त योग अर्थात् आगेके योगका गतभाग होताहै. उसकी आठसौ कलामें घटावै जो शेष रहै यह भोग्ययोग होताहै. तदनन्तर भुक्तयोग और भोग्ययोग दोनोंकी विकलाकरके प्रत्येकको साठसे गुणाकरै जो गुणनफल होय उसमें रवि और चन्द्रकी स्पष्ट गतिके योगकी विकलाओंका भागदेय तब जो लब्धि होय वह क्रमसे भुक्तयोग और भोग्ययोगकी घटिका होतीहैं ॥ २५ ॥ २६ ॥

उदाहरण.

स्पष्टचन्द्र ६ राशि २४ अंश १४ कला ५४ विकला हैं इसमें स्पष्टरवि १ राशि ५ अंश ४२ कला ३७ विकलाको घटाया तब शेषरहा ५ राशि १८ अंश ३२ कला १७ विकला इसके अंश कर लिये तब हुये १६८ अंश ३२ कला १७ विकला अंशोंमें १२ का भागदिया तब लब्धिहुई १४ यही गततिथि हुई शेष बचा० अंश ३२ कला १७ विकला यह भुक्त पूर्णिमा हुई इसको १२ अंशमें घटाया तब शेषरहे ११ अंश २७ कला ४३ विकला यह भोग्य पूर्णिमाहै। अब भुक्त तिथि (पूर्णिमा) ३२ कला १७ विकलाकी विकला करीं तब १९३७ विकला हुई इनको ६० से गुणाकरा तब ११६२२० हुए इनमें चन्द्रमाकी स्पष्टगति ८१९ कला ० विकला और रविकी स्पष्टगति ५७ कला ३६ विकला इन दोनों स्पष्टगतियोंका अन्तर करा तब ७६१ कला २४ विकला अर्थात् ४५६८४ विकला इनका भाग दिया तब लब्धि हुई २ घटिका ३२ पल यह पूर्णिमाकी भुक्त घटिका हुई। फिर भोग्य तिथि ११ अंश २७ कला ४३ विकला इसकी विकलाकरी तब ४१२६३ हुई इनको ६० से गुणा करा तब २४७५७८० हुए इसमें चन्द्र सूर्य्यकी स्पष्टगतिके अन्तररूपी विकलाओं ४५६८४ का भागदिया तब लब्धि हुई५४घटिका ११ पल यह पूर्णिमाकी भोग्य घटिका हुई ॥

गततिथि १४ को २ से गुणा करा तब २८ हुए इसमें ७ का भागदिया तब ०शेष रहा इसकारण पूर्णिमाके पूर्वार्द्धमें भद्राकरण और उत्तरार्द्धमें बव करण है फिर तिथिकी भुक्त घटिका २ घ० ३२ प० और भोग्य घटिका ५४ घ०

११ प० का योग करा तव ५६ घ० ४३ प० हुआ इसका आधा करा तव २८ घ० २१ प० इसमें भुक्त तिथि २ घ०३२ प० घटाया तव शेषरहा २५ घ० ४९ प० यह भद्रा करणकी घटिका हुई ॥

स्पष्ट चन्द्र ६ राशि २४ अंश १४ कला ५४ विकला अर्थात् १२२५४ कला ५४ विकलामें ८०० का भाग दिया तब लब्धि मिले १५ यह गत नक्षत्र अर्थात् स्वाती हुआ और शेष बचे २५४ कला ५४ विकला यह आगेके नक्षत्र अर्थात् विशाखा नक्षत्रका गत भागहै इसको ८०० कलामें घटाया तब शेष बचे५४५ कला ६ विकला यह विशाखा नक्षत्रका भोग्य भागहै। अब भुक्त विशाखा नक्षत्र २५४ कला ५४ विकलाकी विकला १५२९४ को ६० से गुणाकरा तब ९१७६४० इसमें चन्द्र स्पष्ट गति ८१९ कला ०० विकला की विकला ४९१४० का भाग दिया तब लब्धि हुई १८ घ० ४० प० यह विशाखा नक्षत्रकी भुक्त घटी हुई। फिर भोग्य विशाखा नक्षत्र ५४५ कला ६ विकला की विकला ३२७०६ को ६० से गुणाकरा तब १९६२३६० हुए इसमें चन्द्र स्पष्ट गतिकी वि कलाओं ४९१४० का भाग दिया तब लब्धि हुई ३९ घ० ५६ प० यह विशाखा नक्षत्रकी भोग्य घटिका हुई ॥

स्पष्ट रवि १ राशि ५ अंश ४२ कला ३७ विकला और स्पष्ट चन्द्र ६ राशि २४ अंश १४ कला ५४ विकला इनका योग करा तब ७ राशि २९ अंश ५७ कला ३१ विकला हुआ इस योगकी कला करी तब १४३९७ कला ३१ विकला हुई इनमें ८०० का भाग दिया तब लब्धि हुई १७ यह गत योग अर्थात् व्यतीपात योग आया और शेष बचा ७९७ कला ३१ विकला यह आगेके योग अर्थात् वरीयान् योगका भुक्त भागहै इसको ८०० कलामें घटाया तब शेषबचा २ कला २९ विकला यह वरीयान् योगका भोग्य भागहै। फिर भुक्त योग ७९७ क० ३१ वि० की विकला करीं ४७८५१ इनको ६० से गुणा करा तब २८७१०६० हुए इसमें रवि और चन्द्रकी स्पष्टगतिके योगकी विकलाओं ५२५९६ का भाग दिया तब लब्धि हुई ५४ घ० ३५ प० यह वरीयान् योगके भुक्त कालकी घटी हुई। फिर वरीयान् योगके भोग्य २ क० २९ वि० की १४९ विकलाओंको ६० से गुणा करा तब ८९४० हुए इसमें चन्द्र और रविकी स्पष्ट गतिके योगकी विकलाओं ५२५९६ का भाग दिया तब लब्धि मिली ० घटी १० पल यह वरीयान् योगकी भोग्य घटिकादि हुई ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबाद-वास्तव्यगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा विरचितया विस्तृतोदाहरणसनाथीकृतयान्वयसमन्वितया भाषाव्याख्यया सहितः स्पष्टाधिकारः समाप्तिमितः ॥ २ ॥

अथ पञ्चतारास्पष्टीकरणाधिकारो व्याख्यायते ।

तहाँ प्रथम पञ्चतारा अर्थात् मङ्गल बुध गुरु शुक्र और शनिके शीघ्राङ्क कहते हैं-

खमष्टमरुतोऽद्रिभूभुव उदध्यगोर्व्योऽष्टदृग्दृशो नव-
नगाश्विनोऽक्षदशनाः शराङ्गाग्नयः । गुणाङ्कदहनाः
खखाब्धय इभाङ्गरामाः क्रमान्नवाम्बुधिदृशो नभः
क्षितिभुवश्चलाङ्का इमे ॥ १ ॥

अन्वयः—खम्, अष्टमरुतः, अद्रिभूभुवः, उदध्यगोर्व्यः, अष्टदृग्दृशः, नवनगाश्विनः, अक्षदशनाः, शराङ्गाग्नयः, गुणाङ्कदहनाः, खखाब्धयः, इभाङ्गरामाः, नवाम्बुधिदृशः, नभः, इमे, क्रमात्, क्षितिभुवः, चलाङ्काः, (सन्ति) ॥ १ ॥

अर्थः—खम् कहिये शून्य ०, अष्ट कहिये आठ और मरुत् कहिये पाँच अर्थात् अठावन ५८, और अद्रि कहिये सात भू कहिये एक और भू कहिये एक अर्थात् एकसौ सतरह ११७, और उदधि कहिये चार अग कहिये सात ऊर्वी कहिये एक अर्थात् एकसौ चौहत्तर १७४, और अष्ट कहिये आठ दृक् कहिये दो और दृक् कहिये दो अर्थात् दोसौ अट्ठाईस २२८, और नव कहिये नौ नग कहिये सात अश्विन् कहिये दो अर्थात् दोसौउन्नासी २७९, और अक्ष कहिये पाँच दशन कहिये बत्तीस अर्थात् तीनसौ पच्चीस ३२५, और शर कहिये पाँच अङ्ग कहिये छः अग्नि कहिये तीन अर्थात् तीनसौपैंसठ ३६५, और गुण कहिये तीन अङ्क कहिये नौ दहन कहिये तीन अर्थात् तीनसौतिरानवे ३९३, और ख कहिये शून्य पुनः ख कहिये शून्य अब्धि कहिये चार अर्थात् चारसौ ४००, और इभ कहिये आठ अङ्ग कहिये छः राम कहिये तीन अर्थात् तीनसौ अड़सठ ३६८, और नव कहिये नौ अम्बुधि कहिये चार दृक् कहिये दो अर्थात् दोसौउनन्चास २४९, और नभ कहिये शून्य ०, यह क्रमसे भौमके शीघ्राङ्क है ॥ १ ॥

खं भूकृताः कुवसवोऽद्रिभवाः खतिथ्योऽष्टाद्रीन्दवो
नवनवक्षितयोऽङ्कपक्षाः । अर्काश्विनः शरखग
क्षितयोऽक्षतिथ्यो गोष्टौ खमाशुफलजाः स्युरिमे
विदोऽङ्काः ॥ २ ॥

अन्वयः-खम्, भूकृताः, कुवसवः, अद्रिभवाः, खतिथ्यः, अष्टाद्रीन्दवः, नवनवक्षितयः, अर्कपक्षाः, अर्काश्विनः, शरखगक्षितयः, अक्षतिथ्यः, गोष्टौ, खम्, इमे, विदः, आशुफलजाः, अङ्काः, स्युः ॥ २॥

अर्थः-खकहिये शून्य०, और भूकहिये एक कृत कहिये चार अर्थात् एकतालीस ४१, और कुकहिये एक वसुकहिये आठ अर्थात् इक्यासी ८१, और अद्रि कहिये सात भव कहिये ग्यारह अर्थात् एकसौसतरह११७,और खकहिये शून्य तिथि कहिये पन्दरह अर्थात् एकसौपच्चास १५०, और अष्ट कहिये आठ अद्रि कहिये सात इन्दु कहिये एक अर्थात् एकसौअठत्तर १७८, और नव कहिये नौ नव कहिये नौ क्षिति कहिये एक अर्थात् एकसौनिन्यानवे १९९, और अर्क कहिये बारह पक्ष कहिये दो अर्थात् दोसौबारह २१२, और अर्क कहिये बारह अश्विन् कहिये दो अर्थात् दोसौ २१२, और शर कहिये पाँच खग कहिये नौ क्षिति कहिये एक अर्थात् एकसौपिचानवे १९५, और अक्ष कहिये पाँच तिथि कहिये पन्दरह अर्थात् एकसौपचपन १५५, और गोष्ट कहिये नौवासी ८९, और खकहिये शून्य०, यह (क्रमसे) बुधके शीघ्राङ्क हैं॥२॥

खं तत्वानि नगाब्धयोऽष्टषट्काः पञ्चेभा गजखेचरा रसाशा नागाशा द्विदिशो नवाहयः षट्षष्टिः षट्क-गुणा नभो गुरोः स्युः ॥ ३ ॥

अन्वयः-खम्, तत्वानि, नगाब्धयः, अष्टषट्काः, पञ्चेभाः, गजखेचराः, रसाशाः, नागाशाः, द्विदिशः, नवाहयः, षट्षष्टिः, षट्कगुणाः, नभः, (इमे), गुरोः, (आशुफलजाः, अङ्काः,) स्युः, ॥ ३॥

अर्थः-खम् कहिये शून्य०, और तत्व कहिये पच्चीस २५, और नग कहिये सात अब्धि चार अर्थात् सैंतालीस४७,और अष्टषट्क कहिये अड़सठ६८,और पञ्च कहिये पाँच इभ कहिये आठ अर्थात् पिचासी८५, और गज कहिये आठ खेचर कहिये नौ अर्थात् अठानवे ९८, और रस कहिये छः आशा कहिये दश अर्थात् एकसौ छः १०६, और नाग कहिये आठ आशा कहिये दश अर्थात् एकसौआठ१०८, और द्वि कहिये दो दिश् कहिये दश अर्थात् एकसौदो १०२, और नव कहिये नौ अहि कहिये आठ अर्थात् नौवासी ८९, और षट्षष्टि कहिये छासठ ६६, और षट्क कहिये छः गुण कहिये तीन अर्थात् छत्तीस३६, और नभ कहिये शून्य०, यह क्रमसे गुरुके शीघ्राङ्क हैं ॥ ३ ॥

खमग्न्यङ्गैस्तुल्या रसयमभुवः षट्कधृतयोऽरिसिद्धाः
पक्षाभ्राग्नय उदधिनाराचदहनाः। द्विशून्योदन्वन्तः
खजलधिकृता भूरसकृतास्त्रिवेदोदन्वन्तो रसयम-
गुणाः खं भृगुजनेः ॥ ४ ॥

अन्वयः-खम्, अग्न्यङ्गैः, तुल्याः, (अङ्काः), रसयमभुवः, षट्कधृतयः,अरिसिद्धाः, पक्षाभ्राग्नयः, उदधिनाराचदहनाः,द्विशून्योदन्वन्तः, खजलधिकृताः,भूरसकृताः,त्रिवेदोदन्वन्तः,रसयमगुणाः,खम्, (इमे,) भृगुजनेः, (अङ्काः, स्युः,) ॥ ४ ॥

अर्थः-खकहिये शून्य०, और अग्नि कहिये तीन अङ्ग कहिये छः इनकी तुल्य जो अङ्क अर्थात् तिरेसठ ६३ , और रस कहिये छः यम कहिये दो भूकहिये एक अर्थात् एकसौछब्बीस १२६ , और षट्क कहिये छः धृति कहिये अठारह अर्थात् एकसौछियासी १८६ , और अरि कहिये छः सिद्ध कहिये चौवीस अर्थात् दोसौछियालीस २४६ , और पक्ष कहिये दो अभ्र कहिये शून्य अग्नि कहिये तीन अर्थात् तीनसौदो ३०२, और उदधि कहिये चार नाराच कहिये पाँच दहन कहिये तीन अर्थात् तीनसौ चौअन ३५४, और दो शून्य तथा उदन्वत् कहिये चार अर्थात् चारसौ दो ४०२, और खकहिये शून्य जलधि कहिये चार कृत कहिये चार अर्थात् चारसौ चालीस ४४०, और भूकहिये एक रस कहिये छः कृत कहिये चार अर्थात् चारसौ इकसठ ४६१, और त्रिकहिये तीन वेद कहिये चार उदन्वत् कहिये चार अर्थात् चारसौ तेतालीस ४४३, और रसकहिये छः यम कहियें दो गुण कहिये तीन अर्थात् तीनसौ छब्बीस ३२६, और खकहिये शून्य ०, यह क्रमसे शुक्रके शीघ्राङ्क हैं ॥ ४ ॥

खमिषुक्षितयोगजाश्विनो गोदहना नागकृताः पयो-
धिबाणाः। द्विरगेषुमिता हुताशबाणाः शरवेदास्त्रि-
गुणा धृतिः खमार्कैः ॥ ५ ॥

अन्वयः-खम्, इषुक्षितयः, गजाश्विनः, गोदहनाः, नागकृताः, पयोधिबाणाः, द्विः, अगेषुमिताः, हुताशबाणाः, शरवेदाः, त्रिगुणाः, धृतिः, खम्, (इमे), आर्केः, (अङ्काः, स्युः,) ॥ ५ ॥

अर्थः—खम् कहिये शून्य ०, और इषुकहिये पाँच क्षिति कहिये एक अर्थात् पन्द्रह १५, और गज कहिये आठ अश्विन् कहिये दो अर्थात् अठाईस २८, और गो कहिये नौ दहन कहिये तीन अर्थात् उनतालीस ३९, और नाग-कहिये आठ कृत कहिये चार अर्थात् अड़तालीस ४८, और पयोधि कहिये चार वाण कहिये पाँच अर्थात् चौअन ५४, और दोवार अगकहिये सातऔर इषुकहिये पाँच अर्थात् सत्तावन ५७, सत्तावन ५७, और हुताश कहिये तीन वाण कहिये पाँच अर्थात् तरेपन ५३, और शरकहिये पाँच वेद कहिये चार अर्थात् पैंतालीस ४५, और त्रि कहिये तीन गुण कहिये तीन अर्थात् तेंतीस ३३, और धृतिः कहिये अठारह १८, खम् कहिये शून्य ०, यह शनिके शीघ्राङ्क हैं ॥ ५ ॥

उपरोक्त पाँचों श्लोकोंमें कहे हुए पाँचों ग्रहोंके शीघ्राङ्क स्पष्टरीतिसे नीचे कोठेमें लिखतेहैं—

नाम	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मङ्गल	०	५८	११७	१७४	२२८	१७९	३२५	३६५	३९३	४००	३६८	२४९	०
बुध	०	४१	८१	११७	१५०	१७८	१९९	२१२	२१२	१९५	१५५	८९	०
गुरु	०	२५	४७	६८	८५	९८	१०६	१०८	१०२	८९	६६	३६	०
शुक्र	०	६३	१२६	१८६	१४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४३	३२६	०
शनि	०	१५	२८	३९	४८	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८	०

अब शीघ्रफल साधनेकी रीति लिखतेहैं—

भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः स्यात्स्वाशुकेन्द्रंतु विद्भृग्वोरुक्तमिदं रसोर्ध्वमिनभाच्छुद्धं तदंशा दिनैः। भक्ताः खादिफलं क्रमादिहगताङ्कोऽसौ क्षयद्धर्या हताच्छेषाद्वाणकुलब्धिहीनयुगयं दिग्हल्लवाद्यं फलम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—भौमार्कीज्यविहीनमध्यमरविः, स्वाशुकेन्द्रम्, स्यात्, विद्भृग्वोः, तु, उक्तम्, इदम्, रसोर्ध्वम्, (चेत्), इनभात्, शुद्धम्, (कार्य्यम्), तदंशाः, दिनैः, भक्ताः, (सन्तः), इह, क्रमात्, खादिफलम्, गताङ्कः, (भवेत्), असौ, क्षयद्धर्या, हतात्, शेषात्, वाणकुलब्धियुक्, (कार्य्यः), असौ, दिग्घृत्, लवाद्यम्, फलम्, (भवति) ॥ ६ ॥

अर्थः-मध्यमे रविमें मध्यमग्रह (मङ्गल, गुरु, अथवा शनि) घटादेय जो शेषरहै वह तिसतिसग्रह (मङ्गल, गुरु, तथा शनि) का शीघ्र केन्द्र होताहै। मध्यम बुध और मध्यम शुक्र इनके केन्द्र पहले मध्यम ग्रह साधनेके समय कहचुकेहैं। अभीष्टग्रहका यह केन्द्र यदि छः राशिकी अपेक्षा अधिक होय तौ उसको बारहराशिमें घटादेय जो शेषरहै उसके अंशकरलेय उन अंशोंमें पन्द्रहका भागदेय जो लब्धि होय तत्परिमित ग्रहके पहले कहेहुए शीघ्राङ्क ग्रहणकरे और उस लब्धिमें एकमिलाकर जो अङ्कहो तत्परिमित ग्रहके शीघ्राङ्क ग्रहण करे, तदनन्तर इन दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर करे जो शेष बचे उससे ऊपरकी अंशात्मक बाकीको गुणाकरदेय तब जो गुणनफल होय उसमें पन्द्रहका भागदेय जो अंशादि लब्धिमिलै उसको यदि प्रथम ग्रहण करे हुए शीघ्राङ्ककी अपेक्षा दुसरा शीघ्राङ्क अधिक होय तौ प्रथम शीघ्राङ्कमें युक्त कर देय और यदि प्रथम शीघ्राङ्ककी अपेक्षा दूसरा शीघ्राङ्क कमती होय तौ प्रथम शीघ्राङ्कमें घटादेय और उसमें दशका भागदेय जो लब्धि मिलै वह अंशादि शीघ्रफल होताहै वह यदि मेषादि केन्द्र छःराशिके अन्तर्गत होय तौ धन होताहै और तुलादि केन्द्र छः राशियोंके अन्तर्गत होय तौ ऋण होताहै॥६॥

अब मन्दफल साधनेके निमित्त भौमादिके मन्दाङ्क कहतेहैं-

खङ्गाश्विनोऽद्रिमरुतोऽक्षगजा नवाशाः सिद्धेन्दवः
खदहनाक्षितयोऽसृजोऽङ्काः॥ मान्दा बुधस्य खमिनाः
कुदृशोऽष्टपक्षा देवाः शरानलमिता रसवह्नयः स्युः
॥ ७ ॥ खेन्द्रक्षाणि नवाग्नयोऽब्धिदधयोक्षाक्षा नगाक्षा
गुरोः शुक्रस्याभ्ररसेशावसुवेमनवो द्विबाणचन्द्राः
क्रमात्। खङ्गोऽब्जाः खकृताः खपञ्चनगनगा गोष्टौ
त्रिनन्दाः शनेः शुद्धोऽब्ध्याद्रिषडग्निनागगृहतः
स्यान्मन्दकेन्द्रं कुजात् ॥ ८ ॥

अन्वयः-खम्, गोऽश्विनः, अद्रिमरुतः, अक्षगजाः, नवाशाः, सिद्धेन्दवः, खदहनक्षितयः, (एते), असृजः, मान्दाः, अङ्काः, स्युः,। खम्, इनाः, कुदृशः, अष्टपक्षाः, देवाः, शरानलमिताः, रसवह्नयः, (एते), बुधस्य, (मान्दाः, अङ्काः, स्युः)। ख-इन्द्र-ऋक्षाणि, नवाग्नयः,

अब्धुदधयः, अक्षाक्षाः, नवाशाः, (एते), गुरोः, (मान्दाः, अङ्काः, स्युः)। अभ्र-रस-ईश-विश्व-मनवः, द्विः-बाणचन्द्राः, (एते), क्रमात्, गुरोः, (मान्दाः, अङ्काः, स्युः)। खम्, गोब्जाः, खकृताः, खषट्, नगनगाः, गोष्टौ, त्रिनन्दाः,(एते)शनेः, (मान्दाः, अङ्काः, स्युः)। अब्ध्यद्रिषड्ग्निनागग्रहतः, शुद्धः, कुजात्, मन्दकेन्द्रम्, स्यात् ॥ ७ ॥ ८ ॥

अर्थः-खम् कहिये शून्य ०, और गो कहिये नौ अश्विन् कहिये दो अर्थात् उनतीस २९, और अद्रिकहिये सात मरुत् कहिये पाँच अर्थात् सत्तावन ५७, और अक्ष कहिये पाँच गज कहिये आठ अर्थात् पिचासी ८५, और नव कहिये नौ आशा कहिये दश अर्थात् एकसौ नौ १०९, और सिद्ध कहिये चौवीस इन्दु कहिये एक अर्थात् एकसौ चौवीस १२४, और खकहिये शून्य दहन कहिये तीन क्षिति कहिये एक अर्थात् एकसौ तीस १३०, यह भौमके मन्दाङ्क हैं। खम् कहिये शून्य ०, और इन कहिये बारह १२, और कुकहिये एक दृश् कहिये दो अर्थात् इकीस २१, और अष्ट कहिये आठ पक्ष कहिये दो अर्थात् अट्ठाईस २८, और देव कहिये तेंतीस ३३, और शरकहिये पाँच अनल कहिये तीन अर्थात् पैंतीस ३५, और रस कहिये छः वह्नि कहिये तीन अर्थात् छत्तीस ३६, यह बुधके मन्दाङ्क हैं। खकहिये शून्य ०, और इन्द्रकहिये चौदह १४, और ऋक्ष कहिये सत्ताईस २७, और नव कहिये नौ अग्नि कहिये तीन अर्थात् उनतालीस ३९, और अहिकहिये आठ उदधि कहिये चार अर्थात् अड़तालीस ४८, और अक्ष कहिये पाँच अक्ष कहिये पाँच अर्थात् पचपन ५५, और नग कहिये सात अक्ष कहिये पाँच अर्थात् सत्तावन ५७, यह गुरुके मन्दाङ्क हैं। अभ्रकहिये शून्य ०, और रस कहिये छः ६, और ईश कहिये ग्यारह ११, और विश्व कहिये तेरह १३, और मनुकहिये चौदह १४, और दो वार बाण कहिये पाँच चन्द्र कहिये एक अर्थात् पन्द्रह १५, और पन्द्रह १५, यह शुक्रके मन्दाङ्क हैं। खम् कहिये शून्य ०, और गो कहिये नौ अब्ज कहिये एक अर्थात् उन्नीस १९, और खकहिये शून्य कृत कहिये चार अर्थात् चालीस ४०, और खकहिये शून्य षट् कहिये छः अर्थात् साठ ६०, और नग कहिये सात नग कहिये सात अर्थात् सततर ७७, और गो कहिये नौ अष्टौ कहिये आठ अर्थात् नौवासी ८९, और त्रिकहिये तीन नन्द कहिये नौ अर्थात् तिरानवे ९३, यह शनिके मन्दाङ्क हैं॥

यह पाँचों ग्रहोंके मन्दाङ्क स्पष्टरीतिसे नीचे कोठेमें लिखतेहैं-

नाम	०	१	२	३	४	५	६
मङ्गलकेमन्दाङ्क	०	२९	५७	८५	१०९	१२४	१३०
बुधकेमन्दाङ्क	०	१२	२१	२८	३३	३५	३६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अब्धि कहिये चार ४ राशि भौमका मन्दोच्च होताहै, अद्रि कहिये सात ७ राशि बुधका मन्दोच्च होताहै, छः ६ राशि गुरुका मन्दोच्च होताहै, अग्नि कहिये तीन ३ राशि शुक्रका मन्दोच्च होताहै, और नाग कहिये आठ ८ राशि शनिका मन्दोच्च होताहै। इनमेंसे यथेष्ट किसी ग्रहका मन्दोच्च ग्रहण करके शीघ्रफलदल स्पष्टग्रहमें घटादेय तब जो शेषरहै वह उसी ग्रहका मन्दकेन्द्र होताहै ॥ ७ ॥ ८ ॥

अब भौमादि ग्रहोंका मन्दफल साधनकी रीति लिखतेहैं-

मृदुकेन्द्रभुजांशका दिनाप्ताः फलमङ्कः प्रगतस्त दूनितैष्यः। परिशेषहतो दिनाप्तियुक्तो दशभक्तः फलमंशकादि मान्दम् ॥ ९ ॥

अन्वयः-मृदुकेन्द्रभुजांशकाः, दिनाप्ताः, (कार्य्याः, तदा, यत्,), फलम्, (तन्मितः), प्रगतः, अङ्कः, (स्यात्)। तदूनितैष्यः, परिशेषहतः, (तस्मात्), दिनाप्तियुक्तः, (ततः), दशभक्तः, (कार्यः, तदा), अंशकादिं, मान्दम्, फलम्, (भवति) ॥ ९ ॥

अर्थः-किसी अभीष्ट ग्रहके मन्दकेन्द्रके भुजकरै, और उन भुजोंके अंशाकरकै पन्द्रहका भागदेय जो लब्धि मिलै तत्परिमित ग्रहके पहले कहे हुए मन्दाङ्क ग्रहण करै और उस लब्धिमें एक मिलाकर जो अङ्क होय तत्परिमित ग्रहके मन्दाङ्क ग्रहण करके द्वितीय मन्दाङ्कमें प्रथम मन्दाङ्कको घटादेय जो शेषरहै उससे ऊपरकी अंशादि बाकीको गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें पन्द्रहका भागदेय जो लब्धि होय उसको प्रथम मन्दाङ्कमें युक्तकरके दशका भागदेय तब जो अंशादि लब्धिहोय सो मन्दफल होताहै ॥ यह मन्दफल मन्द केन्द्र मेषादि छः राशिके भीतर होय तो धन होताहै और तुलादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण होताहै ॥ ९ ॥

शीघ्रफल और मन्दफलका ग्रहमें किसप्रकार संस्कार करना चाहिये सो दिखातेहैं—

प्राङ्मध्यमे चलफलस्य दलं विदध्यात्तस्माच्च मान्दमखिलं विदधीत मध्ये। द्राक्केन्द्रकेऽपि च विलोममतश्च शीघ्रं सर्वं च तत्र विदधीत भवेत्स्फुटोऽसौ॥१०॥

अन्वयः—प्राक्, चलफलस्य, दलम्, मध्यमे, विदध्यात्, । तस्मात्, मान्दम्, (फलम्, साध्यम्), (तत्), अखिलम्, मध्ये, विदधीत, । अपिच, (तत्), द्राक्केन्द्रके, विलोमम्, (विदध्यात्), । अतः, शीघ्रम्, (साध्यम्, तत्), सर्वम्, तत्र, विदधीत, असौ, स्फुटः, भवेत् ॥ १० ॥

अर्थः—पहले शीघ्रफलका आधा करके उसको उक्तरीतिके अनुसार अहर्गणोत्पन्न मध्यमग्रहमें धन करदेय अथवा ऋण करदेय। तव जो राश्यादि आवे उससे मन्दफल साधै उस सम्पूर्ण मन्दफलको अहर्गणोत्पन्न मध्यम ग्रहमें पूर्वोक्त रीतिके अनुसार ऋण करदेय अथवा धन करदेय। और उस मन्द फलको द्राक्केन्द्रमें विपरीतरीतिसे धन और ऋणकरै अर्थात् धनके स्थानमें ऋणकरै और ऋणके स्थानमें धन करै तब जो मन्दफल संस्कृत द्राक्केन्द्र (शीघ्रकेन्द्र) होय उससे शीघ्रफल साधै उस साधे हुए सम्पूर्ण शीघ्रफलको मन्दफल युक्त मध्यम ग्रहमें युक्त करदेय तव वह ग्रह स्पष्ट होताहै ॥ १० ॥

उदाहरण.

प्रथम भौमको स्पष्ट करते हैं तहाँ पहले " भौमार्कीज्येत्यादि " छठे श्लोकमें कही हुई रीतिके अनुसार मध्यम रवि १ राशि ४ अंश १३ कला ४२ विकलामें मध्यम मङ्गल ९ राशि २९ अंश ५५ कला १३ विकलाको घटाया तव शेष रहा ३ राशि ४ अंश १८ कला २९ विकला यह मङ्गलका शीघ्रकेन्द्र हुआ इसके अंश करे तब ९४ अंश १८ कला २९ विकला हुए इसमें १५ का भागदिया तव लब्धि हुए ६ शून्य आदि क्रमसे मङ्गलका छठा शीघ्राङ्क हुआ ३२५ उस लब्धिमें एक और मिलाया तव मङ्गलका सातवां शीघ्राङ्क हुआ ३६५ इन दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर हुआ ४० इससे (पन्दरहका भाग देनेसे बाकी बची हुई) लब्धि ४ अंश १८ कला २९ विकलाको गुणाकरा तव १७२ अंश १९ कला २० विकला इसमें १५ का भागदिया तव लब्धि हुई ११ अंश २९ कला १७ विकला इसको द्वितीय शीघ्राङ्कके अधिक होनेके कारण प्रथम शीघ्राङ्क ३२५ में युक्त करा तब ३३६ अंश २९ कला १७ विकला हुआ इसमें १०

का भागदिया तब लब्धि हुई ३३ अंश ३८ कला ५५ विकला इसको आधा करा तब १६ अंश ४९ कला २७ विकला हुआ यह मेषादि छः के अन्तर्गत है इस कारण यह धन है सो इसको मध्यम मङ्गल ९ राशि २९ अंश ५५ कला १३ विकलामें युक्त करा तब १० राशि १६ अंश ४४ कला ४० विकला यह फलार्द्ध संस्कृत भौम हुआ। अब मन्दफल लानेके निमित्त भौमके मन्दोच्च ४ राशिको फलार्द्ध संस्कृत भौम १०.रा० १६अं० ४४ क० ४० वि० में घटाया तब शेषरहा ५ रा० १३ अं० १५ क० २० वि० इसके भुज करके अंश करे तब हुए ० रा० १६ अं० ४४ क० ४० वि० इसमें १५ का भागदिया तब लब्धि हुई १ और शेष रहा १ अं० ४४ क० ४०वि० लब्धि १ परिमित मङ्गलके मन्दाङ्क२९को एकाधिकमन्दाङ्क ५७ में घटाया तब शेषरहा २८ इससे शेष १ अंश ४४ कला ४० विकलाको गुणाकरा तब ४८ अंश ५० कला ४०विकला हुए इसमें १५ का भागदिया तब लब्धि हुई ३ अंश १५ कला २२ विकला इसमें प्रथम मन्दाङ्क २९ को युक्त करा तब ३२ अंश १५ कला २२ विकला हुए इसमें १० का भागदिया तब लब्धि हुई ३ अंश १३ कला ३२ विकला यह मन्दफल हुआ यह मेषादि छः राशिके अन्तर्गत है इस कारण धन है इस कारण इसको मध्यम मङ्गल ९ राशि २९ अंश ५५ कला १३ विकलामें युक्त करा तब १० राशि ३ अंश ८ कला ४५ विकला यह मन्द स्पष्ट भौम हुआ। फिर द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले शीघ्रकेन्द्र ३ राशि ४ अंश १८ कला २९ विकला इसमें मन्दफल ३ अं०१३ क० ३२ वि० को(शीघ्रकेन्द्रमें विपरीत रीति होती है अर्थात् मेषादि छः राशिके भीतर होय तो ऋण और तुलादिछः राशिके भीतर होय तो धन होता है इस कारण) घटाया तब३राशि१अंश४कला५७विकला शेषरहा यह छः राशिसे कम है इस कारण इसके अंश करे तब ९१ अं० ४ कला ५७ विकला यह हुआ इसमें १५ का भागदिया तब लब्धि हुई ६ इस भागाकार परिमित भौमका शीघ्राङ्क हुआ ३२५ और एक मिलाकर लब्धि ७ परिमित भौमका शीघ्राङ्क हुआ ३६५ इन दोनोंका अन्तर करनेसे शेषबचे ४० इससे ऊपरके अंशादि १अं० ४क० ५७ वि० शेष अङ्कोंको गुणाकरा तब४३ । १८ । ० । यह अंशादि अङ्क हुए इनमें १५ का भागदिया तब लब्धि हुई २ । ५३ । १२ इसको प्रथम शीघ्राङ्क ३२५ में युक्त करा तब३२७ । ५३ । १२ हुए इसमें दशका भागदिया तब ३२ । ४७ । १९ यह द्वितिय शीघ्रफल हुआ यह मेषादि है इसकारण धन है, सो इसको मन्द स्पष्ट मङ्गल १० रा० ३ अं० ८ क० ४५ वि० में युक्त करा तब ११ रा० ५ अं० ५६ क० ४ वि० यह स्पष्ट मङ्गल हुआ॥

अथ बुधस्पष्टीकरण.

तहाँ प्रथम शीघ्रफलदलस्पष्ट बुध लानेके निमित्त "भौमार्कीज्येत्यादि" रीतिके अनुसार पूर्वोक्त बुधकेन्द्र १ रा० १७ अं० १४ क० ५० विकला छः

राशिसे अल्प है इस वास्तै इसको अंशात्मक करा तव ४७ अं० १४ क० ५० वि० हुआ इसमें १५का भागदिया तब लब्धि मिली ३ और शेष बचा २अं० १४क० ५ वि०। लब्धि ३ परिमित बुधका शीघ्राङ्क हुआ ११७ और एकाधिक लब्धि ४ परिमित अर्थात् बुधका चौथा शीघ्राङ्क हुआ १५० इन दोनोंका अन्तर हुआ ३३ इससे शेष २ अं० १४ क० ५० वि०को गुणाकरा तवं गुणनफल हुआ ७४ अं० ९ क० ३० वि० इसमें १५का भागदिया तब लब्धि हुई ४ अं० ५६ क० ३८विकला। अब प्रथम शीघ्राङ्क ११७की अपेक्षा द्वितीय शीघ्राङ्क १५० अधिक है इसकारण प्रथम शीघ्राङ्क ११७ में लब्धि ४ अं० ५६ क० ३८ वि० को युक्त करा तव १२१अं० ५६ क० ३८ वि० हुआ इसमें १०का भागदिया तब १२ अं० ११क० ३९ वि० लब्धि हुई यही शीघ्र फल हुआ यह केन्द्रमेषादि छः राशिसे अल्प है इस कारण धनमानकर शीघ्रफलके अर्द्ध ६ अं० ५ क० ४९ वि० इसको मध्यम बुध १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त करदिया तब १ रा० १० अं० १९ क० ३१ वि० यह शीघ्रफलदल स्पष्ट बुध हुआ॥

अब मन्दफल लानेके निमित्त बुधके मन्दोच्च ७ रा० ० अं० ० क० ० वि० में शीघ्रफलदल स्पष्ट बुध १रा० १०अं० १९क० ३१वि०को घटाया तब शेषरहा ५रा० १९अं० ४०क० २९वि० यह बुधका मन्द केन्द्र हुआ। इसके भुज करके अंश करे तब १० अं० १९ क० ३१ विकला हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि मिली० शेषरहा १०अं० १९क०३१वि० लब्धि० परिमित बुधका मन्दाङ्क ० और एकाधिक लब्धि १ परिमित बुधका मन्दाङ्क १२ इन दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर हुआ १२ इससे शेष १० अं० १९ क० ३१ को गुणा करा तब गुणनफल हुआ १२३ अं० ५४ क० १२ वि० इसमें १५ का भागदिया तव लब्धि हुई ८ अंश १५ क० ३६ वि० इसमें प्रथम मन्दाङ्कको युक्त करा तव ८अं० १५ क० ३६ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अं० ४९ क० ३३ वि० यह अंशादि मन्दफल हुआ यह केन्द्र मेषादिहीनेके कारण धन है सो इसको मध्यम बुध १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में युक्त करा तब १ रा० ५ अं० ३ क० १५ वि० यह मन्द स्पष्ट बुध हुआ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले साधेहुए शीघ्रकेन्द्र १ रा० १७ अं० १४ क० ५० वि० मे मन्दफल ० अं० ४९ क० ३३ वि० को घटाया तब शेष रहा १ रा० १६ अं० २५ क० १७ वि० यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ यह मेषादि छः राशिसे अल्पहै इसकारण इसको अंशादि करा तब ४६ अं० २५ क० १७ वि० हुआ इसमें १५का भाग दिया तव लब्धि हुई ३ शेषरहे १ अं० २५ कला १७ वि०। अव लब्धि ३ परिमित बुधका शीघ्राङ्क मिला ११७ और एकाधिकलब्धि ४ परिमित शीघ्राङ्क हुआ १५० इन दोनों शीघ्राङ्कों ११७। १५० का अन्तर हुआ ३३ इससे शेष १ अं० १

१७ वि० को गुणा करा तब ४६ अं० ५४ क० २१ वि० हुआ इसमें १५का भाग दिया तब ३ अं० ७ क० ३७ वि० लब्धि हुई इसमें प्रथम शीघ्राङ्क ११७ को युक्त करा तब १२० अं० ७ क० ३७ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब अंशादि फल मिला १२ अं० ० क० ४५ वि० यह द्वितीय शीघ्र फल हुआ यह केन्द्रमेषादिहै इसकारण धनहै सो इस १२ अं० ० क० ४५ वि०को मन्दस्पष्ट बुध१ रा० ५अं० ३क० १५ वि०में युक्त करा तब १रा० १७ अं० ४क० ० वि० यह स्पष्ट बुध हुआ ॥

अथ गुरुस्पष्टीकरण.

तहाँ प्रथम शीघ्रफलदल स्पष्ट गुरु लानेके लिये प्रथम " भौमार्कोज्ये-त्यादि " रीतिके अनुसार मध्यमरवि १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० में मध्यम गुरु ४ रा० ८ अं० १५ क० १७ वि० को घटाया तब ८ रा० २५ अं० ५८ क० २५ वि० यह शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे अधिकहै इसकारण इसको १२ राशिमें घटाया तब शेष रहा ३ रा० ४ अं० १ क० ३५ वि० इसको अंशादि करा तब ९४ अं० १ क० ३५ वि० हुआ इसमें १५का भागदिया तब लब्धि हुई ६ शेष रहा ४ अं० १क० ३५ वि० और लब्धि-परिमित गुरुका शीघ्राङ्क हुआ १०६ और एकाधिक लब्धिपरिमित गुरुका शीघ्राङ्क हुआ १०८ इन दोनोंका अन्तर हुआ २ इससे शेष ४ अं० १ क० ३५ वि० को गुणाकरा तब ८ अं० ३ क० १० वि० हुआ इसमें १५ का भागदिया तब ० लब्धि हुआ ० अं० ३२ क० १२ वि० और प्रथम शीघ्राङ्ककी अपेक्षा अग्रिम शीघ्राङ्क अधिक है इसकारण प्रथम शीघ्राङ्क १०६ में लब्धि ० अं० ३२ क० १२ वि० को युक्त करा तब १०६ अं० ३२ क० १२ वि० हुआ इसमें १० का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई १० अं० ३९ क० १३ वि० यह शीघ्र फल हुआ यह केन्द्र तुलादिछः राशिके अन्तर्गतहै इस कारण ऋणहै सो इसकारण मध्यमगुरु ४ रा० ८ अं० १५ क० १७ वि० में शीघ्र फलके अर्द्ध ५ अं० १९ क० ३६ विकलाको घटाया तब ४ रा० २ अं० ५५ क० ४१वि० शेष बचा यह शीघ्र फलदल स्पष्ट गुरु हुआ ॥

अब मन्दफल लानेके निमित्त गुरुके मन्दोच्च ६ रा० ० अं० ० क० ० वि० में शीघ्रफलदल स्पष्ट गुरु ४ रा० २ अं० ५५ क० ४१ वि० को घटाया तब १ रा० २७ अं० ४ क० १९ वि० यह गुरुका मन्दकेन्द्र हुआ। इसके अंशादि भुजकरे तब ५७ अं० ४ क० १९ वि० हुए इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि मिली ३ और शेष रहा १२ अं० ४ कला १९ वि० और लब्धि ३ परिमित गुरुका मन्दाङ्क हुआ २९ और एकाधिक लब्धि ४ परिमित गुरुका मन्दाङ्क हुआ ४८ इन दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर हुआ ९ इससे शेष १२ अं० ४ क० १९विकलाको गुणा करा तब १०८अं० ३८क० ५१वि० हुआ इसमें १५का भा-

ग दिया तब लब्धि हुई ७ अं० १४ क० ३५ वि० इसको प्रथम मन्दाङ्क ३९ में युक्त करा तब ४६ अं० १४ क० ३५ वि० हुए इसमें १० का भागदिया तब लब्धि हुई ४ अं० ३७ क० २७ विं० यह मन्दफल हुआ यह मेषादि छः राशिके अन्तर्गतहै इसकारण धनहै इस ४ अं० ३७ क० २७ वि० को मध्यमगुरु ४ रा० ८ अं० १५ क० १७ वि० में युक्तकरा तब ४ रा० १२ अं ५२ क० ४४ वि० यह मन्दस्पष्ट गुरु हुआ ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले शीघ्रकेन्द्र ८ रा० २५ अं० ५८ क० २५ वि० में गुरुके मन्द फल ४ अं० ३७ क० २७ वि० को (यह धनहै परन्तु विपरीत रीतिसे ऋण मानकर) घटाया तब ८ रा० २१ अं२० क० ५८ वि० रहा यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे अधिकहै इस कारण इसको १२ राशिमें घटाया तब शेषरहा ३ रा० ८ अं० ३९ क० २ वि० इसके अंश करे तब ९८ अं० ३९ क० २वि० हुआ इसमें १५का भागदिया तब लब्धिहुई ६ और शेषरहा ८अं० ३९क० २वि० फिर लब्धि ६ परिमित गुरुका शीघ्राङ्क हुआ १०६ और एकाधिक,लब्धि ७ परिमित गुरुका शीघ्राङ्क हुआ १०८ इन दोनोंका अन्तर हुआ २ इससे शेष ८ अं० ३९ कला २ वि० को गुणाकरा तब १७ अं० १८ क० ४ वि० इसमें १५ का भागदिया तब लब्धि-हुई १ अं० ९ कला १२ वि० इसको प्रथम शीघ्राङ्क १०६ में युक्त करा तब १०७ अं० ९ क० १२ वि० हुआ इसमें १० का भागदिया तब लब्धि हुई १० अं० ४२ क० ५५ वि० यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ. यह तुलादि छः राशिके अन्तर्गत होनेके कारण ऋणहै इसकारण १० अं० ४२ क० ५५ वि०को मन्दस्प० गुरु ४ रा० १२ अं० ५२ क० ४४ वि०में घटाया तब शेष रहे४ रा० २ अं० ९ क० ४९ वि० यह स्पष्ट गुरु हुआ ॥

अथ शुक्रस्पष्टीकरण.

तहाँ प्रथम शीघ्रफलदल स्पष्ट शुक्र साधनेके निमित्त "भौमार्कज्येत्यादि" रीतिके अनुसार पूर्वोक्त शुक्रके शीघ्रकेन्द्र ३ रा० ५ अं० ४१ क० ३५ वि०यह छःराशिसे अल्प है इसकारण इसके अंश करे ९५ अं० ४१ क० ३५वि० हुआ इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ शेषरहा ५ अं० ४१ क० ३५ वि० लब्धि परिमित शुक्रका शीघ्राङ्क हुआ ३५४ एकाधिक लब्धि ७ परिमित शुक्रका शीघ्राङ्क हुआ ४०२ इन दोनो शीघ्राङ्कोंका अन्तर हुआ ४८ इससे शेष ५ अं० ४१ क० ३५ वि०को गुणा करा तब २७३ अं० १६ क० ० वि० हुए इसमें १५ का भागदिया तब लब्धि हुई१८ अं० १३ क० ४वि० प्रथम शीघ्राङ्ककी अपेक्षा द्वितीय शीघ्राङ्क अधिक है इसकारण इस लब्धि १८ अं० १३क० ४ वि०को प्रथम शीघ्राङ्क ३५४ में युक्त करा तब ३७२ अं० १३क० ४वि० हुआ इसमें १०का भाग दिया तब लब्धि हुई ३७ अं० १३ क०१८ वि० यह शीघ्रफल हुआ यह के-

न्द्र मेषादि छः राशिके अन्तर्गतहै इसकारण धनहै सो इस शीघ्रफलके अर्द्ध २८ अं० ३६ क० ३६ वि०को मध्यमशुक्र १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि०में युक्त करा तव १ रा० २२ अं० ५० क० २१ वि० यह शीघ्रफलदलस्पष्ट शुक्र हुआ॥

अब मन्दफल लानेके निमित्त शुक्रके मन्दोच्च ३ रा० ० अं० ० क० ० वि० में शीघ्रफलदलस्पष्ट शुक्र १ रा० २२ अं० ५० क० २१ वि० घटाया तब शेषरहे १ रा० ७ अं० ९ क० ३९ वि० यह शुक्रका मन्दकेन्द्र हुआ इसके अंशादि भुजकरे ३७ अं० ९ क० ३९ वि० इसमें १५का भागदिया तब लब्धि हुई२ शेष बचे ७ अं० ९ क० ३९ वि० लब्धि २ परिमित शुक्रका मन्दाङ्क हुआ ११ एकाधिक लब्धि परिमित मन्दाङ्क हुआ १३ इन दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर करा तब २ हुए इससे शेष ७ अं० ९ क० ३९ वि०को गुणा करा तब १४ अं० १९ क० १८ वि० हुए इसमें पन्दरह १५का भागदिया तब लब्धि हुई ० अं० ५७ क० १७ वि० इसमें प्रथम मन्दाङ्क ११को युक्त करा तब ११ अं० ५७ क० १७ वि० हुए इस १०का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अं० ११ क० ४३ वि० यह मन्दफल हुआ, यह मन्द-केन्द्रमेषादि छः राशिके अन्तर्गतहै इसकारण धनहै सो इस १ अं० ११ क० ४३ वि० मन्दफलको मध्यम शुक्र १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि०में युक्त करा तब १ रा० ५ अं० २५ क० २५ वि० यह मन्दस्पष्ट शुक्र हुआ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त प्रथम शीघ्रकेन्द्र ३ रा० ५ अं० ४१ क० ३५ वि०में मन्दफल १ अं० ११ क० ४३ वि०को (यद्यपि मेषादि छः राशिके अन्तर्गत होनेके कारण धनहै परन्तु विपरीतरीतिसे ऋणमानकर) घटाया तब शेष बचे ३ रा० ४ अं० २९ क० ५२ वि० यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे अल्प है इसकारण इसके अंश करे तब ९४ अं० २९ क० ५२ वि० हुआ इनमें १५का भागदिया तब६लब्धि हुए और शेषरहे ४ अं० २९ क० ५२ वि० और लब्धि ६ परिमित शुक्रका शीघ्राङ्क हुआ ३५४ और एकाधिक लब्धि ७ परिमित शुक्रका शीघ्राङ्क हुआ ४०२ इन दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर हुआ ४८ इससे शेष ४ अं० २९ क० ५२ वि०को गुणा करा तब २१५ अं० ५३ क० ३६ वि० हुआ इसमें १५का भागदिया तब लब्धि हुई १४ अं० २३ क० ३४ वि० इसको प्रथम शीघ्राङ्क ३५४ में युक्त करा तब ३६८ अं० २३ क० ३४ वि० हुए इसमें १०का भागदिया तब लब्धि हुई ३६ अं० ५० क० २१ वि० यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह केन्द्रमेषादि छः राशिके अन्तर्गत है इसकारण धनहै सो इस ३६ अं० ५० क० २१ वि०को मन्दस्पष्ट शुक्र १ रा० ५ अं० २५ क० २५ वि०में युक्त करा तब २ रा० १२ अं० १५ क० ४६ वि० यह स्पष्ट शुक्र हुआ॥

अथ शनिस्पष्टीकरण.

तहाँ प्रथम शीघ्रफलदल स्पष्ट शनि साधनेके अर्थ "भौमार्कीज्यित्यादि" रीतिके अनुसार मध्यम रवि १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि०मे मध्यम शनि

११ रा० ० अं० ३६ क० ४५ वि०को घटाया तब शेषरहा २ रा० ३अं० ३६क० ५७ वि० यह शनिका शीघ्रकेन्द्र हुआ यह छः राशिसे कमहै इसके अंश करे तब ६३ अं० ३६ क० ५७ वि० हुए इसमें १५का भागदिया तब लब्धि मिले ४ और शेषरहे ३ अं० ३६ क० ५७ वि० लब्धि ४ परिमित शनिका शीघ्राङ्क हुआ ४८ और एकाधिक लब्धि ५ परिमित शनिका शीघ्राङ्क हुआ ५४ इन दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर हुआ ६ इससे शेष ३ अं० ३६ क० ५७ वि०को गुणा करा तब २१ अं० ४१ क० ४२ वि० इसमें १५का भागदिया तब लब्धि हुई १ अं० २६ क० ४६ वि० इसको प्रथम शीघ्राङ्क ४८ में युक्त करा तब ४९ अं० २६ क० ४६ वि० हुए इसमें दशका भागदिया तब ४ अं० ५६ क० ४०वि० शीघ्रफल हुआ यह केन्द्रमेषादि छः राशिके अन्तर्गतहै इसकारण धन है सो शीघ्रफलके अर्द्ध २ अं० २८ क० २० वि०को मध्यम शनि ११ रा० ० अं० ३६ क० ४५ में युक्त करा तब ११ रा० ३ अं० ५ क० ५ वि० यह शीघ्रफलदल-स्पष्ट शनि हुआ ॥

अब मन्दफल लानेके निमित्त शनिके मन्दोच्च ८ रा.०अं.०क.०वि.में शीघ्रफलदल स्पष्टशनि ११ रा. ३ अं. ५ क. ५ वि. को घटाया तब ८ रा.२६ अं. ५४ क. ५५ वि. यह शनिका मन्दकेन्द्र हुआ। इसके भुज २ रा. २६ अं. ५४ क.५५ वि० करके अंशकरे तब ८६ अं. ५४ क. ५५ वि. हुए इसमें १५ का भागदिया लब्धिहुई ५ शेषरहे ११ अं. ५४ क. ५५ वि. और लब्धि परिमित शनिका ८९ एकाधिक लब्धि ६ परिमित मन्दाङ्क हुआ ९३ इनदोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर हुआ ४ इससे शेष ११ अं. ५४ क. ५५ वि. को गुणा करा तब ४७ अं. ३९ क. ४० वि. इसमें पन्दरह १५ का भागदिया तब लब्धि हुई ३ अं. १० क. ३८ वि. इसमें प्रथम मन्दाङ्क ८९ युक्त करदिया तब ९२ अं. १० क. ३८ वि. हुआ इसमें १० का भागदिया तब लब्धिहुई ९ अं. १३ क. ३ वि. यह मन्दफल हुआ, यह मन्दकेन्द्र तुलादिहै इसकारण ऋणहै, इससे इसको मध्यम शनि ११ रा. ० अं. ३६ क. ४५ वि. में घटाया तब १० रा. २१ अं.२३ क. ४२वि० यह मन्द-स्पष्ट शनिहुआ ॥

अब द्वितीय शीघ्रफल लानेके निमित्त पहले शीघ्रकेन्द्र २ रा. ३ अं. ३६ क. ५७ वि. में मन्दफल ९ अं. १३ क. ३ वि. को घटाया तब २ रा. १२ अं. ५० क. ० वि. यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ इस २ रा. १२ अं. ५० क. ० वि. के अंश ७२ अं. ५० क. ० वि. करके १५ का भागदिया तब लब्धिहुई ४ और शेषबचे १२ अं. ५० क. ० वि. लब्धि ४ परिमित शनिका शीघ्राङ्क हुआ ४८ और एकाधिकलब्धि ५ परिमित शनिका शीघ्राङ्क हुआ ५४ इनदोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर हुआ ६ इससे शेष १२ अं. ५० क. ० वि. को गुणा करा तब ७७ अं. ० क. ० वि. इसमें पन्दरह १५ का भागदिया तब लब्धिहुई ५ अं. ८ क. ० वि. इसमें प्रथम शीघ्राङ्क ४८ को युक्त करा तब ५३ अं. ८ क. ० वि. हुआ इसमें १० का

भागदिया तब ५ अं. १८ क. ४८ वि. यह द्वितीय शीघ्रफल हुआ यह द्वितीय केन्द्रमेषादिहै इसकारण धनहै सो इस ५ अं. १८ क. ४८ वि. को मन्द स्पष्टशनि १० रा. २१ अं. २२ क. ४२ वि. में युक्त करा तब १० रा. २६ अं. ४१ क. ३० वि. यह स्पष्टशनि हुआ ॥

अब मन्दस्पष्टगतिसाधनकी रीति लिखतेहैं–

मान्दाङ्कान्तरमार्क्यसृग्गुरूणां भक्तं बाणनगैः शरैः खरामैः । विद्भृग्वोर्द्विहतेषुभाजितं तद्दद्यात्प्राग्वदितौ मृदुस्फुटा सा ॥

अन्वयः–आर्क्यसृग्गुरूणाम्, मान्दाङ्कान्तरम्, (क्रमेण), बाणनगैः, शरैः, खरामैः, भक्तम्, विद्भृग्वोः, (मान्दाङ्कान्तरम्,) द्विहतेषुभाजितम्, (कलाद्यम्), तत्, प्राग्वत्, इतौ, दद्यात्, (तदा), सा, मृदुस्फुटा, (गतिः, भवति) ॥ ११ ॥

अर्थः–शनि भौम तथा गुरुके मन्दफल साधनेके समय जो मन्दांकोंके अन्तर आयेथे उनमेंसे शनिके मन्दाङ्कोंके अन्तरमें बाणनग कहिये ७५ का भाग देय और भौमके मान्दाङ्कान्तरमें ५ का भाग देय तथा गुरुके मान्दाङ्कान्तरमें खराम कहिये तीसका भागदे और बुध तथा शुक्रके मान्दाङ्कान्तरको २ से गुणाकरके ५ का भागदेय तब जो लब्धि होय उसको कलादि जाने और यह मन्दकेन्द्र कर्कादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो धन और मकरादिछः राशिके अन्तर्गत होय तो ऋण जाने, और तदनन्तर उस कलादि लब्धिको क्रमसे शनिआदि ग्रहोंकी मध्यगतिमें धन ऋणकरै तब मन्दस्पष्टगति होतीहै॥

मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	यह मान्दाङ्कान्तरों
५	$\frac{5}{2}$	३०	$\frac{5}{2}$	७५	के भाजकाङ्कहैं।

उदाहरण.

शनिके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर जो ४ आयाथा इसमें ७५ का भागदिया तब लब्धिहुई ० क. ३ वि. यह लब्धि मन्दकेन्द्र कर्कादिहै इसकारण धनहै सो शनिकी मध्यम गति २ कला ० वि. में इस लब्धि ० क. ३ वि. को युक्त करा तब २ क. ३ वि. यह शनिकी मन्द स्पष्टगतिहुई॥

मङ्गलके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर जो २८ इसमें उसके भाजकाङ्क ५ का भागदिया तब ५ क. ३६ वि. लब्धिहुई यह लब्धि मन्दकेन्द्र कर्कादिहै इसकारण धनहै सो इसको मंगलकी मध्यमगति ३१ क. २६ वि. में युक्त करा तब ३७ क. २ वि. यह भौमकी मन्दस्पष्ट गतिहुई ॥

गुरुके मन्दफल साधनेके समय दोनोंमन्दाङ्कोंका अन्तर जो ९ आया था उसमें ३० का भागदिया तब कलादि लब्धि हुई ० क. १८ वि. यह लब्धि मन्दकेन्द्र मकरादि होनेसे ऋणहै इसकारण इसको गुरुमध्यमगति ५ क. ० वि०में ऋण करा तब ४ क. ४२ वि. यह गुरुकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥

बुधके मन्दफल साधनेके समय दोनों मन्दाङ्कोंका अन्तर जो १२ उसको ऊपर कहीहुई रीतिके अनुसार २ से गुणा करा तब २४ हुए इनमें ५ का भागदेनेसे कलादि लब्धिहुई ४ क. ४८ वि. यह लब्धिकर्कादि होनेसे धनहै इस कारण इसको बुधकी मध्यम गति ५९ क. ८ वि. में युक्त करा तब ६३ क. ५६ वि. बुधकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥

शुक्रके मन्दफल साधते समय मान्दाङ्कान्तर जो २ आयाथा उसको ऊपरोक्त रीतिके अनुसार २ से गुणाकरा तब ४ हुए इसमें ५ का भागदिया तब कलादि लब्धिहुई ० क. ४८वि. यह मन्दकेन्द्र मकरादि होनेसे ऋणहै इसकारण इसको शुक्रकी मध्यमगति ५९ क. ८ वि. में घटाया तब ५८ क. २० वि. यह शुक्रकी मन्दस्पष्ट गति हुई ॥ ११ ॥

अब भौमादि पाँचोंग्रहोंकी स्पष्ट गति साधनेकी रीति लिखते हैं-

भौमाच्चलाङ्कविवरः शरहृत्स्वबाणांशाढ्यं त्रिहृत्कृतहृत द्विगुणाक्षभक्तम्॥तद्धीनयुक्क्षयचये तु मृदुस्फुटा स्यात्स्पष्टाऽथ चेद्बहु ऋणात्पतिता तु वक्रा॥१२॥

अन्वयः-भौमात्, चलाङ्कविवरम्, (क्रमेण), शरहृत्, स्वबाणांशाढ्यम्, त्रिहृत्, कृतहृतम्, द्विगुणाक्षभक्तम्, (कार्य्यम्), (लब्धिः, गतेः, शीघ्रफलम्, स्यात्) क्षयचये, तद्धीनयुक्, मृदुस्फुटा, स्पष्टा, स्यात्, अथ, चेत्, (ऋणफलम्), बहु, (तदा), ऋणात्, पतिता, (कार्य्या), (शेषम्), वक्रा, (स्यात्) ॥

अर्थः-मङ्गल आदि शनिपर्य्यन्त पाँचों ग्रहोंके द्वितीय शीघ्रफल साधनेके समय जो दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर आयाथा उनमें क्रमसे मङ्गलके शीघ्राङ्कोंके अन्तरमें शर कहिये ५का भागदेय और बुधके शीघ्रांकोंके अन्तरमें उसको पञ्चम भागयुक्त करदेय, गुरुके शीघ्राङ्कोंके अन्तरमें ३ का भाग देय, शुक्रके शीघ्राङ्कोंके अन्तरमें ४का भागदेय, और शनिके शीघ्राङ्कोंके अन्तरको दोसे गुणाकरके ५का भागदेय तब जो फल मिले अर्थात् अङ्क लब्ध हो उसको कलादि जाने और प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्राङ्कसे अधिक होय तो उस

लब्धिको ऋण मानै और यदि प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्राङ्कसे अल्प होय तौ धन मानै तदनन्तर उस लब्धिको ऊपर साधीहुई मन्द स्पष्टगतिमें धन अथवा ऋण करै तब स्पष्टगति होतीहै यदि वह लब्धि ऋण होकर मन्दस्पष्टगतिमें न घटसकै, अर्थात् मन्दस्पष्ट गतिसेभी अधिक होय तौ विपरीत रीतिकरै अर्थात् ऋण लब्धिमें मन्दस्पष्टगतिको घटावै और जो शेषरहै उसको उसग्रहकी वक्रगत्ति जानै ॥

मङ्गलका	बुधका	गुरुका	शुक्रका	शनिका	यह शीघ्राङ्कांके अन्तरके भाजकाङ्कहैं
५	+$\frac{५}{६}$	३	४	$\frac{५}{२}$	

उदाहरण.

मङ्गलका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर आयाथा ४० उसमें ५का भागदिया तब कलादि लब्धिहुई ८ क० ० वि० यहाँ प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्राङ्ककी अपेक्षा कम था इसकारण यह धनहै सो इस लब्धि ८ क० ०वि०को मङ्गलकी मन्दस्पष्टगति ३७ क० २वि०में युक्त करा तब ४५ क० २ वि० यह मङ्गलकी स्पष्टगति हुई ॥

बुधका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर आयाथा ३३ इसमें इसका पाँचवाँ भाग ६क० ३६ वि० युक्त करा तब ३९क० ३६ वि० यह हुआ अथवा शीघ्राङ्कान्तर ३३को ६से गुणा करा तब १९८ हुए इसमें ५का भागदिया तब ३९ क० ३६ वि० यह लब्धिहुई प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्राङ्ककी अपेक्षा कम है इसकारण धनहै सो इसलब्धि ३९ क० ३६ वि०को बुधकी मन्दस्पष्टगति ६३ क० ५६ वि०में युक्त करा तब १०३ क० ३२ वि० यह बुधकी स्पष्टगति हुई ॥

गुरुका द्वितीय शीघ्रफल साधतेसमय जो दोनों शीघ्राङ्कोंका अन्तर २ आयाथा उसमें ३का भागदिया तब कलादि लब्धि हुई ० क० ४० वि० यहाँ प्रथम शीघ्राङ्क द्वितीय शीघ्राङ्ककी अपेक्षा कम था इसकारण यह लब्धि धनहै सो इस ० क० ४० वि०में गुरुकी मन्दस्पष्टगति ४ क० ४२ वि०को युक्त करा तब ५ क० २२ यह गुरुकी स्पष्टगति हुई ॥

शुक्रका द्वितीय शीघ्रफल साधते समय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर ४८ आयाथा इसमें ४ का भाग दिया तब १२ क० ० वि० लब्धि हुई यहभी

+ $\frac{५}{६}$ ऐसा लिखनेका प्रयोजन यह है कि बुधके शीघ्राङ्कोंके अन्तरमें उसकाही पञ्चम भागयुक्त करनेसे जो अङ्क होताहै वही अङ्क अन्तरको ६ से गुणाकरके ५ का भाग देनेसे होताहै ॥

उक्तरीतिके अनुसार धन है इसकारण इस लब्धि १२ क० ३० वि०में शुक्रकी मन्दस्पष्टगति ५८ क० २ वि०को युक्त करा तब ७० क० ३२ वि० यह शुक्रकी स्पष्टगति हुई ॥

शनिका द्वितीय शीघ्रफल साधतेसमय दोनों शीघ्राङ्कोंका जो अन्तर ६ आयाथा उसको २से गुणा करा तब १२ हुए इसमें ५का भागदिया तब २क० २४ वि० लब्धि हुई यहभी ऊपरोक्तरीतिके अनुसार धनहै इसकारण इस लब्धि २ क० २४ वि०को शनिकी मन्दस्पष्टगति २ क० ३ वि०में युक्त करा तब ४ क० २७ वि० यह शनिकी स्पष्टगति हुई ॥ १२ ॥

शुक्र और मङ्गलके द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय शीघ्राङ्क अन्तका आवे तब स्पष्टकरे हुए ग्रहमें अन्तर पड़ताहै इसकारण तहाँ स्पष्ट करनेकी विशेषरीति कहतेहैं-

शुक्रारयोश्चलभवोऽन्त्यगतो यदाङ्कः शेषांशकाश्च पतिताः पृथगक्षभूभ्यः । येऽल्पा भृगोस्त्रिविहृता असृजोऽक्षभक्ता देयाः स्वशीघ्रफलवत्स्फुटयोः स्फुटौ तौ ॥ १३ ॥

अन्वयः-यदा, शुक्रारयोः, चलभवः, अङ्कः, अन्त्यगतः, (स्यात्, तदा) शेषांशकाः, पृथक्, स्थाप्याः, (एकत्र), अक्षभूभ्यः, पतिताः, च, (कार्य्याः) । (*तयोः), ये, अल्पाः, (ते), भृगोः, त्रिविहृताः, असृजः, अक्षभक्ताः, स्वशीघ्रफलवत्, स्फुटयोः, देयाः, (तदा), तौ, स्फुटौ, (स्तः) ॥ १३ ॥

अर्थः-द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय यदि शुक्र और मङ्गलका शीघ्राङ्क अन्तका आवे अर्थात् एकादशके नीचेका आवे तो द्वितीय शीघ्रकेन्द्रमें १५का भागदेकर जो अंशादि शेषबचे उनको अलग अलग दो स्थानोंमें लिखे एक स्थानके अंशादिको १५ अंशमें घटावे जो शेषरहे वह अंशादि और पहले दूसरे स्थानमें रक्खे हुए शेषभूत अंशादिमें जो कम हो उसको ग्रहण करे वह यदि शुक्रका होतो तीनका भागदेय और मङ्गलका होय तो ५ का भागदेय जो अंशादि लब्धि होय उसको क्रमसे स्पष्ट शुक्र और स्पष्ट मङ्गलमें शीघ्रफलकी समान धन तथा ऋण करे तब शुक्र और मङ्गल स्पष्ट होते है ॥ १३ ॥

और जो द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय अन्तका शीघ्राङ्क आवे तो भौम बुध और शुक्र इनकी गतिका विशेष संस्कार कहते हैं-

कुजबुधभृगुजानां चेच्चलाङ्कोऽन्तिमः स्याद्दशहतप-
रिशेषांशान्नगाद्र्यग्निभक्ताः। फलमिषुदहनैर्युक्सु-
तगोभिस्त्रिबाणैर्भवति गतिफलं तत्स्यात्तदा नैव
पूर्वम् ॥ १४ ॥

अन्वयः-चेत्, कुजबुधभृगुजानाम्, चलाङ्कः, अन्तिमः, स्यात्, तदा, दशहतपरिशेषांशाः, (क्रमेण), नगाद्र्यग्निभक्ताः, फलम्, (क्रमेण) इषुदहनैः, सप्तगोभिः, त्रिबाणैः, युक्, (कार्य्यम्), तत्, गतिफलम्, स्यात्, पूर्वम्, नैव ॥ १४ ॥

अर्थः-द्वितीय शीघ्रफल लानेके समय यदि मङ्गल-बुध-और शुक्रका शीघ्राङ्क यदि अन्तका अर्थात् एकादशके नीचेका आवे तो द्वितीय शीघ्रकेन्द्रमें १५ का भागदेकर जो अंशादि शेषबचें उनको दशसे गुणा करके क्रमसे सात ७ और सात ७ तथा तीन ३ का भागदेकर जो कलादि लब्धि मिलै उसमें क्रमसे पैंतीस और सत्तानवे तथा तिरेपन मिला देय तब क्रमसे गति फल होता है पूर्वोक्त यथार्थ नहीं है इस गतिफलको शीघ्रफलकी समान मन्द स्पष्ट गतिमें धन ऋण करै तब मङ्गल-बुध और शुक्रकी स्पष्ट गति होती है ॥ १४ ॥

अब भौमादि ग्रहोंका वक्री होना और मार्गी होना लिखतेहैं-

त्रिनृपैः शरजिष्णुभिः शरार्कैर्नगभूपैस्त्रिभवैः क्र-
मात्कुजाद्याः। चलकेन्द्रलवैः प्रयान्ति वक्रं भगणात्तैः
पतितैर्व्रजन्ति मार्गम् ॥ १५ ॥

अन्वयः-कुजाद्याः, क्रमात्, त्रिनृपैः, शरजिष्णुभिः, शरार्कैः, नगभूपैः, त्रिभवैः, चलकेन्द्रलवैः, वक्रम्, प्रयान्ति, (तथा), भगणात्, पतितैः, तैः, मार्गम्, व्रजन्ति ॥ १५ ॥

अर्थः-मङ्गलआदि ग्रहोंके द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे त्रिनृपकहिये १६३ शरजिष्णु कहिये १४५ शरार्क कहिये १२५ नगभूप १६७ और त्रिभव

कहिये ११३ होंय तौ क्रमसे वक्री होते हैं अर्थात् इनकी गति उलटी होजाती है, और ऊपरोक्त अंशोंको क्रमसे भगण कहिये ३६० में घटानेसे जो शेष रहैं उतने अंश हों तौ मङ्गलआदि मार्गी होतेहैं अर्थात् मङ्गलके द्वितीय शीघ्रके-न्द्रके १६७ अंश बुधके २३५ गुरुके २६५ शुक्रके १६३ और शनिके २५७ अंश होय तौ भौमादि मार्गी होतेहैं अर्थात् आगेको चलने लगते हैं ॥ १५ ॥

अब मङ्गल गुरु और शनि इनके उदय और अस्तके शीघ्रकेन्द्रांश लिखतेहैं-

क्षितिजोऽष्टयमैरुदेति पूर्वे गुरुरिन्द्रै रविजस्तु सप्त-चन्द्रैः । स्वस्वोदयभागसंविहीनैर्भगणांशैरपरत्र यान्ति चास्तम् ॥ १६ ॥

अन्वयः-क्षितिजः, अष्टयमैः, गुरुः, इन्द्रैः, रविजः, तु, सप्तचन्द्रैः, पूर्वे, उदेति । च, स्वस्वोदयभागसंविहीनैः, भगणांशैः, अपरत्र, अ-स्तम्, प्रयान्ति ॥ १६ ॥

अर्थः-द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अष्टयम२८अंश होय तौ मङ्गल और इन्द्र कहिये १४ अंश होय तौ गुरु तथा सप्तचन्द्र कहिये १७ होय तौ शनि पूर्वदिशामें अस्त होता है और अपने अपने उदयके अंश भगण कहिये ३६० में घटानेसे जो शेष अंश रहैं उतने शीघ्रकेन्द्रके अंश हो तौ क्रमसे मङ्गल-गुरु-और शनि पश्चिममें अस्तहोते हैं अर्थात् द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके ३३२ हों तौ मङ्गल, और ३४६ हों तौ गुरु तथा ३४३ हों तौ शनि पश्चिममें अस्त होताहै ॥ १६ ॥

अब बुध और शुक्रके उदय और अस्तके शीघ्रकेन्द्रांश लिखते हैं-

खशरैश्च जिनैः परेज्ञभृग्वोरुदयोऽस्तोऽक्षदिनैर्नगा-द्रिभूभिः । उदयोऽक्षनखैर्यहीन्दुभिः प्रागस्तो दि-ग्दहनैश्च षट्सुरैः स्यात् ॥ १७ ॥

अन्वयः-खशरैः, जिनैः, परे, ज्ञभृग्वोः, उदयः, च, अक्षदिनैः, नगाद्रिभूभिः, (परे), अस्तः, स्यात् । (तथा), अक्षनखैः, त्र्यहीन्दुभिः, प्राक्, उदयः, (च), दिग्दहनैः, षट्सुरैः, (प्राक्), अस्तः, (स्यात्) ॥ १७ ॥

अर्थः-द्वितीय शीघ्रके खशर कहिये ५० और जिन कहिये २४ अंश हों तौ पश्चिमदिशामें क्रमसे बुध और शुक्रका उदय होताहै, और द्वितीय शीघ्रके-

न्द्रके अंश क्रमसे अक्षदिन कहिये १५५ और नगाद्रिभू कहिये १७७ होंतो बुध और शुक्रका पश्चिममें अस्त होता है। और द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे अक्षनख कहिये २०५ और त्र्यद्रीन्दु कहिये१८३होंतो बुधका और शुक्रका पूर्व दिशामें उदय होता है । और द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश क्रमसे दिग्दहन कहिये ३१० और षट्सुर कहिये ३३६ हों तो बुध और शुक्रका पूर्व दिशामें अस्त होता है॥ १७॥

अब भौमादि ग्रहोंकी वक्रगति उदय-अस्त और सरल गतिके दिन जाननेकी रीति लिखते हैं-

वक्रोदयादिगुदितांशकृतोऽधिकाल्पाः केन्द्रांशकाः
क्षितिसुताद्द्विगुणास्त्रिभक्ताः। सांकांशकादशहतांग-
हृताः कुभक्ता वक्राद्यमाप्तदिवसैः क्रमशो गतैष्यम्॥ १८॥

अन्वयः-वक्रोदयादिगदितांशकतः, (यदि), केन्द्रांशकाः, अधिकाल्पाः, (स्युः,तदा,) क्षितिसुतात्, द्विगुणाः, त्रिभक्ताः, सांकांशकाः, दशहताङ्गहृताः, कुभक्ताः, (कार्य्याः), आप्तदिवसैः, क्रमशः, वक्राद्यम्, गतैष्यम्, (स्यात्) ॥ १८ ॥

अर्थः-भौमादि ग्रहोंके वक्रगति-उदय-अस्त और मार्गगति इनके जो द्वितीय शीघ्रकेन्द्रके अंश कहेहैं उनसे यदि अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रके अंश अधिक या कम हों तो उन दोनोंका अन्तर करके उसमें क्रमसे मङ्गलकेमें २ से गुणाकरे, बुधकेमें ३ का भागदेय, गुरुकेमें उस अन्तरका ही नवम भाग युक्त करदेय शुक्रकेमें दशसे गुणा करके छः का भागदेय, और शनिकेमें १ का भागदेय तब जो क्रमसे सबके अङ्क लब्धहों उनको दिन जाने और पूर्वोक्त शीघ्रकेन्द्रके अंशोंसे अभीष्ट शीघ्रकेन्द्रके अंश यदि अधिक हों तो वक्र-उदय-अस्त और मार्ग इनको होकर लब्धि परिमित दिन व्यतीत हुए जाने, और यदि उक्तशीघ्रकेन्द्रके अंशोंसे अभीष्टशीघ्रकेन्द्रके अंश कम हों तो वक्र-उदय-अस्त और मार्ग इनके होनेमें आजसे लब्धि परिमित दिनहैं ऐसा जाने१८

अब बुध और शुक्रकी वक्रगति-उदय-अस्त-और मार्गगति होनेके दिनोंका क्रम लिखते हैं-

पूर्वास्तादुदयः परेऽनृजुगतिस्तोयास्तमैन्द्र्युद्गमो
मार्गोऽस्तोऽत्र च दन्तदन्तदहनाष्टचाप्याशदन्तादि-

नैः॥ चान्द्रैस्ततपरतत्परं त्वथ भृगोस्तद्वद्द्विमाः स्या-
त्ततोऽष्टाभिर्व्यंघ्रिभुवांघ्रिणा विचरणैकेनाष्टमासैः
क्रमात् ॥ १९ ॥

अन्वयः–दन्तदन्तदहनाष्टयाज्याशदन्तैः, दिनैः, चान्द्रैः, क्रमात्, पूर्वास्तात्, परे, उदयः, अनृजुगतिः, तोयास्तम्, ऐन्द्रयुद्गमः, मार्गः, अस्तः, स्यात्, तत्परम्, तत्परम्, अथ, (क्रमात्), द्विमाः, ततः, अष्टाभिः, व्यंघ्रिभुवा, अंघ्रिणा, विचरणैकेन, च, अष्टमासैः, भृगोः, तद्वत्, (स्यात्) ॥ १९ ॥

अर्थः–बुधका पूर्वदिशामें अस्त होनेसे दन्त कहिये ३२ दिनके अनन्तर पश्चिममें उदय होताहै, और उदय होनेसे ३२ दिनके अनन्तर वक्रगति होतीहै। और वक्रगति होनेसे दहन कहिये तीन दिनके अनन्तर पश्चिममें अस्त होताहै। और पश्चिममें अस्त होनेके अष्टि कहिये १६ दिनके अनन्तर पूर्वमें उदय होताहै। और उदय होनेसे आज्याश (अग्नि) कहिये ३ दिनके अनन्तर मार्गी होताहै। और मार्गी होनेसे ३२ दिनके अनन्तर पूर्वमें अस्त होताहै इसीप्रकार वारंवार होता रहताहै।

शुक्रका पूर्वदिशामें अस्त होनेसे २ महीनेके अनन्तर पश्चिमदिशामें उदय होताहै। और पश्चिमदिशामें उदय होनेसे २४० दिन कहिये ८ महीनेके अनन्तर वक्री होताहै। और वक्री होनेसे पौनमहीना कहिये २२ दिनके अनन्तर पश्चिमदिशामें अस्त होताहै। और अस्त होनेसे ८ दिन अर्थात् $\frac{1}{4}$ मासके अनन्तर पूर्व दिशामें उदय होताहै। और उदय होनेसे २२ दिन अर्थात् $\frac{3}{4}$ महीनेके अनन्तर मार्गी होताहै और मार्गी होनेके २४० दिन कहिये ८ महीनेके अनन्तर पूर्वदिशामें अस्तहोताहै इसीप्रकार वारम्वार होताहै ॥ १९ ॥

अब मंगल–गुरु और शनि इन तीनों ग्रहोंके वक्रीभवन–उदय–अस्त और मार्गगतिके दिनोंका क्रम लिखतेहैं–

भौमस्यास्तादुदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यं क्रमात्स्यान्मा-
सैर्वेदैरथ दशमितैर्लोचनाभ्यांच दिग्भिः। जीवस्यो
र्व्यां सचरणयुगैः सागरैः साङ्घ्रिवेदैः साङ्घ्र्येकेन
त्रियुगदहनैरर्धयुक्तैस्तथार्कैः ॥ २० ॥

अन्वयः–भौमस्य, अस्तात्, वेदैः, अथ, दशमितैः, लोचनाभ्याम्, दिग्भिः, च, मासैः, क्रमात्, उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यम्, स्यात् । जीवस्य, (अस्तात्), ऊर्व्या, सचरणयुगैः, सागरैः, सांघ्रिवेदैः (मासैः, क्रमात्, उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यम्, स्यात्) । तथा, आर्कैः, (अस्तात्), सांघ्र्येकेन, अर्द्धयुक्तैः, त्रियुगदहनैः, (मासैः, क्रमात्, उदयकुटिलर्जुत्वमौढ्यम्, स्यात्) ॥ २० ॥

अर्थः–मङ्गलके पश्चिमदिशामें अस्त होनेसे ४ मास अर्थात् १२० दिनके अनन्तर पूर्वमें उदय होताहै, और उदय होनेसे दशमास अर्थात् ३०० दिनके अनन्तर वक्री होताहै, और वक्री होनेसे लोचन कहिये दो मास अर्थात् ६० दिनके अनन्तर मार्गी होताहै, और मार्गी होनेसे दिक् कहिये दशमास अर्थात् ३०० दिनके अनन्तर पश्चिममें अस्तहोताहै, इसीप्रकार वारम्वार होता रहताहै ।

गुरुके पश्चिमदिशामें अस्त होनेसे एकमास अर्थात् ३० दिनके अनन्तर पूर्वमें उदय होताहै, और पूर्वमें उदय होनेसे सचरणयुग कहिये ४ $\frac{१}{४}$ मास अर्थात् १२८ दिनके अनन्तर वक्री होताहै, और वक्री होनेसे सागर कहिये ४ मास अर्थात् १२० दिनके अनन्तर मार्गी होनेसे साङ्घ्रि वेद कहिये ४ $\frac{१}{४}$ मास अर्थात् १२८ दिनके अनन्तर पश्चिममें अस्त होताहै

शनिका पश्चिममें अस्त होनेसे सांघ्र्येक कहिये १ $\frac{१}{४}$ मास अर्थात् ३८ दिनके अनन्तर पूर्व दिशामें उदय होताहै, उदय होनेसे सार्द्धत्रि कहिये ३ $\frac{१}{२}$ मास अर्थात् १०५ दिनमें वक्री होताहै, वक्री होनेसे सार्द्धयुग कहिये ४ $\frac{१}{२}$ मास अर्थात् १३५ दिनके अनन्तर मार्गी होताहै, और मार्गी होनेसे सार्द्धदहन कहिये ३ $\frac{१}{२}$ मास अर्थात् १०५ दिनके अनन्तर पश्चिम दिशामें अस्त होताहै, इसीप्रकार वारम्वार करना चाहिये ॥ २० ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीय-
मुरादाबादवास्तव्यगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनुजपण्डितराम-
स्वरूपशर्म्मणा विरचितया, सोदाहरणसनाथीकृतया-
न्वयसमन्वितया भाषाव्याख्यया सहितः पञ्चतारा-
स्पष्टीकरणाधिकारः समाप्तिमितः ॥ ३ ॥

अथ त्रिप्रश्नाधिकारो व्याख्यायते ।

अर्थात्

इस अध्यायमें दिशा-देश-कालका ज्ञानरूप तीन प्रश्न कहे जायँगे ।
दिशा-देश और कालसे इष्ट समयादि ज्ञात होतेहैं सोई कहतेहैं-तिसमेंभी प्रथम लग्नोपयोगि होनेके कारण लग्नोदय और इष्टस्थलमें राशिका उदय निरूपण करतेहैं- २७८, २९९, ३२३

लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोङ्कदस्रास्त्रिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः। हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थैर्मेषादितो धटत उत्क्रमतस्त्वमे स्युः॥१॥

अन्वयः-गजभानि, गोङ्कदस्राः, त्रिपक्षदहनाः, (एते, क्रमस्थाः, मेषादित्रयाणाम्,) विघटिकाः, लङ्कोदयाः, स्युः, (एते, एव, उत्क्रमस्थाः, कर्कादित्रयाणाम्, लङ्कोदयाः, स्युः), इमे, क्रमगोत्क्रमस्थाः, क्रमगोत्क्रमस्थैः, चरदलैः, हीनान्विताः, (क्रमतः), मेषादितः, उत्क्रमतः, धटतः, (लङ्कोदयाः, स्युः) ॥ १ ॥

अर्थः-लङ्कामें मेषराशिका उदय गजभा कहिये २७८ पलपर होताहै, वृषराशिका उदय गोङ्कदस्र कहिये २९९ पलपर होताहै, मिथुनराशिका उदय त्रिपक्षदहन कहिये ३२३ पलपर होताहै (इनही तीनों अङ्कोंको उलटरखनेसे कर्कआदि तीनों राशियोंके लङ्कोदय पल होतेहैं) अर्थात् लङ्कामें कर्कराशिका उदय ३२३ पल और सिंहराशिका उदय २९९ पल, कन्याराशिका उदय २७८ पल होताहै । और लङ्कामें तुलासे लेकर मीनपर्य्यन्त राशियोंके उदयके पल, कन्याराशिसे लेकर उलटे मेषराशिपर्य्यन्त जो उदयके पल कहेहैं सो होतेहैं, अर्थात्-लङ्कामें तुलराशिका उदय २७८ पलात्मक होताहै, वृश्चिक राशिका उदय २९९ पलात्मक होताहै, धनराशिका उदय ३२३ पलात्मक होताहै, मकर राशिका उदय ३२३ पलात्मक होताहै, कुम्भराशिका उदय २९९ पलात्मक होताहै, और मीन राशिका उदय २७८ पलात्मक होताहै॥

जिस ग्रामकी राशिका उदयकाल लानाहो उस ग्रामके चरखण्ड लेकर उनको क्रमसे मेष-वृष और मिथुन इनके पलात्मक लङ्कोदयोंमें घटावे, और उलटे क्रमसे कर्क-सिंह तथा कन्या इनके पलात्मक लङ्कोदयमें युक्त-करदेय तब स्वदेशीय मेषराशिसे कन्याराशिपर्य्यन्त उदयकाल क्रमसे होताहै, और उलटेक्रमसे तुलाराशिसे लेकर मीनराशिपर्य्यन्तका उदयकाल होताहै ॥ १ ॥

उदाहरण.

अब क ... में उदाहरण लिखतेहैं- मेषराशिके ... खण्ड ५७ को घटाया तब २२१ ... हुआ। वृषके पलात्मक उदय २९९ में काशीका द्वितीय चरखण्ड ४६ घटाया तब २५३ यह पलात्मक वृषका उदय हुआ, मिथुनके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ घटाया तब ३०४ यह मिथुनका पलात्मक उदय हुआ, कर्कराशिके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ को युक्तकरा तब ३४२ यह कर्कराशिका पलात्मक उदय हुआ, सिंहराशिके पलात्मक उदय २९९ में द्वितीय चरखण्ड ४६ को युक्त करा तब ३४५ यह सिंहका पलात्मक उदय हुआ, कन्याराशिके पलात्मक उदय २७८ में प्रथम चरखण्ड ५७ को युक्तकरा तब ३३५ यह कन्याराशिका पलात्मक उदय हुआ, तुलाराशिके पलात्मक उदय २७८ में प्रथम चरखण्ड ५७ को युक्तकरा तब ३३५ यह तुलाराशिका पलात्मक उदय हुआ, वृश्चिकराशिके पलात्मक उदय २९९ में द्वितीय चरखण्ड ४६ को युक्त करा तब ३४५ यह वृश्चिकराशिका पलात्मक उदय हुआ, धनराशिके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ को युक्त करा तब ३४२ यह धनराशिका पलात्मक उदय हुआ, मकरराशिके पलात्मक उदय ३२३ में तृतीय चरखण्ड १९ को घटाया तब ३०४ यह मकरराशिका पलात्मक उदय हुआ, कुम्भराशिके पलात्मक उदय २९९ में द्वितीय चरखण्ड ४६ को घटाया तब २५३ यह कुंभराशिका पलात्मक उदय हुआ, और मीनराशिके पलात्मक उदय २७८ में प्रथम चरखण्ड ५७ को घटाया तब २२१ यह मीनराशिका पलात्मक उदय हुआ ॥

अथ लग्नसाधनकी रीति लिखतेहैं-

तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः। एवं यातांशैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥ २॥ तदनु जहीहि गृहोदयांश्च शेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृद्युवाद्यम्। सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोयनांशहीनम् ॥ ३ ॥

अन्वयः-(यस्मिन्, काले, लग्नम्, साध्यते) तत्कालार्कः, सायनः,

(कार्य्यः), भोग्यांशाः, स्वोदयघ्नाः, खत्र्युद्धृताः, भोग्यकालः, (स्यात्), एवम्, यातांशैः, यातकालः, भवेत् । भोग्यः, अभीष्टनाडीपलेभ्यः, शोध्यः । तदनु, (तस्मात्), गृहोदयान्, च, जहीहि, शेषम्, गगनगुणघ्नम्, अशुद्धहृत्, (फलम्), लवाद्यम्, (स्यात्, तत्) अजादिगृहैः, अशुद्धपूर्वैः, सहितम्, अदः, अयनांशहीनम्, विलग्नम्, भवति ॥ २॥ ३॥

अर्थः-जिस समय लग्नसाधनी हो उस समयका सूर्य्यस्पष्ट करके उसमें अयनांश युक्तकरदेय तब जो अङ्क हों उसमेंकी राशि दूरकरके जो अंशादि अङ्क रहें वह भुक्तराशि होताहै, और उस भुक्तराशिको ३० तीस अंशमें घटावै तब जो शेष रहै वह अंशादि भोग्यराशि होताहै, तदनन्तर जो राशि दूरकरदीथी उसमें एक मिलाकर तत्परिमित राशिके उदयसे भुक्त और भोग्यको गुणाकरके तीसका भागदेय तब क्रमसे भुक्तकाल और भोग्यकालके पल होतेहैं, तदनन्तर अभीष्ट घड़ियोंके पलकरके उसमें भोग्यकालके पल घटावै जो शेपरहै उसमें जिस उदयसे गुणा कराथा उससे आगेके जितने पलात्मक उदय घटसकें उतने घटावै पीछेसे जो पलादिक शेपरहें उनको तीससे गुणाकरै तब जो गुणन फलहो उसमें जो उदय घटनहीं सकाहो उसका भागदेय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें मेपराशिसे लेकर जितनी राशिका उदय घटाहो उतनीराशि युक्तकरै तब जो अङ्क आवै उनमें अयनांश घटावै तब जो शेपरहै वह अभीष्ट कालकी राश्यादि लग्नहोतीहै ॥ २ ॥ ३ ॥

उदाहरण.

शक १५३४ वैशाख शुक्ल १५ सूर्य्योदयसे गतघटी अर्थात् इष्टघटी १० घ. ३० पल इस समयकी लग्नसाधनीहै इसकारण सूर्य्योदयसे इष्टघटी हुई १० घ. ३० प. मध्यम सूर्य १। ४। १३। ४२ गति ५९। ८ है यहाँ आगे कही हुई "गतगम्यदिनाहतभुक्तिरित्यादि" रीतिसे चालन हुआ २० क. २० वि. इसको मध्यम रवि १। ४। १३। ४२ में युक्तकरा तब १। ४। ३४। २ यह तात्कालिक मध्यम रवि हुआ इसको मन्दोच्च २। १८। ०। ० में घटाया तब १ रा. १३ अं. ३५ क. ५८ वि. यह मन्दकेन्द्र हुआ, और १ अं. ३० क. ११ वि. यह मन्दफल धनहुआ इसको तात्कालिक मध्यम सूर्य्य १ रा. ४ अं. ३४ क. २ वि. में युक्तकरा तब १ रा. ५ अं. ५४ क. १३ वि. यह मन्दफलसंस्कृत रवि हुआ इसमें चरऋण ९३ वि. को घटाया तब १ रा. ५ अं. ५२ क. ४० वि. यह तात्कालिक स्पष्ट रवि हुआ इस तात्कालिक सूर्य्य १ रा. ५ अं. ५२ क. ४० वि. में अयनांश १८। १० को युक्तकरा तब १ रा. २४ अं. २ क. ४० वि. यह सायन रवि हुआ, इसकी राशिको दूरकरके २४ अं. २ क. ४० वि. यह वृषभ राशिका भुक्त हुआ इस भुक्तको ३० राशिमें घटाया तब शेष ५ अं. ५७ क. २०

वि. यह भोग्य हुआ यहाँ एकराशि दूरकरीथी इस कारण एकसे आगेकी दूसरी राशि वृषभके उदय २५२ से भोग्यांश ५ अं. ५७ क. २ वि. को गुणा करा. तब १५०६ अं. ४५ क. २० वि. हुए इनमें ३० का भागदिया तब ५० । १३ । ३० यह पलात्मक भोग्यकाल हुआ-इसी प्रकार भुक्त अंशादिके द्वारा पलात्मक. भुक्तकाल सिद्ध होताहै । भोग्यकाल ५० । १३ । ३० को इष्टघटी १० प. ३० अर्थात् ६३० पलमें घटाया तब शेषरहा ५७९ । ४६ । ३० यहाँ ५७९ में मिथुनोदय ३०४ को घटाया तब २७५ शेषरहे इसमें. कर्कोदय ३४२ घटनहीं सक्ते इस कारण शेषरहा २७५ पल ४६ विपल ३० प्रतिविपल इसको ३० से गुणाकरा तब ८२७३ पल १५ विपल ० प्रतिविपल हुए इनमें जो कर्कराशिका उदय ३४२ पहले नहीं घटसकाथा इसका भागदिया तब अंशादि लब्धि हुई २४ अं. ११ क. २६ वि. इसमें मेषराशिसे लेकर जो राशि शुद्ध नहीं हुईथी अर्थात् घटनहीं सकीथी तहाँपर्य्यन्तकी राशि ३ युक्तकरीं तब ३ रा. २४ अं. ११ क. २६ वि. हुआ इसमें अयनांश १८ । १० को घटाया तब ३ रा. ६ अं. १ क. २६ वि. यह लग्न हुई ॥

अब भोग्यकालसे इष्टकाल कम होय तौ लग्नसाधनेकी रीति लिखतेहैं-

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात्खरामाहतात्स्वोदयाप्तांशयुग्भास्करः स्यात्तनुः ॥ ८८ ॥

अन्वयः-भोग्यतः, अल्पेष्टकालात्, खरामाहतात्, स्वोदयाप्तांशयुक्, भास्करः, तनुः, स्यात् ॥ ८८ ॥

अर्थः-पूर्वोक्तरीतिसे लाया हुआ राशिका भोग्यकाल यदि इष्टकालसे अधिक होय तौ पलात्मक इष्टकालको ३० से गुणाकरके उसमें सायन रवि जिस राशिका होय उस राशिके उदयका भागदेकर जो अंशादि मिलै उसको इष्ट रविमें संयुक्तकरदेय तब इष्टकालीन लग्न होतीहै ॥ ८८ ॥

उदाहरण.

शाक १५३४ वैशाख शुक्ल १५ सूर्य्योदयाद्गत घटी ० पल ४० है उस समय लग्न साधतेहैं यहाँ सूर्य्योदयसे इष्टघटी ० घ० ४० प० "गतगम्येत्यादि" रीतिसे चालित सूर्य्य हुआ १ । ५ । ४२ । १५ पूर्वोक्तरीतिसे इस चालितस्पष्ट सूर्यमें अयनांश १८ । १० । को युक्तकरा तब १ रा० २३ अं० ५२ क० १५ वि० यह सायनरवि हुआ इससे पलात्मक भोग्य काल आया ५१ यह इष्ट कालसे अधिक है, इसकारण पलात्मक न्यून इष्ट काल ० । ४० को ३० से गुणा करा तब १२०० यहाँ सायन सूर्य्य वृषभ राशिका है इसकारण वृषभ राशिके पलात्मक २५३ का १२०० में भागदिया तब

अंशादि लब्धि हुई ४ अं० ४४ क० ३५ वि० इसको स्पष्ट रवि १ रा० ५ अं० ४३ क० १५ वि० में युक्त करा तब १ रा० १० अं० २७ क० ५० वि० यह तत्कालीन लग्नहुई ॥

अब लग्नसे इष्टकाल लानेकी रीति लिखतेहैं-

अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो युक्तमध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः-अर्कभोग्यः, तनोः, भुक्तकालान्वितः, (ततः), युक्तमध्योदयः, अभीष्टकालः, भवेत् ॥ ४ ॥

अर्थः-लग्नमें अयनांश मिलाकर जो अङ्कयोग होय, उससे भुक्तकाल लावै और स्पष्ट सायन रविसे भोग्यकाल लावै तदनन्तर सायन लग्न और सायन रवि इन दोनोंके मध्यमें जिस राशिका उदय हो उसके अङ्क ग्रहण करके उसमें भुक्तकाल और भोग्यकाल इनके अङ्कोंको युक्तकरै तब पलात्मक अभीष्ट काल होवाहै ॥ ४ ॥

उदाहरण.

लग्न ३ रा० ६ अं० २ क० ३७ वि० इसमें अयनांश १८ अं० १० क० को युक्त करा तब ३ रा० २४ अं० १२ क० ३७ वि० हुआ इससे भुक्तकाल साधा तौ २४ । १२ । ३७ हुए इसको सायन लग्नकी राशि कर्कके उदय ३४२ से गुणा करा तब ८२७९ । ५४ । ५४ हुए इनमें ३० का भागदिया तब २७६ यह लग्नका भुक्तकाल हुआ इस लग्नके भुक्तकाल २७६ में रविका भोग्य काल ५० को युक्त करा तब ३२६ हुए इनमें सायन सूर्य्य और सायन लग्नके मध्यकी मिथुन राशिके उदय ३०४ को युक्त करा तब ६३० पल हुए इसमें ६० का भाग दिया तब१०घ० ३० प० यह अभीष्ट काल हुआ॥

अब सायन लग्न और सायन सूर्य्य यह दोनों एक राशि पर हों तब लग्नसे इष्ट काल साधन और रवि लग्न साधनकी रीति लिखतेहैं-

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशांतरहृत उदयः स्यात्खाग्निहृत्त्विष्टकालःइनतं उदय ऊनश्चेत्तशो-घ्यो द्युरात्रान्निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले॥५॥

अन्वयः-यदि, तनुदिननाथौ, एकराशौ, (तदा), तदंशान्तरहृतः, उदयः, खाग्निहृत, इष्टकालः, स्यात्, चेत, उदयः, इनतः, ऊनः

(तदा), सः, द्युरात्रात्, शोध्यः, निशि, तु, सरसभार्कात्, इष्ट-काले, तनूः, स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थः-सायन लग्न और सायन सूर्य्य यह दोनों एक राशिपर स्थित हों तो उनके अंशोंके अन्तरको रविके उदयसे गुणाकरे और ३० का भागदेय तब पलात्मक लब्धि अभीष्ट काल होताहै। यदि सूर्य्यकी अपेक्षा सायन लग्न कम होय तौ इस ऊपरकी रीतसे साधेहुए कालको ६० घटीमें घटावे जो शेष रहै वह अभीष्ट काल होताहै।

स्पष्ट सूर्य्यमें छःराशि मिलाकर उससे लग्न साधे, परन्तु जो इष्ट काल कहाहै उसमें दिनमान घटादेय जो शेष रहै उसको इष्ट काल माने ॥ ५ ॥

उदाहरण.

सायन लग्न १ रा० २८ अं० ३७ क० ५० वि० और सायन सूर्य्य १ रा० २३ अं० ५ क० १५ वि० इन दोनोंकी राशि छोड़ अंशोंका अन्तर करा तब ४ अं० ४४ क० ३५ वि० हुआ इसको वृषभ राशिके उदय २५३ से गुणा करा तब १२०० अं० ० क० ३५ वि० हुये इसमें ३० का भाग दिया तब पलात्मक लब्धि हुई ४० पल इसमें ६० का भाग दिया तब घटी आदि इष्ट काल हुआ० घ० ४० प० ॥

द्वितीय २ उदाहरण.

सायन सूर्य १ रा० २४ अं० ४९ क० ७ वि० और सायन लग्न १ रा० १७ अं० ४७ क० ११ वि० यहां एकराशीपरही लग्न रविसे कम है इस कारण इन दोनों का जो अन्तर हुआ ७ अं० १ क० ५६ वि० इसको वृषभ राशिका उदय २५३ से गुणा करके तीस ३० का भाग दिया तब ५९ पलात्मकलब्धि हुई इसको ६० घटीमें घटाया तब ५९ घ० १ प० यह अभीष्ट काल हुआ ॥

तृतीय ३ उदाहरण.

शक १५३४ वैशाख शुक्ल १५ के दिन सूर्योदयसे ५९ गत होने पर लग्न साधनाहै तहाँ इष्ट घटी ५९ मध्यम सूर्य्य हुआ १ रा० ४ अं० १३ क० ४२ वि० गति हुई ५८। ८ यहाँ ५९ घटीसे चालित सूर्य्य हुआ १ रा० ५ अं० ११ क० ५० वि० मन्दकेन्द्र हुआ १ रा० १२ अं० ४८ क० १० वि० मन्दफल १ अं० २८ क० ५२ वि० यह धन है इसकारण इस मन्दफल १। २८। ५२ को चालितस्पष्ट सूर्य १। ५। ११। ५० में युक्त करा तब १ रा० ६ अं० ४० क० ४२ वि० यह हुआ इसमें चर ऋण ९५ विकलाको घटाया तब १ रा० ६ अं० ३९ क० ७ वि० यह

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य्य हुआ इसमें अयनांश १८ अं. १० क. को युक्तकरा तव १ रा. २४ अं. ४९ क. ७ वि. हुआ इसमें ६ राशि युक्तकरी तब ७ रा. २४ अं. ४९ क. ७ वि. हुआ, इससे भोग्यकाल साधा तव भोग्यकाल हुआ ५९ पल तदनन्तर इष्टघटी ५९ को दिनमान३३घ. १० पलमें घटाया तव २५ घ. ५० प. यह सूर्य्यास्तसे घटिकादि इष्टकाल हुआ इस २५ घ. ५० के पलकरके १५५० में पलात्मक भोग्यकाल ५९ को घटाया तव शेष बचे १४९१ पल इनमें धन ३४२+ मकर ३०४+ कुम्भ २५३+ मीन २२१+ मेप २२१= इनके योग १३४१ को घटाया तव १५० शेषरहे इनको ३० से गुणाकरा तव ४५०० हुए इनमें वृषराशिके उदय२५२ का भागदिया तव अंशादि लब्धिहुई १७ अं. ४७ क. ११ वि. इसमें गतराशि (१.) मेष युक्तकरा तव १ रा. १७अं. ४७ क. ११ वि. हुए इसमें अयनांश १८ अं. १० क. को घटाया तव २९ अं. ३७ क. ११ वि. यह लग्नहुई ॥

अब गोलसंज्ञा-अयनसंज्ञा-दिनार्धज्ञान-रात्र्यर्द्धज्ञान-तथांशज्ञान।

गोलौ स्तः सौम्ययाम्यौ क्रियघटरसभे खेचरेऽथाय-
नेते नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथचरपलयुतोनास्तु पञ्चे-
न्दुनाड्यः। घस्रार्द्धं गोलयोः स्यात्तदयुतखगुणाः
स्यान्निशार्द्धं त्वथाक्षच्छायेपुघ्न्यक्षभायाः कृतिदश-
मलवोनेयमाशापलांशाः ॥ ६ ॥

अन्वयः–खेचरे, क्रियघटरसभे, सौम्ययाम्यौ, गोलौ, स्तः। अथ, नक्रात्, कर्कात्, च, षड्भे, अयने, स्तः, अथ, तु, पञ्चेन्दुनाड्यः, गोलयोः, चरपलयुतोनाः, घस्रार्द्धम्, स्यात्। तदयुतखगुणाः, निशार्द्धम्, स्यात्। अथ, तु, अक्षच्छायेपुघ्नी अक्षभायाः, कृतिदशमलवोना, इयम्, आशापलांशाः, स्युः ॥ ६ ॥

अर्थः–जब सायन रवि मेषादि छः राशिमें होताहै तब उसको उत्तर गोलीय कहतेहैं और जब सायन रवि तुलादि छः राशिमें होताहै तब उसको दक्षिण गोलीय कहतेहैं, तिसी प्रकार जब सायन रवि कर्कादि छः राशिमें होताहै तब उसको दक्षिणायन कहतेहैं, और मकरादि छः राशिमें होताहै तब

१ यह श्लोक दूसरे रविचंद्रस्पष्टीकरणाधिकारमें ३२ मा लिखाहै–उसका उदाहरणभी सविस्तर लिखागयाहै परंतु यहां त्रिप्रश्नाधिकारमेंही प्रासंगिक है-वहां केवल आनुषंगिक है सो जान लेना.

उत्तरायण कहतेहैं, पीछे लाएहुए चरको पलात्मक समझकर उसको यदि सायन रवि उत्तर गोलीय होय तौ १५ घटिकामें युक्त करदेय, और यदि सायन रवि दक्षिणगोलीय होय तौ १५ घटिकामें घटादेय जो शेषरहै वह दिनार्द्ध होताहै, इस दिनार्द्धको ३० घटीमें घटावै तब जो शेषरहै वह राज्यर्द्ध होताहै, तदनन्तर दिनार्द्ध और राज्यर्द्धको द्विगुणित करनेसे दिनमान और रात्रिमान होताहै ॥ तदनन्तर छाया (पलभा) को ५ से गुणा करनेपर जो अंशादि लब्धि होय उसमें पलभाके वर्गमें १० का भागदेकर जो अंशादि लब्धि मिलै उसको घटावै तब जो शेषरहै वह दक्षिण दिशाके अक्षांश होतेहैं ॥ ६ ॥

उदाहरण.

चर ९३ है, सायनरवि उत्तरगोलीय है इसकारण १५ घटीमें चर ९३ पल अर्थात् १ घटी ३३ पलको युक्तकरा तब १६ घ. ३३ प. यह दिनार्द्ध हुआ इस दिनार्द्धको ३० घटीमें घटाया तब १३ घ. २७ पल यह राज्यर्द्ध हुआ, दिनार्द्ध १६ घ. ३३ प. को द्विगुणित करा तब ३३ घ. ६ पल दिनमान हुआ, और राज्यर्द्ध १३ घ. २७ प. को द्विगुणित करा तब २६ घ. ५४ प. रात्रिमान हुआ ॥ [illegible] ५ से गुणा करा तब २८ अं. ४५ क. [illegible]. का वर्ग करा तब ३३ अङ्गुल ३ [illegible] लब्धि हुई ३ अं. १८ क. १८ वि. इसको पञ्चगुणित पलभा २८ अं. ४५ क. में घटाया तब २५ अं. २६ क. ४२ वि. यह काशीका दक्षिण अक्षांश हुआ ॥

अब नतकाल और उन्नतकाल साधनेकी रीति लिखतेहैं-

यातः शेषः प्राक्परत्रोन्नतं स्यात्कालस्तेनोनं द्युखण्डं नतं स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अन्वयः-प्राक्, यातः, उन्नतम्, स्यात्, परत्र, शेषः, कालः, (उन्नतम्, स्यात्), तेन, ऊनम्, द्युखण्डम्, नतम्, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अर्थः-सूर्योदयकालसे लेकर मध्यान्हकालपर्य्यन्त जो कालहै उसको पूर्वकपाल कहतेहैं, और मध्यान्हसे लेकर सूर्य्यास्तपर्य्यन्त जो कालहै उसको पश्चिमकपाल कहतेहैं, सूर्योदयसे लेकर पूर्वकपालका जो गतकाल हो यह पूर्वोन्नतकाल कहलाताहै, और पश्चिमकपालका जो सूर्य्यास्तपर्य्यन्त शेषकाल हो यह पश्चिमोन्नतकाल कहलाताहै, उन्नतकालको दिनार्द्धमें घटादेनेसे जो शेषरहै इसको नतकाल कहतेहैं ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण.

सूर्योदयसे गतकाल १० घ. ३० प. यह पूर्वोन्नत कालहै, इस उन्नतकालको दिनार्द्ध १६ घ.३३प. में घटाया तब शेषरहा६घ. ३ प. यह पूर्वनतकाल हुआ॥

अब अक्षकर्ण साधनेकी रीति लिखतेहैं-

अक्षच्छायावर्गतत्त्वांशयुक्तोमार्त्तण्डः स्यादङ्गुलाद्योऽक्षकर्णः ॥ ७ ॥

अन्वयः-अक्षच्छायावर्गतत्वांशयुक्तः, मार्त्तण्डः, अङ्गुलाद्यः, अक्षकर्णः, स्यात् ॥ ७ ॥

अर्थः-पलभाका वर्ग करके उसमें २५ का भागदेय जो लब्धि होय उसको मार्त्तण्ड कहिये १२ अङ्गुलमें युक्तकरदेय तब अङ्गुलादि अक्षकर्ण होताहै॥७॥

उदाहरण.

पलभा ५ अं० ४५ प्रतिअं०का वर्गकरा तब ३३ अं० ३ प्रतिअं० हुए इसमें २५का भागदिया तब १अं० १९ प्रतिअं० लब्धिहुए. तदनन्तर १२ अंगुलमें लब्धि १ अङ्गु० १९ प्रतिअङ्गुलको युक्त करा तब १३ अङ्गुल १९ प्रति-अंगुल यह अक्षकर्ण हुआ॥

अब हारसाधनकी रीति लिखतेहैं-

वेदेशाः शरहृच्चराब्धिरहिताः सौम्यानुदग्गोलयोर्हारोऽथो घटिकार्द्धयुङ्नतकृतेद्व्यंशः समाख्यः स्मृतः। चेत्सार्द्धत्रिकुतोनतं यदधिकं वेदाहतं तद्वियुक्स्पष्टोऽसौ तदयुग्घरस्त्वभिमतःस्यादक्षकर्णोद्धृतः॥८॥

अन्वयः-वेदेशाः, सौम्यानुदग्गोलयोः, शरहृच्चराब्धिरहिताः, हारः, (स्यात्), अथो, घटिकार्द्धयुक्, नतकृतेः, द्व्यंशः, समाख्यः, स्मृतः। चेत्, नतम्, यत्, सार्द्धत्रिकुतः, अधिकम्, (स्यात्, तदा सार्द्धत्रयोदशहीनम्, कृत्वा,) वेदाहतम्, तद्वियुक्, असौ, स्फुटः, (स्यात्,)। तदयुक्, हरः, अक्षकर्णोद्धृतः, अभिमतः, स्यात् ॥ ८ ॥

अर्थः-चरमें ५का भागदेकर जो लब्धिहो वह यदि उत्तरगोलमें होय तौ ११४में युक्त करदेय, और यदि पश्चिमगोलमें होय तौ ११४में घटादेय तब जो अङ्क मिलें वह मध्यम हार होताहै। और नतकालमें ३० पलयुक्त करदेय तब जो अङ्कहों उनका वर्ग करके दोका भागदेनेसे जो लब्धिहो वह समाख्य होताहै, यदि नतकाल १३ घ० ३० प०से अधिक होय तौ पूर्वरीतिके अनु-

सार समाख्य लाकर तदनन्तर नतकालमें १३ घ० ३० प०घटावे जो शेषरहे उसको चारसे गुणाकरे तब जो गुणनफल हो उसको पहले लायेहुए समाख्यमें युक्त करदेय। और यदि नतकाल १३ घ० ३० प० न्यून हो तो समाख्य यथावत् रहनेदेय। और मध्यम हारमें समाख्यको घटाकर जो शेषरहे उसमें अक्षकर्णका भागदेय तब जो लब्धि हो वह अभीष्टहार होताहै॥ ८॥

उदाहरण.

चर ९३में ५का भागदिया तब लब्धि हुई १८। ३६ यह सायन सूर्य्यके उत्तर गोलमें है इसकारण इस लब्धि १८। ३६को ११४में युक्त करा तब-१३२। ३६ यह हार हुआ। नतकाल ६ घ० ३ प०में घटिकार्ध ३० पल युक्तकरे तब ६ घ० ३३ प० हुए इसका वर्ग करा तब ४२। ५४ हुए इनमें २का भागदिया तब लब्धि हुई २१। २७ यह समाख्य हुआ, अब मध्यम हार १३२। ३६ में समाख्य २१।२७ घटाया तब १११। ९ रहे इसमें अक्षकर्ण १३। १९का भागदिया तब लब्धि हुई ८। २० यह अभीष्ट हार हुआ॥

अब इष्टकर्ण और इष्ट छाया साधनेकी रीति लिखतेहैं-

दिग्घ्नाक्षभाहृतचरं स्वगुणं द्विनिघ्नं स्वेष्वंशयुग्युग-भवान्वितमत्र भाज्यः। कर्णोङ्गुलादिक इहेष्टहरा-प्तभाज्यः कर्णार्कवर्गविवरात्पदमिष्टभा स्यात्॥९॥

अन्वयः-दिग्घ्नाक्षभाहृतचरम्, स्वगुणम्, (ततः), द्विनिघ्नम्, (ततः), स्वेष्वंशयुक्, (ततः), युगभवान्वितम्, अत्र, भाज्यः, (स्यात्) । इष्टहराप्तभाज्यः, इह, अङ्गुलादिकः, कर्णः, (स्यात्), कर्णार्कवर्गविवरात, पदम्, इष्टभा, स्यात् ॥ ९ ॥

अर्थः-पलभाको १०से गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसका चरमें भागदेय तब जो लब्धिहो उसका वर्गकरै और उस वर्गको दोसे गुणा करै तब जो गुणनफल हो उसमें पाँचका भागदेय तब जो लब्धिहो उसको उसही गुणनफलमें युक्त करके जो अङ्कयोग हो उसमें ११४ युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग हो वह भाज्य कहलाताहै। उस भाज्यमें अभीष्टहारका भागदेय तब जो लब्धिहो वह अङ्गुलादि इष्टकर्ण होताहै। इष्टकर्णका वर्ग करके उसमें १२का वर्ग अर्थात् १४४ घटावे जो शेषरहे उसका वर्गमूल निकाले वह वर्गमूल अङ्गुलादि इष्टछाया होती है॥ ९ ॥

उदाहरण.

पलभा ५अङ्गुल ४५ प्रतिअङ्गुलको १०से गुणा करा तब ५७अङ्गुल ३०प्रतिअङ्गुल हुए इसका चर ९३में भागदिया तब लब्धि हुई १।३७ इसका वर्ग करा तब २।३६ हुए इनको २से गुणा करा तब ५।१२ हुए इसमें इसकाही पञ्चमांश १।२ युक्त करा तब ६।१४ हुए इसमें ११४ युक्तकरे तब १२०।१४ यह भाज्य हुआ इस भाज्यमें अभीष्टहार ८।२०का भागदिया तब लब्धि हुई १४।२५ यह अङ्गुलादि इष्टकर्ण हुआ। इस इष्टकर्ण १४।२५का वर्ग करा तब २०७।५० हुए और अर्क कहिये १२का वर्ग करा तब १४४ हुए, इन दोनों २०७।५०—१४४का अन्तर करा तब ६३।५० हुए. इसका वर्गमूल लिया तब ६ अङ्गुल ४६ प्रतिअङ्गुल ५८ तत्प्रतिअङ्गुल यह इष्टच्छाया हुई ॥ ९ ॥

अब इष्टच्छायासे कर्ण और नतकाल साधनेकी रीति लिखते हैं–

कर्णः स्यात्पदमर्कभाकृतियुतस्तद्भक्तभाज्योहरोऽ
भीष्टस्तत्पलकर्णघातरहितो मध्यो हरो द्व्याहतः।
चेद्वेदाङ्कधराधिकः पृथगतो वेदाङ्कभूताद्गुणाताढ्य-
स्तस्य पदं घटीमुखनतं स्यादर्द्धनाडीवियुक्॥१०॥

अन्वयः–अर्कभाकृतियुतः, पदम्, कर्णः, स्यात्। तद्भक्तभाज्यः, अभीष्टः, हरः, स्यात्। तत्पलकर्णघातरहितः, द्व्याहतः, मध्यः, हरः, चेत्, वेदांकधराधिकः, (स्यात्, तदा), पृथक्, (स्थाप्यः), अतः, वेदांकभूतात्, गुणात्ताढ्यः, (कार्य्यः), तस्य, पदम्, अर्द्धनाडीवियुक्, घटीमुखनतम्, स्यात् ॥ १० ॥

अर्थः–बारहके वर्ग और इष्टछायाके वर्गका योग करके उसका वर्गमूल निकाले तब वह वर्गमूल इष्टकर्ण कहलाताहै तिस इष्टकर्णका भाज्यमें भागदेय तब जो लब्धि मिले वह अभीष्ट हार होताहै। तदनन्तर तिस अभीष्ट हारको अक्षकर्णसे गुणाकरे और जो गुणन फल हो उसको मध्यम हार घटावे जो शेष रहै उसको दोसे गुणाकरे तब जो गुणन फल हो वह यदि १९४ से अधिक होय तो ऐसा करे कि उस गुणन फलको दो स्थानमें लिखे एक स्थानमें उस गुणन फलमें १९४ घटादेय जो शेषरहै उसमें तीनका भाग देय जो लब्धि हो उसको दूसरे स्थानमें लिखे हुए गुणन फलमें युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग हो उसका वर्गमूल निकालकर उसमें ३० पल घटादेय तब जो शेष रहै उसको नत-

काल जानै, और यदि गुणन फल १९४ से अधिक नहीं तौ उस गुणन फलकाही वर्गमूल निकालकर उसमें ३० पल घटावे तब जो शेष रहै उस-को नत काल जानै ॥ १० ॥

उदाहरण.

बारह १२ का वर्ग हुआ १४४ और इष्टच्छाया ७ । ५९ । २२ का वर्ग हुआ ६३ । ५० इन दोनोंका योग हुआ २०७ । ५० इसका वर्गमूल मिला १४ । २५ यह इष्ट कर्ण हुआ इसका भाज्य १२० । १४ में भाग दिया तब लब्धि हुई ८ । २० । २२ यह अभीष्ट हर हुआ इस हरको अक्षकर्ण १३ । १९ से गुणाकरा तब गुणनफल हुआ १११ । ३ इस गुणनफलको मध्यहर १३२ । ३६ में घटाया तब शेष रहे २१ । ३३ इसको २ से गुणाकरा तब ४३ । ६ हुए इसका वर्गमूल लिया तब ६ । ३३ मिला इसमें आधी घडी अर्थात् ३० पल घटाए तब ६ घ० ३ प० यह नत काल हुआ ॥ १० ॥

सार्द्धत्रयोदशाधिकनतका-उदाहरण.

कल्पित नत १५ । १० में घटिकार्द्ध ३० पलको युक्त करा तब १५ घ० ४० प० हुए इसका वर्ग करा तब २४५ । २६ हुआ इसमें २ का भाग दिया तब १२२ । ४३ यह समाख्य हुआ ॥ तदनन्तर नत १५ । १० सार्धत्रयोदशसे अधिकहै इस कारण नतमें १३ । ३० घटाए तब शेषरहा १ । ४० इसको ४ से गुणाकरा तब ६ । ४० यह गुणनफल हुआ इस गुणनफलको समाख्य १२२ । ४३ में घटाया तब शेष रहा ११६ । ३ यह स्पष्ट समाख्य हुआ इस स्पष्ट समाख्य ११६ । ३ को हार १३२ । ३६ में घटाया तब १६ । ३६ हुआ इसमें अक्षकर्ण १३ । १९ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ । १४ यह अभीष्ट हार हुआ इस अभीष्ट हार १ । १४ का भाज्य १२० । १४ में भाग दिया तब लब्धि हुई ९७ । २९ यह इष्ट कर्ण हुआ इसका वर्ग करा तब ९५०३० हुआ और बारहका वर्ग १४४ हुआ इन दोनों वर्गोंका अन्तर हुआ ९३५९० इसको ६० से सवर्णित करा तब ३३६९२४००० हुए इनका मूल लिया तब ९६ । ४४ यह इष्ट छायाहुई । इसका वर्ग करा तब ९३५८ । ५७ हुआ इसमें बारहके वर्ग १४४ को युक्त करा तब ९५०२ । ५७ हुआ. इसका मूल मिला ९७ । २९ यह कर्ण हुआ इसका भाज्य १२० । १४ में भाग दिया तब लब्धि हुई १ । १४ यह अभीष्ट हर हुआ इसको अक्षकर्ण १३ । १९ से गुणाकरा तब १६ । २५ हुआ, इसको मध्य हर १३२ । ३६ में घटाया तब

१ वर्गमूल निकालनेकी रीति हमने "लीलावती" की भाषाटीकामें स्पष्टरीतिसे लिखीहै, जो बम्बईमें "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेमें छपगईहै ।

११६। ११ रहे इनको दोसे गुणा करा तब २३२। २२ हुए यह १९४ से अधिक है इस कारण दो स्थानमें २३२। २२।-२३२। २२ लिखा. एक स्थान १९४ घटाए तब शेषरहे ३८। २२ इसमें ३ का भाग दिया तब लब्धि हुई १२। ४७ इसको दूसरे स्थानमें रक्खे हुए गुणन फल २३२। २२ में युक्त करा तब २४५।९ हुए इसका मूल लिया तब १५। ४० यह हुआ इस-१५। ४० में ३० पल घटाए तब १५। १० रहे यह कल्पित नतकाल हुआ॥

अब क्रान्ति साधनेकी रीति लिखते हैं-

चत्वारिंशदशीतिरद्रिकुभवः क्षक्षेन्दवोभूधृती पट्स्वाक्षीणि जिनाश्विनोऽङ्कविकृती खाब्ध्यश्विनः सायनात्। खेटाद्दोर्लवदिग्लवप्रमगतोंकोऽसौ तदूनागताच्छेषघ्नाद्दशलब्धियुग्दशहृतोंशाद्योऽपमःस्यात्स्वदिक्॥ ११॥

अन्वयः-सायनात्, खेटात्, दोर्लवदिग्लवप्रमगतः, अंकः, (स्यात्), असौ, तदूनागतात्, शेषघ्नात्, दशलब्धियुक्, (ततः), दशहृतः, अंशाद्यः, स्वदिक्, अपमः, स्यात्। (अथ), चत्वारिंशत्, अशीतिः, अद्रिकुभवः, क्षक्षेन्दवः, भूधृती, पट्स्वाक्षीणि, जिनाश्विनः, अङ्कविकृती, खाब्ध्यश्विनः, (एते, नव, अङ्काः, स्युः)॥ ११॥

अर्थः-सायन सूर्य्यके भुजकरे और उन भुजोंके अंश करके उनमें १० का भागदेय जो लब्धि होय तत्परिमित नीचे लिखे हुए अंक ग्रहण करे और उस लब्धिमें एक मिलाकर जो अङ्क होय तत्परिमित नीचे लिखे हुए अङ्क फिर ग्रहण करे। तदनन्तर इस द्वितीयवार ग्रहण करे हुए अङ्कमें प्रथमवार ग्रहण करे हुए अङ्क घटादेय तब जो शेषरहे उससे पहली अंशादि बाकीको गुणाकरे तब जो गुणनफल हो उसमें दशका भागदेय तब जो लब्धि हो उसको प्रथम ग्रहणकरे हुए अङ्कमें युक्तकरदेय तब जो अङ्कयोग हो उसमें दशका भागदेय तब जो लब्धि मिले उसको अंशादि क्रान्ति जाने, उसको सायनरवि उत्तर गोलमें होय तो उत्तर और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण जाने। (जो अङ्क लब्धिपरिमित ग्रहण करना कहे हैं उन अङ्कोंको लिखते हैं)-४० चालीस और ८० अस्सी-और अद्रि कहिये ७ कुकहिये १ भूकहिये १ अर्थात् ११७ एकसौसतरह-और कुकहिये १ अक्षकहिये ५ इन्दु कहिये १ अर्थात् १५१ एकसौ

इक्यावन-और भूकहिये १ धृति कहिये १८ अर्थात् १८१ एकसौइक्यासी-और षट् ६ खकहिये० अश्विकहिये २ अर्थात् २०६ दोसौछः-और जिनकहिये २४ अश्विन् कहिये २ अर्थात् २२४ दोसौचौबीस-और अङ्क कहिये ६ विकृति कहिये २३ अर्थात् २३६ दोसौछत्तीस-और ख ० अब्धि ४ अश्विन् २ अर्थात् २४० दोसौचालीस, यह नौ अङ्क है ॥ ११ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०

उदाहरण.

स्पष्टरवि १ रा. ५ अं. ५२ क. ४१ वि. में अयनांश १८ अं. १० कलाको युक्त करा तब १ रा. २४ अ. २ क. ४१ वि. यह सायन रवि हुआ इसके भुजकरके अंश करे तब ५४ अं. २ क. ४१ वि. हुए, इसमें दशका भागदिया तब लब्धि हुई ५ शेषवचे ४ अं. २ क. ४१ वि. और लब्धि परिमित अङ्क मिला १८१ और एकाधिक लब्धि६ परिमित अङ्क मिला२०६इन दोनों अङ्कोंका अन्तर करा तब २५ हुआ इस अन्तरसे शेष ४ अं. २ क. ४१ वि. को गुणाकरा तब १०१ अ. ७ क. ५ वि. हुआ इसमें १० का भागदिया तब लब्धि हुई १० अं. ६ क. ४२वि. इस लब्धिमें प्रथम ग्रहण करे हुए अङ्क १८१ को युक्त करा तब१९१ अ. ६ क. ४२ वि. हुआ इसमें १० का भागदिया तब लब्धि हुई१९ अं. ६ क. ४० वि. यह क्रान्ति हुई और यह सायनरवि उत्तर गोलमें है इसकारण उत्तर है ॥ ११ ॥

अब और प्रकारसे क्रान्ति साधनेकी रीति लिखते हैं-

स्युः खण्डानि खवार्द्धयोऽम्बरकृताः शैलाग्नयोऽब्ध्यग्नयस्त्रिंशत्तत्त्वधृतीनवारिनिधयस्तैः सायनांशग्रहात् । वाह्वंशाभ्रकुभागसंख्यकयुतिः शेषैश्च घाताद्दशाप्त्याढ्या दिग्विहता लवादिरपमस्तद्दिक्स्वगोलाद्भवेत् ॥ १२ ॥

अन्वयः-खवार्द्धयः, अम्बरकृताः, शैलाग्नयः, अब्ध्यग्नयः, त्रिंशत्, तत्त्वधृती, इनवारिनिधयः, (एतानि), खण्डानि, स्युः, तैः, सायनांशग्रहात्, बाह्वंशाभ्रकुभागसंख्यकयुतिः, च, शेषैः, घातात्, दशाप्त्याढ्या, (ततः), दिग्विहता, स्वगोलात्, तद्दिक्, लवादिः, अपमः, स्यात् ॥ १२ ॥

अर्थः-ख० वार्द्धय ४ अर्थात् ४० चालीस,-और अम्बर० कृत ४ अर्थात् ४० चालीस,-और शैल ७ अग्नि ३ अर्थात् ३७ सैंतीस,-और अब्धि ४ अग्नि ३ अर्थात् ३४ चौंतीस-और त्रिंशत् ३० तीस,-और तत्व अर्थात् २५,-और धृति अर्थात् १८ अठारह,-और इन अर्थात् १२ बारह,-और वारिनिधि अर्थात् ४ चार। यह नौ अङ्क हैं ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९
४०	४०	३७	३४	३०	२५	१८	१२	४

सायनरविके भुज करके अंशकरै और उन अंशोंमें १० का भागदेय तब जो लब्धि मिले तत्परिमित ऊपर लिखेहुए अङ्कपर्य्यन्त पहले सम्पूर्ण अङ्कोंका योग ग्रहण करै और उस लब्धिमें एक युक्त करके तत्परिमित अङ्क ग्रहण करके उससे पहले शेषभूत अंशादिको गुणाकरै तब जो गुणनफल हो उसमें १० का भागदेय तब जो लब्धि हो उसमें ऊपरोक्त अङ्कयोग मिलावै तब जो इकट्ठा अङ्क योग हो उसमें दशका भागदेनेसे जो लब्धि हो वह क्रान्ति होतीहै उसको सायनरवि उत्तर गोलके अन्तर्गत हो तो उत्तर और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण जानै ॥ १२ ॥

उदाहरण.

स्पष्टरवि १ रा. ५ अं. ५२ क. ४१ वि. में अयनांश १८ अं० १० क. को युक्त करा तब १ रा. २४ अं. २ क. ४१ वि. यह सायनरवि हुआ इसके भुज करके अंश करे तब ५४ अं.२ क.४१वि. हुए इनमें दश१०का भागदिया तब लब्धिहुई ५ शेषवचे ४ अं. २ क. ४१ वि. और लब्धि ५ परिमित ऊपर लिखे हुए अङ्क-पर्य्यंत पहले सम्पूर्ण अङ्कों ४०-४०-३७-३४-३०का योग१८१हुआ,फिर एका-धिक लब्धि ६ परिमित अङ्क २५ से ऊपरोक्त अंशादि शेष ४ अं. २ क. ४१ वि. को गुणाकरा तब १०१ अं. ७ क. ५ वि. हुए इनमें १० का भागदिया तब१० अं. ६ क. ४२ वि. लब्धि हुई इसमें ऊपरके अङ्कयोग १८१को युक्त करा तब १९१ अं. ६ क. ४२ वि. हुए इनमें १० का भागदिया तब १९ अं. ६ क ४० वि. यह क्रान्ति सायनरवि उत्तर गोलमें होनेके कारण उत्तरहै ॥ १२ ॥

अब प्रकारान्तरसे स्थूलक्रान्ति साधनेकी रीति लिखतेहैं-

षट्पडिपूदधिद्विकभिरर्द्धैः खेटभुजांशादिनांशमितेक्यम् । शेषहतैष्यदिनांशयुतंवांशाद्यपमः सुखसंव्यवहृत्यै ॥ १३ ॥

अन्वयः-वा, पट्पडिषूदधिदक्कुभिः, अर्द्धैः, खेटभुजांशादिनांशमितैक्यम्, शेषहतैष्यदिनांशयुतम्, अंशाद्यपमः, सुखसंख्यवहत्यै, (स्यात्) ॥ १३ ॥

अर्थः-सायनस्पष्ट रविके भुजकरके अंशकरै, उन अंशोंमें १५का भागदेय जो लब्धि मिलै तत्परिमित नीचे लिखे हुए खण्डोंका योग करलेय, और लब्धिमें एक मिलाकर तत्परिमित अंक ग्रहणकरके उससे पहली बाकीको गुणाकरै तब जो गुणनफलहो उसमें १५का भागदेकर जो लब्धिहो उसको ऊपरोक्त अङ्कयोग मिलादेय तब अंशादि स्थूलक्रान्ति होतीहै, क्रांतिकी दिशा जाननेकी रीति पहले कहचुकेहैं।

१	२	३	४	५	६
६	६	५	४	२	१

उदाहरण.

सायनस्पष्टरवि १ रा० २४ अं० २ क० ४१ वि० इसके भुजकरके अंशकरे तब ५४ अं० २ क० ४२ वि० हुए इसमें १५का भागदिया तब लब्धि हुई ३ शेष रहा ९ अं० २ क० ४१ वि० लब्धि ३ परिमित तीन क्रान्ति ६-६-५का योग हुआ १७ और एकाधिक लब्धि ४ परिमित क्रान्तिके अङ्क ४ से शेष ९ अं० २ क० ४१ वि०को गुणाकरा तब ३६ अं० १० क० ४४ वि० हुआ इसमें १५का भागदिया तब २ अं० २४ क० ४३ वि० लब्धि हुई इसको ऊपरोक्त अङ्कयोग १७ में युक्त करा तब १९ अं० २४ क० ४३ वि० यह क्रान्ति हुई, यह सायनरवि उत्तर गोलमें है इसकारण उत्तरहै ॥ १३ ॥

अथ स्थूलक्रान्तिसे भुजांश साधनेकी रीति लिखतेहैं-

ततो दलानि शोधयेत्तिथिघ्नशेषमेष्यहृत्।तिथिघ्न-शुद्धसंख्यया युतं भवन्ति दोर्लवाः ॥ १४ ॥

अन्वयः-ततः, दलानि, शोधयेत्, तिथिघ्नशेषम्, एष्यहृत्, (कार्य्यम्), (ततः), तिथिघ्नशुद्धसंख्यया, युतम्, दोर्लवाः, भवन्ति ॥ १४ ॥

अर्थः-तिस क्रान्तिमें क्रमसे पहले कहेहुए क्रान्त्यङ्क जितने घटसकैं उतने घटावैं अन्तमें जो शेषरहै उसको १५ से गुणाकरै तब जो गुणनफलहो उसमें अशुद्ध यदिये जो नहीं घटसकाथा उस क्रान्त्यङ्कका भागदेय तब जो लब्धिहो उसको अंशादि जानै उन अंशोंमें जितने संख्यक क्रान्त्यङ्क ऊपर घटाएहैं उस संख्याको १५से गुणाकरके जो गुणनफल हो वह अंशोंमें युक्त करदेय तब भुजांश होवैंगे ॥ १४ ॥

उदाहरण.

पूर्व साधनकरी हुई क्रान्ति १९ अं० २४ क० ४३ वि०के अंशोंमें प्रथम क्रान्त्यङ्क६को घटाया तब शेषरहे १३ अं० २४ क० ४३ वि० इस शेषके अंशोंमें द्वितीय क्रान्त्यङ्क ६को घटाया तब ७ अं० २४ क० ४३ वि० शेषरहे इस शेषके अंशोंमें तृतीय क्रान्त्यङ्क ५को घटाया तब शेषरहे २ अं०२४ क० ४३ वि० अब इस शेषमें आगेका क्रान्त्यङ्क नहीं घटसक्ता इसकारण इस अन्तिम शेष २।२४।४३ को १५से गुणा करा तब ३६ अं० १० क० ४५ वि० हुए इसमें जो क्रान्त्यङ्क४ नहीं घटसकाथा उसका भागदिया तब लब्धि हुई ९अं० २क० ४१ वि०। अब जितने संख्यक क्रान्त्यंक घटाएथे उस ३ संख्याको १५से गुणा करा तब४५हुए इनको उस लब्धि ९अं० २क०४१वि०में युक्त करा तब ५४ अं० २ क० ४१ वि० यह सायनरविके भुजांश हुए॥

अब यदि रविका ज्ञान न होय तो केवल दिनमानसेही स्थूलक्रान्ति साधनेकी रीति लिखते हैं-

द्युदलतिथिवियोगस्तद्विनाड्यश्चरं स्यादथ निजगजभागोपेतमक्षप्रभाप्तम्। दिनकृदपमभागास्तत्त्वलिप्तायुताः स्युर्द्युदलकृशपृथुत्वे ते क्रमाद्याम्यसौम्याः॥ १५॥

अन्वयः-द्युदलतिथिवियोगः, विनाड्यः, चरम्, स्यात्, अथ, तत्, निजगजभागोपेतम्, (ततः), अक्षप्रभाप्तम्, (ते), दिनकृदपमभागाः, स्युः, ते, तत्त्वलिप्तायुताः, द्युदलकृशपृथुत्वे, क्रमात्, याम्यसौम्याः, स्युः॥ १५॥

अर्थः-दिनार्द्ध और पन्दरह घटिकाका जो अन्तर हो उसको साठसे गुणा करे तब पलात्मक चर होताहै, उसमें अपने अष्टमांशको युक्त करदेय तब जो अंकहो उसमें पलभाका भागदेय तब जो अंशादि लब्धिहो उसमें २५कलायुक्त करे तब रविकी क्रान्तिके अंशादि होते हैं यह अंशादि यदि १५ घड़ीसे अधिक हों तो उत्तर और कम हों तो दक्षिण होतेहैं॥ १५॥

उदाहरण.

दिनार्द्धदं १६ घ० ३३ प० इसमें १५ घ० घटाई तब शेषरहे १ घ० ३३ प० इसको ६० से गुणा करा तब ९३ पल, यह पलात्मक चर हुआ इसमें इस

९३काही अष्टमांश ११ । ३७ । ३० युक्त करे तब १०४ । ३७ । ३०,हुए इसमें पलभा ५ । ४१ का भाग देनेके निमित्त भाजक ५ । ४१ और भाज्य १०४ । ३७ । ३० दोनोंको सवर्णित करा तब भाजक हुआ २०७०० और भाज्य हुआ ३७६६५० तदनन्तर भाज्य ३७६६५०में भाजक २०७००का भागदिया तब अंशादि लब्धि १८ अं० ११ क० ४४ वि० हुई इसमें २५ कला युक्तकरी तब १८ अं० ३६ क० ४४ वि० यह क्रान्ति हुई यह दिनार्ध १५ घ०से अधिकहै इसकारण उत्तर है ॥

अब नतांश उन्नतांश और पराख्यके साधनेकी रीति लिखतेहैं–

क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिर्नतांशास्तद्धीना नवतिः स्युरुन्नतांशाः । दिनमध्यभवास्ततोऽपि ये स्युः क्रान्त्यंशा लघुखण्डकैः पराख्यः ॥ १६ ॥

अन्वयः–क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिः, नतांशाः, स्युः, तद्धीना, नवतिः, दिनमध्यभवाः, उन्नतांशाः, (स्युः), ततः, अपि, लघुखण्डकैः ये, क्रान्त्यंशाः, स्युः, (ते), पराख्यः ॥ १६ ॥

अर्थः–क्रान्ति दक्षिण होय तौ उसको अक्षांशमें युक्तकरदेय और क्रान्ति उत्तर होय तौ उसको अक्षांशमें घटादेय तब दक्षिण नतांश होतेहैं, यदि क्रान्ति उत्तर होय और अक्षांशकी अपेक्षा अधिक होय तब क्रान्तिमें अक्षांश घटानेसे उत्तरनतांश होते हैं, और नतांशको ९० में घटादेय तब उन्नतांश होतेहैं, परन्तु वह दिनके मध्यकाल अर्थात् मध्यान्हकालके होतेहैं इष्टकालके नहीं होतेहैं । उन्नतांशोंको भुजमानकर उनसे क्रान्त्यद्धांके द्वारा स्थूल क्रान्ति लावे तब पराख्य होताहै ॥ १६ ॥

उदाहरण.

उत्तरक्रान्ति १९ अं. ६ क. ४० वि. को अक्षांश २५ अं. २६ क. ४२ वि. में घटाया तब ६ अं. २० क. २ वि. यह दक्षिणनतांश हुए इन नतांशों ६।२०।२ को ९० में घटाया तब शेषरहे ८३ अं. ३९ क. ५८ वि. यह उन्नतांश हुए । इससे लाईहुई स्थूल क्रान्ति २३ अं. ३४ क. ३९ वि. हुई इसको पराख्य कहतेहैं ॥

अब अन्य प्रकारसे उन्नतकालसे अभीष्टकर्णसाधन लिखतेहैं–

नवतिगुणितमिष्टमुन्नतं द्युदलहृतं फलभागतोपमः । कथितपरगुणस्तदुद्धृता रविनवपट्टच्छ्रवणोऽथवा भवेत् ॥ १७ ॥

अन्वयः–इष्टम्, उन्नतम्, नवतिगुणितम्, (ततः) द्युदलहृतम्, (कार्य्यम्, तदा,) फलभागतः, अपमः, कथितपरगुणः, (कार्य्यः), तदुद्धृताः, रविनवपट्, अथवा, श्रवणः, भवेत् ॥ १७ ॥

अर्थः–अभीष्ट उन्नतकालको ९० से गुणाकरै तब जो गुणनफल हो उसमें दिनार्द्धका भागदेय तब जो अंशादि लब्धि होय उससे स्थूल क्रान्ति लाकर उसको पूर्वोक्त पराख्यसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसका "रविनवपट्" कहिये६९१२में भागदेय तब जो लब्धिहो वह अङ्गुलादिकर्ण होताहै॥१७

उदाहरण.

उन्नतकाल १० घ. ३० प. को ९० से गुणाकरा तब९४५ घटीहुई इसमें दिनार्द्ध १३ घ. ३३ प. का भागदिया तब लब्धिहुई ५७ अं. ५ क.५८ वि. इससे लाईहुई क्रान्ति २० अं. १३ क. ३५ वि. को पराख्य २३ अं. ३४ क. ३९ वि. से गुणाकरा तब ४७६ अं. ५३ क.१५ वि. हुई इस गुणनफलका ६९१२ में भाग दिया तब लब्धि मिली १४ अङ्गुल २९ प्रतिअङ्गुल यह इष्टकर्ण हुआ ॥ १७ ॥

अब इष्टकर्णसे उन्नतकाल साधनेकी रीति लिखतेहैं–

तरणिनवरसाः श्रवोद्धृताः परविहृता अपमो भवेत्ततः। दिनदलगुणिता भुजांशका नवतिहृता अथवेष्टमुन्नतम् ॥ १८ ॥

अन्वयः–अथवा, तरणिनवरसाः, श्रवोद्धृताः, (ततः), परविहृताः, (कार्य्याः, फलम्), अपमः, भवेत्। ततः, भुजांशकाः, दिनदलगुणिताः, (ततः), नवतिहृताः, इष्टम्, उन्नतम्, (स्यात्) ॥ १८ ॥

अर्थः–"तरणिनवरस" कहिये ६९१२ में इष्टकर्णका भागदेय तब जो लब्धि होय उसमें फिर पराख्यका भागदेय तब जो लब्धि होय वह स्थूल क्रान्ति होतीहै, तदनन्तर उस क्रान्तिसे पूर्वोक्तरीतिके अनुसार भुजांश लाकर उनको दिनार्द्धसे गुणाकरै तब जो गुणनफल हो उसमें ९० का भागदेय तब जो लब्धि हो वह घटिकादि उन्नतकाल होताहै ॥ १८ ॥

उदाहरण.

६९१२ में इष्टकर्ण १४ अङ्गुल २९ प्रतिअङ्गुलका भाग दिया तब लब्धि हुई ४७६ अं. ५३ क. १५ वि. इसमें पराख्य २३ अं. ३४ क. ३९ वि. का भागदिया

तब लब्धि हुई २० अं. १३ क. ३५ वि. यह स्थूल क्रान्ति हुई इससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार भुजांश आये ५७ अं. ५ क. ५८ वि. इसको दिनार्द्ध १६ घ. ३३ प. से गुणाकरा तब ९४५ हुए इनमें ९० का भागदिया तब लब्धि हुई १० घ. ३० प. यह उन्नतकाल हुआ ॥

अब उन्नतकालसे यन्त्रजोन्नतांश साधनेकी रीति लिखतेहैं-

खाङ्कघ्नोन्नतघटिकादिनार्द्धभक्ता भागाः स्युस्तदप-मजांशकाः परघ्नाःसिद्धाप्तानिगदितवत्ततो भुजां-शास्तत्काले स्युरिति च यन्त्रजोन्नतांशाः ॥ १९॥

अन्वयः-खाङ्कघ्नोन्नतघटिकाः, दिनार्द्धभक्ताः, भागाः, स्युः, । तदपमंजांशकाः, परघ्नाः,(ततः), सिद्धाप्ताः, ततः, निगदितवत्, भुजांशाः, तत्काले, यंत्रजोन्नतांशाः, स्युः ॥ १९ ॥

अर्थः-उन्नतकालकी घटिकाओंको ९० से गुणाकरै तब जो गुणनफल हो उसमें दिनार्द्धका भागदेय तब जो अंशादिलब्धि हो उससे स्थूल क्रान्ति लाकर उसको परांख्यसे गुणाकरै और जो गुणनफल मिले उसमें २४ का भाग देय तब जो लब्धि हो उसको स्थूल क्रान्ति मानकर उससे भुजांश लावै वही यन्त्रजोन्नतांश होतेहैं ॥ १९ ॥

उदाहरण.

उन्नतकाल १० घ० ३० प० को ९० से गुणाकरा तब ९४५ हुई इनमें दिनार्द्ध १६ घ० ३३ प० का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ५७ अं. ५ क० ५८ विकला इससे लाईहुई क्रान्ति २० अं० १३ कला ३५ वि० हुई इसको परांख्य २३ अंश ३४ कला ३९ वि० से गुणा करा तब ४७६ अं० ५३ क० १५ वि० हुए इनमें २४ का भाग दिया तब लब्धि हुई १९ अं० ५२ क० १३ वि० इससे लाएहुए भुजांश ५५ अं० ४५ क० ४८ वि० यही यंत्रजोन्नतांश हुए ॥

अथ इष्टयंत्रजोन्नतांशसे उन्नत काल साधनेकी रीति लिखतेहैं-

अभिमतयन्त्रलवास्ततोऽपमोऽसौ जिननिघ्नः परहृत्ततो भुजांशाःद्युदलघ्नाः खनवोद्धृताः कपाले प्राक्पश्चाद्घटिकाःक्रमाद्गतैष्याः ॥ २० ॥

१ यन्त्र कहिये तुरीय यन्त्र और यन्त्र जो उन्नतांश कहिये तुरीय यन्त्रसे सूर्य पृथ्वीसे ज्या-दे जितने अंशोंपर ऊंचा होवे ॥

अन्वयः-अभिमतयन्त्रलवाः, ततः, (यः), अपमः असौ, जिन-निघ्नः, परहृत्, ततः, भुजांशाः, (स्युः, ते), द्युदलघ्नाः, खनवोद्धृताः, पूर्वापरकपाले, क्रमात्, गतैष्याः, घटिकाः (स्युः) ॥ २० ॥

[illegible]-अभीष्ट यंत्रजोन्नतांशसे स्थूल क्रान्ति लाकर उसको चौवीससे [illegible]र तब जो गुणन फल हो उसमें पराख्यका भाग देय तब जो लब्धि उसको अंशादि स्थूल क्रान्ति जानै और उससे भुजांश लावै फिर [illegible] दिनार्द्धसे गुणा करै तब जो गुणनफल हो उसमें ९० भाग देय [illegible]ो लब्धि होय वह घटिकाआदि उन्नतकाल पूर्वकपालमें होय तौ [illegible]और उत्तर कपालमें होय तौ एष्य होता है ॥ २० ॥

उदाहरण.

अभीष्टयंत्रजोन्नतांश ५५ अं० ४५ क० ४८ वि० इससे लाईहुई क्रान्ति १९ अं० ५२ कला १३ वि० को २४ से गुणाकरा तब ४७६ अं० ५३ क० १२ वि० हुए इसमें पराख्य २३ अं० ३४ क० ३९ वि० का भाग दिया तब २० अं० १३ कला ३५ विकला लब्धि हुई इसको क्रान्ति मानकर लाये हुए भुजांश ५७।५।५८ को दिनार्द्ध १६ घ० ३३ प० से गुणा करा तब ९४५ घ० हुए इसमें ९० का भाग दिया तब १० घ० ३० प० यह पूर्व कपालमें होनेके कारण गत उन्नत काल हुआ ॥ २० ॥

अब यंत्रजोन्नतांशसे इष्टकर्ण साधनेकी रीति लिखते हैं-

यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ता वस्विभदस्राः स्यादिह कर्णः ॥ ऽऽ ॥

अन्वयः-यन्त्रलवोत्थक्रान्तिलवाप्ताः, वस्विभदस्राः, इह, कर्णः, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अर्थः-यंत्रजोन्नतांशसे क्रान्ति लाकर उसका वस्विभदस्र कहिये २८८ में भाग देय तब जो लब्धि हो वह अङ्गुलादि कर्ण होता है ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण.

यंत्रजोन्नतांश ५५ अं० ४५ क० ४८ विकलाने लाईहुई क्रान्ति १९ अं० ५२ क० १३ वि० का २८८ में भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई १४ अङ्गुल २९ प्रतिअङ्गुल ३८ तत्प्रतिअङ्गुल यह इष्ट कर्ण हुआ ॥ ऽऽ ॥

अब इष्ट कर्णसे यन्त्रोन्नतांश साधनेकी रीति लिखते है-

कर्णहृतास्तेस्यादपमोऽतोबाहुलवाःस्युर्यन्त्रलवावा २१

अन्वयः-ते, कर्णहृताः, अपमः, स्यात्, अतः, बाहुलवाः, वा, यन्त्र-लवाः, स्युः ॥ २१ ॥

अर्थ-तिन वस्विभद्स्र २८८ मे कर्णका भाग देय तब जो लब्धि हो वह क्रान्ति होती है, तदनन्तर इसी क्रान्तिसे भुजांश लावै वह भुजांशही यन्त्रोन्नतांश होते है ॥ २१ ॥

उदाहरण.

२८८ मे इष्ट कर्ण १४ अङ्गुल २९ प्रतिअङ्गुल ३८ तत्प्रतिअङ्गुलका भाग दिया तब लब्धि हुई १९ अं० ५२ क० १३ वि० यह क्रान्ति हुई इससे लाए हुए भुजांश हुए ५५ अं० ४५ क० ४८ वि० यही यन्त्रोन्नतांश है ॥ २१ ॥

सर्वत्र नाडिकाबन्धादि और कुण्डमण्डपादि विधिमे दिक्साधनका कार्य्य पडता है इस कारण अब दिक्साधनकी रीति लिखते है-

वृत्तेसमभूगते तु केन्द्रस्थितशङ्कोः क्रमशो विशत्य-पैति । छायाग्रमिहापरा च पूर्वा ताभ्यां सिद्धति मेरुदक्चयाम्या ॥ २२ ॥

अन्वयः-समभूगते, वृत्ते, केन्द्रस्थितशङ्कोः, छायाग्रम्, क्रमशः, विशति, इह, अपरा, (स्यात्), (यत्र), च, अपैति, (तत्र), पूर्वा, (स्यात्), ताभ्याम्, सिद्धतिमेः, उदक्, याम्या, च, (स्यात्) ॥ २२ ॥

अर्थ-जलकी समान हमवार करी हुई भूमिमे इष्ट त्रिज्या परिमित सूतसे एक वर्तुल काढे, और उस वर्तुलके मध्यमे द्वादश अङ्गुलका शङ्कु गाडे, पूर्वाह्नमे उस शङ्कुकी छायाका अग्र वर्तुलको जहां स्पर्श करे, तहाँ पश्चिम दिशाका चिन्ह करै और अपराह्नमे तिस शङ्कुकी छायाका अग्र-भाग जहाँ वर्तुलसे बाहर पडै तहाँ पूर्व दिशाका चिन्ह करै, तदनन्तर पूर्व पश्चिम चिन्हांकी संधिपर एक रेखा खैचे वह पूर्वापर रेखा होती है, तिस पूर्वापर रेखापर वर्तुलके मध्यसे एक लम्ब खैचे वह लम्बके ऊपर और नीचे जहाँ वर्तुलसे मिलै वह दक्षिणोत्तर रेखा होती है। जिस दिन ३० घडीका दिनमान होता है उस दिनही इस प्रकार दिक्साधन होता है ॥२२॥

अब दूसरी रीतिसे दिक्साधन और भुजसाधन कहते हैं-

वार्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिर्भाकर्णनिघ्नीनभोक्षा
ग्न्याप्ता रविदिग्भुजोयमदिशाद्विघ्नाक्षभासंस्कृतः ॥
केन्द्रेभोत्थवृत्तो सपूर्णगुणवद्भाग्रात्प्रदेयो भवेद्या-
म्योदक्सभुजार्धकेंद्रनिहितारज्जुस्तुपूर्वापरा ॥२३॥

अन्वयः-वा, अर्कक्रान्तिलवाक्षकर्णनिहतिः, भाकर्णनिघ्नी, नभोक्षाग्न्याप्ता, रविदिग्भुजः, स्यात्। (सः), यमदिशाद्विघ्नाक्षभासंस्कृतः,(शेषदिग्भुजः, स्यात्), सः, केन्द्रेभोत्थवृत्तौ, पूर्णवत्, अग्रात्, प्रदेयः, सः, याम्योदक्, भवेत्, भुजार्द्धकेन्द्रनिहता, रज्जुः, तु, पूर्वापरा, (स्यात्) ॥ २३ ॥

अर्थः-सूर्यकी क्रान्तिको कर्णसे गुणा करै तब जो गुणनफल होय उसको फिर छायाकर्णसे गुणाकर तब जो गुणनफल हो उसमें नभोक्षाग्नि कहिये ३५० का भागदेय तब जो लब्धि हो वह मध्यम भुज होताहै, यह सायन सूर्य उत्तर गोलमें होय तो उत्तर होताहै, और सायनसूर्य दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण होताहै, तदनन्तर पलभाको २से गुणाकरके जो गुणनफल मिले उसको दक्षिण मान और उसमें मध्यम भुज दक्षिण होय तो युक्त कर देय और मध्यम भुज उत्तर होय तो घटादेय तब जो अङ्क हो वह दक्षिण भुज होताहै, और यदि मध्यम भुज उत्तर होय और द्विगुणित पलभासे अधिक होय तो द्विगुणित पलभाको मध्यम भुजामें घटादेय जो शेष रहै सो अङ्गुलादि उत्तर भुज होताहै ॥ अभीष्ट छाया परिमित सूत्रसे समभूमिपर एकवर्तुल बनाकर उस वर्तुलके मध्यमें एक द्वादश अङ्गुलका शङ्कु गाड़े उस शङ्कुकी प्रवेशकालकी और निर्गम कालकी छायाके अग्रभागसे भुजांगुल परिमित शलाका लेकर वह भुज दक्षिण होय तो दक्षिणकी ओर उत्तर होय तो उत्तरकी ओर पूर्णज्याकी समान अर्थात् वर्तुलके दूसरे ओर लगजाय इस प्रकार रेखा खैंचे वह दक्षिणोत्तर रेखा होतीहै तदनन्तर दक्षिणोत्तर रेखाको आधा करके उस विन्दु और वर्तुलके मध्यका विन्दु इन दोनोंकी सीध बाँधकर एक रेखा खैंचे वह पूर्वापररेखा होती है ॥ २३ ॥

उदाहरण.

इष्टकाल १० घ. ३० प. है तात्कालीन स्पष्ट सूर्य १ रा. ५ अं. ५२ क. ४१ वि. है इससे लाईहुई क्रान्ति १९ अंश ६ क० ४० वि. को अक्षकर्ण १३ अङ्गुल १९

प्रतिअङ्गुलसे गुणाकरा तब २५४।२९।५६ हुए इनको छायाकर्ण १४ अङ्गुल २४ प्रतिअङ्गुलसे गुणाकरा तब ३६६९ अङ्गुल ३० प्रतिअङ्गुल हुए इसमें नभोक्षाग्नि कहिये ३५० का भागदिया तब लब्धिहुई १० अङ्गुल २८ प्रति-अङ्गुल यह मध्यम भुज सूर्य्यके उत्तर गोलमें होनेके कारण उत्तरहै, अब पलभा ५ अङ्गुल ४५ प्रतिअङ्गुलको २ से गुणाकरा तब ११ अङ्गुल ३० प्रति अङ्गुल गुणनफल दक्षिण हुआ, इसमें मध्यम भुज १० अङ्गुल २८प्रति-अङ्गुलको घटाया तब शेषरहा१अङ्गुल२ प्रतिअङ्गुल यह दक्षिण भुज हुआ ॥२३॥

अब अन्यरीतिसे दिक्साधनके निमित्त दिगंशसाधनकी रीति लिखतेहैं-

द्युमानखगुणान्तरं शिवगुणं दिनेऽल्पाधिके ह्यपागु-दगथानुदग्भवति यन्त्रभागापमः । वसुघ्नुभयसं-स्कृतिर्नवतियन्त्रभागान्तरोद्धवापमहृतास्ततो भु-जलवा दिगंशाःस्मृताः ॥ २४ ॥

अन्वयः-शिवगुणम्, द्युमानखगुणान्तरम्, दिने, अल्पाधिके, अपाक्, उदक्, भवति, अथ, हि, यन्त्रभागापमः, (सदा), अनुदक्, (भवति)। उभयसंस्कृतिः, वसुघ्नी, ततः, नवतियन्त्रभागान्तरोद्धवापमहृता, (ततः), (ये), भुजलवाः, (ते), दिगंशाः, स्मृताः॥२४॥

अर्थः-दिनमान और ३० घटीके अन्तरको ११ से गुणाकरै तब जो गुणनफल अंशादि होय वह यदि दिनमान, ३० घटीसे अधिक होय तौ उत्तर और कम होय तौ दक्षिण होताहै। तदनन्तर यन्त्रजोन्नतांशसे क्रान्ति साधै उस क्रान्तिको सदा दक्षिण समझै। और इस क्रान्ति तथा ऊपरोक्त अंशादि गुणनफल इन दोनोंकी दिशा एकही होय तौ दोनोंका योग करलेय, और यदि भिन्न दिशा होय तौ अन्तर करलेय तब जो अङ्क लब्ध हों उनको आठसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें ९० और यन्त्रजोन्नतांशके अन्तरसे लाईहुई क्रान्तिका भाग देय तब जो लब्धि होय उसको क्रान्ति समझै, इस क्रान्तिसे भुजांश लावै, वह भुजांशही दिगंश कहलातेहैं ॥ २४ ॥

उदाहरण.

दिनमान ३३ घ. ६ प. और ३० घटीका अन्तरकरा तब ३ घ. ६ प. हुआ इसको ११ से गुणाकरा तब ३४ अं. ६क. हुआ, यह गुणनफल "तीस ३० घटीकी अपेक्षा दिनमान अधिक था" इसकारण उत्तर हुआ। अब यन्त्रजो-

न्नतांश ५५ अं. ४५ क. ४८ वि. है इस लाईहुई स्थूलक्रान्ति दक्षिण १९ अं. ५२ क. १३वि. इसकी और ऊपरोक्त गुणाकारकी भिन्नदिशाहै इसकारण ऊपरोक्त अंशादि गुणनफल ३४ अं. ६ क. और स्थूल क्रान्ति १९ अं. ५२ क. १३ वि. का अन्तर करा तब १४ अं. १३ क. ४७ वि. हुआ इसको ८ से गुणाकरा तब ११३ अं. ५० क. १६ वि. हुए इसमें ९० अं. और यन्त्रजोन्नतांश ५५ अं. ४५ क. ४८ वि. के अन्तर ३४ अं. १४ क. १२ वि. से लाईहुई क्रान्ति १३ अं. २४ क. ४४ वि. का भागदिया तब लब्धिहुई ८ अं. २९ क. १५ वि. इससे लाए हुए भुजांश २१ अं. १३ क. २४ वि. यह दिगंश हुए ॥ २४ ॥

अब दिगंशोंसे दिक्साधनकी रीति लिखतेहैं–

समभुविनिहिते तुरीययन्त्रे स्पृशति यथा च दिगंशकाग्रकेन्द्रे। अवलम्बविभोत्थकेन्द्रसंस्थेपीकाभाथ दिशोऽत्र यन्त्रगाः स्युः ॥ २५ ॥

अन्वयः–समभुवि, तुरीययन्त्रे, निहिते, (सति), दिगंशकाग्रे, अवलम्बविभोत्थकेन्द्रसंस्थेपीकाभा, यथा, स्पृशति, (तथा, यन्त्रे, साधिते), अत्र, यन्त्रगाः, दिशः, स्युः ॥ २५ ॥

अर्थः–इष्टकालमें जलकी समान इक सार करी हुई भूमिपर तुरीय यन्त्र रखकर उसपर दिगंश देय अर्थात् यन्त्रकी परिधा पर जितने दिगंशहों उतने ही अंशोंपर चिन्हकरे और तुरीय यन्त्रके मध्यविन्दु पर एकशींक खड़ी करै उसकी छाया परिखापरके चिन्हसे लग जाय इस प्रकार साध कर तुरीय यन्त्रको फिरावे, तदनन्तर चिन्ह और तुरीय यन्त्रका मध्यविन्दु इन दोनोंको साधकर एक रेखा खेंचे. तो यह पूर्वापररेखा होतीहै, उस पूर्वापररेखाके दोभाग करके उस द्विभाग चिन्हके समीपसे एक लम्ब उतारे वह दक्षिणोत्तर रेखा होतीहै ॥ २५ ॥

अब नलिकाबन्धनके अर्थ भुज कोटि लिखतेहैं–

क्रान्तिः स्फुटाऽभिमतकर्णगुणाक्षकर्णनिघ्नीखखाद्रिहृदपक्रमदिग्भुजः स्यात् ॥ संस्कारितोयमदिशाक्षभया स्फुटोऽसौ तद्वर्गभाकृतिवियोगपदं च कोटिः ॥ २६ ॥

अन्वयः—स्फुटा, क्रान्तिः, अभिमतकर्णगुणाक्षकर्णनिघ्नी, (ततः), खखाद्रिहृत्, (कार्य्या, तदा), अपक्रमदिग्भुजः, स्यात् ।, असौ, यमदिशा, अक्षभया, संस्कारितः, स्फुटः, (भवति), तद्वर्गभाकृतिवियोगपदम्, च, कोटिः, (स्यात्) ॥ २६ ॥

अर्थः-जिस ग्रहका नलिकाबन्ध करै उस ग्रहकी क्रान्तिका अपने शरसे संस्कार करै तब क्रान्ति स्पष्ट होतीहै, तदनन्तर उस स्पष्ट क्रान्तिको इष्ट कर्णसे गुणा करै तब जो गुणनफल होय उसको अक्षकर्णसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें खखाद्रि ७०० का भाग देय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि मध्यम भुज होताहै, उसको स्पष्ट क्रान्तिकी समान उत्तर अथवा दक्षिण समझै, तदनन्तर पलभाको दक्षिण मानकर उसमें मध्य भुज दक्षिण होय तौ मिलादेय और उत्तर होय तौ घटादेय तब जो अङ्क लब्धहो वह अङ्गुलादि दक्षिण भुज होताहै, और यदि मध्यम भुज उत्तर होकर पलभाकी अपेक्षा अधिक होय तौ उसमें पलभाको घटावै तब जो शेष बचै वह अङ्गुलादि उत्तर भुज होताहै और छायाका वर्ग करकै उसमें भुजाका वर्ग घटावै तब जो शेषरहै उसका वर्गमूल निकालै वह कोटि होतीहै२६॥

उदाहरण.

सम्वत् १६६९ शके १५३४ वैशाख शुक्ल पौर्णिमा १५ सोमवारके दिन सूर्योदयसे गतघटी ५७ पर मङ्गलका नलिकाबन्ध करतेहैं तहाँ प्रातःकालीन मध्यम रवि १ रा० ४ अं० १२ क० ४५ वि० और उसकी मध्यम गति ५९ क० ८ वि० है।

और मध्यभौम ९ रा० २९ अं० ५५ क० १३ वि० तथा उसकी मध्यम गति ३१ क० ३६ वि० है इष्ट घटी ५७ से चालित रवि हुआ १ रा० ५ अं० ९ क० ५२ वि० और इष्ट घटीसे चालित मङ्गल हुआ १० रा० ० अं० २५ क० ४ वि० । अब स्पष्टीकरण दिखलातेहैं, रविका मन्दकेन्द्र १ रा० १२ अं० ५० क० ८ वि० है. मन्द फल धन १ अं० २८ क० ५५ वि० है इस मन्द फलको चालित रविमें धन करा तब १ रा० ६ अं ३८ क० ४७ वि० हुआ यह मन्द स्पष्ट रवि हुआ, चर ऋण ९५ विकलाहै इसको मन्द स्पष्ट रविमें घटाया तब १रा० ६ अं० ३७ क० १२ वि० यह संस्कृत स्पष्ट रवि हुआ ।

भौमका शीघ्र केन्द्र ३ रा० ४ अं० ४४ क० ४८ वि० है, और शीघ्र फलार्द्ध धन १६ अं० ५२ क० ५८ वि० को चालित भौम १०रा० ० अं० २५ क० ४ वि० युक्त करा तब १० रा० १७ अं० १८ क० २ वि० यह दलस्पष्ट भौम हुआ, अब मङ्गलका मन्दकेन्द्र ५ रा० १२ अं० ४१ क० ५८ वि० और मन्द

फल धन ३ अं० १९ क० ४५ वि० है इसको चालित भौम १० रा० ० अं० २५ क० ४ वि० में युक्त करा तब १० रा० ३ अं० ४४ क० ४९ वि० यह मन्दफलसंस्कृतभौम हुआ। द्वितीय शीघ्रकेन्द्र २ रा० १ अं० ३५ क० ३ वि० है, शीघ्र फल धन ३३ अं० ५३ क० ४० वि० हुआ इसको मन्द फल संस्कृत भौम १० रा० ३ अं० ४४ क०४८वि०में युक्त करा तब११रा० ६ अं० ३७ क० २९ वि० यह स्पष्ट भौम हुआ।

अब दृक्कर्मसाधन कहिये मङ्गलके दृष्टि पड़नेके निमित्त जो गणित तिसके साधनकी रीति-तहाँ "कुद्विग्घ्नधीत्यादि" रीतिके अनुसार शीघ्रकर्ण हुआ ११ अं० ४८ क० ४० वि० और "मन्दस्पष्टखमात्" इत्यादि रीतिके अनुसार दक्षिण क्रान्ति हुई २३ अं० ४४ क० ५९ वि० और अंगुलादि दक्षिण शर हुआ ३४ अङ्गुल ३१ प्र०। और "प्राक्त्रिभेणेत्यादि" रीतिके अनुसार तीन राशि रहित मङ्गल हुआ ८ रा० ६ अं० ३७ क० २९ वि० इससे लाईहुई दक्षिण क्रान्ति हुई २३ अं० ४७ क० २९ वि० और दक्षिण अक्षांश हुए २५ अं० २६ क० ४३ वि०। इन दोनोंका संस्कार करनेसे दक्षिण नतांश हुए ४९ अं० १४ क० ११ वि०। फिर "षट्शैलाष्टेत्यादि" रीतिके अनुसार दृक्कर्म ११८ क० ४४ वि० धन हुआ इसको स्पष्ट रवि ११ रा० ६ अं० ३७ क० २९ वि० में युक्त करा तब ११ रा० ८ अं० ३६ क० १३ वि० यह संस्कृत भौम हुई, इससे दक्षिण क्रान्ति आई १ अं० १७ क० ३० वि० और शर संस्कृत स्पष्ट क्रान्ति दक्षिण हुई ३ अं० १ क ३३ वि०। इष्टघटी ५७। दिनमान ३३ घटी १० पल।

रविका भोग्य काल ५९ लग्न ० रा० १५ अं० ३३ क० २७ वि० लग्न युक्त ३० दृक्कर्म दत्त मङ्गलका भोग्य काल १८ पल। मङ्गलका दिन गत काल ४ घ० २९ प० और "दृक्कर्मदत्तभौमाच्चरमित्यादि" रीतिके अनुसार चर दक्षिण ६ फल दक्षिण ८ स्पष्ट चर दक्षिण १४ दिनमान२९ घ० ३२पल। स्पष्ट क्रान्ति और अक्षांश इन दोनोंके संस्कारसे लाए हुए नतांश २८ अं० २८ क० १५ वि० और उन्नतांश हुए ६१ अं ३१ क० ४५ वि० इससे लाया हुआ पराख्य हुआ २१। १२। १४ मङ्गलका दिनगत काल ४ घ० २९ प० यही उन्नत काल हुआ इससे लायाहुआ इष्ट कर्ण ३० अङ्गुल २६ प्रति अङ्गुल हुआ, इसको स्पष्टक्रान्ति ३। १। ३३ से गुणा करा तब ९२। ५। १० हुए, इनको अक्षकर्ण १३ अङ्गुल १९ प्रतिअङ्गुलसे गुणा करा तब १२२६।१६।४८ हुए, इनमें ७००का भागदिया तब १। ४५ यह मध्यम भुज हुआ, यह क्रान्तिके दक्षिण होनेके कारण दक्षिण है, इसमें दक्षिणपलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअङ्गुलको मिलाया तब ७ अङ्गुल ३० प्रतिअङ्गुल यह स्पष्ट भुज हुआ॥

अब इष्टकर्णसे "वर्णार्कवर्गविवरात्पदमित्यादि" रीतिसे इष्टछाया साधनेके निमित्त इष्टकर्ण ३०।२६का वर्ग करा तब ९२६। ११ हुए इसमें अर्क

कहिये १२का वर्ग १४४ घटाया तब ७८२। ११ यह कर्णवर्ग और अर्कवर्गका अन्तर हुआ, इसका वर्गमूल लिया तब २७। ५८ यह इष्टछाया हुई, इसका वर्ग करा तब ७८२। ८ यह हुआ, और स्पष्टभुज ७। ३० का वर्ग करा तब ५६। १५ हुआ. इन दोनों वर्गों ७८२। ८-५६। १५का अन्तर करा तब ७२५। ५३ हुआ, इसका वर्गमूल लिया तब २६ अंगुल ५६ प्रतिअंगुल यह कोटि हुई॥

अब नलिकाबन्धनकी रीति लिखते हैं—

ज्ञात्वाशाः परखेचरे परमुखीं प्राक्खेचरे प्राङ्मुखीं
बिन्दोः कोटिमतो भुजं स्वदिशितन्मध्येप्रभां विन्य
सेत्। बिन्दोर्भाग्रगशङ्कुमस्तकगतेसूत्रे नले खेस्वगं
केबिन्दुस्थनराग्रभाग्रगगते सूत्रे नले लोकयेत्॥ २७॥

अन्वयः—आशाः, ज्ञात्वा, बिन्दोः, परखेचरे, परमुखीम्, प्राक्खेचरे, प्राङ्मुखीम्, कोटिम्, विन्यसेत्। अतः, स्वदिशि, भुजम्, (विन्यसेत्)। तन्मध्ये, प्रभाम्, (विन्यसेत्)। बिन्दोः, भाग्रगशंकुमस्तकगते, सूत्रे, नले, खे, खगम्, लोकयेत्। बिन्दुस्थनराग्रगगते, सूत्रे, नले, के, (खगम्, लोकयेत्)॥ २७॥

अर्थः-समानकरी हुई भूमिपर अभीष्टछाया परिमित सूत्रसे एक वर्तुल कादकर उसमें दिशाओंके चिन्ह देय, फिर वर्तुलके मध्यसे ग्रह पश्चिमकपालमें होय तो पश्चिमकी ओर, और पूर्वकपालमें होय तो पूर्वकी ओर अङ्गुलादि कोटि देय, तदनन्तर कोटिके अग्रभागसे लम्ब रेखापर भुजाङ्गुलोंको यदि भुज दक्षिण होय तो दक्षिणकी ओर, उत्तर होय तो उत्तरकी ओर देय और भुजके अग्रभागसे वर्तुलके मध्यपर्यन्त एक कर्णरेखा खैंचे, यह छाया होती है, तदनन्तर छायाके अग्रभागमें द्वादशाङ्गुलका शङ्कु रखकर उस शंकुके अग्रभाग और वर्तुलका मध्य इन दोनोंपर एक सूत्र लावे. उससूत्र रेखापर शङ्कुके अग्रभागमें एक नलिका रक्खे, उस नलिकासे आकाशकी ओर देखै तो ग्रह दीखताहै।

यदि जलके मध्यमें ग्रह देखना होय तो वर्तुलके मध्यमें द्वादशाङ्गुल शङ्कु रखकर शङ्कुके अग्रभागसे छायाग्रपर्यन्त एक सूत्र लेजाय और उस सूत्र रेखापर शङ्कुके अग्रभागमें एक नलिका रक्खे, और छायाके अग्रभागमें एक जलपूर्णपात्र रक्खै और उस पात्रमें नलिकासे देखै तब जलमें इष्टग्रह दीखताहै॥

जिससमयकी गणित करीहो उस समयसे पहिलेही लाकर रक्खी हुई नलिकासे ग्रह दीखताहै, और यदि न दीखै तो गणित करनेमें किसीप्रकारकी भूल या जिसरीतिसे गणित करीहो इस रीतिमें किसीप्रकारका दोष है ऐसा जानै ॥ २७ ॥

इति श्रीगणकवर्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबाद-
वास्तव्यकाशीराजकीयविद्यालये पण्डितस्वामिरामभिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्य-
भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डितराम-
स्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाव्याख्ययासहित-
त्रिप्रश्नाधिकारः समाप्तिमितः ॥ ५ ॥

अथ चन्द्रग्रहणाधिकारो व्याख्यायते।

तहाँ प्रथम ग्रहोंका चालन लिखते हैं-

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशवियुग्युतोग्रहः स्यात्। तत्कालभवस्तथाघटीघ्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतः स्यात् ॥ १ ॥

अन्वयः-गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः, खरसाप्तांशवियुक्, युतः, ग्रहः, (कार्यः, । सः) तत्कालभवः, ग्रहः, स्यात्। तथा, घटीघ्याः, खरसैः, लब्धकलोन-संयुतः,(ग्रहः, कार्य्यः, सः, तत्कालभवः,ग्रहः)स्यात्॥१॥

अर्थः-गतकहिये व्यतीत या गम्य कहिये आगामि दिनोंसे ग्रहकी गतिको गुणाकरके तब जो गुणनफल होय उसमें खरस कहिये ६०का भागदेय तब जो लब्धि होय अंशादि जानै, उसको गतदिवस हों तो ग्रहमें घटादेय और गम्य दिन हों,तो ग्रहमें युक्त करदेय तब इष्टकालीनग्रह होताहै। तिसीप्रकार गत अथवा गम्य घटियोंसे ग्रहकी गतिको गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसमें ६०का भागदेय तब जो लब्धि होय उसको कलादि जानै उसको गत-घटीहों तो ग्रहमें घटादेय, और गम्यघटी हों तो ग्रहमें युक्त करदेय, तब इष्टकालीन ग्रह होताहै। इस लब्धिको चालन कहते हैं ॥ १ ॥

इसरीति इतना विशेषध्यान रखना चाहिये कि चन्द्रमा और सूर्य्यके ग्रहणके विषें पश्चाङ्गमें पौर्णमासी और अमावास्या जितनी घटी हों उन घटिकाओंसे मध्यमरवि-चन्द्रोच्च-और राहुका चालन कर लेय

तदनन्तर स्पष्टीकरण करै, । तदनन्तर सूर्य्य और चन्द्रमासे तिथिकी घटी साधै, और तिन साधी हुई घटियोंको पञ्चाङ्गकी घटियोंमें युक्त करदेय, अथवा घटादेय, अर्थात् यदि १४ या २९ गततिथि आवै तौ वर्त्तमान अमावास्या या पौर्णमासीसे जितनी गतघटी साधै उनको पञ्चाङ्गकी पर्वघटियोंमें युक्त करदेय, और यदि १५ या ३० गततिथि आवै तौ वर्त्तमान प्रतिपदासे गतघटी साधकर उनको पञ्चाङ्गकी घटियोंमें घटादेय तब पर्वान्तकाल होता है। इस प्रकार जो गतगम्य घटी आवैं उनसे ग्रहोंका चालन देय तब पर्वान्तकालीन ग्रह होते हैं ॥ १ ॥

उदाहरण.

सम्वत् १६७१ शाके १५४२ मार्गशीर्षशुक्ल पौर्णिमासी बुधवार घटी ३८ पल ११ रोहिणी नक्षत्र घटी ९ पल ८ साध्ययोग घटी १० पल ३६ इसदिन चन्द्रग्रहणका पर्वकाल जाननेके निमित्त गणित करते हैं.

" द्वयब्धीन्दोनितेत्यादि " रीतिके अनुसार अहर्गण हुआ ६३६ चक्र हुआ ९ इस साधन करा हुआ प्रातःकालीन मध्यम सूर्य्य ८ रा० ० अं० ८ क० ५९ वि० और मध्यम चन्द्र १ रा० २५ अं० १९ क० ५७ वि० । और चन्द्रोच्च १० रा० ३ अं० ३७ क० ५ वि० और राहु हुआ ७ रा० २८ अं० २५ क० २७ वि०। और तिथिकी घटी ३८। ११ पलसे चालित इष्टकालीन मध्यम रवि ८ रा० ० अं० ४६ क० ३६ वि० और चन्द्र २ रा० ३ अं० ४३ क० ४ वि० और चन्द्रोच्च १० रा० ३ अं० ४१ क० २० वि० और राहु ७ रा० २८ अं० २३ क० ३६ वि०।

अथ स्पष्टीकरण लिखतेहैं—रविका मन्दकेन्द्र हुआ ६ रा० १७ अं० १३ क० २४ विकला। और मन्दफल ऋण ० अं० ३९ क० ४ वि०। मन्द स्पष्ट रवि ८ रा० ० अं० ७ क० ३२ वि०। चरधन ११४। अयनांश १८ अं० ४८ क०। चर धन संस्कृत स्पष्ट रवि० ८ रा० ० अं० ९ क० २८ विकला। गतिफलधन २ कला ३ विकला। स्पष्टगति ६१ क० ११ वि० विफल संस्कृतचन्द्र २ रा० ३ अं० ५६ क० १८ विकला। मन्दकेन्द्र ७ रा० २९ अं० ४५ क० २ वि०। मन्दफल ऋण ४ अंश २० कला १२ विकला। स्पष्टचन्द्र १ रा० २९ अं० ३६ कला ६ विकला। गतिफलधन ३३ कला १५ विकला। स्पष्टगति ८२३ क० ५० विकला। रविचन्द्रसे लाईहुई भोग्य पूर्णिमा २ घटी ३७ पल। इनको पञ्चाङ्गकी घटी ३८ प० ११ प०में युक्त करा तब पर्वान्तकाल हुआ ४० घ० ४८ प०। एष्यघटी २ घ० ३७ पल चालन करेहुए पर्वान्तकालीन तात्कालिक रवि ८ रा० ० अं० १२ क० ८ वि०। चन्द्र २ रा० ० अं० १२ क० ६ विकला। राहु ८ रा० २८ अं० २३ क० १८ वि० ॥

अब ग्रहणसम्भव और चन्द्रशर साधन लिखते हैं-

एवं पर्वान्ते विराह्वर्कबाह्वारिन्द्रालपांशाः सम्भवश्चे-
द्ग्रहस्य । तेंशानिघ्नाः शङ्करैः शैलभक्ता व्यग्वर्कांशः
स्यात्पृपत्कोऽङ्गुलादिः ॥ २ ॥

अन्वयः-एवम्, पर्वान्ते, विराह्वर्कबाहोः, चेत्, इन्द्राल्पांशाः, (तदा), ग्रहस्य, सम्भवः। ते, अंशाः, शङ्करैः, निघ्नाः, शैलभक्ताः, (कार्य्याः, तदा) अङ्गुलादिः, पृपत्कः, व्यग्वर्कांशः, स्यात् ॥ २ ॥

अर्थः-पर्वान्तकालीन स्पष्ट रविमें राहुको घटावै जो शेष रहै वह व्यग्वर्क होताहै। तदनन्तर व्यग्वर्कके भुज करके उसके अंश करै, वह अंश यदि चौदह अंशसे कम हों तौ ग्रहणका सम्भव होताहै।

व्यग्वर्कके तिन भुजांशोंको ग्यारहसे गुणाकरके जो गुणनफल होय उसमें सातका भाग देय तब जो लब्धि मिलै वह अंगुलादिशर होताहै, यह व्यग्वर्क मेषादि होय तौ उत्तर और तुलादि होय तौ दक्षिण होताहै ॥ २ ॥

उदाहरण.

स्पष्टरवि ८ राशि ० अंश १२ क० ६ विकलामें राहु ७ राशि २८ अंश २३ कला १८ विकलाको घटाया तब ० राशि १ अंश ४८ कला ४८ विकला यह व्यग्वर्क (विराह्वर्क) हुआ। इसके भुजांश १ अंश ४८ कला ४८ विकला हुए, यह १४ अंशकी अपेक्षा कम है इसकारण ग्रहण सम्भव है।

भुजांश १ अंश ४८ कला ४८ विकलाको ११ से गुणाकरा तब १९ अंश ५६ कला ४८ विकला हुए इसमें ७ का भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई २ अङ्गुल ५० प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रशर हुआ, व्यग्वर्क मेषादि है इस कारण उत्तर है ॥

अब सूर्यबिम्ब और चन्द्रबिम्ब, तथा भूभाबिम्बसाधन लिखते हैं-

गतिर्द्विघ्नीशाप्ता द्युमणिमुखतनुः स्यात्खररुचो विधोर्भुक्तिर्वेदाद्रिभिरपहृता बिम्बमुदितम्॥ नृपाश्वोना चान्द्री गतिरपहृता लोचनकरैः रदाढ्या भूभा स्याद्दिनगतिनगांशेन रहिता ॥ ३ ॥

अन्वयः-खररुच्‌ः, गतिः, द्विघ्नी, ईशाप्ता, अङ्गुलमुखतनुः, स्यात् । विधोः, भुक्तिः, वेदाद्रिभिः, अपहृता, बिम्बम्, उदितम्, । चान्द्री, गतिः, नृपाश्वोना, लोचनकरैः, अपहृता, रदाढ्या, दिनगतिनगांशेन, रहिता, भूभा, स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः-सूर्य्यकी स्पष्टगतिको दोसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें ग्यारहका भागदेय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह सूर्य्यबिम्ब होता है । चन्द्रमाकी स्पष्टगति चौहत्तरका भागदेय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि चन्द्रबिम्ब होता है । और चन्द्रमाकी स्पष्टगतिमें सातसौ सोलह कला घटाकर जो शेष रहै उसमें बाईसका भागदेयतब जो लब्धि होय उसमें बत्तीस युक्तकर देय तब जो अङ्कयोग होय उसमें सूर्य्यकी स्पष्ट गतिका सप्तमांश घटा देय तब जो शेष रहै वह अङ्गुलादि भूभाबिम्ब होता है, इसकोही राहुबिम्ब कहते हैं ॥ ३ ॥

उदाहरण.

सूर्य्यकी स्पष्ट गति ६१ कला ११ विकलाको २ से गुणा करा तब १२२ कला २२ विकला हुई इसमें ११ का भाग दिया तब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुल यह सूर्य्यबिम्ब हुआ । और चन्द्रमाकी स्पष्ट गति ८२३ कला ५० विकला में ७४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्र बिम्ब हुआ । और चन्द्रमाकी स्पष्ट गति ८२३ कला ५० विकलामें ७१६ घटाये तब शेष रहे १०७ कला ५० विकला इसमें २२ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ कला ५४ विकला इसमें ३२ कला युक्त करी तब ३६ कला ५४ विकला हुए, इसमें सूर्य्यकी स्पष्ट गति ६१ कला ११ विकलाके सप्तमांश ८ कला ४४ विकलाको घटाया तब शेष रहे २८ अङ्गुल १० प्रतिअङ्गुल यह भूभाबिम्ब अर्थात् राहुबिम्ब हुआ ॥

अब मानैक्यखण्ड और ग्राससाधन लिखते हैं-

छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डं कुरुतच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा ग्राह्यहीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम् ॥ ४ ॥

अन्वयः-इन्दुः, अर्कम्, छादयति, भूमिभा, विधुम्, (छादयति) (हेगणक) छादकच्छाद्यमानैक्यखण्डम्, कुरु । तत्, शरोनम्, छ-

न्नम्, भवेत्, । यदा, तु, एतत्, ग्राह्यहीनावशिष्टम्, (तदा), खच्छन्नकम्, (भवेत्) ॥ ४ ॥

अर्थः-सूर्य्यग्रहण होनेके समय चन्द्रमा सूर्य्यको आच्छादन करता है, इस कारण सूर्य्यग्रहणमें चन्द्रमाको छादक और सूर्यको छाद्य कहते हैं। और चन्द्रग्रहण होनेके समय भूभा कहिये पृथ्वीकी छाया चन्द्रमाको आच्छादन करती है, इस कारण चन्द्रग्रहणमें भूभाको छादक और चन्द्रमाको छाद्य कहते हैं। छाद्य और छादक इन दोनोंके विम्बोंका योग करके दोका भाग देय तब जो लब्धि होय वह मानैक्य खण्ड होता है। इस मानैक्य खण्डमें शरको घटावै तब जो शेष रहै यह ग्रासविम्ब होता है। परन्तु यदि मानैक्य खण्डकी अपेक्षा शर अधिक होय तो ग्रहण नहीं होता है। छाद्यके विम्बमें ग्रासविम्ब घटावै तब जो शेष बचै वह विम्ब होता है। यदि छाद्यविम्बकी अपेक्षा ग्रासविम्ब अधिक होय तो ग्रासविम्बमेंसे छाद्यविम्बको घटा देय तब जो शेष रहै सो खग्रास होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण.

चन्द्र ग्रहणके विषें छादक भूभा २८ अङ्गुल १० प्रतिअङ्गुल, छाद्य चन्द्रविम्ब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुल, इन दोनों छाद्य छादकका योग करा तब ३९ अङ्गुल १७ प्रतिअङ्गुल हुआ, इसमें २ का भाग दिया तब मानैक्यखण्ड हुआ १९ अङ्गुल ३८ प्रति अङ्गुल इसमें शर २ अङ्गुल ५० प्रतिअङ्गुलको घटाया तब शेष रहा १६ अङ्गुल ४८ प्रतिअङ्गुल यह ग्रास हुआ, इसमें चन्द्रविम्ब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुलको घटाया तब शेष रहा ५ अङ्गुल ४१ प्रतिअङ्गुल यह खग्रास विम्ब हुआ ॥

अब ग्रहण मध्यस्थिति तथा खग्रासमर्द स्थिति लिखते हैं-

मानैक्यखण्डमिषुणा सहितं दशघ्नं छन्नाहतं पदम-
तः स्वरसांशहीनम्। ग्लौबिम्बहृत्स्थितिरियं घटिका-
दिका स्यान्मर्द तथा तनुदलान्तरखग्रहाभ्याम्॥५॥

अन्वयः-इषुणा, सहितम्, मानैक्यखण्डम्, दशघ्नम्, छन्नाहतम्, (कार्य्यम्), अतः, पदम्, स्वरसांशहीनम्, ग्लौविम्बहृत्, (कार्य्यम्), इयम्, घटिकादिका, स्थितिः, स्यात्। तथा, तनुदलान्तरखग्रहाभ्याम्, मर्दम्, (स्यात्) ॥ ५ ॥

अर्थः-मानैक्यखण्डमें शर युक्तकरके जो अङ्कयोग हो उसको दशसे गुणाकरके जो गुणनफल होय उसको फिर ग्राससे गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसका वर्गमूल निकालकर उसको पाँचसे गुणा करके छःका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें चन्द्रबिम्बके प्रमाणका भाग देय तब जो लब्धि होय वह घटिकादि मध्यस्थिति होती है ॥

और छाद्य तथा छादक इन दोनोंके बिम्बके अन्तरका अर्ध और खग्रास ग्रहण करके पूर्वोक्त रीतिसे मध्यस्थिति लावे वह मर्दस्थिति कहलाती है॥५॥

उदाहरण.

मानैक्यखण्ड १९ अङ्गुल ३८ प्रतिअङ्गुलमें शर २ अङ्गुल ५०प्रतिअङ्गुल को जोड़ा तब २२ अङ्गुल २८ प्रतिअङ्गुल हुआ, इसको १० से गुणा करा तब २२४ अङ्गुल ४० प्रतिअङ्गुल हुआ, इस गुणनफलको ग्रास १६ अङ्गुल ४८ प्रतिअङ्गुलसे गुणा करा तब ३७७४ अङ्गुल २४ प्रतिअङ्गुल हुए, इसका वर्गमूल निकाला तब ६१ अङ्गुल २४ प्रतिअङ्गुल मिला, इसको ५ से गुणा करा तब ३०७ अङ्गुल ० प्रतिअङ्गुल हुआ, इसमें ६ का भाग दिया तब ५१ अङ्गुल १० प्रतिअङ्गुल मिला, इसमें चन्द्रबिम्ब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुलका भाग दिया तब लब्धि हुई ४ घटी ३६ पल यह मध्यस्थिति हुई ॥

चन्द्रबिम्ब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुल और भूभाबिम्ब २८ अङ्गुल १० प्रतिअङ्गुल इन दोनोंका अन्तर करा तब १७ अङ्गुल ३ प्रतिअङ्गुल हुआ, इसमें २ का भागदिया तब ८ अङ्गुल ३२ प्रतिअङ्गुल लब्धिहुई इसमें शर २ अङ्गुल ५० प्रतिअङ्गुलको युक्त करा तब ११ अङ्गुल २२ प्रतिअङ्गुल हुये, इसको १० से गुणाकरा तब ११३ अङ्गुल ४० प्रतिअङ्गुल हुए, इसको खग्रास ५ अङ्गुल ४१ प्रतिअङ्गुलसे गुणाकरा तब ६४६ अङ्गुल ० प्रतिअङ्गुल हुआ, इसका वर्गमूल निकाला तब २५ अङ्गुल २४ प्रतिअङ्गुल मिले इसको ५ से गुणाकरा तब १२७ अङ्गुल ० प्रतिअङ्गुल हुए इसमें ६ का भागदिया तब लब्धि हुई २१ अङ्गुल १० प्रतिअङ्गुल, इसमें चन्द्रबिम्ब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुलका भाग दिया तब लब्धिहुई १ घटी ५४ पल यह मर्दस्थिति हुई ॥ ५ ॥

स्पर्श स्थिति और मोक्षस्थिति तथा स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द साधनेकी रीति लिखतेहैं-

युग्माहतैर्व्यगुभुजांशसमैः पलैः सा द्विष्ठा स्थितिर्विरहिता सहितार्कषड्भात् ॥ ऊने व्यगावितरथाभ्यधिकेस्थिती स्तः स्पर्शान्तिमे क्रमगते च तथैव मर्दे ॥ ६ ॥

अन्वयः-सा, द्विष्ठा, स्थितिः, व्यगौ, अर्कपड्भात्, ऊने, (सति), युग्माहतैः, व्यगुभुजांशसमैः, पलैः, विरहिता, (च), सहिता, (कार्य्या), अभ्यधिके, (सति), इतरथा, विरहिता, सहिता, (कार्य्या), (तदा), क्रमगते, स्पर्शान्तिमे, स्थिती, स्तः। तथा, एव, मर्दे, च, (साध्ये) ॥ ६ ॥

अर्थः-व्यग्वर्कके भुजांशोंको दोसे गुणाकरके जो गुणनफल होय उसको पलात्मक मानकर मध्यस्थितिमें युक्तकरै और घटावे, परन्तु यदि व्यग्वर्क ५ राशि १६ अंशसे ६ राशिपर्य्यन्त होय या ११ राशि १६ अंशसे १२ राशि पर्य्यन्त होय तो युक्त करनेसे मोक्षस्थिति होतीहै, और घटानेसे शेष बचै सो स्पर्शस्थिति होतीहै। और यदि व्यग्वर्क ६ राशिसे ६ राशि १४ अंशपर्य्यंत होय अथवा ० राशिसे १० राशि १४ अंशपर्य्यन्त होय तो मध्यस्थितिमें युक्त करनेसे स्पर्शस्थिति और घटादेनेसे जो शेपरहै सो मोक्षस्थिति होतीहै। तथा मर्दस्थितिके पलात्मक गुणनफलको पूर्ववत् युक्त करे और घटावे तो स्पर्शमर्द और मोक्षमर्द होताहै ॥ ६ ॥

उदाहरण.

घटिकादि मध्यस्थिति ४ घ. ३६ प. को दोस्थानमें लिखा ४। ३६। — ४। ३६ और व्यग्वर्कके ० राशि १ अंश ४८ कला ४८ विकलाके भुजांश करे तब १ अंश ४८ कला ४८ विकला हुआ, इसको २ से गुणाकरा तब ३ अंश ३७ कला ३६ विकला हुए, इस गुणनफलके अंशोंकी समान पलों ३ को एक स्थानकी मध्यस्थिति ४ घ. ३६ प. में घटाया तब ४ घ. ३३ प. यह मोक्ष स्थिति हुई। क्योंकि व्यग्वर्क ० राशिसे लेकर १४ अंशके अन्तर्गत था। इस कारण ही दूसरे स्थानमें लिखी हुई मध्यस्थिति ४ घ. ३६ प. में ऊपरोक्त गुणनफलके अंशोंकी तुल्यपलों ३ को युक्त करा तब ४ घ. ३९ प. यह स्पर्श स्थिति हुई-

इसीप्रकार मर्दस्थितिको १ घ. ५४ प. मर्दस्थितिको दो स्थानमें १। ५४ — १। ५४। एक स्थानमें ऊपरोक्त गुणनफलके अंशोंकी समान पलों ३ को घटाया तब १ घ. ५१ प. यह मोक्षमर्द हुआ, और दूसरे स्थानमें लिखीहुई मर्दस्थिति १। ५४ में गुणनफलके अंशोंकी समानपलों ३ को युक्त करा तब १ घ. ५७ प. यह स्पर्शमर्द हुआ ॥

अब मध्यग्रहणके स्पर्शकाल, मोक्षकाल, और संमीलनकाल कहिये ग्रासस्पर्शकाल, तथा उन्मीलनकाल कहिये ग्रासमोक्षकालके साधनेकी रीति-

तिथिविरतिरयं ग्रहस्य मध्यः स च रहितः सहितो निजस्थितिभ्याम्। ग्रहणमुखविरामयोस्तु कालाविति पिहितापिहिते स्वमर्दकाभ्याम् ॥ ७ ॥

अन्वयः-तिथिविरतिः, अयम्, ग्रहस्य, मध्यः, (भवति)। स च, निजस्थितिभ्याम्, (एकत्र), रहितः, (अन्यत्र), सहितः, ग्रहमुखविरामयोः, कालौ, (स्तः)। इति, स्वमर्दकाभ्याम्, पिहितापिहिते, (स्तः) ॥ ७ ॥

अर्थः-पौर्णिमा तिथिका जो अन्त सो ग्रहणका मध्यकाल होताहै। उस मध्यकालको दोस्थानमें लिखकर एक स्थानमें स्पर्शस्थितिको घटादेय तब जो शेषरहै सो स्पर्शकाल होताहै। और दूसरे स्थानमें लिखेहुए मध्यकालमें मोक्षस्थितिको युक्तकरै, तब जो अङ्कयोग हो वह मोक्षकाल होताहै मोक्षकालमें स्पर्शकालको घटादेय तब पर्वकाल होताहै। इस प्रकार तिथ्यन्तरूप ग्रहणके मध्यकालमें स्पर्शमर्दको घटावै तब जो शेषरहै सो संमीलनकाल होताहै,और मध्यकालमें मोक्षमर्दको युक्तकरै तब जो अङ्कयोग हो सो उन्मीलन काल होताहै उन्मीलन कालमें संमीलन कालको घटादेय तब जो शेषरहै सो खग्रास पर्वकाल होताहै ॥ ७ ॥

उदाहरण.

तिथ्यन्त ४०घटी४८पल है यह ग्रहणका मध्यकाल हुआ, इसे दोस्थानमें लिखा ४०।४८।—४०।४८ एकस्थानमें स्पर्शस्थिति ४ घटी ३९ प. को घटायो तब ३६ घटी ९ पल शेषरहा यह स्पर्शकाल हुआ, दूसरे स्थानमें लिखेहुए मध्यकालमें मोक्षस्थिति ४ घटी ३३ पलको युक्त करा तब४५ घटी २१ पल यह मोक्षकाल हुआ। मोक्षकाल ४५ घ० २१ प०में स्पर्शकाल ३६ घ० ९प० को घटाया तब शेषरहा ९ घ० १२ प० यह पर्वकाल हुआ ॥

तिसीप्रकार मध्यकाल ४० घटी ४८ पलमें स्पर्शमर्दको घटाया तब शेषरहा ३८ घ० ५१ प० यह संमीलनकाल हुआ, और मध्यकाल ४० घटी ४८पल में मोक्षमर्द १ घ० ५१ प०को युक्त करा तब अङ्कयोग हुआ ४२ घटी ३९ पल यह उन्मीलनकाल हुआ। उन्मीलनकाल ४२ घ० ३९ प० में संमीलनकाल ३८घ० ५१प०को घटाया तब शेषरहे ३ घ० ४८ प० यह खग्रास पर्वकाल हुआ॥

अब इष्टकालीन ग्राससाधनकी रीति लिखते हैं-

पिहितहतेष्टं स्थितिविहृतं तत्सचरणभूयुग्ग्रसनमभीष्टम् ॥ ८ ॥

अन्वयः-पिहितहतेष्टम्, स्थितिविहृतम्, तत्, अभीष्टम्, सचरणभूयुक्, ग्रसनम्, (भवति) ॥ ८ ॥

अर्थः-ग्रासको इष्टघटिकाओंसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें यदि इष्टघटिका स्पर्शकालीन हों तो स्पर्श स्थितिका और मोक्षकालीन हो तो मोक्षस्थितिका भागदेय तब जो लब्धिहोय उसको अङ्गुलादि जानै, और उसमें १ अङ्गुल १५ प्रतिअङ्गुल युक्त करदेय तब इष्टकालीन ग्रास होताहै॥८॥

उदाहरण.

स्पर्शके अनन्तर कल्पित घटी २ से ग्रास १६ अङ्गुल ४८ प्रतिअङ्गुलको गुणा करा तब ३३ अङ्गुल ३६ प्रतिअङ्गुल हुआ, इष्टघटिका स्पर्शकालीन हैं इसकारण गुणनफल ३३ अङ्गुल ३६ प्रतिअङ्गुलमें स्पर्शस्थिति ४ घटी ३९ पलका भागदिया तब लब्धि हुई ७ अङ्गुल १३ प्रतिअङ्गुल, इसमें १ अङ्गुल १५प्रतिअङ्गुल युक्तकरे तब ८ अङ्गुल २८ प्रतिअङ्गुल, यह इष्टकालीन ग्रास हुआ ॥

अब अयनवलनसाधनकी रीति लिखते हैं-

त्रिभयुतोनरविः स्वविधुग्रहेऽयनलवाढ्य इतश्चरवद्दलैः। नगशरेन्दुमितैर्वलनं भवेत्स्वरविदिक्-

अन्वयः-स्वविधुग्रहे, त्रिभयुतोनरविः, अयनलवाढ्यः, (कार्य्यः) इतः, नगशरेन्दुमितैः, दलैः, चरवत्, स्वरविदिक्, वलनम्, भवेत् ॥

अर्थः-सूर्य्यग्रहणके विषे स्पष्ट रविमें ३ राशि मिलावे, और चन्द्रग्रहणके विषे स्पष्टरविमें ३ राशि घटावे, तदनन्तर उस रविमें अयनांश मिलादेय, तदनन्तर तिससे प्रथम ७ द्वितीय ५ तृतीय १ इन खण्डोंको ग्रहण करके चरसाधनकी समान साधनकरै तब अङ्गुलादि वलन होताहै। अयनांशयुक्त रवि मेषादि होय तो उत्तर और तुलादि होय तो दक्षिण होताहै इसको अयनवलन कहते हैं ॥

उदाहरण.

स्पष्टरवि ८राशि ० अंश १२ कला ६ विकलामें, चन्द्रग्रहण होनेके कारण

३ राशि घटाई तब शेषरहा ५ राशि ० अंश १२ कला ६ विकला, इसमें अय-नांश १८ अंश १८ कलाको युक्तकरा तब ५ राशि १८ अंश ३० कला ६ वि० हुआ, यह सायनरवि हुआ इसके भुजकरे ० राशि ११ अंश २९ कला ५४ वि० इसमें शून्य राशिहै इसकारण प्रथम खण्ड ७ से ११ अंश २९ कला ५४ विक० को गुणा करा तब ८० अंश २९ कला १८ विकला हुए, इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अंश ४० कला इसमें ० खण्डको युक्तकरा तब २ अंश ४० कला यह अयनवलन हुआ, यह सायनरवि मेषादिहै इसकारण उत्तरहै ॥

मध्यनतसाधन लिखतेहैं—

"यातः शेषः प्राक्परत्रोन्नतमित्यादि" (त्रिप्रश्नाधिकार ७मा श्लोक)

चन्द्रग्रहणके मध्यकालमें दिनमानको घटाकर जो शेषरहे उसका औ रात्र्यर्द्धका अन्तर करै तब मध्यनत होताहै वह, यदि ग्रहण मध्यकाल पूर्वरा त्रिके विषै होय तौ पूर्व, और उत्तररात्रिमें होय तौ पश्चिम होताहै, । इसी प्रकार सूर्य्यग्रहणके मध्यकाल और दिनार्द्धका अन्तर करै तब सूर्य्यग्रहणके विषै मध्यनत होताहै, इसकी दिशा पूर्वोक्तरीतिके अनुसार जाननी ॥

उदाहरण.

१५ घटी-चर १ घटी ५४ पल, दिनार्द्ध १३ घटी ६ पल, दिनमान २६ घटी १२ पल, और १५ घटी-चर १ घटी ५४ पल, रात्र्यर्द्ध १६ घटी ५४ पल, रात्रि-मान ३३ घटी ४८ पल । चन्द्रग्रहणके मध्यकाल ४० घटी ४८ पलमें दिनमान २६ घटी १२ पलको घटाया तब शेषरहा १४ घटी ३६पल यह रात्रिमें ग्रहणका मध्यकालहै इसका और रात्र्यर्द्ध १६ घटी ५४ पलका अन्तर करा तब २ घटी १८पल यह मध्यनतकाल हुआ ग्रहण मध्यकाल पूर्वरात्रिमें है, इसकारण पूर्वहै॥

ग्रस्तोदित अथवा ग्रस्तास्त होनेपर मध्यनतसाधन लिखतेहैं—

(स्पर्शादिकं यदि विधोर्दिवसस्य शेषे यातेऽथवा द्यु-
दलतद्विवरं रवेस्तु । रात्रेस्तदूनितनिशाशकलं क्र-
मात्स्यात्प्राक्पश्चिमंनतमिदं वलनस्य सिद्ध्यै ॥ १ ॥)

अन्वयः-अथवा, यदि, विधोः, स्पर्शादिकम्, दिवसस्य, शेषे, याते (तदा), द्युदलतद्विवरम्, (मध्यनतम्, स्यात्), रवेः; तु, (यदि),

---

१ यह श्लोक क्षेपक है- ग्रंथांतरसे लायाहै- कारण, नवमश्लोकका चतुर्थ चरणका संबंध आगेके श्लोकमें जमता है इससे नहीं-

रात्रेः, (शेषे, याते, तदा,), तदूनितनिशांशकलम्, (कार्य्यम्), इदम्, वलनस्य, सिद्ध्यै, क्रमात्, प्राक्, पश्चिमम्, नतम्, स्यात् ॥१॥

अर्थः-चन्द्रग्रहणका स्पर्श सूर्य्यास्तसे पहिले जितनी घटीहो, उतनी घटीको दिनार्द्धमें घटावै तव जो शेष रहै सो पूर्व मध्यनत होता है, और चन्द्र ग्रहणका मोक्ष सूर्य्योदयके अनन्तर जितनी घटीपर हो उतनी घटी दिनार्द्धमें घटा देय, तव जो शेष रहै सो पश्चिम मध्यनत है ॥

सूर्य्यग्रहणका स्पर्श सूर्य्योदयसे पहिले जितनी घटीपर हो उतनी घटी रात्र्यर्द्धमें घटावे तव जो शेष रहै सो पूर्व मध्यनत होताहै और सूर्य्य-ग्रहणका मोक्ष सूर्य्यास्त होनेके अनन्तर जितनी घटीपर हो, उतनी घटी रात्र्यर्द्धमें घटादेय तव जो शेष रहै सो पश्चिम मध्यनत होता है ॥ १ ॥

अव अक्षवलन साधनकी रीति लिखते हैं-

त्वथमध्यनताच्च यत् ॥ ९ ॥

विषयलब्धग्रहादित उक्तवद्वलनमक्षहतं पलभाह-तम्। उदगपागिह पूर्वपरे क्रमाद्रसहृतोभयसंस्कृ-तिरङ्घ्रयः ॥ १० ॥

अन्वयः-अथ, तु, यत्, मध्यनतात्, (ततः), विषयलब्धग्रहादितः, उक्तवत्, वलनम्, (साध्यम्, ततः), पलभाहतम्, (ततः) अक्षहृतम्, (अक्षवलनम्, स्यात्), इह, पूर्वपरे, क्रमात्, उदक्, अपाक्, (स्यात्)। उभयसंस्कृतिः, रसहृता, (सती), अंघ्रयः, स्युः ॥९॥१०॥

अर्थः-मध्यनतमें पाँचका भाग देकर जो राश्यादि लब्धि होय, उसमें अयनांश न मिलाकर तिससे (७, ५, १,) इन तीन खण्डोंको मानकर वलन साधै, और उसको पलभासे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें पाँचका भाग देय तव जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि अक्षवलन होता है, यदि मध्यनत पूर्व होय तो उत्तर और मध्यनत पश्चिम होय तो दक्षिण होता है। अयनवलन और अक्षवलन इन दोनोंकी एक दिशा होय तो दोनोंका योग कर देय, और दोनोंकी भिन्न दिशा होय तो अन्तरकर देय, तदनन्तर

उसमें छःका भाग देय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह वलनाङ्गुल होते हैं, उनकी दिशा अङ्क योग अथवा अन्तरकी जो दिशा हो सोई होती है॥९॥१०॥

उदाहरण.

मध्यनत पूर्व २ घटी १८ पलको ५ सें गुणाकरा तब ० राशि २७ अंश २६ कला ० विकला इससे वलन लाए तब ३ अंश ३८ कला २४ विकला आया इसको पलभा ५ अङ्गुल ४५ प्रतिअङ्गुलसे गुणाकरा तब २० अंश ५५ कला हुआ, इसमें ५ का भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई ४ अङ्गुल ११ प्रतिअङ्गुल यह अक्षवलन हुआ, यह मध्यनतके पूर्व होनेके कारण उत्तर है। अयनवलन २ । ४० उत्तर है, और अक्षवलन ४ ।.११ उत्तर है, इन दोनोंकी एक दिशा होनेका कारण दोनोंका योग करा तब ६ अङ्गुल ५२ प्रतिअङ्गुल हुए इसमें ६ का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अङ्गुल ८ प्रतिअङ्गुल, यह उत्तर वलनाङ्गुल हुए ॥

अब ग्रासाङ्गुल और खग्रासाङ्गुल साधनकी रीति लिखते हैं-

मानैक्यार्द्धहृतात्खपड्ग्रपिहितान्मूलंतदाशाङ्गयः
खच्छन्नं सदलैकयुक्च गदिताः खच्छन्नजाशाङ्गयः ॥११॥

अन्वयः—मानैक्यार्द्धहृतात्, खपड्ग्रपिहितात्, मूलम्, (ग्राह्यम्), (तत्), तदाशांग्रयः, (स्युः) । सदलैकयुक्, खच्छन्नम्, च, खच्छन्नजाशांग्रयः, गदिताः ॥ ११ ॥

अर्थः—ग्रासको साठसे गुणाकरके जो गुणनफल होय उसमें मानैक्यखण्डका भाग देय, तब जो लब्धि होय उसका वर्गमूल निकाले वह अङ्गुलादि ग्रासाङ्गुल होते हैं । खग्रासमें १ अङ्गुल ३० प्रतिअङ्गुल युक्तकर देय तब खग्रासाङ्गुल होते हैं ॥ ११ ॥

उदाहरण.

ग्रास १६ अङ्गुल ४८ प्रतिअङ्गुलको ६० से गुणा करा तब १००८ अङ्गुल हुए, इसमें मानैक्यखण्ड १९ अङ्गुल ३८ प्रतिअङ्गुलका भाग दिया तब लब्धि हुई ५१ अङ्गुल २० प्रतिअङ्गुल, इसका वर्गमूल निकाला तब ७ अङ्गुल ९ प्रतिअङ्गुल यह ग्रासाङ्गुल हुए ॥

खग्रास ५ अङ्गुल ४१ प्रतिअङ्गुलमें १ अङ्गुल ३० प्रतिअङ्गुलको युक्त करा तब ७ अङ्गुल ११ प्रतिअङ्गुल यह खग्रासाङ्गुल हुए ॥ ११ ॥

अब ग्रहणके मध्यकी दिशा जाननेकी रीति लिखते हैं-

सव्यासव्यमपागुदग्वलनजाशांग्रीन्प्रदद्याच्छराशा-
याः स्याद्ग्रहमध्यमन्यदिशि खग्रासोऽथवा शेषकम्॥११॥

अन्वयः-शराशायाः, अपागुदग्वलनजाशांग्रीन्, सव्यासव्यम्, प्रदद्यात्। (तत्र), ग्रहमध्यम्, स्यात्। अन्यदिशि खग्रासः, अथवा, शेषकम्, (स्यात्)॥ ११॥

छाद्य विम्बके अर्द्धपरिमित सूत्रसे एक वर्तुल काढ़कर, और उस वर्तुलके विषे दिशाओंकी रेखा काढ़कर उसका एकसे बत्तीस भाग करे, तदनन्तर शरकी जो दिशा हो उस दिशाके उत्तर अथवा दक्षिण दिशाके विन्दुसे यदि वलनाङ्ग्रि उत्तर हों तो उलटे क्रमसे शरकी दिशा देय अर्थात् वाम हाथकी ओरसे दाहिने हाथकी ओरको देय। और यदि वलनाङ्घ्रि दक्षिण होंतो क्रमसे अर्थात् दक्षिण हस्तकी ओर वाम हस्तकी ओरको देय। उस दिशामेंही मध्य ग्रहण होता है। और उससे अन्य दिशामें खग्रासका अथवा शेष विम्बका मध्य होता है॥ ११॥

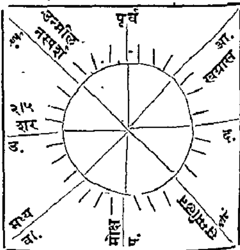
अब स्पर्शदिशा और मोक्षदिशा जाननेकी रीति लिखते हैं-

मध्याच्छन्नाशाङ्घ्रिभिः प्राक्च पश्चादिन्दोर्व्यस्तं
तूष्णगोः स्पर्शमोक्षौ। खग्रस्तात्खच्छन्नपादैः परे
प्राग्दत्तैरिन्दोर्मीलनोन्मीलने स्तः॥ १२॥

अन्वयः-मध्यात्, प्राक्, पश्चात्, च, (दत्तैः), छन्नाशांघ्रिभिः, इन्दोः, स्पर्शमोक्षौ, स्तः। उष्णगोः, तु, व्यस्तम्। खग्रासात्, परे, प्राक्, दत्तैः, खच्छन्नपादैः, इन्दोः, मीलनोन्मीलने, स्तः, (रवेः, तु, व्यस्तम्, ज्ञेयम्)॥ १२॥

अर्थः-ग्रहणके मध्य चिन्हके पाससे ग्रासांघ्रि पूर्वकी ओर देय, वहाँ चन्द्रग्रहणका स्पर्श होताहै और पश्चिमकी ओर देय तो तहाँ चन्द्रग्रहणका मोक्ष होताहै। सूर्यग्रहणका इससे विपरीतहै अर्थात् मध्य चिन्हके पाससे ग्रासाङ्घ्रि पश्चिमकी ओर दिये हों तो वहाँ सूर्यग्रहणका स्पर्श होताहै, और

पूर्वकी ओर दिये हों तौ तहाँ सूर्य्यग्रहणका मोक्ष होताहै। इसी प्रकार खग्रासके मध्य चिह्नके पाससे खग्रासांघ्रि पश्चिमकी ओर दिये हो तौ तहाँ खग्रासस्पर्श होताहै, और पूर्वकी ओर दिये हों तो तहाँ खग्रासका मोक्ष होताहै। और सूर्य्यग्रहणके विषै विपरीत होताहै अर्थात् खग्रासके चिन्हकेसे पूर्वकी ओर खग्रासांघ्रि दिये हों तौ तहाँ खग्रासका स्पर्श होताहै और पश्चिमकी ओर दिये हों तौ तहाँ खग्रासका मोक्ष होताहै ॥ १२ ॥



जिस प्रकार इसलिखी हुई आकृतिके विषैं चन्द्रबिम्ब ११ अङ्गुल ७ प्रतिअङ्गुल, यहाँ त्रिज्यासे वर्त्तुल काढ़कर उसमें दिशाओंके बिन्दु ३२ दिखाएहैं और शर २ अङ्गुल ५० प्रति अं० उत्तर है, और वलनांघ्रि १ अङ्गुल ८ प्रतिअङ्गुल उत्तरहै अर्थात् उत्तरकी बिन्दुसे विपरीत रीतिसे अर्थात् पश्चिमकी ओर देकर तहाँ ग्रहणमध्य दिखलाया है, और उसके अनन्तर खग्रास बिम्ब दिखलाया है; ग्रहणके मध्य बिन्दुसे पूर्वकी और पश्चिमकी ओर ग्रासांघ्रि ७ अङ्गुल ९ प्रतिअङ्गुल देकर तहाँ स्पर्श और मोक्षके चिन्ह दिखलाएहैं, तिसी प्रकार खग्रासके मध्य चिन्हसे पश्चिम या पूर्व दिशाकी ओर खग्रासांघ्रि ७अङ्गुल १९ प्रति अङ्गुल देकर तहाँ संमिलन और उन्मीलन दिखायाहै ॥ १२ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीय-
मुरादाबादवास्तव्य-काशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापक-
पण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाज-
गोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डि-
तरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाव्याख्यया
सहितश्चन्द्रग्रहणाधिकारः समाप्तिमितः ॥ ५ ॥

अथ सूर्य्यग्रहणाधिकारो व्याख्यायते।

अवहार-लम्बन और लम्बनसंस्कृत तिथिसाधन लिखतेहैं-

लग्नं दर्शान्ते त्रिभोनं पृथक्स्थं तत्क्रान्त्यंशैः संस्कृतोऽक्षोनतांशाः। तद्दिद्व्यंशोवर्गितश्चेद्द्विकोर्ध्वोऽधोऽसौद्व्यूनः खण्डितस्तद्युतः सः॥ १॥ सार्को हारः स्यात्त्रिभोनोदयार्कविश्लेषांशांशाशहीनघ्नशक्राः। हाराप्ताः स्याल्लम्बनं नाडिकाद्यं तिथ्यां स्वर्णं वित्रिभेऽर्काधिकोने॥ २॥

अन्वयः-दर्शान्ते, लग्नम्, त्रिभोनम्, पृथक्स्थम्, (कार्य्यम्), तत्क्रान्त्यंशैः, संस्कृतः, अक्षः, नतांशाः, स्युः। तद्दिद्व्यंशः, वर्गितः, सन्, चेत्, द्विकोर्ध्वः, (स्यात्, तदा), असौ, अधः, (स्थाप्यः)। (ततः), द्व्यूनः, सन्, खण्डितः, (कार्य्यः, यत्, फलम्, स्यात्), तद्युतः, सः, सार्कः, हारः, स्यात्। त्रिभोनोदयार्कविश्लेषांशांशांशहीनघ्नशक्राः, हाराप्ताः, नाडिकाद्यम्, लम्बनम्, स्यात्। वित्रिभे, अर्काधिकोने, (सति), तिथ्याम्, स्वर्णम्, (कार्य्यम्) ॥ १ ॥ २ ॥

अर्थः-अमावास्याके अन्तकी लग्न करके, उस लग्नमें तीन राशि घटादेय तब त्रिभोनलग्न होतीहै, तिस त्रिभोन लग्नसे क्रान्ति लाकर, तिस त्रिभोनका और अक्षांशोंका संस्कार करके नतांश लावै, तदनन्तर नतांशोंमें बाईसका भागदेय तब जो लब्धि होय उसका वर्ग करे तब जो वर्गफल होय वह यदि दोसे अधिक होय तौ उसको नीचै अलग एक स्थानमें स्थापन करदेय तदनन्तर उसमें दो घटाकर जो शेष रहै उसका आधाकरकै जो अङ्क हों उनको अलग स्थानमें लिखेहुए अङ्कोंमें युक्त करदेय तब जो अङ्कयोग होय उसमें बारह अंश युक्त करदेय तब हार होताहै। स्पष्ट रवि और त्रिभोन लग्न इन दोनोंका अन्तर करकै जो अंश आवैं उनमें दशका भागदेय तब जो लब्धि होय उसको चौदहमें घटावै तब जो शेषरहै उसको पूर्वोक्त लब्धिसे गुणाकरै तब जो गुणन फल होय उसमें पूर्वोक्त हारका भाग देय तब जो लब्धि हो वह घटिकादिलम्बन होताहै, यह लम्बन यदि त्रिभोन लग्न स्पष्ट

अंश २८ कला १० विकला, इसका और अक्षांश दक्षिण २५ अंश २६ कला ४२ विकलाका एकदिशा होनेके कारण योगकरा तब ४९ अंश ४ कला ५२ विकला, यह दक्षिणनतांश हुआ, इसमें २२ का भागदिया तब लब्धिहुई २ अंश १३ कला ५१ विकला, इसका वर्गकरा तब ४ अंश ५८ कला ३५ विकला हुआ, यह वर्ग देशकी अपेक्षा अधिकहै इसकारण इसमें २ अंश घटाए तब शेषरहा २ अंश ५८ कला ३५ विकला, इसमें २ का भागदिया तब लब्धिहुई १ अंश २९ कला १७ विकला, इस लब्धिको वर्ग ४।५८।३५ में युक्तकरा तब ६ अंश २७ कला ५२ विकला हुआ, इसमें १२ अंश युक्तकरे तब १८ अंश २७ कला ५२ विकला यह हार हुआ ॥

फिर स्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला, त्रिभोन लग्न ८ राशि २ अंश ४६ कला १७ विकला, इन दोनोंका अन्तर करा तब ० राशि २ अंश ४० कला ८ विकला, इसमें १० का भागदिया तब लब्धिहुई ० अंश १६ कला ० विकला, इसको १४ अंशमें घटाया तब शेषरहा १३ अंश ४४ कला ० विकला, इसको दशमांश लब्धि ० अंश १६ कला ० विकलासे गुणाकरा तब ३ अंश ३९ कला ४४ विकला हुआ इसमें हार १८ अंश २७ कला ५२ विकलाका भागदिया तब घटिकादि लम्बन हुआ ऋण ० घटी १३ पल, त्रिभोन लग्न सूर्य्यकी अपेक्षा कमहै इसकारण यह ऋण है।

दर्शान्त १३ घटी ४ पलमें लम्बन ० घटी ११ पलको ऋणकरा तब १२ घटी ५३ पल यह लम्बनसंस्कृत दर्शान्त हुआ ॥ २ ॥

अब लम्बनसंस्कृत व्यगर्क और चन्द्रशरसाधन लिखतेहैं–

त्रिकुनिघ्नविलम्बनं कलास्तत्सहितोनास्थितिवद्व्यगुः शरोऽतः ॥ ८८ ॥

अन्वयः–त्रिकुनिघ्नविलम्बनम्, कलाः, (स्युः)। तिथिवत्, व्यगुः, तत्सहितोनः, (कार्य्यः), अतः, शरः, (साध्यः) ॥ ८८ ॥

अर्थः–लम्बनको तेरहसे गुणा करके जो गुणनफल हो वह कला होवेंहैं, उन कलाओंको लम्बनकी समान व्यगर्कमें धन अथवा ऋण करदेय, तब लम्बनसंस्कृत व्यगर्क होवाहै, तदनन्तर तिस लम्बनसंस्कृत व्यगर्कसे शरको साधनकरे ॥ ८८ ॥

उदाहरण.

लम्बन ० घटी ११ पल इसको १३ से गुणाकरा तब कलादि गुणनफल

सूर्यकी अपेक्षा अधिक होय तौ धन और कम होय तौ ऋण होताहै। दर्शान्तकी घटिकाओंमें लम्बनको धन या ऋणकरे तब लम्बन संस्कृतदर्शान्त होताहै, यह सूर्य्यग्रहणका मध्य काल होताहै ॥ १ ॥ २ ॥

उदाहरण.

संवत् १६६७ शाके १५३२ मार्गशीर्ष कृष्ण अमावास्या ३० बुधवार घटी १२। प्र० ३६ मूल नक्षत्र ५५ घटी ५२ पल गण्डयोग २३ घटी४५ पल इसदिन सूर्य्यग्रहणका पर्वकाल साधनेके निमित्त गणित करतेहैं ॥

चक्र ८, अहर्गण १००५, अधिमास १, अवम १५, प्रातःकालीन मध्यम रवि ८ राशि ५ अंश ३९ कला २५ विकला। मध्यमचन्द्र ८ राशि १ अंश १० कला ३३ विकला। चन्द्रोच्च ८ राशि १७ अंश २७ कला २१ विकला। राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १९ विकला।

इष्टकालीन मध्यम रवि ८ राशि ५ अंश ५१ कला ५० विकला। मध्यम चन्द्र ८ राशि ३ अंश ५६ कला ३४ विकला। चन्द्रोच्च ८ राशि १७ अंश २८ कला ४५ विकला। राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १९ विकला।

स्पष्टीकरण–रविका मन्दकेन्द्र ६ राशि १२ अंश ८ कला १० विकला। मन्दफल ऋण ० अंश २७ कला ५० विकला। मन्दस्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २४ कला ० विकला। अयनांश १८ अंश ८ कला। चरखण्ड ५७। ४६। १९। चरधन ११७। चरसे संस्कार किया हुआ रवि ८ राशि ५ अंश २५ कला ५७ विकला। गतिफल धन २ कला ७ विकला। स्पष्टगति ६१ कला १५ विकला। त्रिफलसंस्कृत चन्द्र ८ राशि ४ अंश १० कला ५३ विकला। मन्दकेन्द्र १३ अंश १७ कला ५० विकला। मन्दफल धन १ अंश ९ कला ४८ विकला। स्पष्टचन्द्र ८ राशि ५ अंश २० कला ४१ विकला। गतिफल ऋण ६४ कला ५ विकला। स्पष्टगति ७२६ कला ३० विकला।

अथ रविचन्द्रसे गततिथि २९ आई। और अमावास्याकी एष्य घटी ० घ० २८ पल आई इनकी पश्चाद्गस्थ घटिका १२। ३६ ओंमें युक्तकरा तब १३ घटी ४ पल यह दर्शान्त घटिका हुई, अर्थात् दर्शान्तकालीन ग्रहलानेके निमित्त ० घ. २८ पल इसका चालनदेकर लाए हुए ग्रह–स्पष्टरवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला। स्पष्टचन्द्र ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला। राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १८ विकला। विराहुर्क ५ राशि २३ अंश ४५ कला ७ विकला।

अथ, स्पष्टरवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला लग्नभोग्यकाल ७३ पल। दर्शान्त १३ घटी ४ पल, इससे लायाहुआ लग्न ११ राशि २ अंश ४१ कला १७ विकला, इसमें ३ राशिको घटाया तब शेषरहा ८ राशि २ अंश ४१ कला १७ विकला यह त्रिभोन लग्न हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति दक्षिण २३

अंश ३८ कला १० विकला, इसका और अक्षांश दक्षिण २५ अंश २६ कला ४२ विकलाका एकदिशा होनेके कारण योगकरा तव ४९ अंश ४ कला ५२ विकला, यह दक्षिणनतांश हुआ, इसमें २२ का भागदिया तव लब्धिहुई २ अंश १३ कला ५१ विकला, इसका वर्गकरा तव ४ अंश ५८ कला ३५ विकला हुआ, यह वर्ग देशकी अपेक्षा अधिकहै इसकारण इसमें २ अंश घटाए तब शेषरहा २ अंश ५८ कला ३५ विकला, इसमें २ का भागदिया तव लब्धिहुई १ अंश २९ कला १७ विकला, इस लब्धिको वर्ग ४।५८।३५ में युक्तकरा तव ६ अंश २७ कला ५२ विकला हुआ, इसमें १२ अंश युक्तकरे तब १८ अंश २७ कला ५२ विकला यह हार हुआ ॥

फिर स्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २५ विकला, त्रिभोन लग्न ८ राशि २ अंश ४६ कला १७ विकला, इन दोनोंका अन्तर करा तब ० राशि २ अंश ४० कला ८ विकला, इसमें १० का भागदिया तव लब्धिहुई ० अंश १६ कला ० विकला, इसको १४ अंशमें घटाया तब शेषरहा १३ अंश ४४ कला ० विकला, इसको दशमांश लब्धि ० अंश १६ कला ० विकलासे गुणाकरा तव ३ अंश ३९ कला ४४ विकला हुआ इसमें हार १८ अंश २७ कला ५२ विकलाका भागदिया तव घटिकादि लम्बन हुआ ऋण ० घटी १२ पल, त्रिभोन लग्न सूर्य्यकी अपेक्षा कमहै इसकारण यह ऋण है ।

दर्शान्त १३ घटी ४ पलमें लम्बन ० घटी ११ पलको ऋणकरा तव १२ घटी ५३ पल यह लम्बनसंस्कृत दर्शान्त हुआ ॥ २ ॥

अब लम्बनसंस्कृत व्यगर्क और चन्द्रशरसाधन लिखतेहैं-

त्रिकुनिघ्नविलम्बनं कलास्तत्सहितोनस्थितिवद्व्य गुः शरोऽतः ॥ ८८ ॥

अन्वयः-त्रिकुनिघ्नविलम्बनम्, कलाः, (स्युः)। तिथिवत्, व्यगुः, तत्सहितोनः, (कार्य्यः), अतः, शरः, (साध्यः) ॥ ८८ ॥

अर्थः-लम्बनको तेरहसे गुणा करके जो गुणनफल हो वह कला होतीहैं, उन कलाओंको लम्बनकी समान व्यगर्कमें धन अथवा ऋण करदेय, तब लम्बनसंस्कृत व्यगर्क होताहै, तदनन्तर तिस लम्बनसंस्कृत व्यगर्कसे शरको साधनकरे ॥ ८८ ॥

उदाहरण.

लम्बन ० घटी ११ पल इसको १३ से गुणाकरा तव कलादि गुणनफल

हुआ २ कला २२ विकला इसको व्यगु ५ राशि २३ अंश ४५ कला ७ विकलामें 'लम्बनको दर्शान्तमें ऋण कराथा' इसकारण ऋण करा तब ५ राशि २३ अंश ४२ कला ४४ विकला, यह लम्बनसंस्कृत व्यगर्क हुआ, इसके भुजांशकरै ६ अंश १७ कला १६ विकला हुआ इसको ११ से गुणाकरा तब ६९ अंश ९ कला ५६ विकला यह गुणनफल हुआ, इसमें ७ का भागदिया तब लब्धिहुई ९ अङ्गुल ५३ प्रतिअङ्गुल, यह चन्द्रशर हुआ, लम्बन संस्कृत व्यगर्कके मेषादि होनेके कारण उत्तरहै ॥

अब लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्न और नतांशसाधनरीति लिखते हैं-

अथपड्गुणलम्बनं लवास्तैर्युगयुग्वित्रिभतः पुनर्नतांशाः ॥ ३ ॥

अन्वयः-अथ, पड्गुणलम्बनम्, लवाः, (स्युः) । तैः, युगयुग्वित्रिभतः, नतांशाः, (साध्याः) ॥ ३ ॥

अर्थः-लम्बनको ६ से गुणा करके जो गुणनफल होय उसको अंशादि जानें, और उन अंशोंको लम्बनकी समान त्रिभोन लग्नमें धन अथवा ऋण करै तब लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्न होताहै, तदनन्तर उससे क्रान्ति लाकर उस क्रान्तिका और अक्षांशोंका संस्कार करै तब लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश होतेहैं ॥ ३ ॥

उदाहरण.

लम्बन ० घटी ११ पलको ६ से गुणाकरा तब अंशादि गुणनफल हुआ १ अंश ६ कला इसको त्रिभोन लग्न ८ राशि २ अंश ४६ कला १७ विकलामें "लम्बनको दर्शान्तमें ऋण कराथा' इसको ऋण करा तब शेषरहा ८ राशि १ अंश ४० कला १७ विकला, यह लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्न हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति दक्षिण २३ अंश ३४ कला ३५ विकला इनका और अक्षांश दक्षिण २५ अंश २६ कला ४२ विकलाका एक दिशा होनेके कारण योग करा तब ४९ अंश १ कला १७ विकला यह लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न दक्षिण नतांश हुए ॥

अब नति और स्पष्ट शर लानेकी रीति लिखते हैं-

दशहृतनतभागोनाहताष्टेन्दवस्तद्रहितसधृतिलिप्तैः पड्रिराप्तास्त एव । स्वदिगितिनतिरेतत्संस्कृतः सोडुलादिः स्फुट इपुरमुतोऽत्र स्यात्स्थितिच्छन्नपूर्वम् ॥४॥

अन्वयः–दशहृतनतभागोनाहृताष्टेन्दवः, (पृथक्, स्थाप्याः), ते, एव, तद्रहितसधृतिलिप्तैः, पङ्क्तिः, आप्ताः, इति, स्वदिक्, नतिः, (स्यात्), एतत्संस्कृतः, सः, अत्र, स्फुटः, अङ्गुलादिः, इषुः, (स्यात्), अमुतः, स्थितिच्छिन्नपूर्वम्, स्यात्, ॥ ४ ॥

अर्थः–लम्बन संस्कृतत्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांशमें दशका भागदेय, तब जो कला आदि लब्धि होय उसको अठारह कलामें घटावे, तब जो शेषरहै, उसे पूर्वोक्त लब्धिसे गुणा करे, तब जो गुणनफल हो उसको ६ अं० १८ कलामें घटावे, जो शेषरहै उसे कलात्मक मानकर उसका तिस कलादि गुणाकारमें भागदेय, तब जो लब्धि होय यह अङ्गुलआदि नति होतीहै. और उस नतांशके अनुसार दक्षिण अथवा उत्तर होतीहै। तदनन्तर नतिका और शरका संस्कार करे, तब स्पष्ट शर होता है, इस स्पष्ट शरसेही चन्द्रग्रहणाधिकारमें कही हुई रीतिसे सूर्य्य–चन्द्र–सूर्य्यचन्द्रके विम्ब–मानैक्यखण्ड–ग्रास–मध्यस्थिति और शेषविम्ब साधे ॥ ४ ॥

उदाहरण.

लम्बनसंस्कृत त्रिभोनलग्नोत्पन्न नतांश ४९ अं० १ क० १७ वि० में १० का भागदिया तब लब्धि हुई ४ क० ५४ वि० इस लब्धिको १८ कलामें घटाया तब शेषरहे १३ क ६ वि० इसको पूर्वोक्त लब्धि ४ क० ५४ वि० से गुणा करा तब ६४ क० १८ वि० हुए इसको ६ अं० १८ क० में घटाया तब कलादि शेषरहे ५ क० १३ वि० ४९ प्र० वि० इसका पूर्वोक्त गुणनफल ६४ क० ११ वि० म भागदिया तब लब्धि हुई १२ अं० १६ प्र० अं० यही अङ्गुलादि नति हुई। लम्बनसंस्कृत त्रिभोन लग्नोत्पन्न नतांश दक्षिण है, इसकारण नतिभी दक्षिण हुई अब दक्षिण नति १२ अं०१६प्र० अं० और उत्तर शर ९ अं० ५३ प्र० अं० इन दोनोंका संस्कार (अन्तर) करा तब ३ अं० २३ प्र० अं० यह स्पष्ट शर हुआ ॥

"गतिर्द्विघ्नीत्यादि" रीतिके अनुसार सूर्य्यगति ६१ कला १५ विकला को २ से गुणाकरा तब १२२ क० ३० विकला हुआ इसमें ११ का भागदिया तब लब्धि हुई ११ अङ्गुल ८ प्रतिअङ्गुल यही सूर्य्यविम्ब हुआ।

और ७२६ कला ३० विकलामें ७४ का भागदिया तब लब्धि हुई ९ अङ्गुल ४९ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रविम्ब हुआ।

बिम्बैक्य २० अङ्गुल ५७ प्रतिअङ्गुलमें २ का भागदिया तब लब्धि हुई १० अङ्गुल २८ प्र०अङ्गुल यह मानैक्यखण्ड हुआ इस मानैक्यखण्ड १० अं०२८ प्र० अं० में शर स्पष्ट ३ अं० २३ प्र० अं० को घटाया तब ८ अङ्गुल ५ प्रति-

अङ्गुल यह ग्रास हुवा। सूर्य्यविम्ब हुआ ११ अङ्गुल ८ प्रतिअङ्गुल इसमें ग्रास ८ अं० ५ प्र० अं०को घटाया तब शेप रहा ३ अं० ३ प्र० अं० यह शेप बिम्ब हुआ।

मानैक्यखण्ड १० अं० २८ प्र० अं० और स्पष्ट शर २ अं० २३ प्र० अं० इन दोनोंका योग करा तब १२ अं० ५१ प्र० अं० हुआ, इसको १० से गुणा करा तब १२८ अङ्गुल ३० प्र० अं० हुए इसको ग्रास ८ अं० ५ प्र० अं० से गुणाकरा तब १०३८ अङ्गुल ४२ प्रतिअङ्गुल हुए, इसका वर्गमूल लिया तब ३२ अं० १४ प्र० अं० मिला इसको ५ से गुणाकरा तब १६१ अं १० प्र० अं० हुए इसमें ६ का भागदिया तब लब्धि हुई २६ अं० ५२ प्र० अं० इसमें चन्द्रविम्ब ९ अं० ४९ प्र० अं० का भागदिया तब लब्धि हुई २ घ० ४४ प० यही मध्यस्थिति हुई॥

अब स्पर्शलम्बन-मोक्षलम्बन-स्पर्शकाल और मोक्षकाल जाननेकी रीति लिखते हैं-

स्थितिरसहतिरंशा वित्रिभं तैः पृथक्स्थं रहितसहि-
तमाभ्यां लम्बने ये तु ताभ्याम्। स्थितिविरहितयु-
क्तः संस्कृतो मध्यदर्शः क्रमश इति भवेतां स्पर्शमु-
क्त्योस्तु कालौ॥ ५॥

अन्वयः-स्थितिरसहतिः, अंशाः, (स्युः)। पृथक्स्थम्, वित्रिभम्, तैः, रहितसहितम्, (कार्य्यम्)। आभ्याम्, तु, ये, लम्बने, (ते, साध्ये)। ताभ्याम्, स्थितिविरहितयुक्तः, मध्यदर्शः, संस्कृतः, (कार्य्यः)। इति, तु, क्रमशः, स्पर्शमुक्त्योः, कालौ, भवेताम्, ॥ ५॥

अर्थः-मध्यस्थितिको छः से गुणा करके जो अंशादि लब्धि होय उसको त्रिभोन लग्नमें घटावै तब स्पर्श त्रिभोन लग्न होता है, फिर उससे नतांश साधै, तदनन्तर तिन नतांशोंसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हार साधै, और दर्शान्तकालीन सूर्य्यकी मध्यस्थिति घटिकाओंका चालन ऋण करै तब वह स्पर्शकालीन सूर्य्य होताहै, फिर स्पर्शकालीन सूर्य्य, स्पर्शत्रिभोनलग्न और हार इनसे पूर्वोक्तरीतिके अनुसार लम्बन साधै, वह स्पर्शकालीन लम्बन होताहै, इसप्रकार मध्यस्थितिको ६ से गुणाकरकै जो अंशादि लब्धि आवे उसे त्रिभोन लग्नमें युक्त करदेय, तब वह मोक्षत्रिभोन लग्न ..है, और तिससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार हार लावै, और दर्शान्त का-

लीन सूर्य्यकी मध्य स्थितिकी घटिकाओंका चालन मिलावै, तब वह मोक्षकालीन होताहै, । फिर मोक्षकालीन सूर्य्य, मोक्ष त्रिभोनलग्न, और हार इनसे लम्बन साधे, तो वह मोक्षकालीन लम्बन होताहै । दर्शान्त घटिकाओंमेंसे मध्यस्थितिकी घटिकाओंको घटावे, जो शेष रहै उसमें स्पर्शकालीन लम्बन धन होय तो मिलादेय, और ऋण होय तो घटादेय, तब स्पर्शकाल होताहै, । इसी प्रकार दर्शान्त घटिकाओंमें मध्य स्थितिको मिलादेय तब जो अङ्कहों उनसे मोक्षकालीन लम्बनका संस्कार करै, तब मोक्षकाल होताहै ॥ ५ ॥

उदाहरण.

मध्यस्थिति २ । ४४ को ६ से गुणाकरा तब १६ अंश २४ कला हुए, इसको त्रिभोन लग्न ८ रा. २ अं. ४६ क. ७ वि. में घटाया तब शेषरहे ७ रा० १६ अं० २२ कला १७ विकला, यह स्पर्शत्रिभोन लग्न हुआ, इससे साधी हुई क्रान्ति दक्षिण २१ अंश २४ कला ३९ विकला, इसका अक्षांश दक्षिण २५ अं० २६ क० ४० वि० से संस्कार करा तब ४६ अं. ५१ क. १९ वि. यह दक्षिण नतांश हुए, इसमें २२ का भागदिया तब लब्धि हुई २ अं. ७ क. इसका वर्ग ४ अं. २८ क. हुआ इसमें २ अंश घटाए तब २ अं. २८ कला रहा, इसका आधा १ अं. १४ कला हुआ. इसमें पूर्वोक्तवर्ग ४ अं० २८क० को युक्तकरा तब ५अं. ४२ क. हुआ, इसमें १२ अंश जोड़े तब १७ अंश ४२ कला यह हार हुआ, दर्शान्तकालीन सूर्य्य ८ रा. ५ अं. २६ क. २५ वि. सूर्य्य स्पष्ट गति ६१ क. १५ वि. को २ । ४४ मध्यस्थितिसे गुणाकरा तब १६७ क. २५ वि. हुए, इसमें ६० का भाग दिया तब २ क. ४७ वि. लब्धि हुई, इस लब्धिको दर्शान्त कालीन सूर्य्य ८ । ५ । २६ । २५ में घटाया तब ८ रा. ५ अंश २३ क. ३८ वि. स्पर्शकालीन सूर्य्य हुआ, इसमेंसे स्पर्शकालीन त्रिभोन लग्न ७ रा. १६ अं. २२ क. १७ वि. को घटाया तब शेषरहे ० रा. १९ अं. १ क. २१ वि. इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अं. ५४ कला, इसको १४ अंशमें घटाया तब शेषरहे १२ अं. ६ क. इसको लब्धि १ अं ५४ कलासे गुणा करा तब २२ अंश ५९ कला हुए इसमें हार १७ अं. ४२ क. का भाग दिया तब १ घ० १९ पल यह स्पर्शकालीन लम्बन त्रिभोन लग्नकी अपेक्षा सूर्य्य अधिक है इस कारण ऋणहै ॥

अब मोक्षकालीन लम्बन साधतेहैं-यहाँ मध्यस्थिति २ घ. ४४ पलको ६ से गुणा करा तब १६ अंश २४ कला हुए, इसमें त्रिभोन लग्न ८ रा. २ अं. ४६ क. १७ वि. को युक्त करा तब ८ राशि १९ अंश १० कला १७ विकला यह मोक्षत्रिभोन लग्न हुआ, इससे साधी हुई क्रान्ति दक्षिण २३ अं० ४२ क० २८ वि० इससे अक्षांशों २५ अं. २६ क. ४२ विक. का संस्कार करनेसे ४९ अं. ९ क. १०

वि. यह नतांश दक्षिण हुए, इसमें २२ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अं. १४ क. इसका वर्ग ४ अं. ५९ कला हुआ, इसमें २ अंश घटाए तब शेष २ अं. ५९ कला रहा. इसका आधा १ अं. २९ क. हुआ. इसमें पूर्वोक्त वर्ग ४ अं. ५९ क. को युक्त करा तब ६ अं. २८ कला हुआ, इसमें १२ अं. युक्त करे तब १८ अं. २८ क. यह हार हुआ ॥

सूर्य्य स्पष्टगति ६१ क. १५ वि. को मध्य स्थिति २ घ. ४४ प. से गुणा करा तब १६७ क. २५ वि हुआ इसमें ६० का भागदिया तब लब्धि हुई २ क. ४७ वि. इसमें दर्शान्तकालीन सूर्य्य ८ रा. ५ अं. २६ क. २५ वि. को युक्त करा तब ८ रा. ५ अं. २९ क. १२ वि. यह मोक्षकालीन सूर्य्य हुआ इसको मोक्षकालीन त्रिभोन लग्न ८ रा. १९ अं. १० क. १७ वि. में घटाया तब ० रा. १३ अं. ४१ क. ५ वि. शेषरहे, इसमें १० का भाग दिया तब १ अं. २२ क. लब्धि हुई. इसको १४ अंशोंमें घटाया तब शेषरहे १२ अं. ३८ क. इसको ऊपर की लब्धि १ अं. २२ क. से गुणाकरा तब १७ अं. १५ क. हुए, इसमें हार १८ अं० २८ क० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० घ. ५६ प० यह मोक्षकालीन लम्बन मोक्षकालीन सूर्य्यकी अपेक्षा मोक्षत्रिभोनलग्न अधिकहै, इसकारण धनहै ।

दर्शान्त १३ घ० ४ प०. में मध्यस्थिति २ घ. ४४ प. को घटाया तब १० घ० २० प. हुआ, इसमें स्पर्शकालीन लम्बन १ घ० १९ प० को घटाया तब ९ घ० १ प० यह स्पर्शकाल हुआ ॥

दर्शान्त १३ घ० ४ प० में मध्य स्थिति २ घ० ४४ प० को युक्त करा, तब १५ घ० ४८ प० हुआ, इसमें ० घ० ५६ प० को युक्त करा तब १६ घ० ४४ प० मोक्ष काल हुआ ॥

अथ सम्मीलन, और उन्मीलन, तथा ग्रहणका वर्ण जाननेकी रीति लिखतेहैं-

मर्दार्दिवं मीलनोन्मीलने स्तो ग्रासोनादेश्याङ्गुलाल्पोरवीन्द्वोः ॥ धूम्रः कृष्णः पिङ्गलोल्पार्द्धसर्वग्रस्तश्चन्द्रोर्कस्तु कृष्णः सदैव ॥ ६ ॥

अन्वयः-एवम्, मर्दात्, मीलनोन्मीलने, स्तः, । अङ्गुलाल्पः, रवीन्द्वोः, ग्रासः, न, आदेश्यः, अल्पार्द्धसर्वग्रस्तः, चन्द्रः, (क्रमात्), धूम्रः, कृष्णः, पिङ्गलः, (भवति), अर्कः, तु, सदा, एव, कृष्णः, (भवति) ॥ ६ ॥

अर्थः-यदि सूर्य्यग्रहण खग्रास होय तौ खग्रास और बिम्बान्तर इनसे मर्दस्थिति साधै, तदनन्तर मर्दस्थितिको ६से गुणा करके जो अंशादि लब्धि होय उसको त्रिभोनलग्नमें रहित और युक्तकरे, तब खस्पर्श त्रिभोन लग्न और खमोक्षत्रिभोनलग्न होतेहैं, फिर तिनसे खस्पर्शकालीन लम्बन और खमोक्षकालीन लम्बन यह दोनों साधै, तदनन्तर दर्शान्तघटिकाओंमें मर्दस्थितिको रहित और युक्तकरे, और उसमें खस्पर्शकालीन लम्बन और खमोक्षकालीन लम्बन इन दोनोंको धन और ऋण करे, तब सम्मीलनकाल और उन्मीलनकाल होतेहैं। यदि सूर्य्यका अथवा चन्द्रमाका ग्रास अङ्गुलसे कम होय तौ ग्रहण न कहै। यदि चन्द्र अल्पग्रस्त होय तौ धूम्रवर्ण यदि अर्द्धग्रस्त होय तौ कृष्णवर्ण, और यदि सर्वग्रस्त होय तौ पिङ्गलवर्ण होताहै, और सूर्य्यग्रहणमें सूर्य्य तौ निरन्तर कृष्णवर्ण होताहै॥ ६॥

अब इष्टकालीन ग्रास साधनेकी रीति लिखते हैं-

इष्टं द्विघ्नं छन्नक्षुण्णं स्पर्शान्त्यान्तर्नाडीभक्तम्।
रूपार्धेनोपेतं विद्यादिष्टे कालेऽर्कस्य ग्रासम्॥ ७॥

अन्वयः-द्विघ्नम्, छन्नक्षुण्णम्, स्पर्शान्त्यान्तर्नाडीभक्तम्, रूपार्द्धेन, उपेतम्, इष्टम्, इष्टे, काले, अर्कस्य, ग्रासम्, विद्यात्॥ ७॥

अर्थः-इष्टघटिकाओंको दोसे गुणाकरै, तब जो गुणनफल हो उसे ग्राससे गुणाकरै, तब जो गुणनफल होय उसमें स्पर्शकाल और मोक्षकालके शेष अर्थात् पर्वकालकी घटिकाओंका भागदेय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि होतीहै, उसमें ०अङ्गुल ३० प्र०अं० मिलादेय तब इष्टकालीन ग्रास होताहै॥७॥

उदाहरण.

इष्टघटी १ इसको २से गुणा करा तब २हुए, इसको ग्रास ८अङ्गुल ६ प्रतिअङ्गुलसे गुणा करा तब १६ अङ्गुल१२प्रतिअङ्गुल हुए। फिर मोक्षकाल १६ घ० ५४ प० और स्पर्शकाल ९ घ० ३ प० इन दोनोंका अन्तर करनेसे शेषरहा पर्वकाल ७ घ० ५१ प० इसका १६ अं० १२ प्रतिअं०में भागदिया. तब लब्धि हुई २ अङ्गुल ६ प्रतिअं० इसमें ३० प्रतिअङ्गुल मिलाए तब २ अङ्गुल ३६ प्रतिअङ्गुल यह इष्टकालीन ग्रास हुआ॥

चन्द्रग्रहणके विषें कहीहुई रीतिके अनुसार अयन-वलन-अय्यनत-अ-

क्षजवलन-वलनाङ्गुलि-ग्रासाङ्गुलि-और सग्रासाङ्गुलि यह साधकर तिस ग्रहणका मध्य स्पर्श और मोक्ष किस ओरसे होगा, इसका परिलेख अर्था आकृति निकाले ॥

उदाहरण.

लम्बनसंस्कृततिथि १२ घ० ५३ प० लम्बनसंस्कृततिथिकालीनरवि ८रा० ५अं० २६ क० १४ वि० इसमें ३ रा० युक्तकरी तब ११ रा० ५ अं० २६ क० १४ वि० इसमें अयनांश १८ अं० ८ क० युक्तकरे तब ११ रा० २३ अं० ३४ क० १४ वि० हुआ, इससे मिले अयनवलनदक्षिण १ अंगुल ३० प्रतिअंगुल, अब १५ घटीमें चर १ घ० ५७ पलको घटाया तब शेषरहा १३घ० ३ प० यह दिनार्द्ध, और ग्रहणमध्यकाल १२ घ० ५३ प० इनसे लाया हुआ पूर्ववत ० घ० १० प० हुआ, इसमें ५ का भाग दिया तब ० रा० २ अं० ० क० ० वि० इससे "अस्मा ज्ञगशरेन्दुमितैरित्यादि" रीतिके अनुसार वलनहुआ ० अं० १४ प्र०अं० इसको पलभा ५ अं० ४५ प्र०अं०से गुणा करा तब १ अं० २० प्र०अं० हुए, इसमें ५का भागदिया तब लब्धि हुई ० अं० १६ प्र०अं० यह अक्षजवलन पूर्ववतहै, इसका रण उत्तर और अयनवलनदक्षिण १ अङ्गुल ३० प्रतिअङ्गुल इन दोनोंका संस्कार करनेसे दक्षिण १ अङ्गुल १४ प्रतिअङ्गुल हुए इसमें ६ का भागदिया तब ० अं० १२ प्रतिअं० यह दक्षिण वलनाङ्गुलि हुए, । ग्रास ८ अं० ६ प्र०अं०को ६०से गुणा करा तब ४८६ हुए, इसमें मानैक्यखण्ड १० अङ्गुल २८ प्र०अं०का भागदिया तब लब्धि हुई ४६ अङ्गुल २५ प्रतिअङ्गुल, इसका वर्गमूल हुआ ६ अं० ४८ प्र०अं० यह ग्रासाङ्गुलि हुए ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तर-
देशीयमुरादाबादवास्तव्यकाशिस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापक
पण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्न
गौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथतनूजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहित.
सूर्य्यग्रहणाधिकार: समाप्तिमित ॥ ६ ॥

अथ मासगणाद्ग्रहणद्वयसाधनाधिकारो व्याख्यायते।

अथ मासगणात्सुलघुक्रियया ग्रहणद्वयसिद्धिकृतेऽभिदधे। स्फुटसूर्य्यविपाततिथींश्च वपुर्ग्रसनादिविशेषचमत्कृतये ॥ १ ॥

अन्वयः-अथ, विशेषचमत्कृतये, लघुक्रियया, मासगणात्, ग्रहणद्वयसिद्धिकृते, स्फुटसूर्य्यविपाततिथीन्, वपुः, ग्रसनादि, च, अभिदधे ॥ १ ॥

अर्थः-पुरुषोंका अत्यन्त चमत्कार होय और सरलरीतिसे मासगणसे दोनों ग्रहण सिद्ध हों इसकारण स्पष्टरवि, व्यगवर्कतिथि, बिम्ब और ग्रास आदिका वर्णन करते हैं ॥ १ ॥

अब ध्रुवाङ्कोंको कहतेहैं-

भानोः खम्भूः खाब्धयोऽयं ध्रुवः स्याच्छैलाःकर्का राशिपूर्वो व्यगोः स्यात्। वृत्तस्याङ्का भूरसाश्चाथ तिथ्या वाराद्यस्याक्षाः खगास्तर्करामाः ॥ २ ॥

अन्वयः-खम्, भूः, खाब्धयः, अयम्, भानोः, ध्रुवः, स्यात्। शैलाः, कर्काः, राशिपूर्वः, व्यगोः, (ध्रुवः), स्यात्। अङ्काः, भूः, रसाः, च, वृत्तस्य, (ध्रुवः, स्यात्)। अथ, अक्षाः, खगाः, तर्करामाः, तिथ्याः, वाराद्यस्य, (ध्रुवः, स्यात्) ॥ २ ॥

अर्थः-खकहिये शून्य-भूकहिये एक-खाब्धि कहिये चालीस, यह रविका ध्रुवाङ्क है। शैल कहिये सात-कुकहिये एक-अर्क कहिये बारह यह व्यगु कहिये व्यगवर्कका राश्यादि ध्रुवाङ्क है। और अङ्ककहिये नौ-भूकहिये एक-रसकहिये छः यह वृत्तकहिये चन्द्रमाके मन्दकेन्द्रका ध्रुवाङ्क है। और अक्ष कहिये पाँच-खग कहिये नौ-तर्कराम कहिये छत्तीस यह तिथिवारादि कहिये शाकेके आरम्भमें जो वार हो उससे आरम्भ वारादिका ध्रुवाङ्क है ॥ २ ॥

ध्रुवाङ्कचक्र.

नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	७	९	५ वार
अंश	१	१	१	९ घटी
कला	४०	१२	६	३६ पल
विकला	०	०	०	० विप०

अब क्षेपकाङ्क कहतेहैं-

क्षेपो भाद्यः खंकृताभूदशोऽर्के रुद्राः शैला नागचन्द्रा विपाते । वृत्ते शून्यं वह्निणश्चन्द्रबाणा वाराद्ये द्वौ व्यङ्घ्रिनन्दाब्धयः स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-खम्, कृताः, भूदशः, अर्के, रुद्राः, शैलाः, नागचन्द्राः, विपाते, शून्यम्, वह्निणः, चन्द्रबाणाः, वृत्ते, द्वौ, व्यङ्घ्रिनन्दाब्धयः, वाराद्ये, भाद्यः, क्षेपः, स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः-खकहिये शून्य-कृत कहिये चार-भूदश कहिये इक्कीस यह सूर्य्यका राश्यादि क्षेपकाङ्क है। और रुद्र कहिये ग्यारह-शैल कहिये सात-नागचन्द्र कहिये अठारह यह व्यगुका राश्यादि क्षेपकाङ्कहै। और शून्य-वह्निन् कहिये चौदह-चन्द्रबाण कहिये इक्यावन-यह वृत्तका क्षेपकाङ्क है। और द्वौकहिये दो-व्यङ्घ्रिनन्दाब्धि कहिये अड़तालीस और पैंतालीस-यह वारादिका क्षेपकाङ्क होताहै ॥ ३ ॥

क्षेपकाङ्ककोष्टक.

नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	११	०	२ वार
अंश	४	७	१४	४८ घ.
कला	२१	१८	५१	४५ प
विकला	७	०	०	० विप

अब रविका ध्रुवोनक्षेपक, व्यगु, वृत्त और वारादि इनके ध्रुवयुक्त क्षेपक जाननेकी रीति लिखतेहैं-

मासगणाज्जनितोरविरूनश्चक्रहतध्रुवकेन निजेन । सङ्कलिता इतरेऽथ च ते स्युः क्षेपयुता निजमासि सितेन ॥ ४ ॥

अन्वयः-मासगणात्, जनितः, रविः, निजेन, चक्रहतध्रुवकेन ऊनः, (कार्य्यः).इतरे, (तेन), सङ्कलिताः, (कार्य्याः), अथ, च ते, क्षेपयुताः, (सन्तः), निजमासि, सितान्ते, स्युः ॥ ४ ॥

अर्थः-रविका ध्रुवाङ्क लेकर उसे चक्रसे गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसको रविके क्षेपकाङ्कमें घटावै तब जो शेषरहै यह रविका ध्रुवोन क्षेपक होताहै. उसको मासगणोत्पन्न रविमें मिलावे तब अभीष्ट मासकी पूर्णिमाके अन्तका रवि होताहै ॥ ४ ॥

व्यगु, वृत्त और वारादि इनके ध्रुवयुक्त क्षेपक करने हों तो उनके ध्रुवाङ्कोंको चक्रसे गुणाकरके जो राश्यादि गुणनफल होय वह उसके क्षेपकाङ्कमें मिलावै, तब उनका अनुक्रमसे ध्रुवयुक्त क्षेपक होताहै, उसको क्रमसे मासगणोत्पन्न व्यगु, वृत्त और वारादिमें युक्तकरदेय तब अभीष्टमासकी पौर्णमासीके अन्तका होताहै ॥

उदाहरण.

सम्वत् १६६९ शकाः १५३४ कात्तिक शुक्ल पूर्णिमा १५ गुरौघटी ३२ । ३३ भरणीनक्षत्रे, घटी २३ । १४ वज्रयोगे घटी ४४ । ४४ इसदिन पञ्चाङ्गमें चन्द्रग्रहण लिखाहै, इसकारण पर्वकाल साधनेके अर्थ गणित करतेहैं–

शक १५३४ में १४४२ को घटाया तब शेषरहे ९२ वर्ष इसमें ११ का भागदिया तब लब्धि हुआ चक्र ८ हुआ, और शेषरहे ४ इनको १२ से गुणाकरा तब ४८ हुए, इसमें गतमास ७ और युक्तकरे तब ५५ मध्यम मास हुआ, इसमें द्विगुणित चक्र १६ और १० को युक्तकरा तब ८१ हुए इसमें ३३ का भागदिया तब २ लब्धिहुए इसमें मध्यम मासगण ५५ को युक्तकरा, तब ५७ यह मासगण हुआ ॥

अब रविके ध्रुवाङ्क ० रा. १ अं. ४० क. ० वि. को चक्र ८ से गुणा करा तब ० रा. १३ अं. २० क. ० वि. यह गुणनफल हुआ, इसको रविके क्षेपकाङ्क ० रा. ४ अं. २१ क. ० वि. में घटाया तब शेषरहे ११ रा. २१ अं. १ क. ० वि. यह रविका ध्रुवोनक्षेपक हुआ ॥

व्यगुके ध्रुवाङ्क ७ रा. १ अं. १२ क. ० वि. को चक्र ८ से गुणाकरा तब ८ रा. ९ अं. ३६ क. ० वि. हुआ, इस गुणनफलको व्यगुके क्षेपकाङ्कों ११ रा. ७ अं. १८ क. ० वि. में युक्तकरा तब ७ रा. १६ अं. ५४ क. ० वि. यह व्यगुका ध्रुवयुक्तक्षेपक हुआ ॥

वृत्तके ध्रुवाङ्क ९ रा. १ अं. ६ क. ० वि. को चक्र ८ से गुणाकरा तब ० रा. ८ अ. ४८ क० वि० हुआ, इस गुणनफलको वृत्तके क्षेपकाङ्क ० रा० १४ अं० ५१ क० ० वि० में युक्त करा तब ० रा० २३ अं० ३९ क० ० वि० यह वृत्तका ध्रुव युक्त क्षेपक हुआ ॥

वारादिके ध्रुवाङ्क ५ वार ९ घटी ३६ पलको चक्र ८ से गुणा करा तब ६ वार १६ घटी ४८ पल हुआ, इस गुणनफलको वारादिके क्षेपकाङ्क २ वार ४८ घटी ४५ पलमें युक्त करा तब २ वार ५ घटी ३३ पल यह वारादिका ध्रुवयुक्त क्षेपक हुआ ॥

अब मध्यम रवि साधनेकी रीति लिखते हैं-

मासौघतो द्विगुणितान्नगषाड्गिराप्तराश्यादिना रहितमासगणो रविः स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अन्वयः-द्विगुणितात्, मासौघतः, नगषाड्गिः, आप्तराश्यादिना, रहितमासगणः, रविः, स्यात् ॥ ऽऽ ॥

अर्थः-मासगणको दोसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें ६७ सड़सठका भागदेय तब जो राश्यादि लब्धि होय उसको मासगणमें घटावै तब मासगणोत्पन्न रवि होताहै, उसमें रविका ध्रुवोनक्षेपक युक्त करदेय तब मध्यम रवि होताहै ॥ ऽऽ ॥

उदाहरण.

मासगण ५७ को २ से गुणा करा तब ११४ हुए इसमें ६७ का भागदिया तब राश्यादि लब्धि हुई १ रा० २१ अं० २ क० ४१ वि० इस लब्धिको मासगण ५७ राशिमें घटाया तब ७ रा० ८ अंश ५७ क० १९ विकला यह मासगणोत्पन्न रवि हुआ, इसमें रविका ध्रुवोनक्षेपक ११ रा० २१ अं० ३ क०००वि० युक्त करा तब ६ रा० २९ अं० ५८ क० १९ वि० यह मध्यमरवि हुआ ॥

अब व्यगुसाधनकी रीति लिखते हैं-

मासा गृहाणि विनिजत्रिलवाश्च तेंशा मासाङ्कभितुल्यकलिकाः स्युरयं विपातः ॥ ५ ॥

अन्वयः-मासाः, गृहाणि, विनिजत्रिलवाः, ते, अंशाः, च, मासाङ्कमितुल्यकलिकाः, स्युः, अयम्, विपातः, (स्यात्) ॥ ५ ॥

अर्थः-जो मासगण है वही राशि हैं, और मासगणमें तीनका भागदेकर जो लब्धिहो यह अंशादि होते हैं उसको मासगणमें घटावे तब जो शेषरहे यह अंश होतेहैं । तथा मासगणमें ९का भागदेकर जो लब्धिहो यह कला होती हैं, इन सबको इकट्ठा करके मासगणोत्पन्न राश्यादि व्यगु होताहै, उसमें व्यगुका ध्रुवयुक्त क्षेपक युक्त करदेय तब व्यगु होताहै ॥ ५ ॥

उदाहरण.

मासगण जो ५७ यही हुई राशि, और मासगण ५७ में दिया तीनका भाग

तब लब्धि हुई १९ इसको मासगण ५७में घटाया तब ३८ यह अंश हुए, और मासगण ५७में दिया ४का भाग तब लब्धि हुई १४ क० १५ वि० इसप्रकार १० राशि ८ अंश १४ कला १५ विकला यह मासगणोत्पन्न व्यगु हुआ, इसमें व्यगुका ध्रुवयुक्त क्षेपक ७ रा० १६ अंश ५४ क० ० वि०को युक्त करा तब ५ राशि २५ अंश ८ कला १५ विकला यह राश्यादि व्यगु हुआ ॥

अब वृत्त साधनेकी रीति लिखतेहैं-

स्वाद्र्यंशकेन रहिता मनुतष्टमासा वृत्तं गणाभ्रकुलवाब्यलवं गृहादि ॥ ८८ ॥

अन्वयः-मनुतष्टमासाः, स्वाद्र्यंशकेन, रहिताः, गणाभ्रकुलवाब्यलवम्, गृहादि, वृत्तम्, (स्यात्) ॥ ८८ ॥

अर्थः-मासगणमें चौदहका भागदेय तब जो लब्धि होय उससे जो शेष रहै उसमें सातका भागदेय तब राश्यादि लब्धि मिलै उसको राश्यात्मक शेष समझै, और पहिली लब्धिमें घटादेय तब जो शेषरहै, उसमें मासगणमें दशका भागदेकर जो अंशादि लब्धि होय सो युक्त करदेय तब मासगणोत्पन्न वृत्त होताहै, उसमें वृत्तका ध्रुवयुक्त क्षेपक मिलादेय तब जो राश्यादि अङ्कयोग हो वह वृत्त होताहै ॥ ८८ ॥

उदाहरण.

मासगण ५७में १४का भागदिया तब लब्धि हुई ४ शेषरहे १ इसके अंश करके ३०अंशमें ७का भागदिया तब लब्धि हुई ४अंश, शेषरहा २इसकी कला करके १२० इसमें ७का भागदिया तब लब्धि हुई १७ कला, और शेषरहा १ इसकी विकला करके ६० इसमें ७का भागदिया तब लब्धि हुई ८ विकला इसप्रकार ४ अंश १७ कला ८ विकला इसको शेष १ में घटाया तब शेषरहा ० रा० २५ अं० ४२ क० ५२ वि० इसमें, मासगण ५७में १०का भाग देनेसे प्राप्त हुई लब्धि ५ अंश ४२ क० ० वि०को युक्त करा तब १ रा० १ अंश २४ कला ५२ विकला यह मासगणोत्पन्न वृत्त हुआ, इसमें वृत्तका ध्रुवयुक्त क्षेपक ०रा० २३ अ० ३९ क० ० वि०को युक्तकरा तब १रा० २५ अ० ३ क० ५२ वि० यह वृत्त हुआ ॥

अब वारादिसाधनकी रीति लिखते हैं-

स्वार्धान्विता दिनमुखं मनुतष्टमासा मासोघतो दशगुणाद्रगुणातियुक्तम् ॥ ६ ॥

अन्वयः-मनुतष्टमासाः, स्वाद्व्यान्विताः, (सन्तः), दशगुणाः, मासौघतः, भगुणाप्तियुक्तम्, दिनमुखम्, (स्यात्) ॥ ६ ॥

अर्थः-मासगणमें चौदहका भागदेय तब.जो शेषरहै उसको तीनसे गुणा करनेसे जो गुणनफल होय उसमें दोका भागदेय तब जो लब्धिहोय, और मासगणको दशसे गुणाकरके तीनसौ सत्ताईसका भागदेनेसे जो लब्धिहोय इन दोनोंको योग करलेय तब मासगणोत्पन्न वारादि होताहै, इसमें वारादि ध्रुवयुक्त क्षेपक मिलादेय तौ वारादि होताहै ॥ ६ ॥

उदाहरण.

मासगण ५७ में १४का भागदिया तब लब्धि हुए ४ और शेष बचा १ इस शेष १को ३से गुणा करा तब तीन हुए इसमें २का भागदिया तब लब्धि हुई १वार ३० घटी ० प० और मासगण ५७ को १०से गुणा करा तब ५७० हुए इसमें ३२७का भागदिया तब लब्धि हुई १वार ४४ घटी ३५ पल इसमें ऊपरकी लब्धि १ वार ३०घटी ० प०को युक्तकरा तब ३वार १४घटी ३५ पल यह मासगणोत्पन्न वारादि हुआ, इसमें वारादिके ध्रुवयुक्त क्षेपक २ वार ५ घ. ३३ पलको युक्तकरा तब ५ वार २० घटी ८ पल यह वारादि हुआ ॥

अब पक्षचालन लिखतेहैं-

रवौ पाक्षिकं चालनं खेन्द्रदेवा विपाते नभोबाणचन्द्रानखाश्च। पडर्का युगाक्षा गृहाद्यं च वृत्ते दिनाद्ये नभोक्षाब्धयो बाणबाणाः ॥ ७ ॥

अन्वयः-खेन्द्रदेवाः, रवौ, नभः, बाणचन्द्राः, नखाः, च, विपाते, षट्, अर्काः, युगाक्षाः, वृत्ते, गृहाद्यम्, पाक्षिकम्, चालनम्, (स्यात्) नभः, अक्षाब्धयः, बाणबाणाः, दिनाद्ये, (चालनम्, भवति) ॥७॥

पाक्षिकचालन.				
नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	०	०	६	०
अंश	१५	१५	१२	० वार
कला	३३	२०	५४	४५ घ.
विकला	०॰	०	०	५५ प.

अर्थः-खकहिये शून्य-इन्द्र कहिये चौदह-देव कहिये तेतीस यह रविमें, और नभ कहिये शून्य-बाणचन्द्र कहिये पन्द्रह-नख कहिये बीस यह व्यगुमें, और षट् कहिये छः-अर्क कहिये बारह-युगाक्ष कहिये चौअन यह वृत्तमें पाक्षिकचालन होताहै, और नभ कहिये शून्य-अक्षाब्धि कहिये पैंतालीस-बाणबाण कहिये पचपन यह वारादिमें पाक्षिक चालन होताहै ॥ ७ ॥

अथ षाण्मासिक चालन लिखतेहैं-

शरा वेदपक्षा भुजङ्गाग्नयोर्के व्यगौ षट् कृताः कुश्च षाण्मासिकं स्यात्। शराब्धयस्त्रीषवो भादिवृत्ते दिनाद्ये तिथेर्द्वौ भवा भूर्दिनाद्यम्॥ ८॥

अन्वयः-शराः, वेदपक्षाः, भुजङ्गाग्नयः, अर्के, षट्, कृताः, कुः, च, व्यगौ, शराः, वार्द्धयः, त्रीषवः, वृत्ते, भादि, षाण्मासिकम्, (चालनम्), स्यात्; द्वौ, भवाः, भूः, तिथेः, दिनाद्ये, दिनाद्यम्, (स्यात्)॥८॥

षाण्मासिकचालन.				
नाम	रवि	व्यगु	वृत्त	वारादि
राशि	५	६	५	०
अंश	२४	४	४	२ वार
कला	३८	१	५३	११ घटी
विकला	०	०	०	१५

अर्थः-शर कहिये पांच-वेदपक्ष कहिये चौवीस-भुजङ्गाग्नि कहिये अड्तीस यह रविमें, और षट् कहिये छः-कृत कहिये चार-कुकहिये एक यह व्यगुमें, और शर कहिये पाँच-वार्द्धि कहिये चार-तथा त्रीषु कहिये तिरेपन यह वृत्तमें राश्यादि षाण्मासिक चालन होताहै, और द्वौ कहिये दो-भव कहिये ग्यारह-भूकहिये एक यह तिथिके वारादिका वारादिचालन होताहै॥ ९॥

यदि पाक्षिक कहिये १५ दिनका चालन देना होय तौ उसमें इतना ध्यान रखना चाहिये कि रवि, व्यगु, वृत्त और वारादि यह सब अभीष्ट मासके दर्शान्तके करने होंय तौ इन सबमें पाक्षिक चालन युक्तकरदेय. और यह सब अभीष्ट माससे पहिले दर्शान्तके करने होंय तौ इन सबमें पाक्षिक चालन घटादेय तब षाण्मासिक चालनका यह उपयोग होताहै॥

अथ तिथ्यन्तमें वारादि, रवि और वृत्तके साधनेकी रीति लिखतेहैं-

अभिमततिथिसिद्ध्यै प्राक्परे यास्तु तिथ्यः स्वयुगरसलवोनाश्चालनं स्याद्दिनाद्ये। स्वयुगगुणलवोनाः स्याद्दिनाद्ये दिनेशे स्वगुणनवलवोना विश्वनिघ्नाश्च वृत्ते॥ ९॥

अन्वयः-याः, प्राक्, परे, तिथ्यः, (स्युः), (ताः), अभिमत-

तिथिसिद्ध्यै, स्वयुगरसलवोनाः, दिनाद्ये, चालनम्, स्यात् । स्वयुगगुणलवोनाः, (ताः), दिनेशे, लवाद्यम्, (चालनम्,स्यात्) । स्वगुणनवलवोनाः, विश्वनिघ्नाः, च, (ताः), वृत्ते, (चालनम्)स्यात् ॥९॥

अर्थः-इष्टतिथि और पौर्णिमा इनके मध्यकी जो अन्तरित तिथि हो उसमें चौसठका भागदेकर जो लब्धि हो उसको अन्तरित तिथिमें घटादेय तब जो शेषरहै उसको वारादिशेष पौर्णिमाके वारादिमें धन अथवा ऋण करै, तब इष्टतिथिका वारादि होताहै । और उस अन्तरित तिथिमें चौंतीसका भागदेकर जो लब्धि हो उसको अन्तरिततिथिमें घटादेय तब जो शेषरहै उसको अंशादि शेष मध्यमरविमें धन अथवा ऋणकरै, तब इष्टतिथिका रवि होताहै । और अन्तरित तिथिको तेरहसे गुणाकरै तब जो गुणनफल हो उसमें तिरानवेका भाग देय तब जो लब्धि हो उसको ऊपरोक्त गुणनफलमें घटादेय तब जो शेषरहै उसको वृत्तमें धन अथवा ऋणकरै तब इष्टतिथिका वृत्त होताहै । यदि लाईहुई इष्टतिथि शुक्लपक्षकी होय तौ ऋणकरै और कृष्णपक्षकी होय तौ धनकरै ॥९॥

अब तिथिसाधनके निमित्त वृत्तफल और रविमन्दकेन्द्रफल साधने की रीति लिखते हैं-

अत्यष्ट्यष्टिनृपार्कगोशरदशः खण्डानि तैर्वृत्तदोर्भागत्र्यंन्दुलवप्रमैक्यमगतघ्नोच्छिष्टविश्वांशयुक् । प्राग्वत्स्यात्स्वमृणं फलं त्विति रवेः केन्द्राद्यदन्यच्च तद्व्याप्तं स्वाङ्गलवोनितं कुरु तयोः कार्य्या पुनः संस्कृतिः ॥ १० ॥

अन्वयः-अत्यष्ट्यष्टिनृपार्कगोशरदशः, खण्डानि, स्युः; तैः, वृत्तदोर्भागत्र्यंन्दुलवप्रमैक्यम्, (कृत्वा), अगतघ्नोच्छिष्टविश्वांशयुक्, प्राग्वत्, स्वम्, ऋणम्, फलम्, स्यात् । इति, तु, अन्यत्, च, केन्द्रात्, रवेः, यत्, फलम्, (तत्), (साध्यम्) । तद्व्याप्तम्, स्वाङ्गलवोनितम्, कुरु । पुनः, तयोः, संस्कृतिः, कार्य्या ॥ १० ॥

अर्थः-अत्यष्टि कहिये सतरह, अष्टि कहिये सोलह, नृप कहिये चौदह, अर्क कहिये बारह, शर कहिये पाँच और दस्र कहिये २ यह खण्ड हैं । वृत्तके भुजांशोंमें तेरहका भागदेकर

१	२	३	४	५	६	७
१७	१६	१४	१२	९	५	२

जो लब्धि होय तत्परिमित अङ्कके नीचे लिखेहुए अङ्कोंके योगको लेय और शेषको अलग लिखे फिर लब्धिमें एक और मिलाकर जो अङ्क होय तत्परिमित अङ्कके नीचेके अङ्कको लेकर उससे अंशादि शेषको गुणाकरे तब जो गुणन फल होय उसमें तेरहका भागदेय तब जो लब्धिहोय उसको पूर्वोक्त योगमें मिलादेय, तब अंशादि वृत्तफल होताहै, वह वृत्त मेषादि छः राशिके भीतर होय तो धन और तुलआदि छः राशिके भीतर होय तो ऋण जानै, तिसी-प्रकार रविमन्दकेन्द्रके भुजांशोंसे वृत्तफलके अनुसार फल लाकर उसको पाँचसे गुणा करे तब जो गुणनफल होय उसमें बारहका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अंशादि रविका मन्दफल होताहै, वह रविमन्दकेन्द्र मेषादि छः राशिमें होय तो धन और तुलादि छः राशिमें होय तो ऋण होताहै, तदनन्तर वृत्तफल और रविमन्दफल इन दोनोंका संस्कार करे ॥ १० ॥

उदाहरण.

वृत्त १ रा० २५ अं० ३ क० ५२ वि० इसके भुजांश ५५ अं० ३ क० ५२ वि० हुए, इसमें १३का भागदिया तब लब्धि हुई ४ और शेषबचे ३अं० ३क० ५२वि० लब्धि जो चार ४ तत्परिमित अङ्कके नीचेके फलाङ्क १२तकके अङ्कों १७। १६ १४। १२। के योग ५९को ग्रहणकरा और लब्धि जो ४ उसमें १ और मिलाकर ५के नीचेके फलाङ्क ९से शेष ३अं० ३ क० ५२ वि०को गुणा करा तब २७ अंश ३४ क० ४८ वि० हुए, इसमें १३का भागदिया तब लब्धि हुई २ अं० ७ क० १७ वि० इसमें चार फलाङ्कोंके योग ५९को युक्त करा तब ६१ अं० ७क० १७ वि० यह वृत्तफल, वृत्तके मेषादि होनेके कारण धन है ॥

रविमन्दोच्च २ रा० १८अं० ० क० ० वि०में मध्यमरवि ६ रा० २९ अं० ५८ क० १९ वि०को घटाया तब शेषरहा ७ रा० १८अं० १ क० ४१ वि० यह रविमन्दकेन्द्र हुआ, इसके भुजांश ४८ अं० १ क० ४१ वि० हुए, इसमें १३का भागदिया तब लब्धि हुई ३ और शेषरहा ९.अं० १ क० ४१ वि०। लब्धिपरिमित फलाङ्कों १७। १६। १४। का योग हुआ ४७। और लब्धिमें १ मिलाकर ४के नीचेके फलाङ्क १२से बाकी ९ अं० १ क० ४१ वि०को गुणाकरा तब १०८ अं० २० क० १२ वि० हुए, इसमें १३का भागदिया तब लब्धि हुई ८ अं. २० क. ० वि. इसमें तीन फलाङ्कोंका योग ४७ मिलाया तब ५५ अं. २० क. ० वि. हुए, इसको ५से गुणा करा तब २७६ अं. ४० क. ० वि. हुए, इसमें १२का भागदिया तब लब्धि हुई २३ अं. ३ क. २० वि. यह रविमन्दफल, रविमन्दकेन्द्र तुलादि होनेके कारण ऋण है ॥

वृत्तफल धन ६१ अं. ७ क. १७वि०में रविमन्दफल ऋण २३अं. ३ क. २०वि. को घटाया तब शेषरहा ३८ अं. ३ क. ५७ वि. यह फलद्वयसंस्कार हुआ ॥

अब हारसाधनकी रीति लिखते हैं-

वृत्तोघ्यदलाद्रसाप्तियुक्ता रहिताः कर्किमृगादिके च वृत्ते । सगुणांशखवह्नयो हरः स्यादथ सूर्य्याच्चरमुक्तपूर्ववत्स्यात् ॥ ११ ॥

अन्वयः-सगुणांशखवह्नयः, कर्किमृगादिके, वृत्ते, वृत्तोघ्यदलात्, रसाप्तियुक्ताः, रहिताः, च, हरः, स्यात्, अथ, सूर्य्यात्, उक्तपूर्ववत्, चरम्, स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थः-प्रथम जो एकाधिक वृत्तफलाङ्क ग्रहण कराहै उसमें छःका भाग देनेसे जो अंशादि लब्धि होय वह, यदि वृत्त कर्कादि कहिये तीन राशिसे लेकर नौ राशिपर्य्यन्त होय तौ ३० अं० २० क०में युक्त करदेय, और यदि वह वृत्त मकरादि कहिये नौ राशिसे तीन राशिपर्य्यन्त होय तौ वह लब्धि ३० अं० २० क०में घटादेय तब हार होताहै । और सायन मध्यम रविसे पूर्वोक्तरीतिके अनुसार चर साधै ॥ ११ ॥

उदाहरण.

एकाधिक वृत्तफलाङ्क ९में ६ का भागदिया तब अंशादि लब्धि हुई १ अं. ३० क. इस लब्धिको वृत्त मकरादि होनेके कारण ३० अं. २० क.में घटाया तब शेपरहा २८ अं. ५० क. यह हार हुआ ॥

मध्यम रवि ६ रा. २९ अं. ५८क. १९वि. इसमें अयनांश १८ अं. १० क०को युक्त करा तब ७ रा. १८ अं० ८ क० १९ वि. यह सायन रवि हुआ, इससे लायाहुआ चर ८४ सायन रवि तुलादि होनेसे धन है ॥

अब स्पष्टतिथिसाधनकी रीति लिखतेहैं-

नाड्यः स्युः फलसंस्कृतिर्दशहता हारोद्धृताथो चरं सायंलक्षणकं त्वथो विघटिकाः पश्चाद्दृणं प्राग्धनम् । स्वांघ्र्यूनान्तरयोजनान्यथ तिथिः स्पष्टा त्रिभिः संस्कृता तत्संस्कारघटीसमाश्च कलिका देया व्यगौ चोष्णगौ ॥ १२ ॥

अन्वयः-फलसंस्कृतिः, दशहता, (ततः), हारोद्धृता, (सती), नाड्यः, स्युः । अथो, चरम्, सायंलक्षणकम्, (स्यात्); अथो, तु,

स्वांघ्रिनान्तरयोजनानि, विघटिकाः, पश्चात्, ऋणम्, प्राक्, धनम्, (स्यात्); अथ, च, त्रिभिः, संस्कृता, तिथिः, स्पष्टा, (स्यात्), तत्संस्कारघटीसमाः, कलिकाः, व्यगौ, उष्णगौ, च, देयाः ॥ १२ ॥

अर्थः-फलद्वयसंस्कृतिको दशसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें हारका भागदेय तब जो कलादि लब्धि होय वह फलद्वयसंस्कृतकी समान धन ऋण होतीहै, यह प्रथमफल कहाताहै। पूर्वोक्तरीतिके अनुसार लायहुए चरमें साठका भागदेय तब जो लब्धि होय उसको कलादि जानै, इसको यदि चर ऋण होय तौ धन और चर धन होय तौ ऋण जानै,यह द्वितीयफल कहाताहै।-। अपने नगरसे दक्षिणोत्तर रेखा जितनी योजन होय उसको तीनसे गुणाकरके चारका भागदेय तब जो विकला आदि लब्धि होय उसको यदि अपने नगरसे दक्षिणोत्तररेखा पश्चिम होय तौ ऋण और पूर्व होय तौ धन जानै यह तृतीयफल होताहै। फिर इन तीनोंफलोंको इकट्ठा करके जो धन अथवा ऋण होय उसको मध्यतिथिके वारादिकी घटिकाओंमें धन ऋण करै, तब स्पष्ट तिथिकी घटिका होतीहैं, तिन घटिकाओंकी तुल्य कलाओंको मध्यम रवि और व्यगुमें धन ऋण करै,तब मध्यम रवि और व्यगु स्पष्ट तिथ्यन्तके होतेहैं१२।

उदाहरण.

फलद्वयसंस्कृति धन ३८ अं. ३ क. ५७ वि. को १० से गुणाकरा तब ३८० अंश ३९ क. ३० वि. गुणनफल हुआ, इसमें हार २८ अंश ५० कलाका भागदिया तब कलादि लब्धिहुई १३ कला १२ विकला यह प्रथमफल फलद्वय संस्कृतिके धन होनेके कारणसे धनहै ॥

चरधन विकला ८४ में ६० का भागदिया तब कलादि लब्धिहुई १ कला २४ विकला, यह द्वितीयफल चरके धन होनेके कारणसे ऋणहै ॥

देशान्तरयोजन ६४ को ३से गुणाकरा तब १९२ हुए इसमें ४ का भागदिया तब लब्धिहुई ४८ विकला यह तृतीयफल अपना नगर दक्षिणोत्तर रेखासे पूर्व होनेके कारण धनहै ॥

अब प्रथमफल धन १३ कला १२ विकला और तृतीयफल धन ० क. ४८ वि. इन दोनोंका योग हुआ १४ कला ० विकला इसमें द्वितीयफल ऋण १ कला २४ विकलाको घटाया तब १२ कला ३६ विकला यह एकीकरण धनहै इस कारण तिथिके वारादि ५ वार २० घटी ८ पलमें युक्तकरा तब ५ वार ३२ घटी ४४ पल अर्थात् गुरुवारमें पौर्णिमा ३२ घटी ४४ पल है, एकीकरणकी समान कलाओंको अर्थात् १२ क. ३६ विकलाको मध्यम रवि ६ राशि २९ अंश ५८ कला १९ विकलामें युक्तकरा तब ७ रा. ० अंश १० कला ५५ विकला यह

स्पष्टतिथ्यन्तका मध्यम रवि हुआ, और एकीकरणकी घटिकाओंकी तुल्य कलाओंको अर्थात् १२ कला ३६ विकलाओंको व्यगु ५ राशि २५ अंश ८ कला १५ विकलामें युक्तकरा तब ५ राशि २५ अंश २० कला ५१ विकला यह स्पष्ट तिथ्यन्तका व्यगु हुआ॥

अब रवि और व्यगु इन दोनोंके स्पष्ट करनेकी रीति लिखतेहैं-

स्वस्वार्हल्लवमिनजं फलं युगघ्नं लिप्तास्ताः कुरु च तयोः स्फुटौ च तौ स्तः॥ ८८॥

अन्वयः-इनजम्, फलम्, स्वस्वार्हल्लवम्, युगघ्नम्, लिप्ताः,(स्युः), ताः, च, तयोः, कुरु; (तदा), च, तौ, स्फुटौ, स्तः॥ ८८॥

अर्थः-मन्दफलको चारसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें चौवीसका भागदेय, तब जो लब्धि होय उसे गुणनफलमें युक्तकरदेय, तब कलादिफल होताहै, उसको मन्दफलके अनुसार मध्यम रवि और व्यगुमें धन ऋणकरै, तब रवि और व्यगु स्पष्ट होतेहैं॥ ८८॥

उदाहरण.

रवि मन्दफल ऋण २३ अंश ३ कला २० विकला इसको ४ से गुणाकरा तब ९२। १३। २० हुए इसमें २४ का भागदिया तब लब्धिहुई ३। ५०। ३३ इसमें गुणनफल ९२। १३। २० को युक्तकरा तब ९६ कला ३ विकला हुई इसको मन्दफलके ऋण होनेके कारण ९६ कला ३ विकलाको मध्यम रवि ७ राशि ० अं. १० कला ५५ विकलामें ऋणकरा अर्थात् घटाया तब ६ रा. २८ अंश २४ कला ५२ विकला यह स्पष्ट रवि हुआ। और ९६ कला ३ विकला अर्थात् १ अंश ३६ कला ३ विकलाको व्यगु ५ राशि २५ अंश २० कला ५१ विकलामें ऋण करा तब ५ राशि २३ अंश ४४ कला ४८ विकला यह स्पष्ट व्यगु हुआ॥ ८८॥

अब चन्द्रबिम्ब साधनेकी रीति लिखतेहैं-

त्रिघ्न्यंशाढ्ययुतहरः कृशानुभक्तश्चन्द्रस्य प्रभवति बिम्बमङ्गुलाद्यम्॥ १३॥

अन्वयः-त्रिघ्न्यंशाढ्ययुतहरः, कृशानुभक्तः, चन्द्रस्य, अङ्गुलाद्यम्, बिम्बम्, प्रभवति॥ १३॥

१ "वेदघ्न तत्फलं सखिद्भागम्"-इत्यपि पाठः।

अर्थः-हारमें एक अंश चालीसकला मिलाकर तीनका भागदेय तब जो लब्धिहोय वह अङ्गुलादि चन्द्रबिम्ब होताहै ॥ १३ ॥

उदाहरण.

हार २८ अंश ५० कलामें १ अंश ४० कलाको युक्तकरा तब ३० अंश ३० कला हुआ, इसमें ३ का भागदिया तब लब्धिहुई १० अंगुल १० प्र. अङ्गुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ ॥

अब सूर्य्यबिम्ब और भूभाबिम्ब साधनेकी रीति लिखतेहैं-

खाभ्यासार्कागतदलयुतोनाः स्वकेन्द्रे कुलीरनक्राद्ये स्याद्व्यरिलवभवा अङ्गुलाद्यर्कबिम्बम् । हारो वीषुः स्वतिथिलवयुक्स्यात्कुभास्यां धनर्णं खाक्षासार्कागतदलमथो नक्रकर्कादिकेन्द्रे ॥ १४ ॥

अन्वयः-स्वकेन्द्रे, कुलीरनक्राद्ये, (सति), व्यरिलवभवाः, खाभ्यासार्कागतदलयुतोनाः, (सन्तः), अङ्गुलादि, अर्कबिम्बम्, स्यात् । अथो, वीषुः, हारः, स्वतिथिलवयुक्, कुभा, स्यात्; । अस्याम्, खाक्षासार्कागतदलम्, नक्रकर्कादिकेन्द्रे, धनर्णम्, (कार्य्यम्, तत्, भूभाबिम्बम्, भवति) ॥ १४ ॥

अर्थः-रविका मन्दफल साधनेके समयमें जो एकाधिक मन्दफलाङ्क आया था उसमें चालीसका भागदेय तब जो लब्धिहोय उसको अङ्गुलादि जाने और इसको रविमन्दकेन्द्र कर्कादि होय तौ दशअङ्गुल पचास प्रतिअङ्गुलमें मिलादेय, और यदि रविमन्दकेन्द्र मकरादि होय तौ दश अङ्गुल पचास प्रतिअङ्गुलमें घटादेय, तब अङ्गुलादि सूर्य्यबिम्ब होताहै । हारमें पाँच अंश घटाकर जो शेषरहै उसमें उसका पन्द्रहवाँ भाग युक्तकरे, फिर उसमें यदि रवि मन्दफलांकका पचासवाँ भाग, रविमन्दकेन्द्र कर्कादि होय तौ घटादेय और रविमन्दकेन्द्र मकरादि होय तौ युक्त करदेय, तब अङ्गुलादि भूभाबिम्ब होताहै ॥ १४ ॥

उदाहरण.

एकाधिक मन्दफलाङ्क १२ में ४० का भागदेनाहै इसकारण १२ को ६० से गुणाकरा तब ७२० हुए इसमें ४० का भागदिया तब लब्धिहुई ० अङ्गुल १८ प्र.अङ्गुल इसको रविमन्दकेन्द्रके कर्कादि होनेके कारण धन होनेसे १० अ-

ङ्गुल ५० प्र.अङ्गुलमें युक्तकरा तब ११ अङ्गुल ८ प्रतिअङ्गुल यह सूर्य्यबिम्ब हुआ, इसीप्रकार हार २८ अंश ५० कलामें ५ अंश घटाए तब २३ अंश ५ कला शेषरहा, इसमें २३ अंश ५० कलाका पन्द्रहवाँ भाग १ अंश ३५ कला युक्तकरा तब २५ अङ्गुल २५ प्रतिअङ्गुल हुए, । अब एकाधिक रविमन्दफल १२में५०का भागदिया तब ०अङ्गुल १४प्र०अं० लब्धिहुई इसको रविमन्दकेन्द्र कर्कादि है इसकारण ऋण होनेसे २५ अङ्गुल २५ प्रतिअङ्गुलमें घटाया तब शेषरहा २५ अङ्गुल ११ प्र.अं. यह भूभाबिम्ब हुआ ॥

अब ग्रहणसम्भव कहतेहैं–

ज्ञात्वैवं तिथिपूर्वकं ग्रहणजं शेषं भवेत्पूर्ववत्षण्मासैरुत पक्षवर्जितयुतैः पक्षेऽथवा लोकयेत् । अर्केन्दुग्रहणं व्यगोर्भुजलवैस्तिथ्यल्पकैरुष्णगोर्याम्यैर्वस्वधरैर्द्युरात्रिगतिथौ चाहर्निशामाश्रिते ॥ १५ ॥

अन्वयः–एवम्, तिथिपूर्वकम्, ज्ञात्वा, शेषम्, ग्रहणजम्, पूर्ववत्, भवेत् । अर्केन्दुग्रहणम्, षण्मासैः, उत, पक्षवर्जितयुतैः, अथवा, पक्षे, आलोकयेत् । व्यगोः, भुजलवैः, तिथ्यल्पकैः, (सद्भिः , अर्केन्दुग्रहणम्, स्यात्) । उष्णगोः, याम्यैः, (व्यगुभुजांशैः), वस्वधरैः, (सद्भिः), (.अर्कग्रहणम्, स्यात्) । द्युरात्रिगतिथौ, (अर्थात् दिनमानात्तिथौ, न्यूने, सति, सूर्य्यग्रहणम्, स्यात्, अधिके, सति चन्द्रग्रहणम्, स्यात्) । अहर्निशाम्, आश्रिते, (सति), च, (ग्रहणम्, ग्रस्तोदिते, ग्रस्तास्ते, वा, स्यात्) ॥ १५ ॥

अर्थः–सूर्य्य और चन्द्रमा इन दोनोंका ग्रहण होनेसे ५–½ साढ़े पाँच महीनेके अनन्तर अथवा ६ छः महीनेके अनन्तर, अथवा ६–½ साढ़े छः महीनेके अनन्तर, अथवा १५ पन्द्रह दिनके अनन्तर ग्रहणका सम्भवहै या नहीं यह देखै । व्यगर्कके भुजांश पन्द्रह अंशकी अपेक्षा कम हों तो सूर्य्य अथवा चन्द्रमाके ग्रहणका सम्भव होताहै । परन्तु व्यगर्कके दक्षिण गोलमें होय और उसके भुजांश चौदह अंशसे कम और आठ अंशसे अधिक हों तो सूर्य्यग्रहणका सम्भव नहीं होताहै, यदि व्यगर्कके भुजांश आठ अंशकी अपेक्षा कम हों तोही सूर्य्यग्रहणका सम्भव होताहै । ग्रहणका सम्भव होकरभी यदि अमावास्या दिनमें होय तो सूर्य्य ग्रहण दीखै, और यदि पौर्णिमा रात्रिमें होय तो

चन्द्रग्रहण दीखै, और किञ्चिन्मात्र रात्रिका स्पर्श करनेवाली अथवा किञ्चिन्मात्र दिनस्पर्शकरनेवाली तिथि होयतौ ग्रस्तास्त अथवा ग्रस्तोदित ग्रहण होताहै ॥ १५ ॥

अब चन्द्रग्रास साधनेकी रीति लिखतेहैं-

सत्र्यंशगुणोनितोहरोऽयं वेदघ्नोङ्कहृतो व्यगोर्भुजांशैः। हीनो भवताडितोऽद्रिहृतस्याच्छन्नं शीतरुचोङ्गुलादिकं वा ॥ १६ ॥

अन्वयः-सत्र्यंशगुणोनितः, अयम्, हरः, वेदघ्नः, अङ्कहृतः, व्यगोः, भुजांशैः, हीनः, भवताडितः, अद्रिहृत्, शीतरुचः, अङ्गुलादिकम्, छन्नम्, स्यात् ॥ १६ ॥

अर्थः-हारमें तीन अंश बीस कला घटाकर जो शेषरहै उसको चारसे गुणा करकै जो गुणनफल होय उसमें नौका भागदेय तब जो लब्धि होय उसमें व्यगुके भुजांश घटावै तब जो शेष रहै उसको ग्यारहसे गुणाकर तब जो गुणनफल होय उसमें सातका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि चन्द्रग्रास होताहै[1] ॥ १६ ॥

उदाहरण.

हार २८ अं ५० कलामें ३ अंश २० कला घटाए तब शेषरहा २५ अंश ३० कला इसको चार ४ से गुणाकरा तब १०२ अंश ० कला यह गुणनफल हुआ, इसमें ९ का भाग दिया तब ११ अंश २० कला यह लब्धि हुई इसमें व्यगुके भुजांश ६ अंश १५ कला १२ विकलाको घटाया तब शेषरहे ५ अंश ४ कला ४८ विकला, इसको ग्यारह ११ से गुणाकरा तब ५५ अंश ५२ कला ४८ विकला, यह गुणनफल हुआ इसमें ७ का भागदिया तब लब्धि हुई ७ अङ्गुल ५८ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रग्रास हुआ ॥

अब सूर्यग्रास साधनेकी रीति लिखतेहैं-

अमान्तनतनाडिकाग्निरहिताद्युतात्प्राक्परे गृहादिकरवेर्नताशकरसांशसंस्कारिताः। व्यगोर्भुजलवाः स्फुटाः स्युरथ सप्त शुद्धाश्च ते निजार्द्धसहिता रवेः स्थगितमङ्गुलाद्यं स्फुटम् ॥ १७ ॥

[1] यदि व्यगुके भुजांश हारसे अधिक हो तो चन्द्रग्रहण नहीं होताहै ॥

अन्वयः–अमान्तनतनाडिकाब्धिरहितात्, प्राक्, गृहादिकरवेः, परे, युतात्, नतांशकरसांशसंस्कारिताः, व्यगोः, भुजलवाः, स्फुटाः, स्युः। अथ, ते, सप्तशुद्धाः, निजार्द्धसहिताः, रवेः, स्फुटम्, अङ्गुलाद्यम्, स्थगितम्, (स्यात्) ॥ १७ ॥

अर्थः-पर्वान्तकालमें जो नत घटिका हों उनमें चारका भागदेय तब जो राश्यादि लब्ध होय उसको यदि नत पूर्व होय तौ स्पष्ट सूर्य्यमें घटादेय, और यदि नत पश्चिम होय तौ स्पष्ट सूर्य्यमें युक्त करदेय, तदनन्तर उससे क्रान्ति साधकर उस क्रान्तिका और अक्षांशका संस्कार करके नतांश साधै, और तिन नतांशोंमें छःका भाग देकर जो लब्धि होय उसको नतांशकी दिशाको जानै, फिर स्पष्ट व्यगुकी भुजकरके उनके अंश करै वह, व्यगु जिस गोलमें होय उस गोलकी दिशाके होतेहैं, तदनन्तर भागाकारका और व्यगुभुजांशोंका संस्कार करै, तब स्पष्ट नतांश होतेहैं उनको सात अंशोंमें घटाकर जो शेषरहै उसको तीनसे गुणा करके दोका भागदेय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह सूर्य्यका अङ्गुलादि ग्रास होताहै[2] ॥ १७ ॥

उदाहरण.

आगे सूर्य्यग्रहणका पर्व लानेके समय दिखावेंगे ॥

अब ग्रहणके स्वामी जाननेकी रीति लिखतेहैं-

व्यगुमध्यपर्य्ययगणो द्विगुणो वणिगादिगे व्यगुगृहे कुयुतः । स्मृतचक्रसंज्ञकयुतो विधितो गतपर्वपो मुनिहृतोर्वरितः ॥ १८ ॥

अन्वयः–व्यगुमध्यपर्ययगणः, द्विगुणः, (कार्य्यः), व्यगुगृहे, वणिगादिगे, (सति), कुयुतः, (कार्य्यः), (ततः), स्मृतचक्रसंज्ञकयुतः, (ततः), मुनिहृतोर्वरितः, (सन्), विधितः, गतपर्वपः (स्यात्) ॥ १८ ॥

---

१ अत्र संस्कारो नाम–एकदिशोर्योगो भिन्नदिशोरन्तरम् ॥

२ यदि स्पष्ट नतांश सात अंशसे अधिक होय तौ जानदेय कि सूर्यग्रहण नहीं होगा ।

अर्थः-मध्यम व्यगु लानेके समय जो भगण लाएथे उसको दोसे गुणाकरै तब जो गुणन फल होय, उसमें यदि व्यगु तुलादि होय तौ एक मिलादेय, और यदि व्यगु मेषादि होय तौ चक्रसंख्याको युक्त करदेय तब जो अङ्कहो उसमें सातका भाग देय, तव यदि शून्य शेष रहै तौ ब्रह्मा,एक शेष रहै तौ चन्द्रमा, दो शेष रहैं तौ इन्द्र, तीन शेष रहैं तौ कुबेर, चार शेष रहैं तौ वरुण, पाँच शेष रहैं तौ अग्नि, और छः शेष रहैं तौ यम ग्रहणका स्वामी होताहै।सोई बृहत्संहिताके विषै वराहमिहिरने कहाहै-

"षण्मासोत्तरवृद्ध्या पर्वेशाः सप्त देवताः क्रमशः।
ब्रह्मशशीन्द्रकुबेरा वरुणाग्नियमाश्च विज्ञेयाः ॥"

उत्तरोत्तर छः छः मासकी वृद्धि करके क्रमसे ब्रह्मा, चन्द्रमा, इन्द्र, कुबेर, वरुण, अग्नि और यम यह सात देवता ग्रहणके स्वामी हैं। ज्योतिषी लोग इन ग्रहणके स्वामियोंसे संसारका शुभाशुभ फल कहतेहैं ॥ १८ ॥

उदाहरण.

मासगणोत्पन्न व्यगु ५२ राशि ४ अंश १२ कला ४५ विकला, और चक्रसे गुणाकराहुआ ध्रुव ५६ राशि ९ अंश २६ कला ० विकला, तथा क्षेपक ११ राशि ७ अंश १८ कला ० विकला इन सबका योग करा तब ११९ राशि २१ अंश २ कला ४५ विकला हुआ, इसमें १२ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० यह भगण हुआ इसको २ से गुणाकरा तब २० व्यगु मेषादि है इस कारण द्विगुणित भगण २० में चक्र ८ को युक्त करा तब २८ हुए इसमें ७ का भाग दिया तब शून्य शेष रहा इस कारण ग्रहणका स्वामी ब्रह्मा हुआ ॥

अब स्पष्ट चन्द्र और चन्द्रस्पष्टगति लानेकी रीति लिखतेहैं-

तिथिरविहतिरंशास्तद्युतोर्कों विधुः स्यादथ जिन-
गुणहारोद्र्यङ्कयुक्तद्गतिः स्यात्। खचरशरकलाः
स्यात्सूर्य्यभुक्तिस्ततः स्युर्भयुतिजगतगम्या नाडि-
कास्तिथ्यपायात् ॥ १९ ॥

अन्वयः-तिथिरविहतिः, अंशाः, (स्युः); तद्युतः, अर्कः, विधुः,

१ यह "बृहत्संहिता" सरलभाषाटीकासहित, इस महलायन्त्रके समनन्तरही श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसमें छपेगी ॥

स्यात्; । अथ, जिनगुणहारः, द्व्यङ्कयुक्, तद्गतिः, स्यात्; । खनर शरकलाः, सूर्य्यभुक्तिः, स्यात्; । ततः, भयुतिजगतगम्याः, नाडिकाः तिथ्यपायात्, स्युः ॥ १९ ॥

अर्थः-तिथिको बारहसे गुणा करके जो गुणनफल होय वह अंश होते हैं उन अंशोंको स्पष्ट सूर्य्यमें मिलावे तब स्पष्ट चन्द्र होता है । तिसी प्रकार हारको चौवीससे गुणा करके जो गुणनफल होय उसको कलादि मानकर उसमें बासठ कला युक्त करै, तब चन्द्रस्पष्टगति होतीहै । और उनसठ कला सूर्य्यस्पष्टगति होतीहै । तदनन्तर स्पष्टसूर्य्य-स्पष्टचन्द्र-स्पष्टचन्द्रगति-और स्पष्टसूर्य्यगति इनसे नक्षत्र और योग इनकी गत गम्य घड़ी लावे. वह स्पष्ट तिथिके अन्तसे होती हैं ॥ १९ ॥

उदाहरण.

तिथि १५ को १२ से गुणाकरा तब १८० हुए, इन अंशोंको स्पष्ट सूर्य्य ६ राशि २८ अंश ३४ कला ५२ विकलामें युक्त करा तब ० राशि २८ अंश ३४ कला ५२ विकला यह स्पष्ट चन्द्र हुआ । फिर हार २८ अंश ५० कलाको २४से गुणाकरा तब ६९२ कला ० विकला हुआ, इसमें ६२ कला युक्तकरी तब ७५४ कला ० विकला यह चन्द्रमाकी स्पष्ट गति हुई, इससे लाईहुई कृत्तिकानक्षत्रकी गत घटिका हुई४६ घटिका २८पल और गम्य घटिका हुई१२ घटिका ३२पल॥

सूर्य्यग्रहणका उदाहरण.

संवत् १६६९ शाके १५३४ वैशाखकृष्ण ३० अमावास्या बुधवार घट्यादि २६ घटी २८ पल, रोहिणी नक्षत्र घट्यादि ३४ घटी ५७ पल, धृतियोग घट्यादि ४९ घटी १९ पल, इसदिन पञ्चाङ्गमें ग्रहण लिखाहै, इस कारण मासगण पर्वकाल साधते हैं-

शाके १५३४ में १४४२ को घटाया तब शेष रहे ९२ इसमें ११ का भागदिया तब लब्धि हुई ८ यह चक्र हुआ, और शेषबचे ४ इसको १२ से गुणाकरा तब ४८ हुए इसमें गतमास १ को युक्तकरा तब ४९ यह मध्यम मासगण हुआ, इसमें द्विगुणित चक्र १६ को युक्तकरा तब ६५ हुए इसमें १० युक्तकरे तब ७५ हुए इसमें ३३ का भागदिया तब लब्ध हुई २ यह अधिक मास हुआ, इसमें मध्यम मासगण ४९ को युक्तकरा तब ५१ यह मासगण हुआ, इसको "मासौघतो द्विगुणितादित्यादि" रीतिके अनुसार २ से गुणाकरा तब १०२ हुए, इसमें ६७ का भागदिया तब राश्यादि लब्धि हुई १ राशि १५ अंश ४० कला १७ विकला इसको मासगणमें घटाया तब शेष रहा राश्यादि १ राशि १४ अंश १९ कला ४३ विकला इसमें चक्रसे गुणाकरे हुए ध्रुवक ० राशि

३ अंश २० कला० विकलाको घटाया तब शेष रहे १ राशि ० अंश ५९ कला ३ विकला इसमें क्षेपक ४ अंश २१ कलाको युक्तकरा तब १ राशि ५ अंश ० कला ४३ विकला यह पौर्णिमाके अन्तमें सूर्य हुआ, इसमें पक्षचालन ० राशि १४ अंश ३३ कला ० विकलाको युक्तकरा तब १ राशि १९ अंश १३ कला ४३ विकला यह अमावास्याके अन्तमें सूर्य्य हुआ, पूर्वोक्त रीतिके अनुसार पौर्णिमान्त व्यगु हुआ ११ राशि २१ अंश ६ कला ४५ विकला इसमें पाक्षिक चालन ० राशि १५ अंश २० कला० विकलाको युक्तकरा तब० राशि ६ अंश २६ कला ४५ विकला यह अमान्त व्यगु हुआ। अब वृत्त हुआ पूर्णिमान्तमें ८ राशि २० अंश १० कला ४३ विकला इसमें पाक्षिक चालन ६ राशि १२ अंश ५४ कला ० विकलाको युक्तकरा तब ३ राशि ३ अंश ४ कला ४३ विकला यह अमान्त वृत्त हुआ। अब पूर्वोक्त रीतिके अनुसार वारादि हुआ ३ वार ९ घटी ७ पल इसमें पाक्षिक चालन ० वार ४५ घटी ५५ पलको युक्तकरा तब ३ वार ५५ घटी २ पल यह अमान्त वारादि हुआ। अब स्पष्टीकरण लिखतेहैं–

वृत्तफलधन ७४ अंश २२ कला २१ विकला और मन्दफल धन १४ अंश ४१ कला४० विकला इन दोनोंका संस्कार (योग) करा तब ८९ अंश ४ कला १ विकला यह फलद्वयसंस्कार धन हुआ। अब रविमन्दोच्च २ राशि १८ अंश ० कला ० विकलामें मध्यमरवि १ राशि १९ अंश ५३ कला ४३ विकलाको घटाया तब ० राशि २८ अंश ६ कला १७ विकला यह रविकेन्द्र हुआ।

एकाधिक वृत्त फलाङ्क २। और हार ३० अंश ४० कला। तथा चरत्गुण १०८ विकला है परन्तु " सायंलक्षणकमित्यादि " पूर्वोक्त रीतिके अनुसार इसकोभी धन माना। और " नाडयःस्युः फलसंस्कृतिर्द्विगहता हार इत्यादि " रीतिके अनुसार फलद्वयसंस्कृति ८९ अंश ४ कला १ विकलाको१० से गुणाकरा तब८९०अंश ४०क०१० विकला यह गुणनफल हुआ इसमें हार ३० अंश ४० कलाका भागदिया तब लब्धि हुई फलद्वयसंस्कृतिके धन होनेके कारण धन २९ कला २ विकला यह प्रथम फल हुआ। और द्वितीय फलधन १ कला ४८ विकला हुआ। और तृतीय फलधन ० कला ४८ विकला हुआ, और इन तीनों फलोंका योगकरा तब फलत्रयैक्य धन ३१ कला, ३८ विकला हुई इसमें वारादि ३ वार ५५ घटी २ पलको युक्तकरा तब ४ वार २६ घटी २० पल यह स्पष्ट वारादि अर्थात् बुधवारके दिन अमावास्या २६ घटी ४० पल है ऐसा सिद्ध हुआ।

अब फलत्रयसंस्कृति तुल्य घटिका हुई ३१ घटी ३८ पल इसमें मध्यमरवि १ राशि १९ अंश ५३ कला ४३ विकलाको युक्तकरा तब १ राशि २० अंश २५ कला २१ विकला यह दर्शान्तकालीन स्पष्ट मध्यमरवि हुआ, और व्यगु

० राशि ६ अंश २६ कला ४५ विकलामें फलत्रयैक्य धन ३१ कला ३८ विकलाको युक्तकरा तब ० राशि ६ अंश ५८ कला २३ विकला यह दर्शान्तकालीन स्पष्ट व्यगु हुआ । अब रविमन्दफल धन १४ अंश ४१ कला ४० विकलाको ४ से गुणाकरा तब ५८ अंश ४६ कला ४० विकला हुआ इसमें इसके चौवीसवे भाग २३ अंश २६ कला ५७ विकलाको युक्त करा तब कलादि हुआ ६१ कला १३ विकला यह मन्दफलके धन होनेके कारण धनहै, इसकारण ६१ कला १३ विकलाको मध्यम रवि १ राशि २० अंश २५ कला २१ विकलामें युक्त करा तब १ राशि २१अं. २६ कला ३४ वि. यह स्पष्ट सूर्य्य हुआ इसमें तिथि ३०को १२से गुणा करके ३६० अंश युक्त करे तब १ राशि २१ अं. २६ क. ३४ वि. यह स्पष्ट चन्द्र हुआ।

दर्शान्तकालीन स्पष्ट व्यगु ० राशि ६ अंश ५८ कला २३ विकलामें ६१क. १३ विकलाको युक्तकरा तब ० राशि ७ अं. ५९ कला ३६ विकला यह स्पष्ट व्यगु हुआ। हार ३० अंश ४० कलाको २४से गुणा करा तब ७३६ हुए इसमें ६२को युक्त करा तब ७९८ कला यह चन्द्रस्पष्टगति हुई। और ५९ कला यह सूर्य्यगति है ॥

स्पष्टरवि-स्पष्टचन्द्र-और इन दोनोंकी गतिसे दर्शान्तकालीन नक्षत्र और योग साधते हैं-रोहिणी नक्षत्रकी गतघटिका हुई ५१ घटी ५७ पल और गम्य घटिका हुई ८घटी ३१ पल। तिसीप्रकार धृतियोगकी गतघटी हुई ४० घटी ७ पल और गम्य घटी हुई १५ घटी ५२ पल ॥

चन्द्रबिम्ब १०अङ्गुल ४६प्रतिअङ्गुल हुआ, सूर्य्यबिम्ब १० अङ्गुल २९प्र.अं.॥

अब सूर्य्यग्रास साधते हैं-अमान्त २६ घटी ४० पलमें दिनार्द्ध १६ घटी ४८ पलको घटाया तब ९ घटी ५२ पल शेषरहा इसमें ४का भाग दिया तब लब्धि हुई २ राशि १४ अंश ० कला ०विकला इसमें स्पष्टरवि १राशि २१ अं. २६ कला ३४विकलाको युक्त करा तब ४ राशि ५ अंश २६ कला ३४ वि. हुआ, इसकी क्रान्ति हुई उत्तर १३ अंश ५२ कला २१ विकला। और अक्षांश दक्षिण हुए २५ अंश २६ कला ४२ विकला, क्रान्ति और अक्षांश दोनोंका संस्कार करनेसे नतांश हुए दक्षिण ११ अंश ३४ कला २१ विकला इसका छठा भाग हुआ दक्षिण १ अंश ५५ कला ४३ विकला। स्पष्टव्यगुके उत्तरभुज हुए ७ अंश ५९ कला ३६ विकला इसमें व्यगुके उत्तरगोलमें होनेके कारण उपरोक्त षष्ठांश दक्षिण १ अंश ५५ कला ४३ विकलाको घटाया तब शेष रहे ६ अंश ३ कला ५३ विकला इसको ७ अंशमें घटाया तब शेष रहे ० अंश ५६ कला ७ विकला इसमें इसका आधा २८। ४को युक्तकरा तब १ अङ्गुल २४ प्रतिअङ्गुल यह सूर्य्यग्रास हुआ ॥

इति मासगणाद्ग्रहणद्वयसाधनाधिकारः समाप्तिमितः ॥ ७ ॥

अथ पञ्चाङ्गाद्ग्रहणद्वयसाधनं व्याख्यायते।

अथवायं तिथिपत्रतोऽवगम्यः पर्वान्तश्च रविस्तमस्तिथेर्वा। भस्यैतैष्यघटीयुतिर्द्युमानं तेभ्योऽथग्रहणद्वयं प्रवच्मि ॥ १ ॥

अन्वयः-अथवा, तिथिपत्रतः, अयम्, पर्वान्तः, रविः, तमः, च, अवगम्यः, तिथेः, वा, भस्य, इतैष्यघटीयुतिः, (अवगम्या); द्युमानम्, (अवगम्यम्), अथ, तेभ्यः, ग्रहणद्वयम्, प्रवच्मि ॥ १ ॥

अर्थः-अथवा तिथिपत्र (पञ्चाङ्ग) पर्वान्तकालीन घटिका, सूर्य्य, राहु, तिथिका गतगम्य घटिकाओंका योग, तथा नक्षत्रका गतगम्य घटिकाओंका योग, और दिनमान जाने, अब इन सबसेही चन्द्रग्रहण और सूर्य्यग्रहण दोनोंकी गणित करनेकी रीति कहताहूँ ॥ १ ॥

उदाहरण.

सम्वत् १६६९, शाके १५३४ वैशाख शुक्ल पौर्णिमा १५ सोमवार गतघटी २ पल ३३ सूर्योदयसे गम्य घटी ५४ पल १० गतगम्यघटीयोग ५६ घटी ४३ प० अनुराधा नक्षत्र गतघटी २० पल ४ गम्य घटी ३८ पल ३३ गत और गम्य घटिकाओंका योग ५८ घटी ३७ पल दिनमान ३३ घटी ६ पल। पर्वान्तकालीन रवि १ राशि ६ अंश ३४ कला ३७ विकला। पर्वान्तकालीन राहु १ राशि १४ अंश १८ कला ११ विकला। विराह्वर्क ११ राशि २२ अंश १६ कला २६ विकला ॥

अब चन्द्रग्रास लानेकी रीति लिखतेहैं-

तारापड्व्यगतिथियातगम्यनाडीयोगाप्ता व्यगुरविदोर्लवोनितास्ते। संयुक्ता निजदलभूपभागकाभ्यां छन्नं वाङ्गुलवदनं भवेत्सुधांशोः ॥ २ ॥

अन्वयः-वा ताराषड्व्यगतिथियातगम्यनाडीयोगाप्ताः, व्यगुरविदोर्लवोनिताः, ते, निजदलभूपभागकाभ्याम्, संयुक्ताः, (सन्तः), सुधांशोः, अङ्गुलवदनम्, छन्नम्, भवेत् ॥ २ ॥

अर्थः-पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योगमें सात घटाकर जो शेष रहै, उसका छःसौ सत्ताईसमें भागदेय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें विराहुर्कके भुजांशोंको घटाकर जो शेष रहे उसको पचीससे गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसमें सोलहका भागदेय अथवा उस शेषमें उसका आधा और सोलहवाँ भाग [१] युक्तकरे तब अङ्गुलादि चन्द्रग्रास होताहै ॥ २ ॥

उदाहरण.

पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५६ घटी ४३ पलमें ७ सातको घटाया तब शेष रहे ४९ घटी ४३ पल इसका ६२७ में भागदिया तब अंशादि लब्धि हुई १२ अंश ३६ कला ४१ विकला इसमें विराहुर्क (व्यगु) के भुजांशों ७ अंश ४३ कला ३४ विकलाको घटाया तब शेष रहे ४ अंश ५३ कला ७ विकला इसको २५ से गुणाकरा तब १२२ अंश ७ कला ३५ विकला हुए इसमें १६ का भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई ७ अङ्गुल ३८ प्रति-अङ्गुल यही चन्द्रग्रास हुआ । अथवा शेष ४ अंश ५३ कला ७ विकलामें अपना आधा २ अंश २६ कला ३३ विकला और सोलहवाँ भाग १८ कला १९ विकलाको युक्त करा तब भी ७ अङ्गुल ३८ प्रतिअङ्गुल यही चन्द्रग्रास हुआ ॥

अब चन्द्रविम्ब और भूभाविम्ब लानेकी रीति लिखतेहैं-

अङ्गयुक्तिथिघटीहृतबाणाङ्कर्त्तवोङ्गुलमुखं विधुविम्बम् । दिग्वियुक्तिथिघटीहृतदृग्दृक्शक्रेन्दवोङ्गुलमुखाक्षितिभा स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-अङ्गयुक्तिथिघटीहृतबाणाङ्कर्त्तवः, अङ्गुलमुखम्, विधुबिम्बम्, (स्यात्) । दिग्वियुक्तिथिघटीहृतदृग्दृक्शक्रेन्दवः, अङ्गुलमुखा, क्षितिभा, स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः-तिथि(पर्व)की गतगम्य घटिकाओंके योगमें छः मिलाकर जो अङ्कयोग हो उसका छःसौ पिचाणवेमें भागदेय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह चन्द्रविम्ब होताहै । और तिथिपर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योगमें दश घटाकर जो शेषरहै उसका एक हजार तीन सौ बाईसमें भागदेय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह भूभाविम्ब होताहै ॥ ३ ॥

उदाहरण.

पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५६ घटी ४३ पलमें घटीको युक्त

१ जो लब्धिमें व्यगुके भुजांश न घटसकें तो जाने कि चन्द्रग्रहण नहीं होगा ॥

करा तब ६२ घटी ४३ पल हुआ इसका ६९५ में भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई ११ अङ्गुल ४ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ । और पर्वकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५६ घटी ४३ पलमें १० घटाए तब शेष रहे ४६ घटी ४३ पल इसका १३२२ में भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई २८ अङ्गुल १७ प्रतिअङ्गुल यह मध्यम भूभाबिम्ब हुआ ॥

अब भूभाके संस्कारकी रीति कहतेहैं-.

रुद्रभूपनखभूपरुद्रखव्यङ्गुलैर्विरहिता युता क्रमात्। षड्गृहे सति रवौ घटात्क्रियान्नाडिकोद्भवकुभा स्फुटा भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः-रवौ, घटात, क्रियात, षड्गृहे,सति, क्रमात, रुद्रभूपनख भूपरुद्रखव्यङ्गुलैः, विरहिता,युता, नाडिकोद्भवकुभा,स्फुटा,भवेत् ॥४॥

अर्थः-फिर तिस ऊपरोक्त भूभाबिम्बके प्रतिअङ्गुलोंमें यदि सूर्य्य मेषराशिसे तुलाराशिपर्य्यन्त होय तौ जिस राशिमें होय तिस राशिके नीचे लिखे हुए " रुद्र कहिये ग्यारह, भूप कहिये सोलह, नख कहिये बीस, भूप कहिये सोलह, रुद्र कहिये ग्यारह, ख कहिये शून्य " इनमेंके अङ्कको युक्त करदेय, और यदि सूर्य्य तुलराशिसे मेष राशि पर्यन्त होय तो जिस राशिका हो उस राशिके नीचे लिखे हुए अङ्कको भूभाबिम्बके प्रतिअङ्गुलोंमें घटादेय तब भूभाबिम्ब स्पष्ट होताहै ॥ ४ ॥

मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	नाम
११	१६	२०	१६	११	०	११	१६	२०	१६	११	०	प्रतिअङ्गुल

उदाहरण.

ऊपरोक्त भूभाबिम्ब २८ अङ्गुल १७ प्रतिअङ्गुल है, और सूर्य्य वृषभ राशिका है, इस कारण वृषभ राशिके नीचे लिखेहुए अङ्क १६ को भूभाबिम्बके प्रतिअङ्गुलों १७ में युक्त करा, तब २८ अङ्गुल ३३ प्रतिअङ्गुल यह स्पष्ट भूभाबिम्ब हुआ ॥

अब नक्षत्रकी घटिकाओंसे चन्द्रग्रास साधनेकी रीति लिखतेहैं-

विदंशोडुघटीयुताः खभूपड्व्ययुभास्वङ्गुजभागवर्जितास्ते । शितिकण्ठहतास्तुरङ्गभक्ताः स्थगितं चाङ्गुलपूर्वकं विधोः स्यात् ॥ ५ ॥

अन्वयः—खभूपट्, विदशोडुघटीहताः, (ततः) व्यगुभास्वद्भुजभागवर्जिताः, च, (कार्य्याः), ते, शितिकण्ठहताः, (ततः), तुरङ्गभक्ताः, (सन्तः), अङ्गुलपूर्वकम्, विधोः, स्थगितम्, स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थः—नक्षत्रकी गत गम्य घटिकाओंके योगमें दश घटादेय तब जो शेष रहे उसका छःसौ दशमें भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें व्यगुके भुजांशोंको घटावै तब जो शेष रहे उसको ग्यारहसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें सातका भाग देय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह चन्द्रमाका ग्रास होताहै ॥ ५ ॥

उदाहरण.

नक्षत्रकी गत गम्य घटिकाओंके योग ५८ घटी ३६ पलमें १० घटाए तब शेष रहे ४८ घटी ३६ पल इसका ६१० में भाग दिया तब लब्धि हुई १२ अंश ३३ कला ५ विकला इसमें व्यगुके भुजांश ७ अंश ४३ कला ३४ विकलाको घटाया तब शेष रहे ४ अंश ४९ कला ३१ विकला इसको ११ से गुणाकरा तब ५३ अंश ४ कला ४१ विकला हुए इसमें ७ का भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई ७ अङ्गुल ३४ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रमाका ग्रास हुआ ॥

अब नक्षत्रसे चन्द्रबिम्ब और भूभाबिम्ब साधन लिखतेहैं—

भगतागतनाडिकैक्यभक्ता नववेदर्त्तव इन्दुबिम्बमुक्तम् । विमनूडुघटीहृताः शराक्षाद्रिभुवः स्यात्क्षितिभाङ्गुलादिका वा ॥ ६ ॥

अन्वयः—वा, भगतागतनाडिकैक्यभक्ताः, नववेदर्त्तवः, इन्दुबिम्बम्, उक्तम्; विमनूडुघटीहृताः, शराक्षाद्रिभुवः, अङ्गुलादिका, क्षितिभा, स्यात् ॥ ६ ॥

अर्थः—छःसौ उनन्चासमें नक्षत्रकी गत गम्य घटिकाओंके योगका भाग देय, तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह चन्द्रबिम्ब होताहै, और नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योगमें चौदह घटाकर जो शेष रहै उसका एक हजार दोसौ पचपनमें भागदेय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह मध्यम भूभाबिम्ब होताहै । इसमें पर्वसे भूभाबिम्ब साधते समय जो संस्कार कहाहै वह करै तब भूभाबिम्ब होताहै ॥ ६ ॥

उदाहरण.

नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५८ घटी ३६ पलका छःसौ उनन-चास ६४९ में भागदिया तब अङ्गुलादि लब्धिहुई ११ अङ्गुल ४ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रबिम्ब हुआ। तिसी प्रकार नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग ५८ घटी ३४ पलमें १४ घटाए तब शेषरहे ४४ घटी ३६ पल इसका १२५५ में भाग-दिया तब अङ्गुलादि लब्धिहुई २८ अङ्गुल ८ प्रतिअङ्गुल यह मध्यम भूभाबिम्ब हुआ। इसमें सूर्य्य वृषभराशिका है इसकारण १६ प्रतिअङ्गुल युक्तकरे तब २८ अङ्गुल २४ प्रतिअङ्गुल यह भूभाबिम्ब हुआ॥

अब तिथि और नक्षत्रकी घटिकाओंसे सूर्य्यग्राससाधन लिखतेहैं-

खात्यष्टयस्तिथिघटीविहृताः सवेदा वाथोडुनाडि-
हृतदेवयमाः सरामाः। हीना व्यगुस्फुटलवैर्भवसङ्गु-
णास्ते शैलोद्धृताः खररुचः स्थगिताङ्गुलानि॥७॥

अन्वयः-तिथिघटीविहृताः, खात्यष्टयः, सवेदाः, (कार्य्याः); (ते,) व्यगुस्फुटलवैः, हीनाः, (ततः), भवसङ्गुणाः, ते, शैलो-द्धृताः, (सन्तः), खररुचः, स्थगिताङ्गुलानि, (स्युः);। अथवा, उडुनाडिहृतदेवयमाः,सरामाः, (कार्य्याः, ते, व्यगुस्फुटलवैः, हीनाः, ततः, भवसङ्गुणाः, ते, शैलोद्धृताः, सन्तः, खररुचः, स्थगिताङ्गु-लानि, स्युः)॥ ७॥

अर्थः-पर्वकी गतगम्य घटिकाओंका एकसौ सत्तरमें भागदेय तब जो अं-शादि लब्धि होय उसमें चार अंश युक्तकरदेय तब जो अङ्कयोग होय उसमें स्पष्टनतांश घटादेय तब जो शेषरहे उसको ग्यारहसे गुणाकरे तब जो गुण-नफल होय उसमें सातका भागदेय तब जो अङ्गुलादि लब्धि होय वह सूर्य्य-ग्रास होताहै। अथवा नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योगका दोसौ तेतीसमें भागदेय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें तीन अंश युक्तकरदेय तब जो अ-ङ्कयोग होय उसमें स्पष्टनतांश घटादेय तब जो शेषरहे उसको ग्यारहसे गु-णाकरे तब जो गुणनफल होय उसमें सातका भागदेय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि सूर्य्यका ग्रास होताहै॥ ७॥

१ मासगणाधिकारमें स्पष्टनतांश साधेहैं तिसीप्रकार यहांभी स्पष्टनतांश लावे। स्पष्टनतांशों-कोही व्यगुभुजोंके स्पष्टांश कहतेहैं॥

उदाहरण.

तिथिकी गतगम्य घटिकाओंके योग ६४ घटी ४९पलका १७० में भागदिया तब अंशादि लब्धिहुई २ अंश ३७ कला २२ विकला इसमें ४ अंशयुक्त करे तब ६ अंश ३७ कला २२ विकला हुआ, इसमें स्पष्टनतांश १ अंश ५६ कला ४५ विकलाको घटाया तब शेषरहे ४ अंश ४० कला ३७ विकला इसको ११ से गुणाकरा तब ५१ अंश २६ कला ४७ विकला हुआ, इसमें ७ का भागदिया तब अङ्गुलादि लब्धिहुई ७ अङ्गुल २० प्र० अं० यह सूर्य्यग्रास हुआ ॥

अथवा

नक्षत्रकी गतगम्य घटिकाओंके योग६५ घटी ५६पलका २३३ में भाग दिया तब अंशादि लब्धिहुई ३ अंश ३२ कला १ विकला इसमें ३ अंश युक्तकरे तब ६ अंश ३२ कला १ विकला हुआ, इसमें स्पष्टनतांश १ अंश ५६ कला ४५ विकलाको घटाया तब शेषरहे ४ अंश ३५ कला १६ विकला इसको ११ से गुणाकरा तब ५० अंश २७ कला ५६ विकला यह गुणनफल हुआ, इसमें ७ का भागदिया तब अङ्गुलादि लब्धिहुई ७ अङ्गुल १४ प्रतिअङ्गुल यह सूर्य्यका ग्रास हुआ ॥

अब सूर्य्यबिम्बसाधन लिखतेहैं—

रविलवयुतभानोर्दोर्लवत्र्यंशतुल्यैर्विरसलवमहेशा व्यङ्गुलैर्हीनयुक्ताः । अजघटरसभेर्के बिम्बमस्याङ्गुलाद्यं स्थितिमुखमवशिष्टं पूर्ववच्छेपमत्र ॥ ८ ॥

अन्वयः—अर्के, अजघटरसभे, (सति), विरसलवमहेशाः, रविलवयुतभानोः, दोर्लवत्र्यंशतुल्यैः, व्यङ्गुलैः, हीनयुक्ताः, (कार्य्याः); (तत्), अस्य, अङ्गुलाद्यम्, बिम्बम्, (स्यात्); । अत्र, स्थितिमुखम्, अवशिष्टम्, शेषम्, पूर्ववत्, ज्ञेयम् ॥ ८ ॥

अर्थः—स्पष्ट रविमें बारह अंश मिलाकर उसके भुजांश करै और उन भुजांशोंमें तीनका भागदेय तब जो लब्धि होय वह प्रतिअङ्गुल होतेहैं, रवि मेषादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो दश अङ्गुल पचास प्रतिअङ्गुलमें पूर्वोक्त प्रतिअङ्गुलोंको घटादेय और यदि रवि तुलादि छः राशिके अन्तर्गत होय तो दश अङ्गुल पचास प्रतिअङ्गुलमें पूर्वोक्त प्रतिअङ्गुलोंको युक्तकरदेय तब अङ्गुलादि सूर्य्यबिम्ब होताहै ॥ ८ ॥

उदाहरण.

स्पष्ट रवि ८ राशि ५ अंश २६ कला २० विकलामें १२ अंश युक्तकरे तब ८ राशि १७ अंश २६ कला २० विकला हुआ, इसके भुजांश ७७ अं. २६ कला २० विकला हुए इसमें ३ का भागदिया तब लब्धिहुई प्रतिअङ्गुल २५ सूर्य्य तुलादि छः राशिमेंहै इसकारण १० अङ्गुल ५० प्रतिअङ्गुलमें २५ प्रतिअङ्गुल युक्तकरे तब ११ अङ्गुल १५ प्रति अङ्गुल यह सूर्य्यबिम्ब हुआ॥

इति श्रीगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादा-
बादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामि-
राममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंस-
श्रीयुतभोलानाथात्मजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया
सान्वयभाषाटीकया सहितः पञ्चांगाद्ग्रहणद्वयसा-
धनाधिकारः समाप्त. ॥ ८ ॥

अथास्तोदयाधिकारो व्याख्यायते।

तहाँ प्रथम तीन श्लोकोंकरके शुक्ल प्रतिपदाके दिन चन्द्रोदय होगा या नहीं यह जाननेकी रीति लिखते हैं-

सार्काशाविह कुरु पक्षतिक्षयेर्केन्व्यगवर्कौ चरमथ
केवलाद्व्यगोर्यत्। पड्बाणैर्विहृतमिदं क्रमाल्लवाद्यं
स्वर्णं स्याद्व्यगुरविगोलयोः पृथक्तत् ॥ १ ॥
त्रिभायनलवान्वितारुणचराहतं द्व्यक्षभाहतेः कृति
हृतं धनर्णमसमैकगोले व्यगोः। खखानलविशेपितः
सरसभायनार्कोदयः शराद्रिकहृतो धनाधनमनल्प-
कालपोदये ॥ २ ॥ द्युमितिप्रतिपद्व्मान्तरं यच्छ-
रभक्तं स्वमृणं दिनेधिकोने। धनमत्र चतुष्कसंस्कृ-
तिश्चेत्तपनास्ते विधुरिक्ष्यतेन्यथा न ॥ ३ ॥

अन्वयः-इह, पक्षतिक्षये, अर्कव्यग्वर्कौ, सार्काशौ, कुरु। अथ, केवलात्, व्यगोः, यत्, चरम्, (साधितम्), इदम्, षड्बाणैः, विहृतम्, (कार्य्यम्, तदा), लवाद्यम्, (फलम्), क्रमात्, व्यगुरविगोलयोः, स्वर्णम्, स्यात्, तत्, पृथक्, (स्थाप्यम्; ततः), त्रिभायनलवान्वितारुणचराहतम्, (ततः), द्व्यक्षभाहतेः, कृतिहृतम्, (कार्य्यम्, ततः), व्यगोः, असमैकगोले, धनर्णम्, (कार्य्यम्; (तत्, फलम्, पृथक्, स्थाप्यम्), ॥ सरसभायनार्कोदयः, खखानलविशेषितः, शराद्विकहृतः, (तदा, यत्, फलम्, तत्), अनल्पकाल्पोदये, धनाधनम्, (कार्य्यम्) । यत्, द्युमितिप्रतिपद्भमान्तरम्, (तत्), शरभक्तम्, अधिकोने, दिने, स्वम्, ऋणम्, (कार्य्यम्) । अत्र, चतुष्कसंस्कृतिः, धनम्, चेत्, (तदा), तपनास्ते, विधुः, ईक्ष्यते, अन्यथा, न ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

अर्थः-अभीष्ट मासके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके अन्तमें स्पष्ट सूर्य्य और स्पष्ट व्यग्वर्क करके दोनोंमें बारह अंश युक्त करै, तदनन्तर व्यग्वर्कमें अयनांश न मिलाकर केवल व्यग्वर्कसेही चर लावे, और उस चरमें छप्पनका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय वह प्रथम फल होताहै, व्यगु उत्तर गोलमें होय तो धन और दक्षिण गोलमें होय तो ऋण जानै, और प्रथम फलको अलग स्थापन करै ॥ स्पष्ट सूर्य्यमें अयनांश और तीन राशियुक्त करै, तब जो अङ्कयोग होय उससे चर लावे, और तिस चरको प्रथम फलसे गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसमें द्विगुणित पलभाके वर्गका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय वह द्वितीय फल होताहै, उसको यदि त्रिभायनलवान्वित सूर्य्य और व्यगु यदि एक गोलमें होयँ तो ऋण और भिन्नगोलमें होयँ तो धन जानै, और द्वितीयफलको अलग स्थापन करै ॥ स्पष्ट सूर्य्यमें अयनांश और छःराशि मिलाकर जो अंशयोग होय उसका पलात्मक उदय ग्रहण करके उसका और तीनसौ पलोंका अन्तर करै, और उस अन्तरमें पचीसका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय वह तृतीय फल होता है, उस तृतीय फलको यदि पलात्मक उदय तीनसौकी अपेक्षा अधिक होयतो धन और पलात्मक उदय तीनसौकी अपेक्षा कम होय तो ऋण जानै और अलग स्थापन करै ॥ प्रतिपदाका अन्त और दिनमान इन दोनोंका अन्तर करके पाँचका भाग देय तब जो अंशादिलब्धि होय वह चतुर्थ फल होताहै, उस चतुर्थ फलको यदि दिनमान प्रतिपदाकी अपेक्षा अधिक होय तो धन और दिनमान प्रतिपदाकी अपेक्षा कम होय तो ऋण जानै, और इस

चतुर्थ फलकोभी अलग स्थापन करै ॥ फिर इन चारों फलोंका एकीकरण करके वह एकीकरण धन होय तौ प्रतिपदामें चन्द्रदर्शन होयगा, और यदि एकीकरण ऋण आवै तौ प्रतिपदामें चन्द्रदर्शन नहीं होगा ऐसा जानै ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

उदाहरण.

संवत् १६६७ शाके १५३२ माघ शुक्र प्रतिपदा १ शनिवार घटी ७ श्रवण नक्षत्र घटी २८ पल २५ सिद्धियोग घटी ४० चक्र ८ अहर्गण १०३६ प्रातःकालीन मध्यमरवि ९ राशि ६ अंश १२ कला ३८ विकला। प्रातःकालीन मध्यम चन्द्र ९ राशि १९ अंश ३८ कला ३३ विकला। चन्द्रोच्च ८ राशि २० अंश ५५ कला १४ विकला। प्रातःकालीनराहु २ राशि १० अंश ३ कला २५ विकला। इन ग्रहोंमें पश्चाङ्गस्थित ७ घटीका चालनदिया तब मध्यम रवि हुआ ९ राशि ६ अंश १९ कला ३१ विकला। मध्यम चन्द्र हुआ ९ राशि २१ अंश १० कला ४० विकला। चन्द्रोच्च हुआ ८ राशि २० अंश ५५ कला १४ विकला। राहु हुआ २ राशि १० अंश ३ कला ३ विकला। अब स्पष्टीकरण लिखते हैं- रविका मन्दकेन्द्र हुआ ५ राशि ११ अंश ४० कला २९ विकला। मन्दफल धन हुआ ० अंश ४१ कला २७ विकला। मन्द स्पष्टरवि हुआ ९ राशि ७ अंश ० कला ५८ विकला। अयनांश हुए १८ क. ८ विकला। चरधन १०६ विकला। चरसंस्कृतस्पष्टरवि ९ राशि ७ अंश २ कला ४४ विकला। स्पष्टगति ६१ कला १० विकला। और त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ९ राशि २१ अंश २५ कला १२ विकला। मन्दकेन्द्र १० राशि २९ अंश ३० कला २ विकला। मन्दफल ऋण २ अंश ३३ कला ० विकला। संस्कृतस्पष्टचन्द्र ९ राशि १८ अंश ५२ कला १२ विकला। चन्द्रस्पष्टगति ७३५ कला १ विकला।.

स्पष्ट रवि और चन्द्रसे लाईहुई तिथि ० घटी ५६ पल है, इसकारण ५६ पलका चालनदेकर स्पष्टरवि ९ राशि ७ अंश ३ कला ४१ विकला। राहु २ राशि १० अंश ३ कला १ विकला। विराहर्क ६ राशि २७ अंश ० कला ४० विकला हुआ स्पष्टरवि ९ राशि ७ अंश ३ कला ४१ विकलामें १२ अंशयुक्त करे तब रवि हुआ ९ राशि १९ अंश ३ कला ४१ विकला। व्यगु ६ राशि २७ अंश ० कला ४० विकलामें १२ अंश युक्तकरे तब व्यगु हुआ ७ राशि९अंश ० कला ४० विकला। इस अयनांशरहित केवल व्यगुसे चरमिले ७० इसमें ५६ का भागदिया तब अंशादिलब्धि मिली १ अंश १५ कला० विकला यह प्रथम फल व्यगुके दक्षिणगोलीय होनेके कारण ऋणहै। अब सूर्य ९ राशि १९ अंश ३ कला ४१ विकलामें अयनांश १८ अंश ८ कला युक्तकरे तब १० राशि ७ अंश ११ कला ४१ विकला हुआ इसमें ३ राशि युक्त करी तब १ राशि ७ अंश ११

कला ४१ वि. हुआ इससे लाया हुआ चर ६८ हुआ इससे प्रथम फल १ अंश १५कलाको गुणाकरा तब ८५अंश ० कला ०विकला हुआ इसमें पलभा५अङ्गुल ४५प्रतिअङ्गुलको द्विगुणित करके ११अङ्गुल ३० प्रतिअङ्गुल इसके वर्ग १३२अङ्गुल १५प्रतिअङ्गुलका भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ०अंश३८कला २३विकला यह द्वितीय फल व्यगु और सूर्य्यके भिन्न गोलीय होनेके कारण धनहै॥ अब स्पष्टरवि ९ राशि १९ अंश ३ कला ४१ विकलामें अयनांश १८ अंश ८ कलाको युक्त करा तब १० राशि ७ अंश ११ कला ४१ विकला हुआ इसमें ६ राशि युक्त करीं तब ४ राशि ७ अंश ११ कला ४१ विकला हुआ इस पञ्चम राशि अर्थात् सिंह राशिके ३४५ में ३०० को घटाया तब शेष रहे ४५ इसमें २५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १अंश ४८ कला यह तृतीय फल पलात्मक उदयके तीससौंकी अपेक्षा अधिक होनेके कारण धन है ॥ अब दिनमान २६ घटी २८ पल और प्रतिपदन्त ७घटी ५८पलका अन्तर करा तब १८ घटी ३२ पल हुआ इसमें ५ का भाग दिया तब अंशादिलब्धि हुई ३ अंश ४२ कला २४ वि. यह चतुर्थ फल दिन मानके प्रतिपदन्तकी अपेक्षा अधिक होनेके कारण धन है ॥ द्वितीय फल धन० अंश ३८ कला २३ विकला और तृतीय फल धन १ अंश ४८ कला० विकला तथा चतुर्थ फल धन ३ अंश ४१ कला २४ विकला इन तीनोंका योग करा तब ६ अंश ८ कला ५७ विकला हुआ इसमें प्रथम फल ऋण १ अंश १५ कलाको घटाया तब शेष रहा ४ अंश ५३ कला ५७ विकला यह चारों फलोंका एकीकरण धनहै इसकारण सूर्य्यास्त समयमें चन्द्रदर्शन होगा ॥

अथ भासगणसे गुरुके अस्त और उदय साधनेकी रीति लिखते हैं-

चक्राढ्यो मधुवक्रमासनिचयो विश्वाप्तचक्रोनितो द्विघ्नो युग्दशमासधूर्जटिदिनैर्भैः शेपितो भच्युतः । द्व्याप्तः स्याद्गुरुखः पृथक्तिथिलवैरूनोऽस्य वाहंशकार्काप्तांशोनयुतो घटाजरसभे मासाधिकः स्यान्मयोः ॥ ४ ॥ तिथिदिनरहिताढ्योऽसौ द्विधा तैश्च मासैः क्रमश इह भवेतां मन्त्रिणोस्तोदयौ च ॥ ५५ ॥

अन्वयः-मधुवक्रमासनिचयः, चक्राढ्यः, (कार्य्यः), (ततः), विश्वाप्तचक्रोनितः, (कार्य्यः), (ततः), द्विघ्नः, (कार्य्यः), (ततः), दशमासधूर्जटिदिनैः, युग्, भैः, शेपितः, (ततः), भच्युतः, (ततः),

द्यातः, भमुखः, स्यात्, (सः), पृथक्, (स्थाप्यः), तिथिलवैः, ऊनः, (कार्य्यः), अस्य, बाहंशकार्कांशांशोनयुतः, घटाजरसभे, मधोः, मासाधिकः, स्यात् । असौ, च, द्विधा, तिथिदिनरहिताढ्यः, तैः, मासैः, इह, मन्त्रिणः, क्रमशः, अस्तोदयौ, च, भवेताम् ।४।५५।

अर्थः-अभीष्ट वर्षकी चैत्र शुक्ल प्रतिपदाका मासगण लाकर उसमें चक्र युक्तकरै, तब जो अंकयोग होय उसमें चक्रमें तेरहका भाग देकर जो मासादि लब्धि होय उसे घटादेय तब जो शेष रहै उसको दोसे गुणा करै, तबजो गुणनफल होय उसमें दशमास ग्यारह दिन युक्त करदेय, तब जो अङ्कयोग होय उसके केवल मासोंमें सत्ताईसका भाग देय तब जो मासादि शेषरहै उसको सत्ताईस मासमें घटावे, तब जो शेषरहै, उसमें दोका भाग देय, तब जो राश्यादि लब्धि होय उसमें पन्द्रह अंश घटावे, तब जो शेषरहै उसके भुज करै, और उन भुजोंके अंशोंमें बारहका भाग देय, तब जो अंशादि लब्धि होय वह, यदि पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि मेषादि होय तो उसमें युक्त करदेय, और यदि पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि तुलादि होय तो उसमें घटादेय, तब मासादिक होताहै। तदनन्तर उस मासादिकमें पन्द्रह दिन घटाकर जो शेषरहै तिसमासादि करके चैत्र मासमे गुरुका पश्चिममें अस्त होगा और तिसमासादिमें पन्द्रह दिन युक्त करके जो अङ्कयोग होय उसमासादि करके चैत्र माससे गुरुका पूर्वदिशामें उदय होताहै ॥ ५५ ॥

तब शेषरहे ३ राशि १२ अंश ५७ कला ४१ विकला इसके भुजांश ७२ ५७ कला ४१ विकला हुए, इनमें १२ का भागदिया तब ६ अंश ४ कला विकला इसको पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि मेषादि है इसकारण पूर्वोक्त राश्यादि लब्धि २ राशि २७ अंश ५७ कला ४१ विकलामें युक्तकरा तब ३ मास ४ दिन २ घटी २९ पल यह मासादिक हुआ, इसमें १५ दिनं घटाए तब शेषरहे २ मास १९ दिन २ घटी २९ पल इतने कालकरके चैत्रमाससे अर्थात् चैत्र मासमे २ मास १९ दिन २ घटी २९पलपर पश्चिमदिशामें गुरुका अस्त होगा और मासादिक ३ मास ४ दिन २ घटी २९ पलमें-१५ दिन युक्तकरे तब ३ मास ४ दिन २ घटी २९ पल हुए इतने कालकरके पूर्वमें गुरुका उदय होयगा ॥

अब शुक्रके अस्त और उदयके साधनकी रीति लिखतेहैं-

अथ मधुमुखमासाः सप्तभूनिघ्नचक्रैः स्वशरयुगलवाद्यैः संयुता मार्गणघ्नाः । उदधिरससमेताश्छिद्रखेगामितघ्ना नव नव परिशुद्धाः पञ्चभक्ताः पृथक्स्थाः । रसगुणदिनहीनाख्या द्विधा चैत्रतस्तैर्भृगुजहरिदिगस्ताम्भूदयौ स्तः क्रमेण ॥ ५ ॥ नवमासभपस्ततोऽल्पपुष्टाः पृथगास्थाः क्रमशस्ततैर्युतोनाः । द्विधा युगवासरोनयुक्तास्तोयास्तेन्द्रयुदयौ क्रमाद्भृगोः स्तः ॥ ६ ॥

अन्वयः-अथ, मधुमुखमासाः, स्वशरयुगलवाद्यैः, सप्तभूनिघ्नचक्रैः, संयुताः, (ततः) मार्गणघ्नाः, (ततः), उदधिरससमेताः, (ततः), छिद्रखेगामितघ्नाः, (शेषाः), नवनवपरिशुद्धाः, (ततः, शेषाः), पञ्चभक्ताः, पृथक्स्थाः, (कार्य्याः) । (ते, अत्र), द्विधा, रसगुणदिनहीनाढ्याः, (कार्य्याः), तैः, चैत्रतः, क्रमेण, हरिदिगस्ताम्भूदयौ, स्तः ॥ (ते), पृथगास्थाः, (यदि), नवमासभपस्ततः, अल्पपुष्टाः, (एषुः, तदा) तु, तैः, युतोनाः, (कार्य्याः), (ततः, ते), द्विधा, युगवासरोनयुक्ताः, क्रमात्, भृगोः, तोयास्तेन्द्रयुदयौ, स्तः ॥५॥६॥

अर्थ-अभीष्ट वर्षमें मेषप्रवेश प्रतिपदाका मास और मासगण लावै, तब

० पल, इससे मालूम हुआ कि चैत्रसे ० मास५ दिन २० घटी ०पलपर पश्चिमदिशामें शुक्रास्त होगा दूसरे स्थानमें लिखे हुए १ मास ११ दिन २० घटी ० पलमें ३६ दिन युक्त करे तब २ मास १७ दिन २० घटी ० पल हुए, इससे मालूम हुआ कि चैत्रमाससे २ मास १७ दिन २० घटी ० पलके अनन्तर पूर्व दिशामें शुक्रोदय होयगा ॥

पूर्वोक्तमासादिक अर्थात् १ मास ११दिन २० घटी ० पल, ९ मास २७ दिनकी अपेक्षा कमहै इसकारण १ मास ११ दिन २०घटी ० पलमें ९ मास २७ दिनको युक्त करा तब ११ मास ८ दिन २० घटी ० पल हुआ, इसको दो स्थानमें लिखकर एक स्थानमें चार ४ दिन घटादिये तब ११ मास ४ दिन २० घटी ० पल हुआ, इससे मालूम हुआ कि चैत्रमाससे ११ मास ४ दिन २० घटी ० पलपर फिर पश्चिमदिशामें शुक्रास्त होयगा, और दूसरे स्थानमें लिखेहुए ११ मास ८ दिन २० घटी ० पलमें ४ दिन युक्त करदिये तब ११मास १२ दिन २० घटी ० पलहुआ, इससे प्रतीत हुआ कि चैत्रमाससे ११ मास १२ दिन २०घटी शून्यतलपर फिर पूर्वदिशामें शुक्रोदय होयगा ॥ ५ ॥ ६ ॥

अब शुक्र और गुरु इन दोनोंके उदय और अस्तके विषयमें सामान्य नियम लिखते हैं-

मासैर्नखैर्व्यरिदिनैरुदयास्तकालः शुक्रस्य शुद्धयति गुरोर्यदि सार्धविश्वैः। सोऽन्यो भवेन्मधुमुखादथ तैर्युतश्चेत्स्यात्तत्परोऽथ पुरतोऽपि विलोमशुद्धया॥७॥

अन्वयः-नखैः, मासैः,व्यरिदिनैः,शुक्रस्य,उदयास्तकालः, शुद्धयति; यदि, गुरोः, (तदा), सार्द्धविश्वैः, (शुद्धयति); अथ, यदि मधुमुखात्, तैः, युतः, चेत्, (तदा), सः, अन्यः, भवेत्; अथ, विलोमशुद्धया, तत्परः, अथ, परतः, अपि, स्यात् ॥ ७ ॥

अथ चन्द्रशरसाधनकी रीति लिखते हैं-

प्रथमे व्यगुचन्द्रदोर्गृहेंशाः स्वदलाढ्यास्त्वपरे नगाब्धियुक्ताः । चरमे दलिता नगाद्रियुक्ता व्यगुविधुदिग्विशिखोङ्गुलादिकः स्यात् ॥ ९ ॥

अन्वयः—व्यगुचन्द्रदोर्गृहे, प्रथमे, अंशाः, स्वदलाढ्याः, (कार्य्याः); अपरे, तु, नगाब्धियुक्ताः, (कार्य्याः); चरमे, (च, प्रथमम्), दलिताः, (ततः), नगाद्रियुक्ताः, (कार्य्याः, सः), अङ्गुलादिकः, व्यगुविधुदिग्विशिखः, स्यात् ॥ ९ ॥

अर्थः–स्पष्ट चन्द्रमें राहुको घटावै तब जो शेषरहै वह 'व्यगुविधु' होताहै, तदनन्तर उस व्यगुविधुके भुज करके वह भुज मेषराशिके हों अर्थात् उसमें शून्य राशि होय तौ भुजोंके अंशोंको ड्यौढाकर लेय, अथवा उनको तीनसे गुणाकरके दोका भाग देलेय, तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि चन्द्रशर होताहै, यदि भुज वृष राशिके होयँ तौ उन भुजोंकी राशियोंको त्यागकर केवलमात्र अंशादिमें सैंतालीस अंश युक्त करै, तब अंगुलादि शर होताहै, और यदि भुज मिथुन राशिका हों तौ भुजो राशियोंको त्यागकर केवल अंशादिकोंमें दोका भाग देकर जो लब्धि होय उसमें सतत्तर अंश और युक्त करदेय, तब जो अङ्क योग होय वह चन्द्रमाका अंगुलादिक शर होताहै, फिर पहिला व्यगु विधु उत्तरगोलमें होय तौ शर भी उत्तर और व्यगुविधु दक्षिणगोलमें होय तौ दक्षिणहोताहै ॥ ९ ॥

उदाहरण.

शाके१५३२मार्गशीर्ष कृष्ण३० बुधवार१२घटी५९पल, दर्शान्तकालीन चन्द्र ८ राशि ५ अंश २६ कला २० विकला, इसमें राहु २ राशि ११ अंश ४१ कला १८ विकलाको घटाया तब शेषरहा ५ राशि२३ अंश४५कला २ विकला, यह व्यगुविधु हुआ, इस व्यगुविधुके ६ अंश १४ कला ५८ विकला यह भुज हुए यह भुज मेष राशिके हैं इसकारण इसको आधाकरा तब ३ अंश ७ कला २९ विकला हुआ, इसको भुजोंमें युक्त करदिया तब ड्यौडे हुए भुज=९ अंगुल २२ प्रतिअंगुल हुए, यह चन्द्रशर व्यगुविधुके उत्तरगोलीय होनेके कारण उत्तर है ॥

अथ चन्द्रका सूक्ष्म शर लानेकी रीति लिखते हैं-

नृपातिथिमनुविश्वरुद्रगोऽद्रिश्रुतिवसुधाः शरखण्ड-

कानि तैर्यत् । व्यगुविधुभुजतोऽपमोक्तिवद्वा व्यगु-
विधुदिग्विशिखोऽङ्गुलादिकः स्यात् ॥ १० ॥

अन्वयः—नृपतिथिमनुविश्वरुद्रगोऽद्रिश्रुतिवसुधाः, शरखण्डकानि, (भवन्ति); तैः, व्यगुविधुभुजतः, यत्, अपमोक्तिवत्, (भवति, तत्); अङ्गुलादिकः, व्यगुविधुदिग्विशिखः, भवति; वा ॥ १० ॥

अर्थः—व्यगु विधुके भुजांश करके तिन भुजोंसे नीचे लिखे हुए शराङ्कोंके द्वारा क्रान्ति लावे, परन्तु क्रान्तिलाते समय अन्तमें दशका भाग देना पड़ता है, सो यहाँ दशका भाग न देय, तब वह अंगुलादि शर होता है, वह, व्यगुविधु उत्तरगोलमें होय तो उत्तर और दक्षिण गोलमें होय तो दक्षिण होता है। नृप कहिये १६, तिथि कहिये १५, मनु कहिये १४, विश्व कहिये १३, रुद्र कहिये, ११, गो कहिये ९, अद्रि कहिये ७, श्रुति कहिये ४, और वसुधा कहिये १ यह शरखण्ड (शराङ्क) है ॥ १० ॥

अङ्कसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९
शराङ्क	१६	१५	१४	१३	११	९	७	४	१

उदाहरण.

व्यगुविधु ५ राशि २३ अंश ४५ कला २ विकलाके भुजांश करे तब ६ अंश १४ कला ५८ विकला हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० शून्य, शेष रहे ६ अंश १४ कला ५८ विकला, इसको एकाधिक शराङ्क (एष्यखण्ड) १६ से गुणा करा तब ९९ अंश ५९ कला २८ विकला हुए इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ९ अङ्गुल, ५९ प्र० अं० इसमें लब्धि ० संख्यक शराङ्क ० को युक्त करा तब ९ अङ्गुल ५९ प्रतिअङ्गुल यह चन्द्रशर उत्तर हुआ ॥

अब उदय और अस्त कालके जाननेके लिये यहांके उदयास्तके कालांश लिखते हैं-

भास्करा नगभुवो गुणचन्द्रा भूभुवो दिविसदस्तिथयोऽजात् । प्राक्तनैर्निगदिताः समयांशा वक्रिणो भृगुविदोः क्षितिहीनाः ॥ ११ ॥

अन्वयः-भास्कराः, नगभुवः, गुणचन्द्राः, भूभुवः, दिविसदः, तिथयः, (एते), प्राक्तनैः, अब्जात्, समयांशाः, निगदिताः, वक्रिणोः, भृगुविदोः, क्षितिहीनाः, (भवन्ति) ॥ ११ ॥

अर्थः-भास्करकहिये १२ कालांशोंकरकै चन्द्रमाका उदयास्त होताहै, नगभू कहिये १७ कालांशोंकरके मङ्गलका उदयास्त होताहै, गुणचन्द्र कहिये १३ कालांशोंकरकै बुधका उदयास्त होताहै, भूभू कहिये ११ कालांशोंकरकै गुरुका उदयास्त होताहै, दिविसद कहिये ९ कालांशोंकरके शुक्रका उदयास्त होताहै, और तिथि कहिये १५ कालांशोंकरकै शनिका उदयास्त होताहै, परन्तु यदि बुध और शुक्र यह वक्री हों तो इनके कालांशोंमें एक अंश घटाकर जो बाकी कालांश रहैं तिन कालांशोंकरकै उनका उदय और अस्त होताहै ॥ ११ ॥

ग्रहोंकेनाम	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वक्रीबुध	वक्रीशुक्र
कालांश	१२	१७	१३	११	९	१५	१२	८

अब भौम आदि ग्रहोंके पाताङ्क लानेकी रीति लिखतेहैं-

खाम्बुधयः खयमाः खभुजङ्गाः खाङ्गमिताः खदश क्रमशः स्युः । पातलवाः कुसुताद्बुधभृग्वोर्मध्यमचञ्चलकेन्द्रविहीनाः ॥ १२ ॥

अन्वयः-खाम्बुधयः, खयमाः, खभुजङ्गाः, खाङ्गमिताः, खदश; (एते), क्रमशः, कुसुतात्, पातलवाः, (स्युः); बुधभृग्वोः, मध्यमचञ्चलकेन्द्रविहीनाः, (स्युः) ॥ १२ ॥

अर्थ-खाम्बुधि कहिये ४० मङ्गलके पातांश होतेहैं, खयम कहिये २० बुधके पातांश होतेहैं, खभुजङ्ग कहिये ८० गुरुके पातांश होतेहैं, खाङ्गमित कहिये ६० शुक्रके पातांश होतेहैं, और खदश कहिये १०० शनिके पातांश होतेहैं, और बुध तथा शुक्र इनके जो पातांश कहेहैं वह शीघ्र प्रतिमण्डस्थ हैं, इस कारण क्रमसे उनके जो अहर्गणोत्पन्नशीघ्रकेन्द्रहैं वह ऊपरोक्त पातांशोंमेंसे घटाकर जो शेषरहैं यह बुध और शुक्र इन दोनोंके पातांश होतेहैं ॥ १२ ॥

ग्रहोंकेनाम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पातांश, या संपातांश	४०	२०	८०	६०	१००

अब भौमादि ग्रहोंके शीघ्रकर्ण लानेकी रीति लिखतेहैं–

कुद्वित्र्यब्धियुगाश्विनो दलचयश्चेत्पङ्गुपृष्टं चलं
केन्द्रं चक्रविशुद्धमस्य भमितार्थैक्यं लवघ्नागतात् ।
त्रिंशल्लब्धयुतं कुजात्कुयमलाब्धीन्द्वद्रिभक्तं क्रमा-
त्तद्धीना धृतिरिष्विलागुणभुवो गोऽब्जा इना द्रा-
क्छ्रुतिः ॥ १३ ॥

अन्वयः–कुद्वित्र्यब्धियुगाश्विनः, दलचयः, (स्यात्); चलम्, केन्द्रम्, पङ्गुपृष्टम्, चेत्, (तदा), चक्रविशुद्धम्, (कार्य्यम्); अस्य, भमितार्द्धैक्यम्, लवघ्नागतात्, त्रिंशल्लब्धयुतम्, (कार्य्यम्); (ततः), कुजात्, कुयमलाब्धीन्द्वद्रिभक्तम्, (कार्य्यम्); (तदा, यत्, फलम्, तद्धीनाः), धृतिः, इष्विलाः, गुणभुवः, गोऽब्जाः, इनाः, द्राक्छ्रुतिः, (स्यात्), ॥ १३ ॥

अर्थः–कु–कहिये १, द्वि–कहिये २, त्रि–कहिये ३, अब्धि–कहिये ४, युग–कहिये ४, अश्विन्–कहिये २ दलचय (शीघ्राङ्क समुदाय) है । अभीष्ट ग्रहका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र लेकर वह ६ राशिकी अपेक्षा अधिक होय तो उसको १२ राशिमें घटावे, और उस षड्भाल्प (छः राशिकी अपेक्षा अल्प) केन्द्रकी राशिप्रमाण संख्याके नीचे लिखेहुए शीघ्राङ्कोंका योग लेय और एकाधिक केन्द्रकी राशिपरिमित शीघ्राङ्कसे केन्द्रकी राशिको छोड़कर केवल अंशादिकोंको गुणाकरे, और इस गुणनफलमें तीसका भाग देकर जो लब्धिसे अंशादि हो उसमें शीघ्राङ्कसंख्याका योग युक्त करके अभीष्ट ग्रहके नीचे लिखेहुए भाज्याङ्कका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसको अभीष्ट ग्रहके शीघ्रकर्णाङ्कमें घटावे तब जो शेषरहे वह अंशादि शीघ्रकर्ण होताहै ॥ १३ ॥

संख्या	१	२	३	४	५	६
शीघ्राङ्क	१	२	३	४	४	२

ग्रहोंकेनाम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रहोंकेभाज्याङ्क	१	२	४	१	७
ग्रहोंकेशीघ्रकर्णाङ्क	१८	१५	१३	१०	१२

उदाहरण.

शाके १५३४ वैशाख शुक्ल १५ को मंगलादि ग्रहोंका शीघ्र कर्ण लातेहैं-मंगलका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ३ राशि १ अंश ४ कला ५७ विकला, यह छः राशिकी अपेक्षा अल्पहै, इसकी राशि ३ परिमित संख्याके नीचेके शीघ्राङ्कों-का योग हुआ ६, और एकाधिक शीघ्राङ्क हुआ ४, अब राशिरहित केन्द्रके केवल अंशादिकों १ अंश ४ कला ५७ विकलाको गुणाकरा तब ४ अंश १९ कला ४८ विकला हुआ, इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ८ कला ३८ विकला हुआ, इसमें शीघ्राङ्कोंकी संख्याके योग ६ को युक्त करा तब ६ अंश ८ कला ३९ विकला हुआ इसमें भौम भाज्यांक १ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ अंश ८ कला ३९ विकला, इसको मंगलके शीघ्रकर्णाङ्क १८मेंसे घटाया तब शेष रहे ११ अंश ५१ कला २१ विकला, यह मंगलका शीघ्रकर्ण हुआ।

इसी प्रकार अन्य ग्रहोंके शीघ्र कर्ण लावैं सो यहाँ ग्रहोंके द्वितीय शीघ्रकेन्द्र और शीघ्रकर्ण लिखतेहैं-

	रा० अं० क० वि०		अं० क० वि०
बुधका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	१—१६—२५—२७—	शीघ्रकर्ण	१३—५७—१०
गुरुका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	८—२१—१०—५८—	"	११—१२—४२
शुक्रका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	३—४—२६—५२—	"	१२—२४—२
शनिका द्वितीय शीघ्रकेन्द्र	२—२२—५५—०—	"	११—२३—१८

भौमादि ग्रहोंके शर और स्पष्ट क्रान्ति लानेकी रीति लिखतेहैं-

मन्दस्पष्टखगात्स्वपातरहितात्क्रान्त्यंशकाः केवला त्कर्णाप्तास्त्रियमाहता अथ गुरोश्चेल्लोचनाप्ताः पुनः। स्वाङ्गघ्नूना असृजोङ्गुलादिकशरः पातोनदिक्स्या-दसौ त्रिघ्नः स्यात्कलिकादिकः स्फुटतरस्ततसं-स्कृतश्चापमः ॥ १४ ॥

अन्वयः-स्वपातरहितात्, मन्दस्पष्टखगात्, केवलात्, क्रान्त्यंश-काः, (साध्याः), (ते), त्रियमाहताः, (ततः), कर्णाप्ताः,(कार्य्याः); अथ, गुरोः, चेत, (तर्हि), लोचनाप्ताः, (कार्य्याः); असृजः, (चेत्), तर्हि, दृग्याप्ताः), पुनः, स्वाङ्गघ्नूनाः, (सन्तः), पातोनदिक्, अङ्गु-

लादिकशरः, स्यात्, असौ, त्रिघ्नः, कलिकादिकः, (स्यात्), तत्संस्कृतः, च, अपमः, स्फुटतरः, (भवति) ॥ १४ ॥

अर्थः-मन्द स्पष्ट ग्रहमेंसे अभीष्ट ग्रहके पातांश घटावै, तब पातोन-ग्रह होताहै, तदनन्तर पातोन ग्रहमें अयनांश न देकर उससे क्रान्तिके अंश साधै, और उसको तेईससे गुणाकरके शीघ्र कर्णका भागदेय, तब अभीष्ट ग्रहका अंगुलादि शर होता है वह पातोनग्रह उत्तरगोलीय होय तौ उत्तर और दक्षिणगोलीय होय तौ दक्षिण होताहै; परन्तु गुरुका शर साधते समय पूर्वोक्त रीतिसे लाएहुए शरमें दोका भागदेय, और मंगलका शर लाते समय पूर्वोक्त रीतिसे लाएहुए शरको तीनसे गुणाकरके चारका भागदेय, (परन्तु जब मंगलका शीघ्रकर्ण ग्यारह अंशकी अपेक्षा होय तौ ठीक शर लानेके निमित्त उस शरमेंभी फिर दोका भागदेय)। अभीष्ट ग्रहकी क्रान्ति लाकर उसको, और अभीष्ट ग्रहके अङ्गुलादिक त्रिगुणित शरको कलादि मानकर उसका संस्कार करै, तब अभीष्ट ग्रहकी स्पष्ट क्रान्ति होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण.

मन्द स्पष्ट भौम १० राशि ३ अंश ८ कला ४५ विकलामें भौम पातांश ४० अंश अर्थात् १ राशि १० अंशको घटाया तब शेषरहे ८ राशि २३ अंश ८ कला ४५ विकला, यह पातोन मंगल हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति २३ अंश ४३ कला ३३ विकलाको २३ से गुणाकरा तब ५४५ अंश ४१ कला ३९ विकला हुआ, इसमें भौम शीघ्रकर्ण ११ अंश ५१ कला २२ विकलाका भागदिया तब लब्धि हुई ४६ अंश १ कला ३८ विकला, यह भौमका अंगुलादिशर हुआ इस कारण ४६ अंश १ कला ३८ विकला, इसको ३ से गुणाकरा तब १३८ अंश ४ कला ५४ विकला हुआ इसमें ४ का भागदिया तब लब्धि हुई ३४ अंगुल ३१ प्रति-अङ्गुल यह मंगलका शर हुआ, यह पातोन मंगलके दक्षिणगोलीय होनेके कारण दक्षिण है ॥

मन्दस्पष्ट बुध १ राशि ५ अंश ३ कला १५ विकला, राश्यादि पातांश ० राशि २० अंश ० कला ० विकला इसमें अहर्गणोत्पन्न शीघ्रकेन्द्र १ राशि १७ अंश १४ कला ५० विकलाको घटाया तब शेषरहा ११ राशि २ अंश ४५ कला १० विकला, इसको मन्दस्पष्ट बुध १ राशि ५ अंश ३ कला १५ विकलामें घटाया तब २ राशि २ अंश १८ कला ५ विकला यह शेषरहा यही पातोन बुध हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति २१ अंश ० कला ५१ विकलाको २३ से गुणाकरा तब ४८३ अंश १९ कला ३३ विकला हुआ, इसमें बुध शीघ्रकर्ण १३ अंश ५७ कला १० विकलाका भागदिया तब लब्धि हुई ३४ अङ्गुल २८ प्रति-अङ्गुल यह बुधका अङ्गुलादि शर हुआ, यह, पातोन बुधके उत्तरगोलीय होनेके कारण उत्तर है ॥

मन्दस्पष्ट गुरु ४ राशि १२ अंश ५२ कला ४४ विकलामें गुरुपातांश ८० अंश, अर्थात् २ राशि २० अंशको घटाया तब शेषरहे १ राशि २२ अंश ५२ कला ४४ विकला, यह पातोन गुरु हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति १८ अंश ४९ कला ११ विकलाको २३ से गुणाकरा तब ४२२ अंश ५१ कला १३ विकला हुआ, इसमें गुरुके शीघ्रकर्ण ११ अंश १२ कला ४२ विकलाका भागदिया तब ३८ अङ्गुल ३६ प्रतिअङ्गुल लब्धि हुई इसकारण ३८ अङ्गुल ३६ प्रतिअङ्गुलमें २ का भागदिया तब लब्धिहुई १९ अङ्गुल १८ प्रतिअङ्गुल यह गुरु अङ्गुलादि शर हुआ, यह शर पातोन गुरुके उत्तर गोलीय होनेके कारण उत्तर है॥

मन्दस्पष्ट शुक्र १ राशि ५ अंश २५ कला २५ विकला, राश्यादि पात २ राशि ० अंश ० कला ० विकलामें अहर्गणोत्पन्न शीघ्रकेन्द्र ३ राशि ५ अंश ४१ कला ३५ विकलाको घटाया तब शेषरहा १० राशि २४ अंश १८ कला २५ विकला, यह शुक्रपातांश हुआ, इसको मन्दस्पष्ट शुक्र १ राशि ५ अंश २५ कला २५ विकलामें घटाया तब शेषरहा २ राशि ११ अंश ७ कला ० विकला, यह पातोन शुक्र हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति २२ अंश ३२ कला २ विकलाको २३ से गुणाकरा तब ५१८ अंश १६ कला ४६ विकला हुआ, इसमें शुक्रके शीघ्रकर्ण १२ अंश २४ कला २ विकलाका भागदिया तब लब्धि हुई ४१ अङ्गुल ४७ प्रतिअङ्गुल यह शुक्रका शर, पातोन शुक्रके उत्तर-गोलीय होनेके कारण उत्तर है॥

मन्दस्पष्ट शनि १० राशि २१ अंश २३ कला ४२ विकलामें शनिके पातांश १०० अंश अर्थात् ३ राशि १० अंशको घटाया तब शेषरहे ७ राशि ११ अंश २३ कला ४२ विकला, यह पातोन शनि हुआ इससे लाईहुई क्रान्ति १५ अंश ३१ कला ६ विकलाको २३ से गुणाकरा तब ३५६ अंश ५५ कला १८ विकला हुआ, इसमें शनिके शीघ्रकर्ण ११ अंश २३ कला १८ विकलाका भागदिया तब अङ्गुलादि लब्धिहुई ३१ अङ्गुल २० प्रतिअङ्गुल यह शनिका शर, पातोन शनिके दक्षिणगोलीय होनेके कारण दक्षिण है॥

अब स्पष्ट क्रान्तिसाधन लिखते हैं-

स्पष्ट मङ्गल ११ राशि ५ अंश ५६ कला ४ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्तकरा तब ११ राशि २४ अंश ६ कला ४ विकला, यह सायन मंगल हुआ, इससे सायन मंगलसे लाईहुई क्रान्ति दक्षिण २ अंश २१ कला ३४ विकलामें शर दक्षिण ३४ अङ्गुल ३१ प्रतिअङ्गुलको ३ से गुणाकरके १ अंश ४३ कला ३३ विकला युक्तकरा तब ४ अंश ५ कला ७ विकला, यह मंग-लकी दक्षिण स्पष्ट क्रान्ति हुई॥

स्पष्ट बुध १ राशि १७ अंश ४ कला ० विकलामें अयनांश १८ अंश १० कला युक्तकरे तब २ राशि ५ अंश १४ कला ० विकला यह सायन बुध हुआ,

इस सायन बुधसे लाईहुई क्रान्ति उत्तर २१ अंश ३२ कला ३१ विकलामें शर उत्तर ३४ अंगुल ३८ प्रतिअंगुलको ३ से गुणाकरके १ अंश ४३ कला ५४ विकलाको युक्तकरा तब २३ अंश १६ कला २६ विकला यह बुधकी स्पष्ट क्रान्ति उत्तर हुई ॥

स्पष्ट गुरु ४ राशि २ अंश ९ कला ४९ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्तकरा तब ४ राशि २० अंश १९ कला ४९ विकला, यह सायन गुरु हुआ, इस सायन गुरुसे लाईहुई क्रान्ति उत्तर १४ अंश ५९ कला १९ विकलामें शर उत्तर १९ अंगुल १८ प्रतिअंगुलको ३ से गुणाकरके ५७ कला ५४ विकला युक्तकरा तब १५ अंश ५७ कला १३ विकला, यह गुरुकी स्पष्ट क्रान्ति उत्तरहुई ॥

स्पष्ट शुक्र २ राशि १२ अंश १५ कला ४६ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्तकरा तब ३ राशि ० अंश २५ कला ४६ विकला यह सायन शुक्र हुआ, इस सायन शुक्रसे लाईहुई क्रान्ति उत्तर २३ अंश ५८ कला ५८ विकलामें शर उत्तर ४१ अंगुल ४७ प्रतिअंगुलको ३ से गुणाकरके २ अंश ५ कला २१ विकला, युक्तकरा तब २६ अंश ४ कला १९ विकला यह शुक्रकी स्पष्टक्रान्ति उत्तरहुई ॥

स्पष्ट शनि १० राशि २६ अंश ४२ कला ३० विकलामें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्तकरा तब ११ राशि १४ अंश ५२ कला ३० विकला यह सायन शनि हुआ, इस सायन शनिसे लाईहुई क्रान्ति दक्षिण ६ अंश ३ कला ० विकलामें शर दक्षिण ३१ अंगुल २० प्रतिअंगुलको ३ से गुणाकरके १ अंश ३४ कला ० विकला युक्तकरा तब ७ अंश ३७ कला ० विकला यह शनिकी स्पष्ट क्रान्ति दक्षिण हुई ॥

अब पश्चाङ्गमें स्थित स्पष्टग्रह और वक्रास्तादि दिनोंसे इष्टदिनके विषै मन्दस्पष्ट ग्रहसाधनकी रीति लिखतेहैं-

वक्रास्ताद्यं तिथिपटगतं तद्दिनेऽस्योक्तकेन्द्रं स्यात्त-
च्चाल्यं त्वभिमतदिने स्वाशुकेन्द्रोक्तगत्या। तस्मा-
त्प्राग्वच्चलफलमिदं चालितस्पष्टखेटे व्यस्तं देयं
मृदुजफलभाक्स्यात्ततो वा शराद्यम् ॥ १८ ॥

अन्वयः-तिथिपटगतम्, वक्रास्ताद्यम्, तद्दिने, अस्य, उक्तकेन्द्रम्, स्यात्; तत्, तु, अभिमतदिने, स्वाशुकेन्द्रोक्तगत्या, चाल्यम्; तस्मात्, प्राग्वत्, चलफलम्, साध्यम्; इदम्, चालितस्पष्टखेटे, व्यस्तम्,

देयम्; (सः), मृदुजफलभाक्, (भवति); ततः, वा, शराद्यम्, (साध्यम्) ॥ १५ ॥

अर्थः-तिथिपत्र कहिये पञ्चाङ्गके विषे जिसदिन अभीष्ट ग्रहका वक्रास्तादिक लिखाहो तिसदिन अभीष्ट ग्रहोंके वक्रास्तादिकके पश्चतारास्पष्टाधिकारमें कहेहुए द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशको लेकर उनमें शीघ्रकेन्द्रांकी गतिकरके, अभीष्ट दिन और वक्रास्तादिकका दिन इन दोनोंके मध्यमें जो दिनहों उन दिनोंका चालन देय, तब अभीष्ट दिनके विषे द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश होतेहैं, तदनन्तर तिस द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशसे द्वितीय शीघ्रफल लावै, फिर पञ्चाङ्गमेंके अभीष्ट ग्रहको उसकीही गतिकरकै लाएहुए अन्तरित दिनोंका चालनदेय तब इष्टदिनमेंका स्पष्ट ग्रह होताहै, (परन्तु यदि इष्टदिन पञ्चाङ्गस्थदिनके पहिले होय तो चालन ऋणकरै, और पञ्चाङ्गस्थ दिनके अनन्तर इष्टदिन होय तो चालन ऋणकरै) तिस स्पष्टग्रहमें द्वितीय शीघ्रफल धन होयतो ऋणकरै, और ऋण होय तो धनकरै तब मन्दस्पष्ट ग्रह होताहै, फिर तिस मन्दस्पष्ट ग्रहसे शरआदि लावै ॥ १५ ॥

अब दृक्कर्म साधनके निमित्त नतांशसाधन लिखतेहैं-

प्राक्त्रिभेणवर्जितात्संयुतात्तु पश्चिमे । खेटतोपमाक्षयोः संस्कृतिर्नतालवाः ॥ १६ ॥ षट्शैलाष्टनवार्कधृत्यदितिजाः खण्डानि कार्य्यं नतांशांशांशभमखण्डकैक्यमगतोच्छिष्टांशघाताद्युतम् ।आशाप्त्यारविहृच्छराङ्गुलहतं लिप्ताग्रहेता नतांशेष्वोः स्वर्णमभिन्नभिन्नदिशि सव्यस्तं परे दृग्ग्रहः ॥ १७ ॥

अन्वयः-भाक्, त्रिभेण, वर्जितात्, पश्चिमे, तु, संयुतात्, खेटतः, क्रान्तिः, (साध्या); अपमाक्षयोः, संस्कृतिः, नताः, लवाः, (स्युः); ॥ १६ ॥ षट्शैलाष्टनवार्कधृत्यदितिजाः (एतानि), खण्डानि, नतांशांशांशभमखण्डकैक्यम्, कार्य्यम्; अगतोच्छिष्टांशघातात्, आशाप्त्या, युतम्; शराङ्गुलहतम्, रविहृत्, लिप्ताः, (भवंति); ताः, नतांशेष्वोः, अभिन्नभिन्नदिशि, ग्रहे, स्वर्णम्, (देयाः, परे, व्यस्तम्, (देयाः); सः, दृग्ग्रहः, (भवति) ॥ १७ ॥

अर्थः-ग्रहोंका उदयास्त पूर्वदिशाके विषें होयतौ तिस स्पष्ट ग्रहमेंसे तीन राशि घटादेय, और यदि उदयास्त पश्चिम दिशाके विषें होय तौ तिस ग्रहमें तीनराशि युक्तकरदेय, फिर तिससे क्रान्ति लाकर उस क्रान्तिका और अक्षांशोंका संस्कारकरै, तब नतांश होतेहैं ॥ १६ ॥ तदनन्तर तिन नतांशोंमें दशका भागदेकर जो लब्धि होय तिस लब्धिपरिमित नीचे लिखेहुए "षट्-कहिये ६, शैल-कहिये ७, अष्ट-कहिये ८, नव-कहिये ९, अर्क-कहिये १२, धृति-कहिये १८, और अदितिज-कहिये ३३," इनमेंके अंकोंका योगलेय, और आगेके अङ्कसे अंशादि शेषको गुणाकरके दशका भागदेकर जो अंशादि लब्धि होय उसको अंकोंके योगमें युक्त करदेय, तब जो अङ्कयोग होय उसको शराङ्गुलोंसे गुणा करके बारहका भाग देय, तब दृक्कर्म्म कला होती हैं, तदनन्तर नतांश और शर यह एक दिशाके होयँ तौ तिन दृक्कर्म्मकलाओंको स्पष्ट ग्रहमें युक्त करदेय और नतांश तथा शर भिन्न दिशाके होयँ तौ तिन दृक्कर्म्मकलाओंको स्पष्ट ग्रहमेंसे घटादेय तब दृक्कर्म्मदत्त ग्रह होताहै। परन्तु वेध सुर्य्यास्तके अनन्तर होयतौ नतांश और शर इन दोनोंके एक दिशाके होनेपर दृक्कर्मकलाओंको स्पष्ट ग्रहमेंसे घटावे, और भिन्न दिशाके होनेपर स्पष्ट ग्रहमें युक्त करदेय तब दृक्कर्म्मदत्त ग्रह होताहै ॥ १७ ॥

अंकसंख्या	१	२	३	४	५	६	७
दृक्कर्म्माङ्क	६	७	८	९	१२	१८	३३

उदाहरण.

शाके १५३२ चैत्र शुक्ला ५ गुरुवारके दिन शुक्रके पूर्वास्तका गणित-चक्र ८ अहर्गण ७४७ मध्यम रवि ११ राशि २१ अंश २२ कला १७ विकला, रविकेन्द्र २ राशि २६ अंश ३७ कला ४३ विकला, मन्द फल धन २ अंश १० कला ३१विकला, मन्द स्पष्ट रवि ११ राशि २३ अंश ३२ कला ४८ विकला, चर ऋण २२ विकला, स्पष्ट रवि ११ राशि २३ अंश ३२ कला २६ विकला, रवि स्पष्ट गति ५९ कला ० विकला, शुक्रका शीघ्रकेन्द्र ११ राशि ८ अंश ३१ कला ५२ विकला, शीघ्र फलार्द्ध ऋण ० अंश ४ कला ३० विकला, शीघ्र फलदल स्पष्ट शुक्र ११ राशि १६ अंश ५७ कला ४५ विकला, मन्दकेन्द्र ३ राशि १३अंश ८ कला १३ विकला, मन्द फल धन १ अंश ३० कला ० विकला, मन्द स्पष्ट शुक्र ११ राशि २२ अंश ५२ कला १७ विकला, द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ११ राशि ७ अंश १ कला ५२ विकला, शीघ्र फल ऋण ९ अंश ७ कला ४८ विकला, स्पष्ट शुक्र ११ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकला, स्पष्ट गति ७४ कला ५४विकला शुक्र शीघ्र कर्ण १८ अंश १४ कला ४ विकला, क्रान्ति उत्तर २३ अंश ५६ कला

३८ विकला, शरदक्षिण ३० अङ्गुल १२ प्रतिअङ्गुल, अब दृक्कर्म कला साधते हैं- शुक्रका पूर्वास्त है इस कारण स्पष्ट शुक्र ११ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकलामें ३ राशि घटाई तब शेष रहे ८ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकला, इससे लाई हुई क्रान्ति दक्षिण २३अंश ५६कला ४२विकला इसमें अक्षांशों २५ अंश २६ कला ४२ विकलाको युक्त करा तब नतांश दक्षिण ४९ अंश २३ कला २४ विकला हुए फिर नतांशों ४९ अंश २३ कला २४ विकलामें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ और शेष रहे ९ अंश २३ कला २४ विकला इसकारण पहिले चार दृक्कर्माङ्कोंका योग ३० और पाँचवे अंक १२ से शेष ९ अंश २३ कला २४ विकलाको गुणा करा तब ११२ अंश ४० कला ४८ विकला हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंश १६ कला ४ विकला इसमें पहिले दृक्कर्माङ्क योग ३० को युक्त करा तब ४१ अंश १६ कला ४ विकला हुआ इसको शराङ्गुलों ३० अङ्गुल १२ प्रतिअङ्गुलसे गुणा करा तब १२४६ अंश २० कला ३९ विकला हुआ इसमें १२ का भाग दिया तब लब्धि हुई कलादि दृक्कर्म १०३ कला ५१ विकला यह दृक्कर्म कला हुई अब नतांश और शर दोनोंकी एक दिशा है इसकारण दृक्कर्म कला १०३ कला ५१विकला अर्थात् १ अंश ४३ कला ५१ विकलाको स्पष्ट शुक्र ११ राशि १३ अंश १४ कला २९ विकलामें युक्त करा तब ११ राशि १४ अंश ५८ कला २० विकला यह दृक्कर्मदत्त शुक्र हुआ ॥

अब ग्रहका उदयास्त दिन जाननेके निमित्त गतगम्यलक्षण कहते हैं-

कल्प्योऽल्पोरविरर्कदृक्खचरयोरन्यश्च लग्नं तयो-
र्मध्येस्युर्घटिकाश्च पूर्ववदिमाः पश्चात्स चक्रार्द्धयोः।
षड्घ्नाः काललवा अमीभिरधिकैर्गम्योऽस्त ऊनैर्ग-
तः प्रोक्तेभ्योऽभ्यधिकैर्गतः समुदयो न्यूनैस्तु गम्यो
भवेत् ॥ १८ ॥

अन्वयः—रविः अर्कदृक्खचरयोः, अल्पः, कल्प्यः, (यः,) अन्यः, च, (तस्य,) लग्नम्, (कल्प्यम्,) तयोः, मध्ये, च, (अयनांशान्, दत्वा,) पूर्ववत् (कालः, साध्यः,) पश्चात्, चक्रार्द्धयोः, सः, (साध्यः,) इमाः, घटिकाः, च, षड्घ्नाः, काललवाः, स्युः, अमीभिः अधिकैः, अस्तः, गम्यः, ऊनैः, गतः, (भवेत्) समुदयः, (तु,) प्रोक्तेभ्यः, अभ्यधिकैः, गतः, न्यूनैः, गम्यः भवेत् ॥ १८ ॥

अर्थः—स्पष्ट सूर्य्य और दृक्कर्म्मदत्त ग्रह इन दोनोंमें जो कम होय उसको रवि और जो अधिक होय उसको लग्न समझकर तिस सूर्य्य लग्नसे त्रिप्रश्नाधिकारमें कहीहुई रीतिके अनुसार अभीष्ट काल साधै, परन्तु पश्चिमोदयास्त साधनमें लग्न और रवि इन दोनोंमें छः राशि मिलाकर तदनन्तर अभीष्ट काल साधै, फिर तिस घटिकात्मक कालको छःसे गुणा करै तब इष्ट कालांश होताहै, यह अभीष्ट ग्रहके पहिले कहेहुए कलांशोंकी अपेक्षा अधिक होय तौ अभीष्ट ग्रहका अस्त होयगा, और यह पूर्वोक्त कालांशोंकी अपेक्षा कम होय तौ अस्त होगयाहै ऐसा जानै, उदयके विषयमें विपरीत होताहै. अर्थात् यदि इष्ट कालांशप्रोक्त कालांशोंकी अपेक्षा कम होय तौ उदय होयगा, और अधिक होय तौ उदय होगया ऐसा जानै ॥ १८ ॥

उदाहरण.

स्पष्ट सूर्य्य ११ राशि २३ अंश ३२ कला २६ विकला, और दृक्कर्म्मदत्त शुक्र ११ राशि १४ अंश ५८ कला २० विकला, इन दोनोंमें सूर्य्य अधिक है इस कारण ११ राशि २३ अंश ३२ कला २६ विकला, यह लग्न है, और ११ राशि १४ अंश ५८ कला २० विकला यह सूर्य्य है, इन दोनोंमें अयनांश १८ अंश १० कला मिलाकर ० राशि ३ अंश ६ कला २० विकला यह सायन रवि हुआ, और ० राशि ११ अंश ४० कला २६ विकला यह सायन लग्न हुआ,अब सायन रवि और सायन लग्न यह दोनों एकराशिक हैं इस कारण इन दोनोंका अन्तर ८ अंश ३४ कला ६ विकला हुआ इससे मेषोदय २२१ को गुणाकरा तब १८९२ अंश ३६ कला ६ विकला हुआ, इसमें ३० का भाग दिया तब लब्धि हुई ६३ पल अर्थात् १ घटी ३ पल यह अभीष्ट काल हुआ इस कारण इसको ६ से गुणाकरा तब ६ अंश १८ कला यह इष्ट कालांश हुए ॥

अब दिन लानेकी रीति लिखतेहैं—

खाभ्राग्निभिर्विनिहिताः कथितेष्टकालभागान्तरस्य कलिका रविभोदयाप्ताः । तत्सप्तमेन परतोऽथ जवान्तराप्ता योगेन वक्रिणि दिनान्युदयास्तयोः स्युः ॥ १९ ॥

अन्वयः—कथितेष्टकालभागान्तरस्य, कलिकाः, खाभ्राग्निभिः, विनिहिताः, (ततः), रविभोदयाप्ताः, अथ, परतः, तत्सप्तमेन, (भक्ताः, ततः), जवान्तरेण, (भक्ताः), वक्रिणि, (ग्रहे), योगेन, (भक्ताः), उदयास्तयोः, दिनानि, स्युः ॥ १९ ॥

अर्थः-अभीष्ट ग्रहके कहेहुए कालांश और इष्ट कालांश इन दोनोंका जो अन्तर होय उसकी कला करके तीनसौसे गुणाकरे और तिस गुणनफलमें सायन रविके पलात्मक उदयका भागदेय. परन्तु पश्चिमोदयास्त साधनके विषैं सायन सूर्य्यमें छः राशि मिलाकर उसके पलात्मक उदयका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें फिर रवि और ग्रह इन दोनोंकी गतिके अन्तरका भाग देय, परन्तु ग्रह वक्री होय तो लब्धिमें रवि और ग्रह इन दोनोंकी गतिके योगका भाग देय, तब उदयके अथवा अस्तके दिन होतेहैं ॥ १९ ॥

उदाहरण.

शुक्रके कहेहुए स्पष्ट कालांश ६ अंश ४६ कला और इष्ट कालांश ६ अंश १८ कला, इन दोनोंके अन्तर करनेसे कालांश रहे २८ कला, इनको ३०० से गुणाकरा तब ८४०० हुए, इसमें सायन सूर्य्यके उदय २२१ का भाग दिया तब लब्धि हुई ३८ कला ० विकला ३२ प्रतिविकला इसमें शुक्रगति ७४कला ५४ विकला और रविगति ५९ कला इन दोनोंके अन्तर १५ कला ५४ विकला का भाग दिया तब लब्धि हुई २ दिन २३ घटी ३४ पल इतने दिन होगये तब शुक्रका अस्तहो चुका ॥

अब ग्रन्थकारने शुक्र और चन्द्रमाके कालांशोंका संस्कार कहाहै सो लिखते हैं-

स्यात्खाभ्राग्न्युदयान्तरं भविहृतं स्वर्णं पृथूनोदये
यत्तत्संस्कृतदृष्टिकर्म्मलवतः प्राणांशसंस्कारिताः।
पूर्वोक्ताभृगुचन्द्रयोः क्षणलवाः स्पष्टा भृगोश्चोनिता
द्वाभ्यां तैरुदयास्तदृष्टिसमता स्याल्लक्षितैषा मया॥२०॥

अन्वयः-खाभ्राग्न्युदयान्तरम्, भविहृतम्, (सत्), यत्, (फलम्), स्यात्, (तत्), पृथूनोदये, स्वर्णम्, (कार्य्यम्); तत्संस्कृतदृष्टिकर्म्मलवतः, प्राणांशसंस्कारिताः, भृगुचन्द्रयोः, पूर्वोक्ताः, क्षणलवाः, स्पष्टाः, (स्युः), भृगोः, च, द्वाभ्याम्, ऊनिताः, (कार्य्याः), तैः, (शुक्रचन्द्रयोः), उदयास्तदृष्टिसमता, स्यात्, एषा, मया, लक्षिता२०॥

अर्थः-चन्द्रमा और शुक्र इन दोनोंके पूर्व कहेहुए कालांशोंका एक विशेष संस्कार किया जाताहै, वह यह है कि-ग्रहोंका पलात्मक उदय और तीनसौ पल इन दोनोंका अन्तर करके ग्यारहसका भागदेय, तब अंशादि

लब्धि मिले वह यदि पलात्मक उदय (तीनसौ पल)की अपेक्षा अधिक होय तौ धन और कम होय तौ ऋण जानै, तदनन्तर अंशादि लब्धि और दृक्कर्म्मकलाओंका संस्कार करै (अर्थात् दृक्कर्म्मकला ग्रहमें मिली हो तौ धन और घटाई हुई हौ तौ ऋण जानै) और जो धन ऋणात्मक आवै उसमें पाँचका भागदेय, और अंशादि धनऋणात्मक लब्धिको पूर्वोक्त कालांशों-में धन ऋणकरै, तब चन्द्रमाके स्पष्ट कालांश होतेहैं, इस रीतिसे लाए हुए स्पष्ट कालांशोंमेंसे दो अंश घटादेनेसे शुक्रके स्पष्ट कालांश होतेहैं यह कालांश और इष्ट कालांश इनसे पूर्वोक्त रीतिसे अस्तोदयके गत. गम्य लक्षण जानै ॥ २० ॥

उदाहरण.

अब शुक्रके विषयमें गणित करनाहै इस कारण शुक्रके (मेषोदय) उदय २२१ और ३०० का अन्तर करा तब ७९ हुए, इसमें २७ का भाग दिया तब लब्धि हुई २ अंश ५५ कला ३३ विकला, यह लब्धि उदय ३०० की अ-पेक्षा कम है इस कारण ऋण है, अब दृक्कर्म्मकला १०३ कला ५१ विकला अर्थात् १ अंश ४३ कला ५१ विकलामें लब्धि २ अंश ५५ कला ३३ विकला-को ऋण करा तब (ऋण) १ अंश ११ कला ४२ विकला रहा, इसमें ५ का भाग देनेसे लब्धि हुई ऋण ० अंश ४४ कला, इसको शुक्रके पूर्वोक्त कालांशों ९ में घटाकर शेषरहे ८ अंश ४६ कला इसमें २ अंश घटाए तब शेष रहे ६ अं ४६ कला यह शुक्रके स्पष्ट कालांश हुएइसकी अपेक्षा इष्ट कालांश ६ अंश १८ कला कमहैं इस कारण अस्त होगया ॥

अब अगस्त्यके उदय और अस्तको जाननेकी रीति लिखतेहैं-

पलभाष्टवधोनसंयुता गजशैला वसुखेचरा लवाः । इह तावति भास्करे क्रमाद्घटजोऽस्तं ह्युदयं च गच्छति ॥ २१ ॥

अन्वयः-गजशैलाः, वसुखेचराः, लवाः, पलभाष्टवधोनसंयुताः, (कार्य्याः), तावति, भास्करे (सति), इह, क्रमात्, घटजः, हि, अस्तम्, उदयम्, च, गच्छति ॥ २१ ॥

अर्थ-पलभाको आठसे गुणाकरकै जो अंशादि गुणन फल होय उसको अठत्तर अंशोंमें घटावै तब जो शेष रहै उतनेही अंशोंपर रवि जिससमय आ-वैगा उससमय अगस्त्यका अस्त होयगा, और उस अंशादि गुणनफलको अ-

छाणवे अंशोंमें युक्तकरदेय तब जो अङ्कयोग होय उतनेही अंशोंपर रवि जिस समय आवै तबही अगस्त्यका उदय होयगा ॥ २१ ॥

उदाहरण.

पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ८ से गुणाकरा तब ४६ अंगुल हुए इस गुणनफल ४६ को ७८ अंशमें घटाया तब शेषरहे ३२ अंश अर्थात् १ राशि २ अंशपर रवि आवैगा तब अगस्त्यका अस्त होयगा, और पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलको ८ से गुणाकरके ४६ अंगुल ९८ अंशमें युक्तकरा तब १४४ अंश अर्थात् ४ राशि २४ अंशपर रवि आवैगा तब अगस्त्यका उदयँ होयगा। (इतना ध्यान रखना चाहियें कि १ राशि २ अंशपर रवि, मेमहीनेकी १५ तारीखको होताहै इसकारण उसदिनही अगस्त्यका अस्त होताहै। और ४ राशि २४ अंशपर रवि सितम्बर महीनेकी ८ तारीखको होताहै इसकारण उसदिनही अगस्त्यका उदय होताहै, यह उदाहरण श्रीकाशी क्षेत्रका है इस कारण ऐसा तहाँही दृष्टिगोचर होगा अन्यत्र कुछ अन्तर पड़ैगा) ॥

अब ग्रहका नित्य उदयास्त जाननेकी रीति लिखतेहैं-

खेचरोऽर्कास्तकाले सषड्भार्कतो योऽधिकोऽल्पोऽर्कतो निश्युदेतीह सः। अस्तमेत्यन्यथाथो विधेयः क्रमात्पूर्वपश्चात्स्थदृक्कर्म्मभाक्स ग्रहः ॥ २२ ॥

अन्वयः-अर्कास्तकाले, यः, खेचरः, सषड्भार्कतः, अधिकः, (वा, यः, केवलात्,), अर्कतः, अल्पः, सः, इह, निशि, उदेति, अन्यथा, अस्तम्, एति, अथो, सः, ग्रहः, क्रमात्, पूर्वपश्चात्स्थदृक्कर्म्मभाक्, विधेयः ॥ २२ ॥

अर्थः-सायंकालके समय स्पष्ट सूर्य्य और स्पष्ट ग्रहकरै, फिर यदि वह स्पष्टग्रह छः राशिकरके युक्त स्पष्ट सूर्य्यसे अधिक होय, अथवा केवल स्पष्ट सूर्य्यसे कमहोय तो उस ग्रहका रात्रिके समय उदय होताहै। और यदि वह स्पष्टग्रह षड्राशियुक्त सूर्य्यसे कम और स्पष्ट सूर्य्यसे अधिक होय तौ रात्रिमें अस्त होताहै। फिर रात्रिमें उसग्रहका उदय होयं तौ उसको पूर्व दृक्कर्म्मसंस्कृत करै (पूर्वदृक्कर्म्मसंस्कृत वह कहाताहै जो दृक्कर्म्मसंस्कृत पूर्वोदयास्त साधनकी रीतिसे लाया जाताहै,) और रात्रिमें उस ग्रहका अस्त होय तौ उसको पश्चिम दृक्कर्म्मसंस्कृत करै पश्चिम दृक्कर्म्मसंस्कृत वह कहाताहै जो दृक्कर्म्मसंस्कृत ग्रह पश्चिमोदयास्त साधनकी रीतिसे लायाजाताहै ॥ २२ ॥

उदाहरण.

शाके १४३४ वैशाख शुक्ला १५ के दिनरात्रिके समय गुरुके अस्तका गणित करतेहैं–प्रातःकालीन ग्रह स्पष्ट रवि १ राशि ५ अंश ४२ कला ३७ विकला, स्पष्टगति ५७ कला २६ विकला, स्पष्टगुरु ४ राशि २ अंश ९ कला ४९ विकला, स्पष्टगति ५ कला २२ विकला, मन्दस्पष्ट गुरु ४ राशि १४ अंश ५२ कला ४४ विकला, मन्दस्पष्टगति ४ कला ४२ विकला, दिनमान ३३ घटी ६ पल, अब सायंकालीन रवि १ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकला, गुरु ४ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला, मन्दस्पष्ट गुरु ४ राशि १२ अंश ५५ कला १९ विकलामें गुरुपात २ राशि २० अंशको घटाया तब शेषरहा १ राशि २२ अंश ५५ कला १९ विकला, इससे लाईहुई क्रान्ति १८। ४९। ४९. शीघ्रकर्ण ११ अंश १२ कला ४२ विकला, अंगुलादि गुरुशर उत्तर १९ अंगुल १८ प्रतिअंगुल ५२ तत्प्रतिअंगुल, अब गुरु ४ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला षड्राशियुक्त रवि ७ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकलाकी अपेक्षा कम है, और स्पष्ट रवि १ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकलाकी अपेक्षा अधिक है, इसकारण रात्रिमें गुरुका अस्त होयगा, । गुरु ४ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकलामें ३ राशि युक्तकरी तब ७ राशि २ अंश १२ कला ४६ विकला हुआ, इससे लाईहुई क्रान्ति दक्षिण १८ अंश ११ कला ४१ विकला, नतांश दक्षिण ४३ अंश ३८ कला २३ विकला. दृक्कर्मकला धन ५५ कला १८ विकला, दृक्कर्मदत्त गुरु ४ राशि ३ अंश ८ कला ४ विकला ॥

अब रात्रिके समय ग्रहके उदय और अस्तकी गतघटिका जाननेकी रीति लिखतेहैं–

उद्गमे यातकालः खगात्त्वस्तके षड्भयुक्तात्सषड्भार्कभोग्यान्वितः। युक्तमध्योदयोऽस्योद्गमास्ते भवेद्रात्रियातोऽथ तत्कालखेटात्स्फुटः॥ २३ ॥

अन्वयः–उद्गमे, (सति), खगात्, यातकालः, (साध्यः), अस्तके, तु, षड्भयुक्तात्, (यातकालः, साध्यः), सषड्भार्कभोग्यान्वितः, युक्तमध्योदयः, अस्य, उद्गमास्ते, रात्रियातः, भवेत्, अथ, तत्कालखेटात्, स्फुटः, (स्यात्), ॥ २३ ॥

अर्थः–ग्रहका उदयकाल लाना होय तौ दृक्कर्मदत्त ग्रहको लग्न मानकर तिससे भुक्तकाल लावे, परन्तु अस्तकाल लाना होय तौ षड्राशियुक्त दृक्कर्म

दृत्त ग्रहको लग्न मानकर तिससे भुक्तकाल लावै, और षड्राशियुक्त सूर्य्यको रवि मानकर तिससे भोग्यकाल लावै, तदनन्तर भुक्तकाल और भोग्यकाल इन दोनोंके योगमें लग्न और रवि इन दोनोंके मध्यके पलात्मक उदयोंके योगको युक्तकरै, तब जो अङ्कयोग होय उतनीही घड़ीपर रात्रिमें ग्रहका उदय अथवा अस्त होयगा, तदनन्तर उदयास्तकालीन दृक्कर्म्मदत्त ग्रह और सूर्य्य इनको तात्कालिक करके इनसे पूर्वोक्तरीतिके द्वारा उदयास्तकालकी घटिका फिर लावै तब वह स्पष्ट उदयास्त काल होताहै ॥ २३ ॥

उदाहरण.

षड्राशियुक्त दृक्कर्म्मदत्त गुरु १० राशि ३ अंश ० कला ४ विकलाको लग्न मानकर इससे लायाहुआ पलात्मक भुक्तकाल १७९ पलमें षड्राशियुक्त सूर्य्य ७ राशि ६ अंश १४ कला ३३ विकलाको रविमानकर इससे लायेहुए भोग्यकाल ६४ पलको युक्त करा तब भुक्त और भोग्य दोनोंका योग हुआ २४३इसमें लग्न और रवि इनके मध्यमेंके पलात्मक उदय अर्थात् धनोदय ३४२ पल और मकरोदय ३०४ पलको युक्त करा तब ८८९ पल अर्थात् १४ घटी ४९ पल हुआ, इसकारण सूर्य्यास्त कालसे इतनी घटी पलपर गुरुका अस्त होयगा। अब १४ घटी ४९ पल इनका चालन देकर लायाहुआ दृक्कर्म्मदत्त-गुरु ४ राशि ३ अंश ९ कला २४ विकला, और स्पष्ट सूर्य्य १ राशि ६ अंश २८ कला ३६ विकला, इनमें ६ राशि युक्त करके और पहिलेको लग्न तथा दूसरेको रवि मानकर तिनसे लाएहुए भुक्त और भोग्य कालका योग हुआ २४०पल इसमें लग्न और रवि इन दोनोंके मध्यके उदयोंका योग ६४६ पलको युक्त करा तब ८८६ पल अर्थात् १४ घटी ४६ पल, यह गुरुका स्पष्ट अस्तकाल हुआ ॥

अब चन्द्रमाके स्पष्टोदयास्तकालसाधनकी रीति लिखते हैं-

इन्दोस्तु गोपलाढ्योनः कार्य्योऽथ प्रतिनाडिकम् ।
युतो द्विद्विपलैः स्पष्टः किं स्यात्तात्कालिकेन्दुना ॥२४॥

अन्वयः-इन्दोः, (उदयास्तकालः), गोपलाढ्योनः, कार्य्यः, अथ, तु, प्रतिनाडिकम्, द्विद्विपलैः, युक्तः, स्पष्टः, (भवति); (पुनः), तात्कालिकेन्दुना, किम्, स्यात् ॥ २४ ॥

अर्थः-चन्द्रमाके उदय कालमें नौ पल मिलावै, और अस्त कालमें नौ पल घटावै तब जो घटिकादि होय उसमें यमसे उदयकालकी और अस्तकालकी

घटिकाओंको दोसे गुणाकरके जो गुणनफल होय तत्तुल्य पल मिलावै तब तात्कालिक चन्द्रमाके करे विनाही चन्द्रमाका स्पष्ट उदयास्तकाल होताहै ॥ २४ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृते ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादा-
बादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामि-
राममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंस-
श्रीयुतभोलानाथात्मजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया
सान्वयभाषाटीकया सहितः अस्तोदयाधिकारः
समाप्तिमितः ॥ ९ ॥

अथ ग्रहच्छायाधिकारः ।

तहाँ प्रथम अभीष्टग्रहके दिनगतकालके साधनकी रीति लिखते हैं-

प्राग्दृष्टिकर्म्मखचरस्तनुतोऽल्पकोऽस्तात्पुष्टश्च दृ-श्य इह खेचरभोग्यकालः । लग्नेन युक्च विवरोद-ययुग्द्युयातः स्यात्खेचरस्य सितगोर्यदि गोपलोनः ॥१॥

अन्वयः-प्राग्दृष्टिकर्म्मखचरः, (यदा), तनुतः, अल्पकः, अस्तात्, च, पुष्टः, (स्यात्) तदा), दृश्यः, इह, खेचरभोग्यकालः, (स्यात्); । लग्नेन, युक्, विवरोदययुक्, च, खेचरस्य, द्युयातः, स्यात्, यदि, सितगोः, (तर्हि), गोपलोनः, (कार्य्यः); ॥ १ ॥

अर्थः-रात्रिमें जब अभीष्ट ग्रहका दिनगत (ग्रहके उदयको प्राप्त होनेसे रात्रिमें जब उसका वेधलेना होय तबतक व्यतीत हुआ) काल लाना होय तो पूर्वदृक्कर्म्मदत्त अभीष्टग्रह और तात्कालिक लग्न यह दोनों लावै, तदनन्तर पूर्व दृक्कर्म्मदत्त अभीष्टग्रह यदि तात्कालिक लग्नकी अपेक्षा कम और षड्राशियुक्त तात्कालिक लग्नकी अपेक्षा अधिक होय तो रात्रिमें वह ग्रह उस समय दृश्य होयगा, तदनन्तर दृक्कर्म्मदत्त ग्रहसे लायाहुआ भोग्यकाल, तात्कालिक लग्नका भुक्तकाल, और तात्कालिक लग्न तथा दृक्कर्म्मदत्त ग्रह इनके मध्यके पलात्मक उदयोंका योग करै, तब अभीष्टग्रहका घटिकादि दिनगत काल

आताहै; परन्तु यदि चन्द्रमाका दिनगतकाल लाना होय तौ पूर्वोक्त रीतिसे लाईहुई कलाओंमेंसे नौ पल घटादेय ॥ १ ॥

उदाहरण.

शके १५३२ वैशाख शुक्र नवमी ९ शनिवारके दिन १० घटी रात्रिको चन्द्रमाकी छाया साधतेहैं-तहाँ अहर्गण ७७७, प्रातःकालीन मध्यमग्रह रवि० राशि २० अंश ५६ कला २२ विकला, चन्द्र ३ राशि २६ अंश ५८ कला ३ विकला उच्च ७ राशि २२ अंश ४ कला ६ विकला, राहु २ राशि २३ अंश ४७ कला ३ विकला, स्पष्टी करण-रविमन्दकेन्द्र १ राशि २७ अंश ३ कला ३८ विकला, मन्दफलधन १ अंश ४९ कला ४० विकला, मन्दस्पष्ट रवि २२ अंश ४६ कला २ विकला, अयनांश १८ अंश ८ कला, चरऋण ७३ विकला, चर संस्कृतस्पष्टरवि ० राशि २२ अंश ४४ कला ४९ विकला, स्पष्टगति ५७ कला ५८ विकला, त्रिफलसंस्कृत चन्द्र ३ राशि २६ अंश ३५ कला १३ विकला, मन्दकेन्द्र ३ राशि २५ अंश २८ कला ५३ विकला, मन्दफल धन ४ अंश ३२ कला ० विकला, संस्कृत स्पष्टचन्द्र ४ राशि १ अंश ७ कला १३ विकला, स्पष्टगति ८१९ कला १९ विकला, दिनमान ३२ घटी २६ पल, सूर्योदयसे गतघटियां ४२ घटी २६ पलसे चालित सूर्य ० राशि २३ अंश २५ कला ४८ विकला, चालितचन्द्र ४ राशि १० अंश ४६ कला २९ विकला, चालितराहु २ राशि २३अंश ४४कला ४८विकला स्पष्टविधु १ राशि १७ अंश १कला ५१ विकला, चन्द्रशर उत्तर ६५ अंगुल ४४ प्रतिअंगुल ॥ चन्द्रमा ४ राशि १० अंश ४६ कला २९ विकलामें ३ राशि घटाई तब शेषरहा १ राशि १० अंश ४६ कला २९ विकला, इससे लाईहुई क्रान्ति उत्तर २० अंश १९ कला ३९ विकला, अक्षांशदक्षिण २५ अंश २६कला४७ विकला, नतांशदक्षिण ५ राशि०अं०१३ कला ३ विकला, पूर्वदृक्कर्मफलादि ऋण १६ कला ४९ विकला, दृक्कर्मदत्तचन्द्र ४ राशि १० अंश २९ कला ५० विकला, १० घटी रात्रिका लग्न ८ राशि १६ अंश २४ कला २२ विकला, अब दृक्कर्मदत्तचन्द्रलग्नकी अपेक्षा कमती है, और षड्राशियुक्त लग्न २ राशि १६ अंश २४ कला २२ विकलाकी अपेक्षा अधिक है, इसकारण चन्द्रमा दृश्य है, दृक्कर्मदत्तचन्द्रसे लायाहुआ भोग्यकाल १५ पल, लग्नसे लायाहुआ भुक्तकाल ४६ पल, सायन दृक्कर्मदत्त चन्द्रमाके भोग्यकाल १५ पलको सायन लग्नके भुक्तकालमें युक्तकरा तब ६१ हुए इसको ग्रह और लग्न इन दोनोंके मध्यमें जो सिंहसे लेकर मकरपर्यन्त राशियोंके उदय तिनके योग १३५७ में युक्त करा तब १४१८ पल अर्थात् २३घटी ३८ पल हुए, इसमें चन्द्रमाका दिनगतकाल लाना है, इसकारण ९ पल घटाए तब शेष रहे २३ घटी २९ पल, यह चन्द्रमाका स्पष्ट दिनगतकाल हुआ ॥

अब ग्रहका दिनमान जाननेकी रीति लिखते हैं-

जिनाप्तोऽक्षाभाघ्नोऽङ्गुलमयशरोऽनेन तु चरं स्फुटं
संस्कृत्यातो दिनमथ खगस्य द्युविगतात् । प्रभाद्यं
संसिद्ध्येदथ खचरभादेर्निशिगतं ब्रुवेऽथारादीनां
द्युतिपरिगमं यन्त्रवशतः ॥ २ ॥

अन्वयः-अङ्गुलमयशरः, अक्षाभाघ्नः, (ततः), जिनाप्तः, (कार्य्यः); अनेन, तु, चरम्, संस्कृत्य, स्फुटम्, (कार्य्यम्); अतः, दिनम्, (साध्यम्); अथ, खगस्य, द्युविगतात्, प्रभाद्यम्, संसिध्येत्; अथ, खचरभादेः, निशिगतम्, अथ, आरादीनाम्, द्युतिपरिगमम्, यन्त्रवशतः, ब्रुवे ॥ २ ॥

अर्थः-अंगुलादि शरको पलभासे गुणाकरकै चौवीसका भागदेय, तब जो पलात्मक लब्धि मिलै वह शर उत्तर होय तौ उत्तर और शर दक्षिण होय तौ दक्षिण होती है, और दृक्कर्म्मदत्त ग्रहसे चर लाकर वह ग्रह उत्तरगोलीय होय तौ उत्तर और दक्षिणगोलीय होय तौ दक्षिण जानै, तदनन्तर पलात्मक लब्धिका और चरका संस्कार करै तब वह स्पष्टचर होताहै, फिर तिस चरसे दिनमान साधै, वह अभीष्ट ग्रहका दिनमान होताहै, तदनन्तर अभीष्ट ग्रहका दिनमान और दिनगतकाल इनसे त्रिप्रश्नाधिकारमें कहीहुई रीतिके द्वारा अभीष्ट ग्रहकी इष्ट छाया लावै ॥ २ ॥

उदाहरण.

शरउत्तर ६५ अंगुल ४४ प्रतिअंगुलको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलसे गुणाकरा तब ३७७ अंगुल ५८ प्रतिअंगुल हुए इसमें २४ का भाग दिया तब लब्धि हुई १५ पल ४४वि० । यह लब्धिशरके उत्तर होनेके कारणसे उत्तर है. इससे दृक्कर्म्मदत्त चन्द्रसे लायेहुए चर उत्तर ५९ पलका संस्कार करा तब ७४ । ४४ यह स्पष्ट चर हुआ, यह दृक्कर्म्मदत्त चन्द्रके उत्तरगोलीय होनेके कारण धन है.इसकारण ७४ पलमें १५ घटीको युक्त करा तब १६ घटी १४प० यह दिनार्द्ध हुआ, इसकारण ३२ घटी २८ पल यह चन्द्रमाका दिनमान हुआ, इसमेंसे दिनगत काल २३ घटी २९ पलको घटाया तब शेषरहे ८ घटी ५९ पल यह पश्चिमोन्नत काल हुआ. इसको दिनार्द्ध १६ घटी १४ पलमें घटाया तब ७घटी १५ पल यह पश्चिम नतकाल हुआ, इससे लायेहुए भक्षकर्ण

१३ अंगुल २९ प्रतिअंगुल, स्पष्ट चर ७४। ४४। हार १२८। ५६। समाख्य ३० । १। इष्टहार २७। ५। भाज्य ११। ७। ५५। अंगुलादि कर्ण १५ अंगुल, ५३ प्रतिअंगुल, इष्टच्छाया १० अंगुल ३४ प्रतिअंगुल ॥

अब वेधसे ग्रहच्छायासाधनकी रीति लिखते हैं-

पश्येज्जलादौ प्रतिविम्बितं वा खेटं दृगौच्च्यं गणये-च्च लम्बम् । तंलम्बपातप्रतिविम्बमध्यं दृगौच्च्यहृ-त्सूर्य्यहतं प्रभा स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-जलादौ, खेटम्, प्रतिविम्बितम्, पश्येत्, वा, दृगौच्च्यम्, लम्बम्, च, गणयेत्; तम्, लम्बपातप्रतिविम्बमध्यम्, (गणयेत्), सूर्य्यहतम्, दृगौच्च्यहृत्, प्रभा, स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः-जलमें अथवा दर्पणआदिमें अभीष्ट ग्रहका प्रतिविम्ब देखकर भूतलसे अपनी दृष्टिपर्य्यंत अंगुलादि ऊँचाईको गिने और लम्बपात और प्रतिविम्बके मध्यके अन्तरकोभी अंगुलादि गणना करे, फिर उसको बारहसे गुणा करके और अंगुलादि दृगौच्च्यका भागदेय तब ग्रहकी छाया होती है ॥ ३ ॥

अब ग्रहकी छायासे दिनगत कालसाधनकी रीति लिखते हैं-

ज्ञात्वानुमानान्निशि यातनाडीस्तत्कालखेटात्कथि-तैश्चराद्यैः। दृष्टप्रभादेर्द्युगतो ग्रहस्य साध्यस्त्विहेन्दो यदि गोपलाढ्यः ॥ ४ ॥

अन्वयः-अनुमानात्, निशि, यातनाडीः, ज्ञात्वा, तत्कालखेटात्, कथितैः, चराद्यैः, दृष्टप्रभादेः, ग्रहस्य, द्युगतः, (कालः), साध्यः, यदि, इन्दोः, (तर्हि), तु, इह, गोपलाढ्यः, (कार्य्यः) ॥ ४ ॥

अर्थः-जिससमय ग्रहका वेध करा हो उस समय जितनी घडी रात्रि बीती होय, उनको अनुमानसे जानकर उस समयका ग्रह, स्पष्टचर और दिनमान लावै, तदनन्तर इनसे और ग्रहकी इष्ट छायासे त्रिप्रश्नाधिकारमें कही हुई रीतिके अनुसार अभीष्ट ग्रहका दिनगतकाल लावै, यह दिनगत काल चन्द्रमाका होय तो उसमें नौ पल युक्तकरदेय ॥ ४ ॥

उदाहरण.

रात्रिमें चन्द्रमाकी ओर देखकर अनुमान करनेसे १० घटी रात्रि व्यतीत हुई मालूम पड़ी इसकारण तिस समयके चन्द्रसे लायाहुआ स्पष्ट चर ७४ पल हुआ, और दिनमान ३२ घटी २८ पल हुआ, और वेधसे लाईहुई इष्ट छाया १० अङ्गुल ३४ प्रतिअङ्गुल हुई इसकारण इनसे लायाहुआ कर्ण १३ अङ्गुल ५२ प्रतिअङ्गुल, भाज्य ११।७।५५, इष्टहार ७।५, अक्षकर्ण १२ अंगुल १९ प्रतिअङ्गुल, हार १२८।५८, और पश्चिमनत ७ घटी १५ पल, इसकारण दिनार्द्ध १६ घटी १४ पलमें पश्चिमनत ७ घटी १५ पलको युक्तकरा तब २३ घटी २९ पल हुए, इसमें ९पल युक्त करे तब २३ घटी ३८ पल यह चन्द्रमाका दिनगत काल हुआ॥

अब ग्रहके उदयमें दिनशेष रात्रिगत कालसाधन लिखते हैं–

प्राग्दृक्खचराङ्गभाढ्यभान्वोरल्पोऽर्कस्त्वपरस्तनु स्तदन्तः। कालः सखगोदये द्युशेषो रात्रीतः क्रमशो ग्रहेऽल्पपुष्टे॥ ५॥

अन्वयः–प्राग्दृक्खचराङ्गभाढ्यभान्वोः, अल्पः, अर्कः, अपरः, तु, तनुः, तदन्तः, (यः), कालः, सः, खगोदये, ग्रहे, अल्पपुष्टे, क्रमशः, द्युशेषः, रात्रीतः, स्यात्॥ ५॥

अर्थः–पूर्व दृक्कर्म्मदत्त ग्रह और षड्राशियुक्त रवि इन दोनोंमें जो कम हो वह रवि और जो अधिक हो उसको लग्नमानकर इन दोनोंसे अभीष्ट काल लावे-तब यदि पूर्वदृक्कर्म्मदत्त ग्रह षड्राशियुक्त सूर्य्यकी अपेक्षा कम होय तो ग्रहोदय होनेमें अभीष्ट कालकी तुल्य दिन रहेगा ऐसा जाने, और यदि पूर्व दृक्कर्म्मदत्त ग्रह षड्राशियुक्त सूर्यकी अपेक्षा अधिक होय तो ग्रहोदय होनेमें अभीष्ट कालकी तुल्य रात्रि व्यतीत होनेपर चन्द्रोदय होयगा ऐसा जाने॥५॥

और लग्न इन दोनोंके मध्यके उदय पल कन्योदय ३३५ और तुलोदय ३३५ पल, इन सबका योग करा ८१८ पल अर्थात् १३ घटी ३८ पल यह इष्ट काल हुआ, अब चन्द्रमा षड्राशियुक्त रविकी अपेक्षा कम है इसकारण १३ घटी ३८ पल दिन शेष रहनेपर चन्द्रोदय होयगा ॥

अब सूर्य्यास्तसे रात्रिगतकाल जाननेकी रीति लिखते हैं-

तेनोनोऽथ च सहितो ग्रहद्युयातः स्यादर्कास्तसमयतो निशिप्रयातः । चेद्ग्लावोऽनुमितघटीष्वतोऽल्पपुष्टं द्विघ्नंतत्समपलयुग्वियुक्स्फुटः सः ॥ ६ ॥

अन्वयः—तेन, ऊनः, अथ, च, (रात्रिगतेन) सहितः, ग्रहद्युयातः, अर्कास्तसमयतः, निशि, प्रयातः, स्यात्; ग्लावः, चेत्, (तदा), अनुमितघटीषु, अतः, (यावत्), अल्पपुष्टम्, (तावत्, एव), द्विघ्नम्, (पलात्मकम्, स्यात्;) तत्समपलयुग्वियुक्, सः स्फुटः, (स्यात्); । ६ ।

अर्थः—ग्रहके दिनगतकालमें दिनशेष काल घटावे, और रात्रिगतकाल आया होय तब तो मिला देनेसे सूर्य्यास्तसमयसे ग्रहवेधपर्य्यन्त काल होता है, परन्तु यदि यह काल चन्द्रमाके विषयका होकर अनुमान करी हुई घटिकाओंकी अपेक्षा अधिक अथवा कम होय तो तिन दोनोंकालोंके अन्तरको दोसे गुणाकरके जो पलात्मक गुणनफल होय उसको वेधीय कालमें घटानेसे अथवा युक्त करनेसे चन्द्रमाका वेधीय काल स्पष्ट होता है ॥ ६ ॥

उदाहरण.

चन्द्रमाके दिनगतकाल २३ घटी ३८ पलमेंसे दिनशेषकाल १३ घटी ३८ पलको घटाया तब शेषरहे १० घटी, यह सूर्य्यास्तसे चन्द्रवेधपर्य्यन्तका काल हुआ, यह और अनुमित घटी १० बराबर हैं इस कारण यहही स्पष्ट काल हुआ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यपण्डितगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादनिवासिकाशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसन्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगोत्रोद्भवगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथात्मजरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितः छायाधिकारः समाप्तिमितः ॥ १० ॥

अथ नक्षत्रच्छायाधिकारः।

तहाँ प्रथम नक्षत्रोंके स्वदेशीय उदयध्रुव और अस्तध्रुवसाधनकी रीति लिखते हैं-

दास्रादष्ट च मूर्छना गजगुणा नन्दाब्धयोद्व्यसाः षट्
तर्का युगखेचरा रसदिशोऽद्र्याशा नवार्काः क्रमात्।
भाग्यादष्ट-युगेन्दवोऽक्षतिथयः खात्यष्टयोंशा ध्रुवा-
स्त्र्यष्टाब्जा गजगोभुवो रविदृशः सिद्धाश्विनः खत्रि-
दृक् ॥ १ ॥ मूलात्स्युर्द्विजिनाः शराशुगदृशः क-
ङ्काश्विनोऽष्टेषुदृग्बाणर्क्षाणि रसाष्टदृङ्नखगुणा-
स्तत्त्वाग्नयोऽश्वामराः। खं दत्तायनदृक्क्रियाः स्यु-
रिह च क्षेपोऽक्षभाघ्नोऽर्कहृत्स्वर्णं प्राक्परतोऽन्यथो-
त्तरशरे ते स्युः स्वदेशे ध्रुवाः ॥ २ ॥

अन्वयः-दास्रात्, अष्ट, मूर्छना, गजगुणाः नन्दाब्धयः, द्व्यसाः, षट्तर्काः, युगखेचराः, रसादिशः, अद्र्याशाः, नवार्काः, भाग्यात्, अष्टयुगेन्दवः, अक्षतिथयः, खात्यष्टयः, त्र्यष्टाब्जाः, गजगोभुवः, रविदृशः, सिद्धाश्विनः, खत्रिदृक्, मूलात्, द्विजिनाः, शराशुगदृशः, कङ्काश्विनः, अष्टेषुदृक्, बाणर्क्षाणि, रसाष्टदृक्, नखगुणाः, तत्त्वाग्नयः, अश्वामराः, खम्, (एते), क्रमात्, अंशाः, ध्रुवाः, स्युः; (इमे); दत्तायनदृक्क्रियाः, स्युः, इह, क्षेपः, अक्षभाघ्नः, (ततः), अर्कहृत्, प्राक्परतः, स्वर्णम्, (कार्य्यम्), उत्तरशरे, अन्यथा, (कार्य्यम्), ते, स्वदेशे ध्रुवाः, स्युः, ॥ १ ॥ २ ॥

अर्थः-अश्विनीनक्षत्रसे लेकर रेवतीनक्षत्रपर्य्यन्त सम्पूर्ण नक्षत्रोंके क्रमसे आठ आदि अंशात्मक ध्रुव होतेहैं. अर्थात् अश्विनीका आठ अंश, ध्रुव होताहै, भरणीका मूर्च्छना कहिये इक्कीस अंश ध्रुव होताहै, कृत्तिकाका 'गज गुण' कहिये अट्ठतीश अंश अर्थात् एकरादि आठ अंश ध्रुव होताहै,रोहिणीका

'नन्दाब्धि' कहिये उननचास अंश अर्थात् एकराशि उन्नीस अंश ध्रुव होताहै, मृगशिराका 'द्व्यस' कहिये बासठ अंश अर्थात् दो राशि दो अंश ध्रुव होताहै, आर्द्राका 'षट्तर्क' कहिये छँसठ अंश अर्थात् दो राशि छः अंश ध्रुव होताहै, पुनर्वसुका 'युगखेचर' कहिये चौरानवे अंश अर्थात् तीनराशि चार अंश ध्रुवहोताहै, पुष्यका 'रसदिश' कहिये एकसौछः अंश अर्थात् तीन राशि १६ अंश ध्रुव होताहै, आश्लेषाका 'अद्रयाशा' कहिये एकसौ सात अंश अर्थात् तीन राशि सतरह अंश ध्रुव होताहै, मघाका 'नवार्क' कहिये एकसौ उनतीस अंश अर्थात् चार राशि नौ अंश ध्रुव होताहै पूर्वाफाल्गुनीका 'अष्टयुगेन्दु' कहिये एकसौ अड़तालीस अंश अर्थात् चारराशि अट्ठाईस अंश ध्रुव होताहै, उत्तरा फाल्गुनीका 'अक्षतिथि' कहिये एकसौ पचपन अंश अर्थात् पाँच राशि पाँच अंश ध्रुव होताहै, हस्तका 'खात्यष्टि' कहिये एकसौ सत्तर अंश अर्थात् पाँचराशि बीस अंश ध्रुव होताहै, चित्राका 'व्यष्टाब्ज' कहिये एकसौ तिरासी अंश अर्थात् छः राशि तीन अंश ध्रुव होताहै, स्वातीका 'गजगोभू' कहिये एकसौ अठानवे अंश अर्थात् छ राशि अठारह अंश ध्रुव होताहै, विशाखाका 'रविदस्र' कहिये दोसौ बारह अंश अर्थात् सात राशि दो अंश ध्रुवहोताहै. अनुराधाका 'सिद्धाश्विन्' कहिये दोसौ चौबीस अंश अर्थात् सात राशि चौदह अंश ध्रुव होताहै. ज्येष्ठाका 'खत्रिदृक्' कहिये दोसौ तीस अंश अर्थात् सात राशि बीस अंश ध्रुव होताहै मूलका 'द्विजिन' कहिये दोसौ बयालीस अंश अर्थात् आठराशि दो अंश, ध्रुव होताहै, पूर्वाषाढ़ाका 'शराशुगदृश' कहिये दोसौ पचपन अंश अर्थात् आठ राशि पन्द्रह अंश ध्रुव होताहै. उत्तराषाढ़ाका 'कद्वाश्विन्' कहिये दोसौ इकसठ अंश अर्थात् आठराशि इक्कीस अंश ध्रुव होताहै, अभिजित का 'अष्टपुदृक्' दोसौ अट्ठावन अंश अर्थात् आठराशि अठारह अंश ध्रुव होताहै, श्रवणका 'बाणर्क्ष' कहिये दोसौ पिछत्तर अंश अर्थात् नौराशि पाँच अंश ध्रुव होताहै, धनिष्ठाका 'रसाष्टदृक्' कहिये दोसौ छियासी अंश अर्थात् नौराशि सोलह अंश ध्रुव होताहै, शततारकाका 'नखगुण' तीनसौ बीस अंश अर्थात् दशराशि बीस अंश ध्रुव होताहै पूर्वाभाद्रपदाका 'तत्त्वाग्नि' कहिये तीनसौ पचीस अंश अर्थात् दशराशि पचीस अंश ध्रुव होताहै, उत्तराभाद्रपदाका 'अग्यामरा' कहिये तीन सौ सैंतीस अंश अर्थात् ग्यारह राशि सात अंश ध्रुव होताहै, और रेवतीका 'खम्' कहिये शून्य अंश ध्रुव होताहै, इन नक्षत्रोंमेंसे जिस नक्षत्रका ध्रुव लानाहो उसके शरको पलभासे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें बारहका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसको नक्षत्रके राश्यादि ध्रुवाङ्कमें घटावे या युक्त करै तब क्रमसे उदयध्रुव और अस्तध्रुव होताहै परन्तु यदि नक्षत्रका शर दक्षिण होय तौ विपरीत होताहै अर्थात् घटानेसे जो शेष रहै वह अस्तध्रुव, और युक्त करनेसे जो अङ्क होय वह उदयध्रुव होताहै. यह निज देशमें नक्षत्रध्रुव होतेहैं ॥१॥२॥

अब नक्षत्रोंके शरभाग कहते हैं-

दिक्सूर्य्येष्विषुदिक्छिवाङ्कखनगाभ्रार्काश्च विश्वे भवास्त्वाष्ट्राद्द्वौ नगवह्नयः कुयमलाग्नीभाक्षवाणा द्विपट् । कर्णात्त्रिंशदरित्रयः खजिनभाभ्रं त्वाष्ट्रह-स्ताहिभे द्वीशात्पट्सुकभात्त्रयं शरलवा याम्या उदक्छेपभे ॥ ३ ॥

अन्वयः-दिक्सूर्य्येष्विषुदिक्छिवाङ्कखनगाभ्रार्काः, विश्वे, भवाः, त्वाष्ट्रात्, च, द्वौ,नगवह्नयः, कुयमलाग्नीभाक्षवाणाः, द्विपट्, कर्णात्, त्रिंशत्, अरित्रयः, खजिनभाभ्रम्, (एते) शरलवाः, (सन्ति), त्वाष्ट्रहस्ताहिभे, द्वीशात्, पट्सु, कभात्, त्रयम्, याम्याः, शेषभे, उदक् ॥ ३ ॥

अर्थः-दिक् कहिये १० सूर्य्य कहिये १२, इषु कहिये ५. इषु कहिये ५, दिक् कहिये १०, शिव कहिये ११, अङ्क कहिये ६, ख कहिये ०, नग कहिये ७, अभ्र कहिये ०, अर्क कहिये १२. विश्वे कहिये १३, भव कहिये ११, द्वौ कहिये २, नगवह्नि कहिये ३७, कु कहिये १, यमल कहिये २, अग्नि कहिये ३ इभ कहिये ८, अक्ष कहिये ५, बाण कहिये ५, द्विपट् कहिये ६२. त्रिंशत् कहिये ३०, अरित्रयः कहिये ३६, ख कहिये ०, जिन कहिये २४, भ कहिये २७, और अभ्र कहिये ०, यह शर भाग हैं. जिसमें त्वाष्ट्र कहिये चित्रा और हस्त तथा अहि कहिये आश्लेषा इनके शर, तथा विशाखासे लेकर छः नक्षत्र, और रोहिणीसे लेकर तीन नक्षत्र इनके शर दक्षिण हैं, और शेष नक्षत्रोंके शर उत्तर हैं ॥ ३ ॥

उदाहरण.

अश्विनीका शर १० अं. है इसको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलसे गुणा-करा तब ५७ अंगुल ३० प्रतिअंगुल हुए, इसमें १२ का भाग दिया तब अंशादि लब्धि हुई ४ अंश ४७ कला ३० विकला इसको अश्विनीके शरके उत्तर होनेके कारण अश्विनीके ध्रुव ८ अंशमें घटाया तब शेषरहे ३ अंश १२ कला ३० विकला, यह श्रीकाशीक्षेत्रमें अश्विनी नक्षत्रका उदय ध्रुव हुआ, और लब्धि ४ अंश ४७ कला ३० विकलाको अश्विनीके ध्रुव ८ अंशमें युक्त करा तब

१२ अंश ४७ कला ३० विकला यह श्रीकाशीक्षेत्रमें अश्विनी नक्षत्रका अस्त ध्रुव हुआ, इसी प्रकार शेष सम्पूर्ण नक्षत्रोंके उदयास्त ध्रुव आगे लिखेहुए कोष्टकके अनुसार जानना ॥

नक्षत्रोंकेनाम	ध्रुव		शरभाग	उदयध्रुव				अस्तध्रुव			
										४७क	३०वि
										४५	०
										२३	४५
रोहिणी	१	१९	५दक्षिण	१	२१	२३	४५	१	१६	३६	१५
मृगशिर	२	२	१०दक्षिण	२	६	४७	३०	१	२७	१२	३०
आर्द्रा	२	६	११दक्षिण	२	११	१६	१५	२	०	४३	४५
पुनर्वसु	३	४	६ उत्तर	३	१	७	३०	३	६	५२	३०
पुष्य	३	१६	० उत्तर	३	१६	०	०	३	१६	०	०
आश्लेषा	३	१७	७दक्षिण	३	२०	२१	१५	३	१३	३८	४५
मघा	४	९	० उत्तर	४	९	०	०	४	९	०	०
पूर्वाफाल्गुनी	४	२८	१२उत्तर	४	२२	१५	०	५	३	४५	०
उत्तराफाल्गु.	५	५	१३उत्तर	४	२८	४६	१५	५	११	१३	४५
हस्त	५	२०	११दक्षिण	५	२५	१६	१५	५	१४	४३	४५
चित्रा	६	३	२दक्षिण	६	३	५७	३०	६	२	२	३०
स्वाती	६	१८	३७उत्तर	६	०	१६	१५	७	५	४३	४५
विशाखा	७	२	१दक्षिण	७	२	२८	४५	७	१	३१	१५
अनुराधा	७	१४	२दक्षिण	७	१४	५७	३०	७	१३	२	३०
ज्येष्ठा	७	२०	३दक्षिण	७	२१	२६	१५	७	१८	३३	४५
मूल	८	२	८दक्षिण	८	५	५०	०	७	२८	१०	०
पूर्वाषाढ़ा	८	१५	५दक्षिण	८	१७	२३	४५	८	१२	३६	१५
उत्तराषाढ़ा	८	२१	५दक्षिण	८	२३	२३	४५	८	१८	३६	१५
अभिजित	८	१८	६२उत्तर	७	१८	१७	३०	९	१७	४२	३०
श्रवण	९	५	३०उत्तर	८	२०	३७	३०	९	२९	२२	३०
धनिष्ठा	९	१६	३६उत्तर	८	२९	१३	४५	१०	२	४६	१५
शततारका	१०	२०	० उत्तर	१०	२०	०	०	१०	२०	०	०
पूर्वाभाद्रपदा	१०	२५	२४उत्तर	१०	१३	३०	०	११	६	३०	१०
उत्तराभाद्रप.	११	७	२७उत्तर	१०	२४	३	४५	११	१९	५६	१५
रेवती।	०	०	० उत्तर	०	०	०	०	०	०	०	०

अब प्रजापति आदिके ध्रुवांश कहतेहैं-

प्रजापतिब्रह्मह्रदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः स्युः। कुषट्पडक्षास्त्रिशरा नभोऽष्टौ त्र्यष्टेन्दवो भूफणिनः क्रमेण ॥ ४ ॥

अन्वयः-कुषट्, पडक्षाः, त्रिशराः, नभोऽष्टौ, त्र्यष्टेन्दवः, भूफणिनः क्रमेण, प्रजापतिब्रह्मह्रदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः, स्युः ॥४॥

अर्थः-'कुषट्' कहिये इकसठ अंश अर्थात् दोराशि एकअंश, और 'षडक्षाः' कहिये छप्पन अंश अर्थात् एकराशि छब्बीस अंश, और 'त्रिशराः' कहिये तरेपन अंश अर्थात् एकराशि तेईस अंश, और 'नभोऽष्टौ' कहिये अस्सी अंश अर्थात् दोराशि वीसअंश, और 'त्र्यष्टेन्दवः' कहिये एकसौ तिरासी अंश अर्थात् छः राशि तीन अंश, तथा 'भूफणिनः' कहिये इक्यासी अंश अर्थात् दो राशि एकअंश, यह क्रमसे प्रजापति, ब्रह्मह्रदय, अग्नि, अगस्त्य, अपांवत्स, और लुब्धक इनके ध्रुवांश हैं ॥ ४ ॥

अब प्रजापतिआदिके शरभाग कहतेहैं.-

तेषां क्रमाद्गोशिखिनः खरामा अष्टौ रसाश्वाः शिखिनः खवेदाः। शरांशकाः स्युर्मुनिलुब्धयोस्तु याम्यास्तु सौम्याः परिशेषकाणाम् ॥ ५ ॥

अन्वयः-गोशिखिनः, खरामाः, अष्टौ, रसाश्वाः, शिखिनः, खवेदाः, (इमे), क्रमात्, तेषाम्, शरांशकाः, स्युः, मुनिलुब्धयोः, तु, याम्याः, परिशेषकाणाम्, तु, सौम्याः ॥ ५ ॥

अर्थः-'गोशिखिनः' कहिये ३९; 'खरामाः' कहिये ३०; अष्टौ ८; 'रसाश्वाः' कहिये ७६; 'शिखिनः' कहिये ३, और 'खवेदाः' कहिये ४०; यह क्रमसे तिन प्रजापतिआदिके शरभाग हैं, तिनमें मुनि और लुब्धकके दक्षिणहैं, और शेषके उत्तरहैं। (इनके उदयास्त ध्रुव अश्विन्यादि नक्षत्रोंकी रीतिसे लाने चाहियें सो आगे कोष्टकमें लिखतेहैं) ॥ ५ ॥

नाम	ध्रुव		शरभाग	उदयध्रुव				अस्तध्रुव			
प्रजापति	२	१	३९उत्तर	१रा.	१२अं.	१८क.	४५वि.	२रा.	१९अं.	४१क.	१५वि.
ब्रह्महृदय	१	२६	३०उत्तर	१	११	८	४५	२	१०	५१	१५
अग्नि	१	२३	८ उत्तर	१	१९	१०	०	१	२६	५०	०
अगस्त्य	२	२०	७६दक्षिण	३	२६	२५	०	१	१३	३५	०
अपांवत्स	६	३	३ उत्तर	६	१	३३	४५	६	४	२६	१५
लुब्धक	२	२१	४०दक्षिण	३	१०	१०	०	२	१	५०	०

अब नक्षत्रच्छायादि साधनकी रीति लिखतेहैं-

निजदेशभवाद्ध्रुवाच्च बाणाच्छाया यंत्रलवादिखेट-वत्स्यात्। छायादेरपि चेह रात्रियातं नक्षत्रग्रहयोग उक्तवच्च ॥ ६ ॥

अन्वयः-निजदेशभवात्, ध्रुवात्, बाणात्, च, छाया, यन्त्रलवादि, खेटवत्, स्यात्। अपि,-च, इह, छायादेः, रात्रियातम्, (तद्वदेव, स्यात्); नक्षत्रग्रहयोगः, च, उक्तवत्, (ज्ञेयः) ॥ ६ ॥

अर्थः-अपने देशके ध्रुव और शरसे ग्रहच्छायाधिकारमें कहीहुई रीतिके अनुसार छाया- यन्त्र भाग आदि साधै; और छायाआदिसे रात्रिगत जानै, तथा नक्षत्रग्रहयोग ग्रहयुतिके तुल्य जानै ॥ ६ ॥

---

१ नक्षत्रग्रहयोग गणेशदैवज्ञाचार्य्यने इस अपने ग्रहलाघव ग्रन्थमें नहीं कहाहै परन्तु इनके भ्राताके पुत्र नृसिंहदैवज्ञनें अपने करणग्रन्थमें कहाहै सो यहाँ टिप्पणीरूपसे लिखते हैं- "द्युचरभध्रुवकान्तरलिप्तिका द्युगतिभुक्तिहृताहि गतागतैः। फलदिनैर्द्युचरे अधिकहीनके युतिरिहेतरथा खलु वक्रिणि ॥" अन्वयः-हि, द्युचरभध्रुवकान्तरलिप्तिकाः, द्युगतिभुक्तिहृताः, (कार्याः); (तदा), द्युचरे, अधिकहीनके, फलदिनैः, गतागतैः, युतिः, (ज्ञेया); वक्रिणि, खलु, इतरथा, (युतिः ज्ञेया) ॥ अर्थः-ग्रह और नक्षत्रका ध्रुव इन दोनोंका अन्तर करके, उसकी कलाकरै, और तिन कलाओंमें ग्रहकी गतिका भागदेकर जो लब्धि होय वह दिनादि होतीहै, तदनन्तर यदि नक्षत्र ध्रुवकी अपेक्षा ग्रह अधिक होय तो तिस ग्रहको तिस नक्षत्रमें आएहुए लब्धिपरिमितदिन व्यतीत हुए जाने, और यदि ग्रह नक्षत्रध्रुवकी अपेक्षा कम होय तो लब्धिपरिमितदिनोंमें वह ग्रह तिस नक्षत्रके विषे आवेगा ऐसा जानै; परन्तु यदि ग्रह वक्री होकर नक्षत्र ध्रुवकी अपेक्षा अधिक या कम होयतो फल उपरोक्त फलके विपरीत होताहै, अर्थात् यदि अधिक होय तो लब्धिपरिमित दिनोंके व्यतीत होनेपर ग्रह नक्षत्रके विषे आवैगा, और कम होय तो ग्रहको नक्षत्रमें आएहुए लब्धिपरिमितदिन व्यतीत होगए ऐसा जानै ॥

अब ग्रहोंका रोहिणीशकटभेद और उसका फल कहते हैं-

गवि नगकुलवे खगोऽस्य चेद्यमदिगिषुः खशराङ्गुलाधिकः । कभशकटमसौ भिनत्त्यसृक्छनिरुडुपो यदि चेज्जनक्षयः ॥ ७ ॥

अन्वयः-(यः), खगः, गवि, नगकुलवे, (वर्त्तमानः), चेत्, अस्य, इषुः, (च), यमदिक्, खशराङ्गलाधिकः, (चेत्, तदा), असौ, कभशकटम्, भिनत्ति, यदि, असृक्, शनिः, उडुपः, (भेदयति), चेत्, (तदा), जनक्षयः, (भवति) ॥ ७ ॥

अर्थः-कोईसाभी ग्रह वृषराशिके सतरह अंशपरिमित हो और उसका शर दक्षिण और पचास अङ्गुलकी अपेक्षा अधिक होय तो वह ग्रह रोहिणी शकटको भेदता है (अर्थात् रोहिणीनक्षत्रका आकार गाड़ीकी आकृतिका है उसमेंको होकर ग्रह पार जाताहै) यदि मंगल, शनि, और चन्द्रमा इनमेंसे कोईसाभी ग्रह रोहिणीशकटका भेद करे तो लोकोंका नाश होताहै ॥ ७ ॥

अब चन्द्रमाका रोहिणीशकटको भेदनेका काल लिखते हैं-

स्वर्भानावदितिभतोऽष्टऋक्षसंस्थे शीतांशुः कभशकटं सदा भिनत्ति । भौमार्क्योः शकटभिदा युगान्तरे स्यात्सेदानीं नहि भवतीदृशि स्वपाते ॥ ८ ॥

अन्वयः-स्वर्भानौ, अदितिभतः, अष्टऋक्षसंस्थे, (सति), सदा, शीतांशुः, कभशकटम्, भिनत्ति; भौमार्क्योः, शकटभिदा, युगान्तरे, स्यात्, सा, हि, इदानीम्, ईदृशि, स्वपाते, न भवति ॥ ८ ॥

अर्थः-यदि राहु पुनर्वसू नक्षत्रसे लेकर आगेके आठ नक्षत्रोंमें स्थित होय तो चन्द्रमा अवश्यही रोहिणीशकटका भेद करताहै, परन्तु मंगल और शनि इनके पात (अस्तोदयाधिकारमें १२ श्लोक देखो) पुनर्वसु नक्षत्रसे लेकर आगेके आठनक्षत्रोंमें हों तोभी यह दोनों रोहिणी शकटका भेद नहीं करते हैं । इनका शकटभेद युगान्तरमें होताहै ॥ ८ ॥

अब याम्योत्तर वृत्तस्थ नक्षत्रदर्शनसे तत्काल लग्न और गतरात्रि जानने-की रीति लिखते हैं-

खमध्यगर्क्षध्रुवतोऽस्फुटं चरं ततो दिनार्द्धान्निजभो-
दयैस्तनुः । भवेत्तदा लग्नमथो तदङ्गभान्वितार्क-
मध्ये घटिका निशागताः ॥ ९ ॥

अन्वयः-खमध्यगर्क्षध्रुवतः, अस्फुटम्, चरम्, (साध्यम्), ततः, (साधितात्), दिनार्द्धात्, निजभोदयैः, (साधितः), तनुः, तदा, लग्नम्, भवेत्; अथो, तदङ्गभान्वितार्कमध्ये, निशागताः, घटिकाः, (स्युः) ॥ ९ ॥

अर्थः-याम्योत्तर वृत्तस्थ नक्षत्रका ध्रुव लेकर उसका शरसंस्कार करे विनाही तिससे चर लावै, तिस चरसे दिनार्द्ध साधै, वह इष्टकाल होताहै, तदनन्तर नक्षत्र ध्रुवांकोंको रवि मानकर तिससे स्वदेशीय उदयों-के द्वारा इष्टकालकी लग्न लावै, वही खमध्यस्थ लग्न होतीहै, वह लग्न और षड्राशियुक्त सूर्य्य इन दोनोंसे विभ्रनाधिकारमें कहीहुई रीतिके अनुसार इष्टकाल साधै, तब तितने कालकी तुल्यही रात्रि बीती जानै ॥ ९ ॥

उदाहरण.

याम्योत्तर वृत्तस्थ अश्विनी नक्षत्रका ध्रुव ० राशि ८ अंश है इसमें अयनांश १८ अंश १० कलाको युक्त करा तब ० राशि २६ अंश १० कला हुआ, इससे लायाहुआ चर ४९ पल हुआ, इसमें १५ घटी युक्त करीं तब १५ घटी ४९ पल यह दिनार्द्ध हुआ, अब अश्विनी नक्षत्रके ध्रुव ० राशि ८ अंशमें अयनांशों १८ अं-श १० पलको युक्त कर २६ अंश १० कलाको रवि मान कर और दिनार्द्ध १५ घटी ४९ पलको इष्ट काल मान कर इनसे लायाहुआ भोग्य काल २८ पल और सायन लग्न ४ राशि १ अंश ५४ कला ४६ विकला हुआ, इस रीतिसे प्रत्येक नक्षत्रका दिनार्द्ध और खमध्यस्थ निरयण लग्न साधकर लिखते हैं, सो आगे लिखेहुए कोष्टकके अनुसार जानना ॥

	दिनार्द्ध		लग्न				दिनार्द्ध		लग्न		
नाम	घ.	प.	रा.	अं.	क.	वि.	नाम	घ.	प.	रा.	अं.	क.	वि.
अश्विनी	१५	४९	३	१३	४४	४६	ज्येष्ठा	१३	१२	१०	१०	१७	३०
भरणी	१६	११	३	४	५३	३६	मूल	१३	५	१०	२७	३४	४७
कृत्तिका	१६	३७	४	९	३४	२०	पूर्वाषा.	१३	१	११	६	४३	१२
रोहिणी	१६	४७	४	१९	४८	१२	उत्तराषा	१३	४	११	२५	१६	२०
मृगशिरा	१६	५५	५	२	२०	२६	अभिजित	१३	२	११	२०	५५	४१
आर्द्रा	१६	५८	५	६	११	१९	श्रवण	१३	३	५	१५	१६	१९
पुनवसु	१६	४७	६	३	८	४८	धनिष्ठा	१३	२४	०	२९	१	३७
पुष्य	१६	३६	६	१४	२१	१८	शततारका	१३	१९	२	४	२	१४
आश्लेषा	१६	३६	६	१५	१८	४१	पर्वाभाद्रप.	१४	२९	२	८	३४	३६
मघा	१६	३१	७	४	२१	१८	उत्तराभा	१४	५१	२	१८	४०	३१
पूर्वाफा.	१५	२६	७	१९	५४	१२	रेवती	१५	३४	३	७	१६	१८
उत्तराफा	१५	१२	७	२५	३१	३	प्रजापति	१६	५५	५	१	२६	४२
हस्त	१४	४५	८	७	५३	९	ब्रह्महृदय	१६	५१	४	२६	३१	११
चित्रा	१४	२०	८	१९	१४	४	अग्नि	१६	५०	४	२३	४४	३७
स्वाती	१३	४	९	५	१९	१२	अगस्त्य	१६	५६	५	२९	४२	५०
विशाखा	१३	३३	९	१८	१४	११	अपांवत्स	१४	२०	८	१९	१४	४
अनुराधा	१३	१६	१०	२	३५	३	लुब्धक	१६	५६	५	१०	४१	५६

फिर अश्विनीनक्षत्र याम्योत्तर वृत्तमें है सो, निरयण लग्न ३ राशि १३ अंश ४४ कला ४६ विकलामें अयनांश १८ अंश १० कला युक्तकरा तब ४ राशि १ अंश ५४ कला ४६ विकला और तिस दिनके स्पष्ट सूर्य ६ राशि २५ अंश ५० कला ३० विकलामें अयनांश १८ अंश १० कला युक्तकरा तब हुआ ७ राशि १४ अंश ० कला ३० विकलामें ६ राशि युक्त करीं तब हुआ१ राशि १४ अंश ० कला ३० विकला, इनसे लायाहुआ भोग्य काल १३४ पल, इसमें लग्नभुक्तकाल २२ पल (और दोनोंके मध्य उदय) मिथुनोदय ३०४ पल, कर्कोदय ३४२ पल, इनसबका योग हुआ ८०२ पल अर्थात् १३ घटी २२ पल यह रात्रिगतकाल हुआ ॥

अब नक्षत्रकी उदय लग्न और अस्तलग्न तथा तिन दोनोंसे रात्रिगतकाल लानेकी रीति लिखतेहैं-

उद्यद्भुवकः स्वदेशजोऽस्तं वा प्राप्नुवतः सपड्-

ग्रहः। स्यात्तत्कालविलग्नकं ततः प्राग्वत्स्युर्घटिका निशागताः ॥ १० ॥

अन्वयः-स्वदेशजः, उद्यद्ध्रुवकः, वा, अस्तम्, प्राप्नुवतः, सषड्ग्रहः, (ध्रुवकः), तत्कालविलग्नकम्, स्यात्, ततः, प्राग्वत्, निशागताः, घटिकाः, स्युः, ॥ १० ॥

अर्थः-उदयको प्राप्त होनेवाले नक्षत्रका जो स्वदेशीय उदय ध्रुव हो वह उसका उदय लग्न होताहै, और अस्तको प्राप्त होनेवाले नक्षत्रके स्वदेशीय अस्तध्रुवमें छः राशि युक्त करदेय तब तिस नक्षत्रका अस्तलग्न होताहै। तिससे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार रात्रिगत घटिका होतीहैं ॥ १० ॥

उदाहरण.

अश्विनीका उदय ध्रुव जो ० राशि ३ अंश १२ कला ३० विकला यहही अश्विनीका उदय लग्न हुआ,और अश्विनीका अस्तध्रुव जो ० राशि १२ अंश ४७ कला ३० विकला इसमें ६ राशि युक्त करीं तब हुआ ६ राशि १२ अंश ४७ कला ३० विकला, यह अश्विनीका अस्तलग्न है, इनही उदय लग्न और अस्तलग्नसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार रात्रिगत घटिका जाननी ॥

अब यह वार्ता कहते हैं-कि स्वदेशीय नक्षत्रोदयोंको स्थिरलग्नें करै-

इति नैजदेशपलभावशतो ह्युदयं खमध्यमथवास्तमयम्। व्रजदश्विभादिषु सुखार्थमिह स्थिरलग्नकानि विदधीत सुधीः ॥ ११ ॥

अन्वयः-इति, नैजदेशपलभावशतः, हि, व्रजदश्विभादिषु,उदयम्, अथवा, खमध्यम्, अस्तम्,(गच्छतः,) नक्षत्रस्य, सुधीः, इह,सुखार्थम् स्थिरलग्नकानि, विदधीत ॥ ११ ॥

अर्थः-गणितज्ञ विद्वान् इसप्रकार स्वदेशीय पलभासे गणितकी सुलभताके निमित्त अश्विनीआदि नक्षत्रोंके उदय-मध्य-और अस्त इन कालोंकी स्थिर लग्नें लाकर रक्खै ॥ ११ ॥

इति श्रीगणकवर्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्येन काशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिरामामिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्येन भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथात्मजेन पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितो नक्षत्रच्छायाधिकारः समाप्तः॥११॥

अथ शृङ्गोन्नत्यधिकारः प्रारभ्यते।

तहाँ प्रथम चन्द्रमाकी शृङ्गोन्नतिका काल कहते हैं-

मासस्य प्रथमेऽन्तिमेऽथवाऽङ्घ्रौ विधुशृङ्गोन्नतिरीक्ष्यते यदह्नि। तपनास्तमयोदयेऽवगम्यास्तिथयः सावयवाः क्रमाद्गतैष्याः ॥ १ ॥

अन्वयः-मासस्य, प्रथमे, अथवा, अन्तिमे, अङ्घ्रौ, यदह्नि, विधुशृङ्गोन्नतिः, ईक्ष्यते, (तद्दिवसे), तपनास्तमयोदये, क्रमात्, गतैष्याः, तिथयः, सावयवाः, अवगम्याः ॥ १ ॥

अर्थः-प्रत्येक महीनेके प्रथम चरणमें (शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे शुक्ल अष्टमीपर्य्यन्त) अथवा चतुर्थ चरणमें (कृष्णपक्षकी अष्टमीसे अमावास्यापर्य्यन्त) शृङ्गोन्नति देखी जातीहै, शुक्ल पक्षमें जिस दिन शृङ्गोन्नति देखनी होय उस दिन सायंकालके समय रवि-चन्द्र-राहु, और शुक्ल प्रतिपदासे गततिथि लावै, और कृष्ण पक्षमें शृङ्गोन्नति देखनी होय तो अभीष्ट दिवसमें सूर्य्योदयके समय रवि-चन्द्र-राहु-और एष्य तिथि लावै ॥ १ ॥

उदाहरण.

शाके १५३२ ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी ५ गुरुवारके दिन शृङ्गोन्नति देखनेके लिये गणित करतेहैं-तहाँ अहर्गण ८०२३, प्रातःकालीनमध्यम रवि १ राशि १६ अंश ३३ कला ५४ विकला, चन्द्र ३ राशि ९ अंश ३३ कला ११ विकला, उच्च ७ राशि २४ अंश ५७ कला ४८ विकला, राहु २ राशि २२ अंश २४ कला २३ विकला, रविमन्दकेन्द्र १ राशि १ अंश २६ कला ६ विकला, मन्दफल धन १ अंश ८ कला २२ विकला, मन्दस्पष्ट रवि १ राशि १७ अंश ४२ कला १६ विकला, अयनांश १८ अंश ८ कला, चरऋण १०६ विकला, स्पष्टरवि १ राशि १७ अंश ४० कला ३७ विकला, स्पष्टगति ५७ कला २० विकला, त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ३ राशि ९ अंश १ कला २८ विकला, मन्दकेन्द्र ४ राशि १५ अंश ५६ कला २० विकला, मन्दफलधन ३ अंश २९ कला २१ विकला, स्पष्टचन्द्र ३ राशि १२ अंश ३० कला ४९ विकला, स्पष्टगति ८३७ कला १ विकला; दिनमान ३३ घटी ३२ पल, इनघटिकाओंका चालन देकर सायङ्कालिक ग्रह रवि १ राशि १८ अंश १२ कला ३२ विकला, चन्द्र ३ राशि १९ अंश ४९ कला २ विकला, राहु २ राशि २२ अंश २२ कला ३७ विकला, सायंकालके समय गततिथि पञ्चमी ७ घटी २० पल ॥

अब गतएष्य सावयवतिथि और पश्चाङ्गस्थरविसे चन्द्रसाधनकी रीति लिखते हैं-

रविहततिथयोंशास्तद्विगुग्युक्क्रमेण द्युमणिरप-
रपूर्वे मासपादे विधुः स्यात् ॥ ৯৯ ॥

अन्वयः-रविहततिथयः, अंशाः, तद्विग्युग्युक्, द्युमणिः, क्रमेण अपरपूर्वे, मासपादे, विधुः, स्यात् ॥ ৯৯ ॥

अर्थः-तिथियोंको बारहसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय वह अंशात्मक होताहै, तिसको यदि शृङ्गोन्नति कृष्णपक्षमें होय तौ रविमें घटादेय, और शृङ्गोन्नति शुक्लपक्षमें होय तौ रविमें युक्त कर देय तब चन्द्र होताहै ॥ ৯৯ ॥

उदाहरण.

सावयवतिथि पञ्चमी ७ घटी २० पलको १२ से गुणाकरा तब ६१ अंश २८ कला ० विकला शृङ्गोन्नति शुक्लपक्षमें है इस कारण रवि १ राशि १८ अंश १२ कला ३२ विकलामें ६१ अंश २८ कला ० विकलाको युक्त करा तब ३ राशि १९ अंश ४० कला ३२ विकला, यह चन्द्र हुआ ॥

वलन और सित इन दोनोंके साधनकी रीति लिखतेहैं-

नृपगुणतिथिरूना स्वघ्नतिथ्याक्षभाघ्नी शरकुहृदु-
दगाशा संस्कृतार्कापमांशैः ॥ २ ॥ चन्द्रस्य चव्य-
स्तशरापमांशैर्द्विनिघ्नतिथ्या विहृताङ्गुलाद्यम् । सं-
स्कारदिक्कं वलनं स्फुटं स्यात्स्वेष्वंशहीनास्ति-
थयः सितं स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-नृपगुणतिथिः, स्वघ्नतिथ्या, ऊना, अक्षभाघ्नी, (ततः), शरकुहृत्, उदगाशा, (स्यात्, सा), अर्कापमांशैः, चन्द्रस्य, व्यस्तशरापमांशैः, च, संस्कृता, (ततः), द्विनिघ्नतिथ्या, विहृता, संस्कारदिक्कम्, वलनम्, स्फुटम्, स्यात् । स्वेष्वंशहीनाः, तिथयः, सितम्, स्यात् ॥ २ ॥ ३ ॥

अर्थः-तिथियोंको सोलहसे गुणाकरनेपर जो गुणन फल होय, उसमेंसे तिथिका वर्ग घटा देय तब जो शेष रहे उसको पलभासे गुणाकरै तब जो गुणन फल होय उसमें पन्द्रहका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसको उत्तर समझकर उस लब्धिका और सूर्य्यकी क्रान्तिका संस्कार करै वह संस्कारकी दिशाकी स्पष्ट लब्धि होतीहै, तदनन्तर चन्द्रमाकी स्पष्ट क्रान्ति करकै वह दक्षिण होय तौ उत्तर और उत्तर होयतौ दक्षिण मानकर उसका और स्पष्टलब्धिका संस्कार करै उससंस्कारमें तिथिको दोसे गुणाकरकेजो गुणनफल होय उसका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि वलन होताहै:वह संस्कार दक्षिण होय तौ दक्षिण और उत्तर होय तौ उत्तर होताहै। तिथिको चारसे गुणा करकै पाँचका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि सित होताहै ॥ २ ॥ ३ ॥

उदाहरण.

५ तिथि ७ घटी २० पलको १६से गुणा करा तब ८१ तिथि ५७घटी २०पल हुआ, इसमें ५ तिथि ७ घटी २० पलके वर्ग २६ तिथि १४ घटी १३ पलको घटाया तब शेष रहे ५५ तिथि ४७ घटी ७ पल इसको पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुलसे गुणाकरा तब गुणनफल हुआ ३२० तिथि २२ घटी ५५ पल, इसमें १५ का भाग दिया तब लब्धि हुई २१ अंश २१ कला ३१ विकला इसलब्धि उत्तर और सूर्य्यक्रान्ति उत्तर २१ अंश ४४ कला २९ विकला इन दोनोंका संस्कार करा तब (एकदिशाके होनेके कारण योग करनेसे) ४३ अंश ६ कला० विकला हुआ, चन्द्रकी स्पष्टक्रान्ति उत्तर २० अंश ४१ कला ९ विकला है इस कारण इसको स्पष्टलब्धि ४३ अंश ६ कला ० विकलामें घटाया तब शेपरहा उत्तर २२ अंश २४ कला ५१ विकला, इसमें तिथि ५ घटी ७ पल २० को २ से गुणाकरनेसे जो गुणनफल हुआ १० तिथि १४ घटी ४० पल, इसका भागदिया तब अंगुलादि लब्धिहुई २ अंगुल ११ प्रति-अंगुल यह उत्तर वलन स्पष्ट हुए, । ५ तिथि ७ घटी २० पलको ४ से गुणा करा तब २० तिथि २९ घटी २० पल हुआ, इसमें ५ का भागदिया तब लब्धि-हुई ४ अंगुल ५ प्रतिअंगुल यह चन्द्रके सितहुए ॥

किस दिशामें चन्द्रका शृङ्गोच्चय होयगा यह जाननेकी रीति लिखतेहैं-

उन्नतं वलनाशायामन्यस्यां स्यान्नतं विधोः।
वलनस्याङ्गुलैः शृङ्गं किमत्र परिलेखतः ॥ ४ ॥

अन्वयः-विधोः, शृङ्गम्, वलनाशायाम्, उन्नतम्, अन्यस्याम्,

नतम्, वलनस्य, अङ्गुलैः, (तुल्यम्), स्यात्; अत्र, परिलेखतः, किम् ? ॥ ४ ॥

अर्थः-वलनकी जो दिशा हो उसही दिशाकी ओर चन्द्रमाके शृङ्गकी ऊँचाई होतीहै, और अन्य दिशामें शृङ्गकी नति (नीचाई) होगी, और वलनके जितने अंगुल होंगे उतनाही प्रमाण शृङ्गोच्चयका होगा, फिर यहाँ वृथा प्रयास करनेसे क्या प्रयोजनहै ? ॥ ४ ॥

उदाहरण.

चन्द्रका वलन उत्तर २ अंगुल ११ प्रतिअङ्गुलहै, इसकारण शृङ्गोन्नति उत्तरकी ओर होयगी, और शृङ्गनति दक्षिणकी ओर होयगी, तथा शृङ्गका मान २ अङ्गुल ११ प्रतिअङ्गुल होयगा ॥

इति श्रीगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबाद-
वास्तव्येन काशीस्थराजकीयसस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डित-
स्वामिराममिश्रशास्त्रिणां सन्निधावधिगतन्यायादिशास्त्रेण-
भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथा-
त्मजेन पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया
सान्वयभाषाटीकया सहितः शृङ्गो-
न्नत्यधिकारः समाप्तः ॥ १२ ॥

अथ ग्रहयुत्यधिकारो व्याख्यायते ॥

तहाँ प्रथम ग्रहबिम्ब साधनकी रीति लिखतेहैं-

पञ्चर्त्वगाङ्कविशिखाः पृथगीशकर्णायोगाहताः प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः । भक्ताः फलोनसहिताः श्रवणेऽधिकोने ते त्र्युद्धृताः स्युरसृजो वपुरङ्गुलानि ॥ १ ॥

अन्वयः-पञ्चर्त्वगाङ्कविशिखाः, (अङ्काः), पृथक्, ईशकर्णायोगाहताः, (ततः), प्रकृतिभान्वरिसिद्धरामैः, भक्ताः, श्रवणे, अधिकोने, फलोनसहिताः, ते, त्र्युद्धृताः, असृजः, वपुरङ्गुलानि, स्युः ॥ १ ॥

अर्थः-मंगलआदि पाँचों ग्रहोंमेंसे जिसका बिम्ब लाना होय उसके शीघ्रकर्ण और ग्यारह अंश इन दोनोंका अन्तर करके, तिस अन्तरको इष्टग्रहके नीचे लिखेहुए बिम्बाङ्कसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें भाज्याङ्कका भाग देय, फिर यदि शीघ्रकर्ण ग्यारह अंशोंकी अपेक्षा अधिक होय तब तो भाज्याङ्कका भागदेनेसे प्राप्तहुई लब्धिको बिम्बाङ्कमेंसे घटादेय, और यदि शीघ्रकर्ण ग्यारह अंशोंकी अपेक्षा कम होय तो उस लब्धिको बिम्बाङ्कमें युक्तकरै तब जो होय उसमें तीनका भाग देनेसे जो लब्धि होय वह अङ्गुलादि बिम्ब मंगल आदि ग्रहोंके होतेहैं; । पञ्च कहिये ५,ऋतु कहिये ६, अग कहिये ७, अङ्क कहिये ९, और विशिख कहिये ५ यह क्रमसे मंगल आदि पाँचों ग्रहोंके बिम्बाङ्क हैं और प्रकृति कहिये २१, भानु कहिये १२, अरि कहिये ६, सिद्ध कहिये २४, और राम कहिये३, यह क्रमसे मंगलआदिके भाज्याङ्कहैं॥१॥

ग्रहोंकेनाम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
बिम्बाङ्क	५	६	७	९	५
भाज्याङ्क	२१	१२	१६	२४	३

उदाहरण.

संवत् १९६७शाके १७३५ वैशाख शुक्ल१०रविवारके दिन ग्रहयुतिदिन साधनके निमित्त ग्रहबिम्बसाधनकी गणित लिखतेहैं अहर्गण ७७८ चक्र ८, मध्यम रवि ०राशि२१ अंश५५कला३०विकला, भौम९राशि०अंश३३कला५१विकला, शनि १०राशि ५ अंश ४५ कला ५९ विकला, सूर्यका मन्दकेन्द्र १ राशि २६ अंश ४ कला ३० विकला, मन्दफल धन १ अंश ४८ कला २६ विकला, संस्कृत रवि ० राशि २३ अंश ४३ कला ५६ विकला. अयनांश १८ अंश ८ कला, चरऋण ७५, स्पष्ट रवि ० राशि २३ अंश ४२ कला ४१ विकला, स्पष्टगति ५७ कला ५६ विकला. अब भौम स्पष्टीकरण लिखतेहैं-शीघ्रकेन्द्र ३ राशि २१ अंश २१ कला ३९ विकला, शीघ्रफलार्द्धधन १८ अंश ५० कला ३७ विकला, संस्कृत भौम ९ राशि १९ अंश २४ कला २८ विकला, मन्दकेन्द्र ६ राशि १० अंश ३५ कला ३३ विकला. मन्दफल ऋण २ अंश २ कला ५२ विकला, । मन्दस्पष्ट भौम ८ राशि २८ अंश ३० कला ५९ विकला, शीघ्रकेन्द्र ३ राशि २३ अंश २४ कला ३१ विकला, शीघ्रफल धन ३८ । ४ । १०, स्पष्ट भौम-१० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकला, स्पष्टगति ४२ कला ५० विकला, अब शनिस्पष्टीकरण लिखतेहैं-शीघ्रकेन्द्र २ । १६ । ३१ शीघ्रफलार्द्ध धन २ अंश ४२ कला ४१ विकला, संस्कृत शनि १० राशि ८ अंश २८ कला ४० विकला, मन्दकेन्द्र ९ राशि २१ अंश ३१ कला २० विकला. मन्दफल ऋण ८ । २२ । ४१, मन्दस्पष्ट शनि ९ राशि २७ अंश ३३ कला१८विकला शीघ्रकेन्द्र २ राशि २४ अंश ३३ कला १६ विकला, शीघ्रफल ५ अंश ३८कला २६ विकला, स्पष्टशनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला, स्पष्ट गति ३ कला ३ विकला, दिनमान ३२ घटी ३० पल, मंगलका शीघ्रकर्ण ८ अंश ५५ कला शनिका शीघ्रकर्ण ११ अंश १३ कला, । अब भौमबिम्बसाधन

लिखतेहैं- मंगलके बिम्बाङ्क ५ कलाको ११ अंश और शीघ्रकर्ण ८ अंश ५२ कलाके अन्तर २ अंश ८ कलासे गुणाकरा तब १० अंश ४० कला हुआ इसमें मंगलके भाज्याङ्क २१ कलाका भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ३० कला इसको 'कर्णके ग्यारह से कम होने के कारण' बिम्बाङ्क ५ में युक्त करा तब ५ अंश ३० कला हुआ, इसमें ३ का भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई १ अङ्गुल ५ प्रतिअङ्गुल, यह मंगलका स्पष्ट बिम्ब हुआ; अब शनिबिम्बसाधन लिखते हैं- शनिके बिम्बाङ्क ५ कलाको ११अंश और शनिशीघ्रकर्ण ११ अंश १३ कला इनके अन्तर १३ कलासे गुणा करा तब १ अंश ५ कला हुआ इसमें शनिके भाज्यांक ३ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश २१ कला इसको, कर्णके ग्यारह अंशसे अधिक होनेके कारण शनिके बिम्बाङ्क ५ में घटाया तब शेष रहे ४ अंश ३९ कला,इसमें ३ का भाग दिया तब अङ्गुलादि लब्धि हुई १ अङ्गुल ३३ प्रतिअङ्गुल, यह शनिका स्पष्ट बिम्ब हुआ ॥

अब युतिके गतगम्यको जाननेकी रीति लिखतेहैं-

अधिकजवखगेऽधिकेऽल्पभुक्तेरथ कुटिलेऽल्पतरेऽनु-लोमतो वा । अनृजुगखगयोस्तु शीघ्रगेल्पे युतिर-नयोः प्रगतान्यथा तु गम्या ॥ २ ॥

अन्वयः-अनयोः, अधिकजवखगे, अल्पभुक्तेः, अधिके, अथवा, कुटिले, अनुलोमतः, अल्पतरे, अनृजुगखगयोः तु, शीघ्रगे, अल्पे, (सति), युतिः, प्रगता, अन्यथा, गम्या, (वाच्या) ॥ २ ॥

अर्थः-जिन दो ग्रहोंकी युति लानी है उनमें यदि अधिकगति ग्रह अल्पगति ग्रहकी अपेक्षा अंशादि अवयवोंकरके अधिक होय, अथवा मार्गगति ग्रहकी अपेक्षा वक्रगतिग्रह अंशादिअवयवोंकरके कम होय, या अधिकवक्रगति ग्रह अल्पवक्रगति ग्रहकी अपेक्षा अंशादि अवयवोंकरके कम होय तो युतिको गत (वीतीहुई) जाने, और यदि इस लक्षणमें विपरीतता होय तो ग्रह-युतिको गम्य (होनेवाली है ऐसा) जाने ॥ २ ॥

उदाहरण.

अल्पगति ग्रह शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला, अधिकगति ग्रहमंगल १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकलाकी अपेक्षा कम है इसकारण मंगल और शनि इनकी युति गत (होगई) है ॥

अब ग्रहयुतिके दिन जाननेकी रीति लिखते हैं-

ऋजुगतिखगयोस्तु वक्रयोर्वा विवरकलागतिजान्तरेण भक्ताः । गतिजयुतिहृता यदैकवक्री युतिरगता प्रगताप्तवासरैः स्यात् ॥ ३ ॥

अन्वयः-ऋजुगतिखगयोः, वा, वक्रयोः, विवरकलाः, गतिजान्तरेण, भक्ताः, यदा, एकवक्री, (तदा), गतिजयुतिहृता, आप्तवासरैः, अगता, प्रगता, युतिः, स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थः-यदि दोनों ग्रह मार्गी अथवा वक्री हों तौ इन दोनों ग्रहोंके अन्तरकी कलाओंमें गतिके अन्तरका भागदेय, और यदि एक ग्रह वक्री होय और दूसरा ग्रह मार्गी होय तौ इन दोनों ग्रहोंके अन्तरकी कलाओंमें गतिके योगका भाग देय, तब जो लब्धि होय उस लब्धिके तुल्य दिनोंमें तिन दोनों ग्रहोंकी युति होयगी अथवा होगई ऐसा जानै ॥ ३ ॥

उदाहरण.

मार्गी ग्रह जो भौम १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकला, और शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला इन दोनोंके अन्तर ३ अंश ३६ कला २५ विकलाकी कला हुई २१६ कला २५ विकला इसमें मंगलकी गति ५२ कला ५० विकला, और शनिकी गति ३ कला ३ विकला इन दोनोंके अन्तर ४९ कला ४७ का भाग दिया तब दिनादि लब्धि हुई ५ दिन ३६ घटी २३ पल इतने दिन युति हुए होगए, अर्थात् इस दिनादि ५ दिन ३६ घटी २३ पलको वैशाख शुक्ल दशमी १० में घटाया तब शेष रहा वैशाख शुक्ल ४ चतुर्थी ३३ घटी ३७ पल, अर्थात् वैशाख शुक्ल चतुर्थीको सूर्य्योदयसे ३३ घटी ३७ पलपर अर्थात २ घटी ७ पल रात्रि व्यतीत होनेपर शनि और भौमकी युति (युद्ध) हुआ ॥

अब ग्रहोंका दक्षिणोत्तर दिशामें संस्थान और उनके अन्तरको जाननेकी रीति लिखते हैं-

चाल्यौ खेटौ समौस्तो ग्रहयुतिदिवसेश्चन्द्रबाणः स्वनत्या संस्कार्य्योऽत्र ग्रहौ स्वेपुदिशि समदिशोस्त्वल्पबाणः परस्याम्॥एकान्याशौ यदेपू वि-

रहितसहितौ खेटमध्येऽन्तरं स्याद्भेदो मानैक्यख-
ण्डादिह लघुनि तदाऽल्पं हि किं लम्बनाद्यम् ॥४॥

अन्वयः–ग्रहयुतिदिवसैः, खेटौ, चाल्यौ, (तौ), समौ, स्तः, (तयोः, शरः, साध्यः,) चन्द्रबाणः, (नैत, तदा), स्वनत्या, संस्कार्य्यः; अत्र, ग्रहौ, स्वेषुदिशि, (भवतः), समदिशोः, तु, अल्पबाणः, परस्याम्, (स्यात्), यदा, इषू, एकान्याशौ, (तदा), विरहितसहितौ, (कार्य्यौ), (तदा) खेटमध्ये, (अंगुलाद्यम्), अन्तरम्, स्यात्, इह, मानैक्यखण्डात्, लघुनि, भेदः, (स्यात्), तदा, हि, अल्पम्, लम्बनाद्यम्, (अत्र), किम्, (कर्त्तव्यम्), ॥ ४ ॥

अर्थः–ग्रहयुतिके जो गत अथवा एष्य दिन हों वैसे ही तिन युतिके दिनोंका ऋण अथवा धन चालन ग्रहोंमें देय तब वह ग्रह राशि आदि अवयवोंकरकै तुल्य होंगे,तदनन्तर तिन ग्रहोंके शर लावै,(परन्तु जब चन्द्रमाकी युति अन्यग्रहोंकरकै होय तब चन्द्रमाका नतिसंस्कृत शर लेय केवल शर न लेय) और वह शर जिस दिशाका होय उस दिशाकाही उस ग्रहको जानै अर्थात् जिस ग्रहके शरकी दिशा उत्तर हो तौ वह ग्रह उत्तर दिशाका,और शर दक्षिण दिशाका होय तौ वह ग्रह दक्षिण दिशाका है ऐसा जाने, परन्तु यदि दोनों ग्रहोंकी दिशा एकही आवै तौ जिस ग्रहका शर अल्प होय वह ग्रह अधिक शरवाले ग्रहकी-दिशासे अन्य दिशाका जाने यदि ग्रहोंके शर एकही दिशाके हों तौ तिन शरोंका अन्तर करै और ग्रहोंके शर भिन्न दिशाओंके हों तौ तिन शरोंका योग करलेय तब उन ग्रहोंके मध्यमें दक्षिणोत्तर अंगुलात्मक अन्तर होताहै, तदनन्तर यदि ग्रहोंके बिम्बोंके योगके अर्द्धकी अपेक्षा दक्षिणोत्तर अन्तर कम होय तौ ग्रहोंके बिम्बोंका ऐक्य होयगा और यदि दक्षिणोत्तर अन्तर अधिक होय तौ ग्रहोंके बिम्बोंका ऐक्य नहीं होयगा ऐसा जाने, फिर यह समझनेके लिये लम्बनादि गणित करनेकी क्या आवश्यकताहै ? ॥ ४ ॥

उदाहरण.

मंगल १० राशि ६ अंश ३५ कला ९ विकला, गत युति दिनों ५ दिन ३६ घटी २३ पलका ऋण चालन ३ अंश ५३ कला ० विकला, शनि १० राशि २ अंश ५८ कला ४४ विकला, गति युतिदिनोंका ऋण चालन ० अंश १६ कला ३५ विकला; चालित मंगल १० राशि २ अंश ४२ कला ९ विकला,

चालित शनि १० राशि २ अंश ४२ कला ९ विकला- यह दोनों चालित ग्रह अंशादि अवयवोंकरके तुल्यहैं. अब अस्तोदयाधिकारमें कहीहुई रीतिके अनुसार लाएहुए शर-मंगलका शर दक्षिण १६ अंगुल ११ प्रतिअङ्गुल है, और शनिका शर दक्षिण १४ अंगुल ७ प्रतिअङ्गुलहै, अब इन दोनों शरोंकी दिशा एकहै और मंगलका शर अधिक है. इसकारण शरान्तर २ अंगुल ४ प्रतिअंगुल हुआ; मंगलके बिम्ब १ अंगुल ५० प्रतिअंगुलमें शनिके बिम्ब १ अंगुल ३३ प्रतिअंगुलको युक्त करा तब ३ अंगुल २३ प्रतिअंगुल यह बिम्ब मानैक्य हुआ, और इसको आधा करनेसे १ अंगुल ४१½ प्रतिअंगुल मानैक्य खण्ड हुआ, इसकी अपेक्षा शरान्तर अधिकहै इस कारण दिम्बैक्य नहीं होयगा, अर्थात् मंगल और शनि एक एकके नीचे ऊपर होकर नहीं जायंगे किन्तु दाएँ बाएँ होकर जायँगे ॥

इति श्रीगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादा-
बादवास्तव्येन काशीस्थराजकीयसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकरुतसम्प्रदायाचा-
र्यपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिणा सान्निध्याधिगतविद्येन भारद्वाजगो-
त्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथात्मजेन पण्डितरामस्वरू-
पशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितो ग्रहयुत्य-
धिकारः समाप्तिमितः ॥ १३ ॥

अथ पाताधिकारो व्याख्यायते।

तहाँ प्रथम पातकाल(रवि और चन्द्रकी क्रान्तियोंको साम्य)का अनुमान करनेकी रीति लिखतेहैं-

नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः सार्द्धविश्वे तथा
तारास्तावति साम्ययोगविगमे पातो व्यतीपातकः।
ज्ञेयो वैधृतिरत्र यातघटिकाः सर्वर्क्षनाडीहताः स्प-
ष्टाः स्युः शरपड्हृता इह तमोर्कौ सायनांशौ कुरु॥१॥

---

१ यह क्रान्तिसाम्य शाके १४९७ के विषैं वृद्धिपात योगके चतुर्थ चरणमें और ब्रह्मयोगके द्वितीय चरणमें हुएथे, यह वार्ता आगे लिखे हुए मार्तण्डके श्लोकसे मालूमहोतीहै " मेस्पः सम्प्रति वृद्धितुर्यचरणे ब्रह्मद्वितीयेऽप्यमः " ॥

अन्वयः-सार्द्धविश्वे, तथा, ताराः, नन्दघ्नायनभागतुल्यघटिकोनाः, (कार्य्याः), तावति, साग्रयोगविगमे, व्यतीपातकः, वैधृतिः, (च), पातः, ज्ञेयः; अत्र, यातघटिकाः, सर्वर्क्षनाडीहताः, शरषड्हताः, स्पष्टाः, स्युः; इह, तमोर्कौ, सायनांशौ, कुरु ॥ १ ॥

अर्थः-अयनांशोंको नौसे गुणाकरके जो घटिकादि गुणन फल होय उसको १३ योग और ३० घटीमें घटावै, तब जो बाकी रहै तिसकी तुल्य योगादि जब होयगा तब व्यतीपात योग होयगा, और पहिले गुणनफलको सत्ताईस योगोंमें घटावै तब जो शेषरहै उसकी तुल्य योगादि जब होयगा तब वैधृतिपातयोग होयगा, ऐसा अनुमान करै; तदनन्तर अभीष्ट पातयोगकी घटी और पल इतने मात्रको इष्ट दिनमेंके नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओंसे गुणाकरकै जो गुणनफल होय उसमें पैंसठका भाग देय तब जो लब्धि होय वह तिस अभीष्ट पातयोगकी घटी होतीहै, फिर स्पष्ट घटिकाओंमेंका स्पष्ट रवि और राहु करकै उसमें अयनांश युक्त करदेय ॥ १ ॥

उदाहरण.

संवत् १६७० शाके १५३५ वैशाख कृष्णा सप्तमी ७ शनिवार घटी ११ पल ३०, धनिष्ठा नक्षत्र ५९ घटी ६ पल, ब्रह्मयोग २८ घटी ४६ पल, इस दिन पात जाननेके लिये गणित करतेहैं-चक्र ८, अहर्गण १८८३, प्रातःकालीन मध्यम रवि १ राशि १ अंश ० कला ५९ विकला, चन्द्र ९ राशि २० अंश ० कला४४ विकला, उच्च ११ राशि २५ अंश १३ कला १४ विकला, राहु ० राशि २५अंश ९ कला ५२ विकला, रविमन्दकेन्द्र १ राशि १६ अंश ५९ कला १ विकला, मन्द फल धन १ अंश ३५ कला ३५ विकला, संस्कृतरवि १ राशि २ अंश ३६ कला ३४ विकला, अयनांश १८ अंश ११ कला, सायन रवि १ राशि २० अंश ४७ कला ३४ विकला, चर ऋण ८८ विकला, स्पष्ट रवि १ राशि २ अंश ३५ कला ६ विकला स्पष्टगति ५७ कला ३३ विकला, प्रातःकालीन मध्यम चन्द्र ९ राशि २० अंश ० कला ४४ विकला, उच्च ११ राशि २५ अंश १३ कला १४ विकला, राहु ० राशि २५ अंश ९ कला ५२ विकला, त्रिफलसंस्कृतचन्द्र ९ राशि १९ अंश ३४ कला ३ विकला, मन्दकेन्द्र २ राशि ५ अंश ३९ कला ११ विकला, मन्दफल धन ४ अंश ३४ कला ३२ विकला, स्पष्टचन्द्र ९ राशि २४ अंश ८ कला ३५ विकला, स्पष्टगति ७६२ कला ४८ विकला, धनिष्ठा नक्षत्रकी गतघटी ३ घटी ४९ पल, एष्य ५९ घटी ६ पल, गतैष्य घटिकाओंका योग ६२ घटी ५५ पल, अब प्रथम मध्यम पात जाननेके लिये गणित लिखते हैं- अयनांशों १८ अंश ११ कलाको ९ से गुणा करा तब १६३ घटी ३९ पल हुए इसमें ६० का भागदिया तब योगादि लब्धि

हुई २ योग ४३ घटी ३९ पल इसको १३ योग ३० घटीमेंसे घटाया तब शेष रहे १०. योग ४६ घटी २१ पल इसकी तुल्य योग होनेपर व्यतीपात योग होनेका सम्भव है। और २७ योगमेंसे २ योग ४३ घटी ३९ पलको घटाया तब शेषरहे २४ योग १६ घटी २१ पल, इसकी तुल्य योग होनेपर वैधृतिपात योग होनेका संभव है। अब ब्रह्मपात योगकी घटिका १६ घटी २१ पलको तत्कालीन पञ्चाङ्गके नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओं ६२ घटी ५५ से गुणाकरा तब १०२८ घटी ४१ पल हुए, इसमें ६५ का भागदिया तब लब्धिहुई १५ घटी ४९ पल यह ब्रह्मयोगकी स्पष्ट घटिका हुई। पहिले दिन अर्थात् शुक्रवारके दिन शुक्र योग ३० घटी १ पल है इसमें ब्रह्मयोगकी स्पष्ट घटिका १५ घटी ४९ पलको युक्तकरा तब ४५ घटी ५० पल हुए इसको ६० घटीमें घटाया तब शेषरहे १४ घटी १० पल यह मध्यम क्रान्तिसाम्यकाल हुआ, यह काल सूर्य्योदयसे पहिलेका है, इसकारण ऋण चालन देकर लाएहुए ग्रह-और सायन ग्रह-चालित सूर्य्य १ राशि २ अंश २१ कला ३१ विकला, चालित राहु ० राशि २५ अंश १० कला ३७ विकला, सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला, सायनराहु १ राशि १३ अंश २१ कला ३७ विकला, ॥

अब स्पष्ट पातके संभवलक्षण और असंभवलक्षणको कहते हैं-

गोलैक्ये साग्वर्कभान्वोः सदा स्यात्पातोऽन्यत्वे चे-
द्रवेर्बाहुभागाः । पञ्चेषुभ्योऽल्पास्तदास्त्येव पातः
पुष्टाश्चेत्तत्संशयस्तंच भिद्मः ॥ २ ॥

अन्वयः-साग्वर्कभान्वोः, गोलैक्ये, (सति), सदा, पातः, स्यात्; चेत्, अन्यत्वे, रवेः, बाहुभागाः, (कार्य्याः), (ते), पञ्चेषुभ्यः, अल्पाः, तदा, पातः, अस्ति, एव; पुष्टाः, चेत् (तदा), तत्संशयः, तम्, च, (वक्ष्यमाणप्रकारेण, वयम्), भिद्मः ॥ २ ॥

अर्थ-(सायन) सूर्य्यमें (सायन) राहुको मिलाकर जो अङ्क योग होय उसको साग्वर्क कहते हैं, यदि साग्वर्क और सायन सूर्य्य एकगोलीय होयँ, अथवा साग्वर्क और सायन सूर्य्य दोनों भिन्नगोलीय हों तो रविके भुजांश करै, वह भुजांश पचपन अंशोंकी अपेक्षा कम हों तो पात अवश्य होगा,परन्तु यदि वह एकगोलीय न हों और सूर्य्यके भुजांश पचपन अंशकी अपेक्षा अधिक हों तो पात होनेका संशय होता है, उस संशयको भेदन करनेकी रीतिभी आगेके श्लोकमें लिखते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण.

सायन राहु १ राशि १३ अंश २१ कला ३७ विकलामें सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकलाको युक्तकरा तब ३ राशि ३ अंश ५४ कला ८ विकला यह साग्वर्क हुआ, यह और सायनसूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला यह दोनों एकगोलीयहैं इसकारण पात होयगा, अब तुम समझो कि सूर्य्य १ राशि २७ अंश और राहु ६ राशि १५ अंश है तो इनका योग हुआ ८ राशि १२ अंश यह साग्वर्क और सायन सूर्य्य १ राशि २७ अंश भिन्नगोलीय हैं, और सायन सूर्य्यके भुजांश ५७ भी ५५ अंशकी अपेक्षा अधिक हैं इसकारण पात होनेका संशय है ॥

अब पातसंशयको भेदन करनेकी रीति लिखते हैं-

खभ्रेन्दुद्विरसा धृतिर्नगशराः साग्वर्कभान्वोः पदै-
क्येऽर्द्धानि त्र्यगरुद्रभूपतिनखाद्व्यक्षीणि भेदे क्रमा
त् । क्षेपः षड्दश चार्ककोटिजलवेष्वंशप्रमार्द्धैक्यकं
शेषांशैष्यवधेषुभागसहितं सन्धिर्भवेत्क्षेपयुक् ॥ ३॥
साग्वर्कभुजांशिका यदाल्पाः सन्धेः क्रान्तिसमत्व-
मस्ति चेत् । अधिका नतदा भुजांशसंध्यंतरसादृश्य
मिहापमान्तरं स्यात् ॥ ४ ॥

अन्वयः-साग्वर्कभान्वोः, पदैक्ये, खभ्रेन्दुद्विरसाः, धृतिः, नगशराः; भेदे, अगरुद्रभूपतिनखाः, त्र्यक्षीणि, अर्द्धानि, (स्युः); षड्, दश, च, क्रमात्, क्षेपः; अर्ककोटिजलवेष्वंशप्रमार्द्धैक्यकम्, शेषांशैष्यवधेषुभागसहितम्, (.ततः), क्षेपयुक्, सन्धिः, भवेत्; यदा, साग्वर्कभुजांशकाः, सन्धेः, अल्पाः, (तदा), क्रान्तिसमत्वम्, अस्ति, अधिकाः, चेत्, तदा, न; इह; भुजांशसन्ध्यन्तरसादृश्यम्, अपमान्तरम्, स्यात् ॥ ३ ॥ ४ ॥

अर्थः-राशिचक्रके चतुर्थांशको पद अर्थात् चतुर्थ भाग कहते हैं, पहिले और तीसरे पद(मेषके आरम्भसे लेकर मिथुनके अन्तपर्यन्तके और तुलाके प्रारम्भ-

से लेकर धनके अन्तपर्य्यन्तके भाग)को विषमपद कहते हैं, और दूसरे तथा चौथे पद(कर्कके प्रारम्भसे लेकर कन्याके अन्तपर्यन्तके और मकरके प्रारम्भसे मीनके अन्तपर्य्यन्तके भाग)को समपद कहते हैं;अब साग्वर्क और सायन सूर्य्य यह दोनों एकपदमें अर्थात् विषमपदमें अथवा समपदमें हों तौ सायन सूर्य्यके केवल कोट्यंशोंमें पाँचका भागदेय तब जो लब्धिका अङ्क होय उसके तुल्य नीचै लिखेहुए पदैक्यखण्डोंका योग करै, और यदि साग्वर्क तथा सायन सूर्य्य यह दोनों भिन्नपदमें हों तौ नीचै लिखेहुए पदभेदखण्डोंका योग करै, और लब्धिके अङ्कमें एक युक्त करके तत्परिमित अंकसे अंशादि शेषको गुणा करै तब जो गुणनफल होय उसमें पाँचका भागदेकर जो अंशादि लब्धि होय उसमें पहिला अंशात्मक अङ्कयोग युक्तकर देय तब मध्यम सन्धि होतीहै, इसमें यदि साग्वर्क और सायन सूर्य्य समपदमें होय तो छः अंशयुक्त करदेय,और भिन्न पदमें हों तौ दश अंश युक्त करदेय तब सन्धि होताहै, तदनन्तर यदि साग्वर्कके भुजांशसंधिके अंशोंकी अपेक्षा कम हों तौ क्रान्तिसाम्य कहिये पात होताहै, और अधिक होय तौ क्रान्तिसाम्य कहिये पात नहीं होताहै, पात न होय तब भुजांश और संध्यंशोंका अन्तर करै तब वह क्रान्त्यन्तर होताहै ॥ खकहिये ०, अभ्र कहिये०, इन्दु कहिये १, द्वि २, रस कहिये ६, भृति कहिये १८, और नगशर कहिये ५७, यह साग्वर्क और सायन सूर्य्यके पदैक्यखण्ड हैं, और त्रिकहिये ३, अगकहिये७, रुद्रकहिये ११, भूपति कहिये१६, नख कहिये२०,और त्र्यक्षि कहिये२३यह साग्वर्क और सायन सूर्यके पदभेदखण्डहैं ॥ और ६ तथा१० यह क्रमसे क्षेपकाङ्कहैं॥३॥४॥

खण्ड	१	२	३	४	५	६	७
पदैक्यखण्ड	०	०	१	२	६	१८	५७
पदभेदखण्ड	३	७	११	१६	२०	२३	०

उदाहरण.

यहाँ कल्पित उदाहरण लिखतेहैं–रवि १राशि २७ अंश है, और राहु ६ राशि १५ अंश है इन दोनोंका योग करनेसे साग्वर्क हुआ ८ राशि १२ अंश यह साग्वर्क और सायनार्क १ राशि २७अंश यह दोनों समान पदमें हैं इसकारण सूर्य्यके कोटिअंशों ३३ में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६ और शेष बचे ३ अब छः पदैक्यखण्डोंका योग २७ हुआ, और एव ७ खण्डोंके योग ५७ को शेष ३ अंशसे गुणा करा तब १७१ हुए, इसका पञ्चम भाग जो ३४ अंश १२ कला तिसमें पहिले अङ्कयोग २७को युक्त करा तब ६१ अंश १२ कला हुआ, यह मध्यम सन्धि हुआ, इसमें क्षेपकाङ्क ६ को युक्त करा तब ६७ अंश १२ कला यह सन्धि हुआ, इस सन्धिकी अपेक्षा साग्वर्क भुजांश ७२ अधिक हैं, इस कारण पात अर्थात् क्रान्तिसाम्य नहीं है, किन्तु भुजांश ७२ और सन्धि ६७। १२ के अन्तर ४ अंश ४८ कलाकी तुल्य क्रान्तिका अन्तर है ॥

अब पातके गतगम्य लक्षणको जाननेकी रीति लिखतेहैं-

पदे युग्मौजेऽर्कः समविषमगोलः सतमसस्तदायातः
पातस्त्वगत इतरत्वे निगदितात् । विभिन्ने गोलेचे-
दिह कृतशराङ्ग्रेर्लघुतरा रवेर्दोर्भागाः स्यादिह
रविपदान्यत्वमुचितम् ॥ ५ ॥

अन्वयः-सतमसः, अर्कः, (यदि), युग्मौजे, पदे, समविषमगोलः, तदा, पातः, यातः, (स्यात्); निगदितात्, इतरत्वे, तु, अगतः, (स्यात्); इह, विभिन्ने, गोले, चेत्, कृतशराङ्घ्रेः, रवेः, दोर्भागाः, लघुतराः, (तदा), इह, रविपदान्यत्वम्, उचितम्, स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थः-साग्वर्क और सायन सूर्य्य एकगोलीय हों और यदि सायन सूर्य्य समपदमें है, अथवा साग्वर्क और सायन सूर्य्य भिन्नगोलीय हों और यदि सायन सूर्य्य विषमपदमें है तो पात होगया; और साग्वर्क तथा सायन सूर्य्य होकर यदि सायन सूर्य्य विषमपदमें है, अथवा वह दोनों भिन्नगोलीय है और यदि सायन सूर्य्य समपदमें है तो पात (क्रान्तिसाम्य) होनेवाला है ऐसा जाने; इसप्रकारही साग्वर्क और सायन सूर्य्यके भिन्नगोलीय होनेपर सायन सूर्य्यके पद उलटे लेय अथवा न लेय; इसका विचार नीचे कही हुई रीतिसे करनेके अनन्तर पातके गत अथवा गम्य होनेका निर्णयकरै, आगेकी रीतिसे शर लाकर उसशरके चतुर्थांशसे यदि सायन सूर्य्यके भुजांश कम हों तो सायन सूर्य्यके पद उलटे लेय, अर्थात् सम होनेपर विषम और विषम होनेपर सम लेय ॥ ५ ॥

उदाहरण.

सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला विषम पदमें है और सायन सूर्य्य तथा साग्वर्क ३ राशि ३ अंश ५९ कला ८ विकला एक गोलीयहैं, इसकारण वैधृति पात होनेवाला है ॥

अब शरखण्ड और शरसाधनकी रीति लिखते हैं-

पञ्चधा सागराः पञ्चधावह्नयो द्वौ चतुर्धा कुभूखा-
भ्रमङ्का इषोः । साग्विनादोर्लवेष्वंशतुल्यैक्यकं शेष-
भोग्याहतीष्वंशयुक्स्याच्छरः ॥ ६ ॥

अन्वयः—सागराः, पञ्चधा, वह्नयः, पञ्चधा, द्वौ, चतुर्धा, (ततः), कुभूखाभ्रम्, इषोः, अङ्काः, (स्युः); साग्विनात्, दोर्लवेष्वंशतुल्यैक्यकम्, शेषभोग्याहतीष्वंशयुक्, शरः, स्यात् ॥ ६ ॥

अर्थः—सागर कहिये चार पाँचस्थानमें; वन्हि कहिये तीन पाँचस्थानमें; द्वि कहिये दो चारस्थानमें; तदनन्तर कु कहिये एक, भू कहिये एक, ख कहिये शून्य, और अभ्र कहिये शून्य यह शराङ्क हैं; साग्वर्कके भुजांशोंमात्रमें पाँचका भाग देय तब जो लब्धि होय तत्परिमित नीचे लिखेहुए शराङ्कोंका योग करलेय, और एकाधिक लब्धिपरिमित शराङ्कसे अंशादि बाकीको गुणाकरके जो गुणनफल होय उसमें पाँचका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें पहिले शराङ्कोंका योग युक्त करदेय तब शर होताहै ॥ ६ ॥

अकसंख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
शराङ्क	४	४	४	४	४	३	३	३	३	३	२	२	२	२	१	१	०	०

उदाहरण.

साग्वर्क ३ राशि ३ अंश ५४कला ८ विकला है, इसके भुज ८६ अंश ५ कला ५२ विकला हुए, इसमेंके केवल अंशों ८६ में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १७ अंश १७ कला, इसकारण १७ शराङ्कोंका योग हुआ ४५, और एकाधिक १८ वे शराङ्क ० से शेष १ अंश ५ कला ५२ विकलाको गुणा करा तब ० अंश ० कला ० विकला यह गुणनफल हुआ, इसमें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ० कला ० विकला, इसमें पहिले शराङ्कोंके योग ४५ को युक्त करा तब ४५ अंश ० कला ० विकला, यह शर हुआ । अब साग्वर्क और सायन सूर्य्यको भिन्न गोलमें मानकर सायन सूर्य्यके पद उलटे लेने चाहिये या नहीं, इस विषयमें शर ४५ अंशमें ४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ११ अंश १५ कला, इसकी अपेक्षा सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३६ कला ३२ विकलाके भुज ५० अंश ३२ कला ३१ विकला अधिक हैं, इसकारण पद उलटे लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं है ॥

अब शरको स्पष्ट करनेकी रीति लिखते हैं—

सैकादिके रविभुजांशदशांशके स्याद्धारोऽर्कविश्वमनुधृत्युडवोङ्गरामाः । सार्वा द्विशत्युडुगुणास्तु शराद्धराप्त्या हीनोऽत्र सद्यपमसंस्कृतये स्फुटः स्यात् ॥ ७ ॥

अन्वयः-रविभुजांशदशांशके, तु, खैकादिके, (सति), अर्कविश्वमनुधृत्युडवः, अङ्करामाः, खाश्वाः, द्विशती, उडुगुणाः, (क्रमात्), हारः, स्यात्; अत्र, हि, शरात्, हराप्त्या, हीनः, सः, अपमसंस्कृतये, स्फुटः, स्यात् ॥ ७ ॥

अर्थः-सायन सूर्य्यके भुजांशोंमें दशका भाग देय तब जो लब्धि होय तत्परिमित आगे लिखेहुए हाराङ्क और एकाधिकलब्धि इन दोनोंके अन्तरसे अंशादि वाकीको गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें दशका भाग देय तब जो लब्धि होय उसमें पहिले लियेहुए हाराङ्क युक्त करै तब हार होताहै; तदनन्तर पहिले लाएहुए शरमें हारका भाग देकर जो लब्धि होय उसको शरमें घटादेय तब जो शेष रहै वह स्पष्ट शर होताहै । सूर्य्यके भुजांशोंका दशमांश शून्य एक आदिके समान होय तौ क्रमसे अर्क कहिये बारह, विश्व कहिये तेरह, मनु कहिये चौदह, धृति कहिये अठारह उडु कहिये सत्ताईस, अङ्कराम कहिये छत्तीस, खाश्व कहिये सत्तर, द्विशती कहिये दोसौ, और उडुगुण कहिये तीनसौ सत्ताईस, यह हाराङ्क होते हैं ७

लब्ध्यङ्क	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
हाराङ्क	१२	१३	१४	१८	२७	३६	७०	२००	३२७	०

उदाहरण.

सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकलाके भुजांश ५० अंश ३२ कला ३१ विकलाके अंशों ५० में १० का भाग दिया तब लब्धि हुई ५ इस कारण पाँचवें हाराङ्क३६और एकाधिक लब्धि६ परिमित हाराङ्क७०इन दोनोंका अन्तर ३४से शेष ०अंश३२कला३१विकलाको गुणाकरा तब १८ अंश २५ कला ३४ विकला हुआ इसमें १० का भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश ५० कला ३३ विकला, यह हार हुआ,तदनन्तर शर ४५ अंश ०कला ० विकलामें हार ३७ अंश ५० कला ३३ विकलाका भाग दिया तब लब्धि हुई १ अंश ११ कला, इसको शर ४५ अंश ० कला ० विकलामें घटाया तब शेष रहे ४३ अंश ४९ कला यह स्पष्ट शर हुआ ॥

अब क्रान्त्यङ्क लिखते हैं-

चतुर्धा नखा गोभुवो द्रिगजाब्जा नृपार्थेन्द्रविश्वार्कदिग्वस्वगाशाः । त्रयः क्ष्मापमाङ्काः क्रमादर्कबाहोर्लवेष्वंशतुल्यो गतोऽन्यस्य शेषम् ॥ ८ ॥

अन्वयः-नखाः, चतुर्धा, गोध्रुवः, द्विः, गजाब्जाः, नृपाष्टीन्द्र-विश्वार्कदिग्वस्वगाक्षाः, त्रयः, क्ष्मा, (एते), क्रमात्, अपमाङ्काः, (सन्ति),अर्कबाहोः,लवेष्वंशतुल्यः,गतः,शेषम्,अन्यस्य, (स्यात्) ॥८॥

अर्थः-नख कहिये बीस चार स्थानमें; गोध्रुवः कहिये उन्नीस; फिर दो स्थानमें गजाब्ज कहिये अठारह, नृप कहिये सोलह, अष्टि कहिये सोलह, इन्द्र कहिये चौदह; विश्व कहिये तेरह, अर्क कहिये बारह, दिक् कहिये दश, वसु कहिये आठ, अग कहिये सात, अक्ष कहिये पाँच,त्रि कहिये तीन,और क्ष्मा कहिये एक, यह क्रमसे क्रान्त्यङ्क हैं;सायन सूर्य्यके भुजांशोंमें पाँचका भाग देनेसे जो लब्धि होय तत्परिमित नीचे दिएहुए क्रान्त्यंकोंको लेकर उनको गताङ्क कहे, और जो शेष बचे उसको अन्यका जानकर एकान्तमें स्थापन करदेय ॥ ८ ॥

उदाहरण.

लब्ध्यङ्क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
क्रान्त्यङ्क	२०	२०	२०	२०	१९	१८	१८	१६	१६	१४	१३	१२	१०	८	७	५	३	१

सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकलाके भुजांश ५० अंश ३२ विकला ३१ विकलाके अंशों ५० में ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई १० इसकारण दशवाँ क्रान्त्यंक १४ गतांक है, और शेष ० अंश ३२ कला ३१ विकला रहा ॥

अब क्रान्त्यङ्क और शराङ्क इन दोनोंका संस्कार लिखते हैं-

क्रमोत्क्रमादुत्क्रशरापमाङ्कान्संख्याहि भोग्या त्क्रः-
मत पडङ्काः । स्थाप्या गतैष्या गतगम्यपाते
युग्मेऽन्यथौजे स्युरिमेऽयनांशाः ॥ ९ ॥ अन्त्याद्वि-
लोमा यदि तेऽन्यदिक्का अथापमाङ्काः क्रमशः श-
राङ्कैः सुसंस्कृतास्त्रीन्दुहृतापभैष्याङ्केनापि ते
स्पष्टतरा भवेयुः ॥ १० ॥

अन्वयः-(हेगणक) उक्तशरापमाङ्कान्, क्रमोत्क्रमात्, संख्याहि, भोग्यात्, क्रमतः, गतगम्यपाते, गतैष्याः, षट्, अङ्काः, स्थाप्याः,

(एवम्), युग्मे, ओजे, अन्यथा, इमे, अयनांशाः, स्युः, यदि, ते, अन्त्यात्, विलोमाः, (तदा), अन्यदिकाः, (ज्ञेयाः), अथ, क्रमशः, शराङ्कैः, अपमांकाः, सुसंस्कृताः, (ततः), त्रीन्दुहृतापमैष्याङ्केन, अपि, (संस्कृताः), ते स्पष्टतराः, भवेयुः ॥ ९ ॥ १० ॥

अर्थः–हेगणक! पहिले जो शराङ्क और क्रान्त्यङ्क कहेहैं उनको क्रमसे और उत्क्रमसे गिनै, अर्थात् क्रान्त्यङ्कोंको पहिलेसे अठारह पर्य्यन्त, और फिर अठारहसे पहिलेपर्य्यन्त, इसप्रकार छत्तीस क्रान्त्यङ्क गिनै, तिसी प्रकार शराङ्कोंकोभी गिनै, तदनन्तर सायन सूर्य्य समपदमें होकर यदि गतपात है, अथवा विषमपदमें होकर गम्यपात है, तो पहिले लाएहुए क्रान्त्यङ्कोंमेंसे गताङ्क आगेके अङ्कसे अर्थात् एष्य अङ्कसे पहिले छः क्रान्त्यङ्क लेय, और यदि सायन रवि विषमपदमें होकर गतपात है अथवा समपदमें होकर एष्य पातहै तौ एष्याङ्कसे आगेके छःक्रान्त्यङ्क लेय,परन्तु यदि एष्याङ्क छःके भीतर हो और पहिले क्रान्त्यङ्क लेने हों तौ पहिले अङ्क लेकर छः अङ्कोंकी पूर्तिके क्रान्त्यङ्क अन्तरसे लेय, यह अङ्क, सायन रविके उत्तरायणमें होनेसे उत्तरायण और दक्षिणायन होनेसे दक्षिण होतेहैं, परन्तु पहिले छः क्रान्त्यङ्कोंकी पूर्त्तिकरनेके लिये कोई अंक उत्क्रमसे गिनेहुए क्रान्त्यङ्कोंमेंसे लिये हों तौ उनकोही पहिले अङ्कोंकी विपरीत दिशाका जानै; इस प्रकारही सायनर्कके भुजांमें पाँचका भागदेकर जो लब्धिहोय तत्परिमित क्रमसे गिनेहुए शराङ्कोंमेंसे अङ्कलेकर उनको गताङ्क कहै,और उससे आगेके अङ्कसे अर्थात् एष्याङ्कसे पहिले अथवा आगेके छः अङ्क लेय, और सायनर्कसे उनकी दिशा लावै, तदनन्तर तिन छः क्रान्त्यङ्कोंका और छःशराङ्कोंका संस्कारकरै, एष्य क्रान्त्यङ्कोंमें तेरहका भागदेकर जो अंशादि लब्धिहोय उसको एष्याङ्ककी दिशाको जानै, और तिस लब्धिका तथा संस्कार करके लाएहुए प्रत्येक अङ्कका फिर संस्कारकरै, तब वह छःअङ्क स्पष्ट होतेहैं ॥ ९ ॥ १० ॥

उदाहरण.

क्रमसे स्थापित क्रान्त्यङ्क २० । २० । २० । २० । १९ । १८ । १८ । १६ । १६ । १४ । १३ । १२ । १० । ८ । ७ । ५ । ३ । १ ॥ उत्क्रमसे स्थापित क्रान्त्यङ्क १ । ३ । ५ । ७ । ८ । १० । १२ । १३ । १४ । १६ । १६ । १८ । १८ । १९ । २० । २० । २० । २० ॥ क्रमसे स्थापित शराङ्क ४ । ४ । ४ । ४ । ४ । ३ । ३ । ३ । ३ । ३ । २ । २ । २ । २ । १ । १ । १ । ० । ० ॥ उत्क्रमसे स्थापित शराङ्क । ० । ० । १ । १ । २ । २ । २ । २ । ३ । ३ । ३ । ३ । ३ । ४ । ४ । ४ । ४ । ४ ॥ सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकला, विषमपदमें होकर एष्य पातहै इसकारण पहिले लाएहुए गताङ्क १४ से आगले १३ अङ्कसे पहिले छः अङ्क १३ । १४ । १६ । १६ । १८ । १८, यह अङ्क

सायन रविके उत्तरायणमें होनेके कारण उत्तरहै, तिसीप्रकार साग्वर्क ३ राशि ३ अंश ५४ कला ८ विकला इसके भुजों ८६ अंश ५ कला ५२ विकलाके अंशों ८६ में ५ का भागदिया तब लब्धिहुई १७ इसकारण सत्रहवां शराङ्क ० यह गताङ्क हुआ, अब साग्वर्क समपदमें होकर एष्य पातहै, इसकारण अन्त्य शराङ्कसे आगेके छः अङ्क ०।०।०।१।१।१।२। साग्वर्कके दक्षिणायन होनेके कारण दक्षिण हैं, 'अन्त्याद्विलोमाः' कहाहै इसकारण पहिले स्थापन करेहुए शराङ्कोंमें पहिलेको छोड़कर अन्य पाँच अङ्क उत्क्रम स्थापित अङ्कोंमें उत्तर होगए, और प्रथम अंक दक्षिणही रहा, इसकारण क्रान्त्यङ्क १३ उत्तर, १४ उत्तर, १६ उत्तर, १६ उत्तर, १८ उत्तर, १८ उत्तर और शराङ्क ० दक्षिण, ० उत्तर, ० उत्तर, १ उत्तर, १ उत्तर, २ उत्तर, इन दोनोंका संस्कार (एकदिशावालोंका योग और भिन्न दिशावालोंका अन्तर) करा, उत्तर शराङ्क हुए १३।१४।१६।१७।१९।२० यहाँ साग्वर्क दक्षिणायनमें है इसकारण विलोम (उलटी) रीतिसे गिनेहुए पहिले शराङ्कोंमेंसे अन्तके पाँच उत्तर हैं, अब क्रान्त्यङ्कोंमेंसे पहिले अङ्क १३ में १३ का भाग दिया तब लब्धिहुई १अंश उत्तर इसका पहिले प्रत्येक शराङ्कसे संस्काररकरा तब आए अंशात्मक छवों स्पष्टांक १४। १५।१७।१८।२०।२१। यह हुए॥

अब पात मध्यकालसाधनकी रीति लिखतेहैं-

प्राक्स्थापिताः शेपलवाः शराप्ता रूपाद्विशुद्धा लघुसंज्ञकः स्यात् । आद्यः स्फुटाङ्को लघुना हतो यस्तेनाब्धिबाणात्क्रमशोऽथ जह्यात् ॥११॥ तानङ्काञ्छेपमशुद्धभक्तं विशुद्धसंख्या सहितं लघूनम् । त्रिघ्नं भनाडीघ्नमिभाप्तमाप्तयातैष्यनाडीष्विह पातमध्यम् ॥ १२ ॥

अन्वयः-प्राक्, स्थापिताः, शेपलवाः, शराप्ताः, (ततः) रूपात्, विशुद्धाः, लघुसंज्ञकः, स्यात्; यः, आद्यः, स्फुटाङ्कः, (सः), लघुना, हतः, (कार्य्यः); शेपम्, अशुद्धभक्तम्, (ततः), विशुद्धसंख्यासहितम्, (ततः), लघूनम्, (ततः), त्रिघ्नम्, (ततः), भनाडीघ्नम्, (ततः), इभाप्तम्, सत्, यातैष्यनाडीषु, इह, पातमध्यम् (स्यात्) ॥ ११ ॥ १२ ॥

अर्थः-पहिले सायन सूर्यके भुजोंसे गताङ्क लाकर जो अंशादि बाकी रहीथी, उसमें पाँचका भागदेकर जो अंशादि लब्धि आवे, उसको एक अंशमेंसे घटावे, तब जो शेषरहे उसको 'लघुशेष' कहतेहैं, फिर पहिले स्पष्ट अङ्कसे लघुशेषको गुणाकरे, तब जो गुणनफल होय उसमें स्पष्ट शर युक्त करदेय, और तिस योगमेंसे प्रथमसे लेकर जितने स्पष्टाङ्क घटसकें उतने घटादेय (जब स्पष्टशर मिलानेसे लाएहुए अङ्कयोगमेंसे छओंभी स्पष्टाङ्क घटाजायँ, तब पूर्वोक्तरीतिसे औरभी तीन आगेके स्पष्टाङ्क लाकर उनमेंसे जितने घटसकें तितने घटाकर शेष लेलेय) और उस शेषमें, जो स्पष्टाङ्क घटा नहीं उसका भाग देय तब जो अंशादि लब्धि होय उसमें जितने स्पष्टांक घटेहों उनकी तुल्य अंश मिलाकर जो अङ्कयोग होय उसमें, लघुसंज्ञकको घटादेय तब जो शेषरहे उसको तीनसे गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसको फिर नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओंसे गुणाकरे तब जो गुणनफल होय उसमें आठका भाग देय तब जो लब्धि होय उसके तुल्य घटिका गत यात होय तौ पातमध्य होगया, और एष्ययात होय तौ पातमध्य होने लगेगा ऐसा कहे ॥ ११ ॥ १२ ॥

उदाहरण.

पूर्व शेष ०अंश ३२ कला ३१ विकलामें ५ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ६ कला ३० विकला लब्धिके पात एष्य होनेके कारण यहही लघुशेष है, इसको प्रथम स्पष्टाङ्क १४ से गुणाकरा तब १ अंश ३१ कला ० विकला यह गुणन हुआ इसमें स्पष्ट शर ४३ अंश ४९ कलाको युक्त करा तब ४५ अंश २० कला ० विकला हुआ इसमें प्रथम स्पष्टाङ्क १४ और द्वितीय स्पष्टाङ्क १५ को घटाया तब शेषरहे १६ अंश २० कला इसमें (शेषमें तृतीय अंश १७ नहीं घटाथा इसकारण) तृतीय स्पष्ट अङ्क १७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० अंश ५७ कला ३८ विकलाइसमें (दो स्पष्टाङ्क घटेथे इस कारण) विशुद्धसंख्या २ को युक्त करा तब २ अंश ५७ कला ३८ विकला हुए इसमें लघुशेष ६ कला ३० विकलाको घटाया तब शेषरहे २ अंश ५१ कला ८ विकला इसको ३ से गुणाकरा तब ८ अंश ३३ कला २४ विकला हुआ, इसको नक्षत्रकी गतैष्य घटी ६२ । ५५ से गुणा करा तब ५३८ घटी ३१ पल हुए इसमें ८ का भाग दिया तब लब्धि हुई ६७ घटी १७ पल इसको गणितकाल वैशाख कृष्णषष्ठी शुक्रवार ४५ घटी ५५ पलमें युक्त करा तब वैशाख कृष्ण सप्तमी शनिवार ५३ घटी ५० पल पातमध्यकाल हुआ ॥

अथ पातस्थितिकालसाधनकी रीति लिखतेहैं-

अविशुद्धहृतायमार्कनाड्यः प्राक्पश्चात्स्थितिरत्र

पातमध्यात्। शुद्धाः क्वचिदत्र चेत्पडङ्काः संस्कार्य्याश्वतदग्रतस्त्रयोऽङ्काः ॥ १३ ॥

अन्वयः-यमार्कनाडयः, अविशुद्धंहताः, (कार्य्याः, फलघटिकाभिः), पातमध्यात्, अत्र, प्राक्, पश्चात्, स्थितिः (स्यात्), अत्र, क्वचित्, षट्, अङ्काः, शुद्धाः, चेत्, (तदा), च, तदग्रतः,त्रयः, अङ्काः, संस्कार्य्याः ॥ १३ ॥

अर्थः-जो स्पष्टाङ्क न घटाहो उसका एकसौ बाईस घटीमें भागदेय तब जो लब्धि होय वह घटिकादि पातमध्यकालसे पातस्थितिकाल होताहै, तदनन्तर पातमध्यकालमेंसे उस स्थितिकालको घटावै तब जो शेष रहै वह पातप्रवेश काल होताहै, और पातमध्य कालमें पातस्थिति कालको युक्त करदेय तब पातनिर्गम काल होताहै, यदि स्पष्ट शर मिलाकर लायेहुए अङ्कयोगमें छःओं स्पष्टाङ्क घटजावें तो पूर्वोक्त रीतिसे और तीन आगेके स्पष्टाङ्क लाकर उसमेंसे जितने घटसकैं उतने और घटाकर शेषको ग्रहणकरलेय१३

उदाहरण.

१२२ घटी ० पलमें अविशुद्ध तृतीय स्पष्टांक १७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ७ घटी १० पल यह पातस्थिति काल हुआ, इसको पातमध्य काल ५३ घटी ७ पलमें घटाया तब शेष रहा ४५ घटी ५७ पल यह पातप्रवेश काल हुआ अब पातमध्य काल ५३ घटी ७ पलमें पातस्थिति काल ७ घटी १० पलको युक्त करा तब ० घटी १७ प० यह पातनिर्गम काल हुआ ॥

अथ सूर्य्यसे चन्द्रज्ञानकी रीति लिखतेहैं-

पङ्भार्कभच्युतरविस्त्विह सावनाब्जोऽथार्के घटीसमकलाश्चलनं त्वथेन्दोः। भुक्त्यंशकाभघटिकाप्तखखा हयः स्युस्तच्चालितापमसमत्वमिह प्रतीत्यै॥१४॥

अन्वयः-इह, तु, पड्भार्कभच्युतरविः, सावनाब्जः (स्यात्), अथ, अर्के, घटीसमकलाः, चलनम्, (देयम्), अथ, तु, भघटिकाप्तखखाः, हयः, इन्दोः, भुक्त्यंशकाः, स्युः, तच्चालितापमसमत्वम्, इह, प्रतीत्यै, (स्यात्), ॥ १४ ॥

अर्थः-पात व्यतीपात होय तौ सायन सूर्य्यको छःराशियोंमें घटावै, और वैधृतिपात होय तौ बारह राशिमेंसे घटावै, तब जो शेष रहे वह सायन चन्द्र होताहै, सूर्य्यमें घटिकाओंकी तुल्य कलाओंका चालन देय, और नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओंका आठसौ अंशमें भागदेय तब जो लब्धि होय वह चन्द्रमाकी अंशादि गति होतीहै, तदनन्तर सायन सूर्य्य और सायन चन्द्र इन दोनोंको पातमध्यकालीन करके उनकी क्रान्ति लावै, और उनका समत्व देखै ॥ १४ ॥

उदाहरण.

वैधृतिपात है इसकारण १२ राशिमेंसे सायन सूर्य्य १ राशि २० अंश ३२ कला ३१ विकलाको घटाया तब शेष रहे १० राशि ९ अंश २७ कला २९ विकला, यह सायन चन्द्र हुआ, और ८०० अंशोंमें नक्षत्रकी गतैष्य घटिकाओं ६२ घटी ५५ पलका भाग दिया तब लब्धि हुई १२ अंश ४२ कला ५४ विकला, यह चन्द्रमाकी गति हुई; अब सायन सूर्य्य और सायन चन्द्र वैशाख कृष्णपक्षी शुक्रवारके दिन ४५ घटी ५७ कला इस समयके हैं; और वह पातमध्यकालीन (वैशाखकृष्ण ७ के दिन सूर्योदयसे ५३ घटी ७ पल, इस समयके) करनेहैं इस कारण ६७ घटी १० पलकी तुल्यकलाओंका चालन देकर लायाहुआ रवि १ राशि २१ अंश २९ कला ४८ विकला, चन्द्रगत्यंशों १२ अंश ४२ कला ५५ विकला करके चालित चन्द्र १० राशि २३ अंश ४३ कला ० विकला, स्वगतिकरके चालित राहु ० राशि २५ अंश ७ कला ३ विकला; रविकी क्रान्ति १८ अंश ३० कला ५७ विकला, चन्द्रक्रान्ति १३ अंश ५० कला १० विकला, विराहुचन्द्र ९ राशि १० अंश २४ कला ५७ विकला, इससे इसी अधिकारमें कही हुई "पञ्चर्धत्यादि" रीतिके अनुसार लायाहुआ स्पष्टशर दक्षिण ४३ । ५० । १९ । इसमें "अस्तोदयाधिकारमें दशवे श्लोकके विषैं कही हुई रीतिके अनुसार" १० का भागदिया तब अंशादि शर दक्षिण ४ अंश २३ कला २ विकला हुआ, इसका और चन्द्रक्रान्तिका संस्कार करके चन्द्रस्पष्टक्रान्ति हुई १८ अंश १३ कला १२ विकला; अब सूर्य्य और चन्द्र इन दोनोंकी क्रान्तिका अन्तर १७ कला ४५ विकला है, इस थोडेसे अन्तरके होनेसे कोई दोष नहीं, इसकारण क्रान्तिसाम्य है ऐसा कहनेमें कोई हानि नहीं है ॥ १४ ॥

इति श्रीगणकवर्य्यगणेशदैवज्ञकृते ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादा-
बादवास्तव्यकाशीस्थराजकीयप्रधानविद्यालयप्रधानाध्यापकसत्सम्प्रदाया-
चार्यपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिसान्निध्याधिगतविद्यभारद्वाजगो-
त्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथात्मजपण्डितरामस्व-
रूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितः
पाताधिकारः समाप्तः ॥ १४ ॥

अथ पञ्चाङ्गचन्द्रग्रहणानयनाधिकारः।

तहाँ प्रथम तिथिसाधन लिखतेहैं-

मासाः स्वार्द्धयुतास्तिथेर्दिनाद्यं तावत्यो घटिकाश्च मासंसंघात्। त्र्यंशाढ्याः सहितं द्वयत्रयाभ्यां चक्रघ्नाक्षनवाङ्गवर्गयुक्तम् ॥ १ ॥

अन्वयः-स्वार्द्धयुताः, मासाः, तिथेः, दिनाद्यम्, (स्यात्); तावत्यः, घटिकाः, च, माससंघात्, त्र्यंशाढ्याः, (ततः, तत्), द्वयत्रयाभ्याम्, सहितम्, (ततः), चक्रघ्नाक्षनवाङ्गवर्गयुक्तम् ॥ १ ॥

अर्थः-(इष्टमासका जो मासगण वह मास होतेहैं) मास अपने अर्द्ध करके युक्त तिथिके वार आदि होते हैं, और उतनीही घटिका अधोभागमें स्थापन करे, और मासगणका तृतीयांश युक्तकरदेय, फिर क्रमसे ऊपरके भागमें और अधोभागमें दो और तीन युक्तकरदेय, फिर इसमें चक्रसे गुणाकरे हुए अक्ष कहिये पाँच, और नव कहिये नौ तथा अङ्गवर्ग कहिये छत्तीसको युक्तकर देय (फिर देशान्तर पलोंको युक्तकर देनेसे) वारादि होता है॥ १॥

उदाहरण.

शाके १५३४ कार्त्तिक शुक्ला १५ गुरुवारके दिन मासगण ५७ है, इसमें इसके आधे २८। ३० को युक्तकरा तब ८५। ३० हुए, इसकी तुल्य घटिका इसके अधोभागमें स्थापन करी $\frac{८५।३०}{८५।३०}$ तब ८५। ११५। ३० हुए इसमें मासगण ५७ के तृतीयांश १९ को युक्तकरा तब ८५। १३४। ३० हुए इसमें क्रमसे २। और ३ को युक्त $\frac{८५}{२}$। $\frac{१३४}{३}$। ३० करा तब ८७। १३७। ३० हुए इसमें चक्र ८ से गुणाकरे हुए ५। ९। ३६ = ४१। १६। ४८ को युक्तकरा तब १२८।१५४।१८ हुए यह वारादि हुआ, यहाँ वारके स्थानमें ७ से और घटीके स्थानमें ६० से तष्टा तब ४ वार ३४ घटी १८ पल यह वारादि हुआ, इसमें देशान्तरीय पल ४८ युक्तकरे तब कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदाके दिन ४ वार ३५ घटी ६ प० यह वारादि हुआ ॥

अब नक्षत्र ध्रुवकके साधनकी रीति लिखतेहैं-

स्वं संताड्यमाश्च चक्रनिघ्ना नागाम्भोधिघटीयुता भशुद्धाः। द्वाभ्यां धूर्जटिर्विनिघ्नमासैर्युक्तामध्रुवको भपूर्वकः स्यात् ॥ २ ॥

अन्वयः-चक्रनिघ्नाः, खम्, सप्त, अष्टयमाः नागाम्भोधिघटीयुताः, (कार्याः), (ततः) भशुद्धाः, (ततः), द्वाभ्याम्, धूर्जटिभिः विनिघ्नमासैः युक्ताः, भपूर्वकः, भध्रुवकः, स्यात् ॥ २ ॥

अर्थः-'खम्' कहिये शून्य,सप्त कहिये सात, 'अष्टयम' कहिये अठाईस, इनको चक्रसे गुणाकरै, तब जो गुणनफल होय उसमें " नागाम्भोधि " कहिये अड़तालीस युक्तकर देय, तब जो अङ्कयोग होय उसको सत्ताईसमें घटा देय तब जो शेष होय उसमें दोसे और ग्यारहसे गुणाकरे हुए मास युक्तकर देय तब नक्षत्रादि नक्षत्रध्रुवक होताहै ॥ २ ॥

उदाहरण.

० । ७ । २८ को चक्र ८ से गुणाकरा तब ० । ५९ । ४४ हुए इसमें अड़तालीस ४८ घटी युक्तकरी तब १ नक्षत्र ४७ घटी ४४ पल हुए, इनको २७ में घटाया तब शेषरहे २५ नक्षत्र १२ घटी १६ पल हुए, इसमें २ से और ११ से मास ५७ को गुणाकरके ११४ । २७ युक्तकरा तब १४९ । ३९ । १६ हुए, यहाँ सत्ताईस २७ से तष्टा तब १४ । ३९ । १६ यह नक्षत्रादि नक्षत्रध्रुवक हुआ ॥

अब पिण्डसाधनकी रीति लिखते हैं-

स्वर्गाः शरा नव च चक्रहता द्विनिघ्नमासान्विता
द्विहृतमासयुता घटीषु । पिण्डो भवेद्युगकुभिः ख-
चरैः समेतास्तष्टो गजाश्विभिरिदं भवतीह चक्रम्॥३॥

अन्वयः-स्वर्गाः, शराः, नव, च, चक्रहताः, (ततः), द्विनिघ्नमासान्विताः, घटीषु, द्विहृतमासयुताः, युगकुभिः, खचरैः, समेताः, पिण्डः, भवेत्, गजाश्विभिः, तष्टः, (कार्यः); इदम्, चक्रम्, इह, (अष्टाविंशतिमितम्) भवति ॥ ३ ॥

अर्थः-स्वर्ग कहिये इक्कीस, शर कहिये पाँच, नव कहिये नौ, इनको चक्रसे गुणाकरै, तब जो गुणनफल होय उसमें द्विगुणित मासगणको युक्त करै, तदनन्तर घटियोंमें मासगणमें दोका भाग देनेसे जो लब्धि होय उसको युक्त करदेय, फिर क्रमसे 'युगकु' कहिये चौदह और खचर कहिये नौ युक्त करदेय, फिर अठाईससे तष्टदेय तब पिण्ड होता है यहाँ अठाईसपरिमित चक्र माना गया है ॥ ३ ॥

उदाहरण.

२१ । ५ । ९ को चक्र ८ से गुणाकरा तब १६८ । ४१ । ७२ । हुए इसमें

मासगण ५७ को २ से गुणा करके ११४ युक्त करा तब २८२ । ४१ । १२ हुए, यहाँ घटियोंमें मासगण ५७ में २ का भाग देकर २८ । ३० लब्धिको युक्त करा तब २८३ । ९ । ४२ हुए यहां क्रमसे १४ और ९ को युक्त करा तब २९७ । १८ । ४२ हुए, यहाँ आद्य अंकको २८ से तष्टा तब १७ । १८ । ४२ यह पिण्ड हुआ ॥

अब सूर्य्यनक्षत्रसे फल घटिका लानेकी रीति लिखतेहैं-

शिवदशवसुपक्षाब्ध्यश्विनाढ्योऽश्विभात्स्वं खगुणशर नगाङ्काशेशदिग्दिङ्नवाष्टौ ॥ रसगुणखमिनर्क्षादादिते याद्दणं स्युर्द्वियुगरसगजाङ्काशेश्वरावैश्वतःस्वम् ॥४॥

अन्वयः-इनर्क्षात्, अश्विभात्, शिवदशवसुपक्षाब्ध्यश्विनाढ्यः, स्वम्, आदितेयात्, खगुणशरनगाङ्काशेशादिग्दिङ्नवाष्टौ, रसगुणखम्, ऋणम्, वैश्वतः, द्वियुगरसगजाङ्काशेश्वराः, स्वम्, स्युः ॥ ४ ॥

अर्थः-सूर्यनक्षत्र अश्विनीसे लेकर आर्द्रापर्य्यन्तका होय तौ उसमें क्रमसे शिव कहिये ११, दश १०, वसु कहिये ८, पक्ष कहिये ६, अब्धि कहिये ४, अश्वि कहिये २, यह घटी धन होती हैं; और पुनर्वसुसे लेकर पूर्वाषाढा पर्य्यन्तका नक्षत्र होय तौ पुनर्वसुसे लेकर उनमें क्रमसे शून्य, तीन, पांच, सात, नौ, दश, ग्यारह, दश, दश, नौ, आठ, छः, तीन, शून्य, यह घटी ऋण करैः तथा उत्तराषाढासे लेकर सम्पूर्ण नक्षत्रोंमें क्रमसे दो, चार, छः, आठ, नौ, दश, और ग्यारह घटी धन करै ॥ ४ ॥

अब सूर्य्यनक्षत्रसाधनकी रीति लिखते हैं-

वेदघ्नेष्टतिथिर्युतार्कभागा योज्याभध्रुवनाडिकासु तत्स्यात् । सूर्य्यर्क्षं विगतं ततोऽर्कजाख्यनाडी-हीनयुतं स्फुटं भवेत्तत् ॥ ५ ॥

अन्वयः-युतार्कभागा, वेदघ्नेष्टतिथिः, भध्रुवनाडिकासु, योज्या, तत्, विगतम्, सूर्य्यर्क्षम्, स्यात्; ततः, तत्, अर्कजाख्यनाडीहीन-युतम्, स्फुटम्, भवेत् ॥ ५ ॥

अर्थः-वर्तमान इष्ट तिथिको चारसे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें उसके बारहवे भागको युक्त करदेय, तब जो अंकयोग होय उसको नक्षत्र ध्रुवककी घटिकाओंमें युक्त करदेय तब जो अंक योग होय वह गत

सूर्य्यनक्षत्र होताहै, तदनन्तर उसमें स्फुट अर्कज घटिकाओंको हीनयुक्त करे तब वह सूर्य्यनक्षत्र स्फुट होताहै ॥ ५ ॥

उदाहरण.

इष्ट तिथि १५ को ४ से गुणा करा तब ६० हुए, इसमें इसके ही बारहवे भाग ५ को युक्त करा तब ६५ हुए इसमें नक्षत्रध्रुवककी घटिका १४ । ३९ । ३६ । युक्त करा तब १५ । ४४ । १६ । हुए, यह गत सावयव सूर्य्यनक्षत्र हुआ, यहां सूर्य्य विशाखानक्षत्रमें है इसकारण 'शिवदशेत्यादि रीतिके अनुसार' अर्कजाख्य घटिका ९ ऋण हुई अब अर्कजाख्य घटिकाओंको स्फुट करतेहैं,-विशाखाकी घटी ९ और अनुराधाकी घटी ८ इन दोनोंका अन्तर हुआ १ इससे सूर्य्यनक्षत्रकी घट्यादि ४४ घटी १६ पलको गुणाकरा तब ४४ घटी १६ पल हुए इसमें ६० का भाग दिया तब ० घटी ४४ पल यह अग्रिमके क्षय होनेके कारण ऋण है, इससे संस्कार करी हुई अर्कज घटी ९ हुई ऋण८घटी१६पल इनको सूर्य्यनक्षत्र १५ । ४४ । १६ में घटाया तब स्पष्ट सूर्य्यनक्षत्र हुआ १५ । ३६ । ० ॥

अब पिण्डफल कहते हैं-

पिण्डे युक्ततिथौ तदाद्यमनुषु स्वं शेषपिण्डेष्वृणं
विश्वेन्द्वोश्च शरा दशार्कयमयोः पञ्चेन्दवस्त्रीशयोः॥
गोचन्द्रा दशवेदयोर्यमयमाः पञ्चाङ्गयोः स्युर्जिनाः
पड्स्वोश्च नगे तु तत्त्वघटिकाः शक्रे च खं पिण्डजाः६॥

अन्वयः-युक्ततिथौ, पिण्डे, विश्वेन्द्वोः, (तुल्ये, सति), शराः, अर्कयमयोः, (तुल्ये, सति), दश; त्रीशयोः, (तुल्ये, सति), पञ्चेन्दवः; दशवेदयोः, (तुल्ये, सति), गोचन्द्राः; पञ्चाङ्गयोः; (तुल्ये, सति), यमयमाः; पड्स्वोः, च, (तुल्ये, सति), जिनाः, नगे, तु, (तुल्ये, सति), तत्त्वघटिकाः; शक्रे, च; (तुल्ये, सति), खम्; पिण्डजाः, आद्यमनुषु, (चेत्), तदा, स्वम्, शेषपिण्डेषु, (चेत्, तदा), ऋणम्, स्युः ॥ ६ ॥

अर्थः-तिथियुक्त पिण्डोंमेंसे यदि तेरह और एककी तुल्य होनेपर पाँचघटी, बारह और दोकी तुल्य होनेपर दश घटिका, तीन और ग्यारहकी तुल्य होनेपर पन्द्रह घटिका, दश और चारकी तुल्य होनेपर उन्नीस घटिका, पाँच और नौकी तुल्य होनेपर बाईस घटिका, छः और आठकी तुल्य होनेपर

चौवीस घटिका, सातकी तुल्य होनेपर पचीस घटिका, और चौदहकी तुल्य होनेपर शून्य घटिका, यह पिण्डघटिका होतीहैं, परन्तु तिथियुक्त पिण्डोर्ध्वाङ्क चौदहपर्य्यन्त होय तौ यह घटिका धन होतीहैं, और चौदहसे लेकर अट्ठाईसके भीतर होय तौ यह घटिका ऋण होतीहैं ॥ ६ ॥

तिथियुक्तपिण्डोर्ध्वांक	१३	१	१२	२	३	११	१०	४	५	९	६	८	७	१४
पिण्डजघटिका	५		१०		१५		१९		२२		२४		२५	०

उदाहरण.

प्रथम और चौदहके मध्यमें स्थितपिण्ड ७ । १८ । ४२ इसमें इष्टतिथि १५ को युक्त करा तब २२ । १८ । ४२ हुए, यह चक्रसे अधिक है इसकारण १८से तष्टा तब ४ । १८ । ४२ हुए, यह चारके तुल्य है इसकारण इसमें १९ घटी ऊर्ध्वाङ्कके प्रथम चतुर्दशके मध्यमें स्थित होनेके कारण धन हुई अब इन पिण्ड घटिकाओंको स्पष्ट करतेहैं-पिण्डघटी १९ और इससे आगेकी पिण्डघटिका २२ इन दोनोंका अन्तर करा तब ३ हुए, इससे पिण्डके अधोभागकी घटिका १८ । ४२ को गुणाकरा तब ५६ । ६ हुए, इसमें ६० का भाग दिया तब ० घटी ५६ पल यह अग्रिमके अधिक होनेके कारण धन है,इससे संस्कार करा तब स्पष्ट पिण्डघटिका हुई धन १९ घटी ५६ पल ॥

अब तिथिके स्पष्ट करनेकी रीति लिखतेहैं-

वारेषु तिथिर्देया हेया नाड़ीषु जायते मध्या । रविजापिण्डफलाभ्यां सुसंस्कृता स्पष्टतां याति ॥७॥

अन्वयः-तिथिः, वारेषु देया, नाड़ीषु, हेया, (तदा), मध्या, जायते; (सा), रविजापिण्डफलाभ्याम्, सुसंस्कृता, स्पष्टताम्, याति ॥ ७ ॥

अर्थः-मासगणसे जो तिथिवारादि पहिले साधाहै, तहाँ वारोंमें तिथिको युक्तकरदेय, और घटिकाओंमें तिथिको घटादेय, तब जो होय वह मध्यतिथि होतीहै, इस मध्यतिथिका सूर्य्यज घटिकाओंकरके और पिण्डज घटिकाओंकरके संस्कार करै तब तिथि स्पष्ट होतीहै ॥ ७ ॥

उदाहरण.

वारादि ४ । ३५ । ६ है यहाँ वारों ४ में तिथि १५ को युक्तकरा तब १९ । ३५ । ६ हुए, और घटिकाओं ३५ में तिथि १५ को घटाया तब १९ । २० । ६ यहाँ वारोंको ७ से तष्टा तब ५ । २० । ६ यह मध्यतिथि हुई, इसका रवि घटिका ८ । १६ ओंसे संस्कार (हीन) करा तब ५ । ११ । ६ हुए, इसका पिण्डज धन घटिका १९ । ५६ से संस्कार करा तब ५ । ३१ । ४६ । यह स्पष्टतिथि हुई ॥

अब नक्षत्रसाधनकी रीति लिखतेहैं-

स्याद्भं केवलयोस्तिथिध्रुवभयोर्योगे तिथेर्नाडिकायु
क्ताव्यङ्गलवद्विनिघ्नतिथिना व्यस्तार्कजासंस्कृताः।
नाडीभिर्ध्रुवभस्य चेन्न वियुतास्तद्धीनषष्ट्यन्विताः
सैकं भं घटिका वियत्षडधिकाः षष्ट्यूनिता
व्येकभम् ॥ ८ ॥

अन्वयः-केवलयोः, तिथिध्रुवभयोः, योगे, भम्, स्यात्, तिथेः, नाडिकाः, व्यङ्गलवद्विनिघ्नतिथिना, युक्ताः, व्यस्तार्कजासंस्कृताः, ध्रुवभस्य, नाडीभिः, वियुताः, (कार्य्याः); न चेत्, तद्धीनषष्ट्यन्विताः, (कार्य्याः), भम्, सैकम्, (कर्त्तव्यम्), घटिकाः, वियत्षडधिकाः, (चेत्), षष्ट्यूनिताः, (कार्य्याः), व्येकभम्, (च, कार्य्यम्) ॥ ८ ॥

अर्थः-इष्टतिथि और अवयवरहित नक्षत्रध्रुवक केवल इन दोनोंका योगकरै और सत्ताईससे तष्टदेय तब नक्षत्र होताहै, तिथिकी घटिकाओंमे अपने छठे भागकरकै रहित जो द्विगुणिततिथि तिसको युक्त करदेय, तब जो अङ्कयोग होय उसका विपरीत (धन हो तो ऋण करलेय और ऋण हो तो धन करलेय) अर्कज घटिकाओंकरकै संस्कार करै, फिर नक्षत्रध्रुवकी घटिका घटादेय, यदि नक्षत्र ध्रुवकी घटी नहीं घटसकैं तो उनको साठमें घटाकर जो शेष रहै वह युक्तकरदेय, और नक्षत्रमें एक युक्तकरदेय, और यदि घटिका साठसे अधिक हों तो उनमें साठ घटादेय, और नक्षत्रमें एक हीन करदेय ॥ ८ ॥

उदाहरण.

केवल (अवयवरहित) नक्षत्रध्रुव १४ केवल इष्टतिथि १५ इन दोनोंका योग करा तब २९ हुए, इसको २७ से तष्टा तब शेषरहे २ यह नक्षत्र (भरणी) हुआ, अब तिथि घटिकाओं २१ । ४६ में केवल तिथि १५ को दोसे गुणाकरा तब ३० हुए इसके छटेभाग ५ को युक्तकरा तब ५६ घटी ४६ पलहुए, इसमें अर्कज ऋण ८ घटी १६ पलको विपरीत (ऋणसे धन) करकै युक्तकरा तब ६५ घटी २ पल हुए, इसमें नक्षत्र ध्रुवकी घटिकाओं ३९ । १६ को घटाया तब २५ घटी ४६ पल हुए, अर्थात् भरणी २५ घ. ४६ प. हुआ ॥

अब योगसाधनकी रीति लिखतेहैं-

**सूर्य्यभेन्दुभयुतिर्भवेद्युतिस्तद्वटीविवरमत्रनाडि-
काः ॥ चेद्द्युभेऽल्पघटिकास्तदासकुर्योगकोऽस्य
घटिकाः खषट्च्युताः ॥ ९ ॥**

अन्वयः-सूर्य्यभेन्दुभयुतिः, युतिः, भवेत्; तद्घटीविवरम्, अत्र, नाडिकाः, (स्युः); द्युभे, अल्पघटिकाः, चेत्, तदा, योगकः, सकुः, (कार्य्यः); अस्य, घटिकाः, खषट्च्युताः, (कार्य्याः), ॥ ९ ॥

अर्थः-सूर्य्यनक्षत्र और चन्द्रनक्षत्रका योग करै तब योग होताहै, और सूर्य्यनक्षत्र तथा चन्द्रनक्षत्रकी घटिकाओंका जो अन्तर वह योगकी घटिका होतीहै; यदि दिननक्षत्रकी घटिका कम हों तो योगमें एक युक्त करदेय, और घटिकाओंको साठमें घटाकर जो शेषरहै वह ले लेय ॥ ९ ॥

उदाहरण.

सूर्यनक्षत्र १५ और चन्द्रनक्षत्र २ इन दोनोंका योग करा तब १७ यह व्यतीपात योग हुआ, अब सूर्य्यनक्षत्रकी घटिका ३६ घटी ० पल और चन्द्रनक्षत्रकी घटिका २५ घटी ४६ पल इन दोनोंका अन्तर करा तब १० घटी १४ पल यह व्यतीपात योगकी घटिका हुई, यहाँ दिननक्षत्रकी घटिका सूर्य्यनक्षत्रकी घटिकाओंसे कम हैं इसकारण योग १७ में १ युक्त करा तब १८ हुए अर्थात् वरीयान् योग हुआ, और अब पहिले लाई हुई घटिकाओं १० घटी १४ पलको ६० घटीमें घटाया तब ४९ घटी ४६ पल हुए ॥

अब पूर्णान्तकालमें राहु साधनकी रीति लिखतेहैं-

**चक्राहताः सप्त यमौ खबाणा मासाहताः खं क्षितिर-
ब्धिरामाः । भाद्यानयोः संयुतिरर्कशुद्धा भांशैर्युता
शुक्लगते तमः स्यात् ॥ १० ॥**

अन्वयः-सप्त, यमौ, खबाणाः, चक्राहताः, (कार्य्याः), खम्, क्षितिः, अब्धिरामाः, मासाहताः, (कार्य्याः), अनयोः, भाद्या, संयुतिः, अर्कशुद्धा, भांशैः, युता, शुक्लगते, तमः, स्यात् ॥ १० ॥

अर्थः-सात-दो और पचासको चक्रसे गुणाकरै, और शून्य-एक तथा चौं-

तीसको मासोंसे गुणाकरे, इन दोनोंका राश्यादि योग करे और उस योगको बारहराशिमें घटावे तब जो शेषरहे उसमें सत्ताईस अंश युक्तकर देय तब पौर्णिमाके अन्तमें राहु होताहै ॥ १० ॥

उदाहरण.

७।२।५० को चक्र ८ से गुणाकरा तब ५६।२२।४० हुए, और ०।१।२४ को मासों ५७ से गुणाकरा तब ०।५७।१९२८। यहाँ कलाओंमें साठ ६० का भागदिया और अंशोंमें ३०का भाग दिया तब २।२९।१८ हुए, अब दोनोंका गुणन फल ५६।२२।४० और २।२९।१८का राश्यादि योग करा तब११राशि २१ अंश ५८ कला हुआ, इसको १२ राशिमेंसे घटाया तब ० राशि ८ अंश २ कला रहा इसमें २७ अंश युक्तकरे तब १ राशि ५ अंश २ कला यह पौर्णिमान्तकालीन राहु हुआ ॥

अब सूर्य्यसाधनकी और ग्रहणसंभव जाननेकी रीति लिखतेहैं-

वेदघ्नगोहृद्रविभुक्तधिष्ण्यं तिथ्यन्तजोऽर्कों गृहपूर्वकः सः। राहूनितः पर्वणि तद्भुजांशा मन्वल्पकाश्चेद्ग्रहसंभवः स्यात् ॥ ११ ॥

अन्वयः-रविभुक्तधिष्ण्यम्, वेदघ्नगोहृत्, गृहपूर्वकः, तिथ्यन्तजः, अर्कः, (भवेत्), सः, पर्वणि, राहूनितः, (कार्य्यः), तद्भुजांशकाः, मन्वल्पकाः, चेत्, (तदा), ग्रहसम्भवः, स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थः-सूर्य्यका जो सावयव भुक्त नक्षत्रहै उसको चारसे गुणाकरके नौका भागदेय तब जो लब्धि होय वह तिथ्यन्तकालीन राश्यादि सूर्य्य होताहै, उस सूर्य्यमें राहुको घटादेय तब जो शेष रहै उसके भुजांश यदि चौदहसे कम हों तौ ग्रहणसम्भव होताहै ॥ ११ ॥

उदाहरण.

सूर्य्यका भुक्त सावयवनक्षत्र १५।३६।० है इसको ४ से गुणा करा तब६२।२४।० हुआ, इसमें ९ का भागदिया तब लब्धि हुई ६ राशि,शेषरहा ८।२४।० इसको ३० से गुणा करा तब २५२।० हुए,इसमें ९ का भागदिया तब लब्धि हुई २८ अंश, शेषरहे ०।० इसको ६० से गुणाकरा तब ०।०।० हुए, इसमें

९ का भागदिया तब लब्धि हुई ० कला, इसीप्रकार ० विकला. इसप्रकार तिथ्यन्तकालीन राश्यादि सूर्य्य ६ राशि २८ अंश ० कला ० विकला, अब तिथ्यन्तकालीन रवि ६ राशि २८ अंश ० कला ० विकलामें राहु १ राशि ५ अंश २ कला ० विकलाको घटाया तब शेषरहे ५ राशि २२ अंश ५८ कला ० विकला, इसके भुजांश ७ अंश २ कला ० विकला चौदह अंशसे कमहैं इस कारण ग्रहणका सम्भव है ॥

अब ग्रासमान जाननेकी रीति लिखतेहैं-

पिण्डनाड्यन्तरांघ्र्यूनयुक्ता इनाः स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डान्क्रमाद्वर्जिताः॥व्यग्विनाद्दोर्लवैःस्वार्धयुक्ता भवेच्छन्नमिन्दोरविच्छन्नकाद्युक्तवत् ॥ १२ ॥

अन्वयः-क्रमात्, स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात्, पिण्डनाड्यन्तरांघ्र्यूनयुक्ताः, इनाः, व्यग्विनात्, (जातैः), दोर्लवैः, वर्जिताः, (ततः), स्वार्धयुक्ताः, इन्दोः, छन्नम्, भवेत्; रविच्छन्नकादि, उक्तवत्, (ज्ञेयम्) ॥ १२ ॥

अर्थः-गत और एष्य पिण्डकी जो घटिका उनका जो अन्तर तिसके चतुर्थांशको यदि इक्कीसवे पिण्डसे लेकर छठे पिण्डपर्य्यन्त होय तौ बारहमें युक्त करदेय और बीससे लेकर षष्ठ पिण्डपर्य्यन्त होय तौ घटादेय, तब जो रहै उसमें व्यगु रविके भुजांशोंको घटादेय तब जो शेषरहै उसमें उसका अर्द्ध युक्त करदेय, तब अङ्गुलादि चन्द्रग्रास होताहै, और सूर्य्यका ग्रास आदि पूर्वोक्त रीतिसे साधै ॥ १२ ॥

उदाहरण.

पिण्डघटिकाओंका अन्तर ३ है, इसके चतुर्थांश ० । ४५ को सप्तपिण्डसे विंशति पिण्डके मध्यमें होनेके कारण १२ में युक्त करा तब १२ । ४५ हुए इसमें विराह्वर्कके भुजभागों ७ । २ को घटाया तब ५ । ४३ रहे इसमें इसके आधे २ । ५१ को युक्त करा तब ८ अंगुल ३४ प्रतिअंगुल, यह चन्द्रग्रास हुआ सूर्य्यग्रासको पूर्वोक्तरीतिसेही साधना चाहिये ॥

अब चन्द्रबिम्ब और भूभासाधन लिखतेहैं-

विःयंशेशाः पिण्डनाड्यन्तरस्य षष्ठोनाढ्याः स्वर्ग-

उदाहरण.

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको वारादि ४। ३५।६ है यहाँ क्रमसे १। ३१।५० को युक्त करा तब मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदाके दिन वारादि हुआ ६।६।५६। मासादि पिण्ड १७।१८।४८ है इसमें २ युक्त करे तब अग्रिममासमें पिण्ड १९।१८।४२ हुआ, मासादिनक्षत्र ध्रुवक १४।३९।१६ है इसमें २ को युक्त करा और घटिकाओंमें ११ घटी युक्त करी तब अग्रिममासमें नक्षत्रध्रुवक १६।५०।१६ हुआ, राहु १।५।२।० में ९४ कला घटाई तब अग्रिममासमें राहु १।३।२८।० हुआ॥

इति श्रीगणककर्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबाद-
वास्तव्येन काशीस्थराजकीयप्रधानसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराम-
मिश्रशास्त्रिशिष्येण पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीक-
या सहितः पञ्चाङ्गचन्द्रग्रहणानयनाधिकारःसमाप्तः ॥ १५ ॥

अथ पूर्वशकादहर्गणाद्यानयनाधिकारः।

तहाँ प्रथम यदि शाक १४४२ वर्षोंसे पहिलेका होय तब अहर्गण लानेकी रीति लिखतेहैं-

द्व्यब्ध्यीन्द्राःशकरहितास्ततो भवासं चक्राख्यं रविहतशेषकं तु हीनम्। चैत्राद्यैः पृथगमुतःसहग्नचक्रात्तिद्धाव्यादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥ १ ॥ सत्रिघ्नं तिथिरहितं निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिपड्लब्धैः॥ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै वारः प्राक्छरहतचक्रयुग्गणोऽत्रजात् ॥ २ ॥

अन्वयः-द्व्यब्ध्यीन्द्राः, शकरहिताः, (कार्य्याः), ततः, भवासम्, चक्राख्यम्, (स्यात्), रविहतशेषकम्, तु, चैत्राद्यैः, हीनम्, पृथक्, (स्थाप्यम्), सहग्नचक्रात्, सिद्धाव्यात्, अमुतः, अमरफलाधिमा-

पिण्डाद्रिपिण्डात् । ग्लौबिम्बं स्यात्तद्वदुर्वीप्रभा स्यात्त्रिघ्नस्याक्षांशोनयुक्तानि भानि ॥ १३ ॥

अन्वयः-स्वर्गपिण्डाद्रिपिण्डात्, पिण्डनाडयन्तरस्य, षष्ठोनाढ्याः, विश्वपंशेशाः, ग्लौबिम्बम्, स्यात्, तद्वत्, त्रिघ्नस्य, अक्षांशोनयुक्तानि, भानि, उर्वीप्रभा, स्यात् ॥ १३ ॥

अर्थः-गत और एष्य पिण्डकी जो घटिका उनका जो अन्तर तिसके छठे भागको यदि इक्कीसवे पिण्डसे लेकर छठे पिण्डपर्य्यन्त होय तौ तृतीयांशरहित ग्यारहमें घटादेय और षष्ठ पिण्डसे लेकर इक्कीस पिण्ड पर्य्यन्त होय तौ युक्त करदेय तब चन्द्रबिम्ब होताहै, तिसी प्रकार पिण्डघटिकाओंके अन्तरको तीनसे गुणा करनेसे जो गुणनफल होय उसके पञ्चमांशको पूर्वोक्त रीतिसे सत्ताईसमें घटादेय और युक्त करदेय ॥ १३ ॥

उदाहरण.

पिण्डघटिकाओंका अन्तर ३ है इसके छठे भाग ० । ३० को अद्रिपिण्ड होनेके कारण तृतीयांशरहित ग्यारह १० । ४० में युक्त करा तब ११ अंगुल १० प्रतिअंगुल चन्द्रबिम्ब हुआ । अब पिण्डघटिकाओंके अन्तर ३ को ३ से गुणा करा तब ९ हुए, इसके पंचमांश १ । ४८ को अद्रि पिण्ड होनेके कारण २७ में युक्त करा तब २८ अंगुल ४८ प्रतिअंगुल भूभाबिम्ब हुआ ॥

अब प्रतिमासमें वारादिका चालन कहतेहैं-

वारादिके भूः कुगुणाः खबाणाः पिण्डे द्वयं भे द्वयमीशनाड्यः । क्षेप्याः क्रमेण प्रतिमासमत्र राहौ युगाङ्काः कलिका वियोज्याः ॥ १४ ॥

अन्वयः-प्रतिमासम्, वारादिके, क्रमेण, भूः, कुगुणाः, खबाणाः, क्षेप्याः, पिण्डे, द्वयम्, भे, (च), द्वयम्, (क्षेप्यम्), (घटिकासु) ईशनाडयः,(क्षेप्याः), अत्र, राहौ, युगाङ्काः, कलिकाः, वियोज्याः ॥ १४ ॥

अर्थः-प्रत्येक मासमें वारादिके विषें क्रमसे एक-इकतीस और पचास युक्त करे, पिण्डमें दो युक्त करे, और नक्षत्रमेंभी दो युक्त करे, तथा घटिकाओंमें ग्यारह युक्तकरे परन्तु राहुमें चौरानवे कला घटादेय ॥ १४ ॥

उदाहरण.

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको वारादि ४ । ३५।६ है यहाँ क्रमसे १ । ३१ । ५० को युक्त करा तब मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदाके दिन वारादि हुआ ६ । ६ । ५६। मासादि पिण्ड १७ । १८ । ४८ है इसमें २ युक्त करे तब अग्रिममासमें पिण्ड १९ । १८ । ४२ हुआ, मासादिनक्षत्र ध्रुवक १४ । ३९ । १६ है इसमें २ को युक्त करा और घटिकाओंमें ११ घटी युक्त करी तब अग्रिममासमें नक्षत्रध्रुवक १६ । ५० । १६ हुआ, राहु १ । ५ । २ । ० में ९४ कला घटाई तब अग्रिममासमें राहु १ । ३ । २८ । ० हुआ ॥

इति श्रीगणककर्ष्यगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादवास्तव्येन काशीस्थराजकीयप्रधानसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डितस्वामिराममिश्रशास्त्रिशिष्येण पण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा कृतया सान्वयभाषाटीकया सहितः पश्चाद्गचन्द्रग्रहणानयनाधिकारःसमाप्त. ॥ १५ ॥

अथ पूर्वशकादहर्गणाद्यानयनाधिकारः ।

तहाँ प्रथम यदि शाक १४४२ वर्षोंसे पहिलेका होय तब अहर्गण लानेकी रीति लिखतेहैं-

द्व्यब्धीन्द्राःशकरहितास्ततो भवाप्तं चक्राख्यं रविहतशेषकं तु हीनम् । चैत्राद्यैः पृथगमुतःसदृग्घ्नचक्रात्सिद्धाप्त्याद्मरफलाधिमासयुक्तम् ॥ १ ॥ खत्रिघ्नं तिथिरहितं निरग्रचक्राङ्कांशाप्त्यं पृथगमुतोऽब्धिपङ्क्त्यैः॥ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै वारः प्राक्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥ २ ॥

अन्वयः-द्व्यब्धीन्द्राः, शकरहिताः, (कार्य्याः), ततः, भवाप्तम्, चक्राख्यम्, (स्यात्), रविहतशेषकम्, तु, चैत्राद्यैः, हीनम्, पृथक्, (स्थाप्यम्), सदृग्घ्नचक्रात्, सिद्धाप्त्यात्, अमुतः, अमरफलाधिमा-

सयुक्तम्, खत्रिघ्नम्, तिथिरहितम्, निरग्रचक्राङ्गांशाढ्यम्, पृथक्,
(स्थाप्यम्), अमुतः,अब्धिपड्कलब्धैः, ऊनाहैः, वियुतम्, अहर्गणः
भवेत्, शरहतचक्रयुग्गणः, प्राक्, अब्जात्, वारः, (भवेत्)॥१॥२॥

अर्थः-इष्ट शाकेको चौदहसै ब्यालीसमें घटादेय तब जो शेष रहै उसमें ग्यारहका भाग देनेसे जो लब्धि होय वह चक्र होताहै, और जो शेष रहै उसको बारहसे गुणा करै, तब जो गुणनफल होय उसमें चैत्रादि गत मास हीन करदेय तब जो शेषरहै वह मध्यममासगण होताहै, उसको अलग स्थापन करदेय, और उस मध्यममासगणमें द्विगुणित चक्र और चौवीस युक्त करकै तैतीसका भाग देय तब जो लब्धि होय वह अधिक मास होताहै, उसको मध्यम मासगणमें युक्त करदेय तब मासगण होताहै, तिस मासगणको तीससे गुणाकरै तब जो गुणनफल होय उसमें गत तिथि घटाकर शेष रहै उसमें चक्रमें छःका भाग देकर जो लब्धि होय उसको युक्त करदेय तब मध्यम अहर्गण होताहै, तिसमें चौसठका भाग देनेसे जो लब्धि होय वह क्षयदिवस होते हैं उनको मध्यम अहर्गणमेंसे घटादेय तब अहर्गण होताहै, चक्रको पांचसे गुणाकरकै जो गुणनफल होय उसमें अहर्गण युक्त करदेय, और फिर सातका भाग देय तब जो शून्यादि लब्धि होय उसको त्यागकर जो शेष बचै वह सोमवारादि वार होता है॥ १ ॥ २ ॥

उदाहरण.

शाके १४४१ आषाढ शुक्र १५ बुधवारके दिन अहर्गण साधतेहैं- शाके १४४१ को १४४२ में घटाया तब शेष रहा १ इसमें ११ का भाग दिया तब लब्धि हुई ० यह चक्र हुआ, शेष बचा १ इसको १२ से गुणाकरा तब १२ हुए गत मास ३ वियुक्त करे तब ९ यह मध्यम मासगण हुआ, इसमें द्विगुणित चक्र ० और २४ युक्त करे तब ३३ हुए इसमें ३३का भाग दिया तब लब्धि हुई१ यह अधिक मास हुआ, इसको मध्यम मासगण ९ में युक्त करा तब १० यह मासगण हुआ, इस मास गण १० को ३० से गुणा करा तब ३०० यह गुणनफल हुआ, इसमें गत तिथि १४ घटाई तब शेष रहे २८६ इसमें चक्रके छठे भाग ० को युक्त करा तब २८६ हुए, इसमें ६४ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४ यह क्षयदिवस हुए, इसको २८६ में घटाया तब शेष रहे २८२ यह अहर्गण हुआ ।

अब चक्र ० को ५ से गुणा करा तब ० हुआ, इसमें अहर्गण२८२को युक्त करा तब २८२ हुए, इसमें ७ का भाग दिया तब लब्धि हुई ४० और शेष रहे२ इसकारण बुधवार हुआ ॥

अब ग्रहसाधनकी रीति लिखते हैं–

चक्रनिघ्नध्रुवोपेताः सक्षेपा द्युगणोद्भवैः। खेटैरूनाः स्युरिष्टाहे द्व्यब्धीन्द्राल्पः शको यदा ॥ ३ ॥

अन्वयः–यदा, इष्टाहे, शकः, द्व्यब्धीन्द्राल्पः, (तदा), चक्रनिघ्नध्रुवोपेताः, सक्षेपाः, द्युगणोद्भवैः, खेटैः, ऊनाः, इष्टखेटाः स्युः ॥ ३ ॥

अर्थः–यदि इष्टदिनके विषै शाका चौदहसे बयालीससे कम होय तौ चक्रको ध्रुवसे गुणा करके जो गुणनफल होय उसमें क्षेपकांक युक्त करदेय तब जो अंकयोग होय उसमेंसे पाहले कहीहुई रीतिके अनुसार अहर्गणसे लाये हुए ग्रहको घटादेय तब जो शेष रहै वह अभीष्ट ग्रह होताहै ॥ ३ ॥

उदाहरण.

रविध्रुव ० राशि १ अंश ४९ कला ११ विकला इसमें चक्र ० से गुणाकरा तब ० राशि ० अंश ० कला ० विकला हुए, इसमें रविक्षेपक ११ राशि १९अंश ४१ कला ० विकलाको युक्त करा तब ११ राशि १९ अंश ४१ कला ० विकला हुए यही ध्रुवयुक्त रविक्षेपक हुआ अहर्गणोत्पन्न रवि ९ राशि ७ अंश ५६ कला २६ विकलाको ध्रुव युक्त क्षेपक ११ राशि १९ अंश ४१ कला ० विकलामें घटाया तब शेष रहे २ राशि ११ अंश ४४ कला ३४ विकला, यह रवि हुआ ॥

अब पूर्वाचार्योंका अहङ्कारित्व और अपने विनीतत्वको कहतेहैं–

पूर्वे प्रौढतराः क्वचित्किमपि यच्चक्रुर्धनुर्ज्यं विना ते तेनैव महातिगर्वकुभृदुच्छृङ्गेऽधिरोहन्ति हि। सिद्धान्तोक्तमिहाखिलं लघुकृतं हित्वा धनुर्ज्यं मया तद्गर्वो मयि मास्तु किं न यदहं तच्छास्त्रतो वृद्धधीः॥ ४॥

अन्वयः-कश्चित्, धनुर्ज्यें, विना, यत्, किम्, अपि; पूर्वे, प्रौढतराः, चक्रुः, ते, तेन, एव, हि, महातिगर्वकुभृदुच्छृङ्गे, अधिरोहन्ति, इह, मया, धनुर्ज्ये, विना, अखिलम्, सिद्धान्तोक्तम्, लघुकृतम्, तद्गर्वः, मयि, मा, अस्तु, यत्, अहम्, किंम्, तच्छास्त्रतः, वृद्धधीः, न, (अस्मि) ॥ ४ ॥

अर्थः-पहिले भास्कराचार्य आदि बडे बडे ग्रन्थकारोंने जो कुछ छायासाधन ज्या और चापको छोडकर कियाहै, उससे वह गर्वरूपी पर्वतके बडे ऊंचे शिखरपर चढगए, और मैंने तो इस ग्रन्थमें सम्पूर्ण गणित ज्या और चापके विनाही किया है, इसकारण मुझे उनसेभी अधिक गर्व होना चाहिये, परन्तु उनकेही शास्त्रसे मुझे यह ज्ञान प्राप्त हुआहै इसकारण मेरेमें किञ्चिन्मात्र गर्व नहीं है ॥ ४ ॥

अब ग्रन्थकार अपना नामादि लिखताहै-

नन्दिग्राम इहापरान्तविपये शिष्यादिगीतस्तुति-
र्योभूत्कौशिकवंशजः सकलसच्छास्त्रार्थवित्केशवः।
सूनुस्तस्य तदङ्घ्रिपद्मभजनाल्लब्ध्वावबोधांशकं
स्पष्टं वृत्तविचित्रमल्पकरणं चैतद्गणेशोऽकरोत्॥५॥

अन्वयः-इह, अपरान्तविषये, नन्दिग्रामे, यः, शिष्यादिगीतस्तुतिः, सकलसच्छास्त्रवित्, कौशिकवंशजः, केशवः, अभूत्, तस्य, सूनुः, गणेशः, तदङ्घ्रिपद्मभजनात्, अवबोधांशकम्, लब्ध्वा, वृत्तविचित्रम, स्पष्टम्, च, एतत्, अल्पकरणम्, अकरोत् ॥ ५ ॥

अर्थः-पश्चिम समुद्रके तटपर नन्दिग्रामके विषैं निवास करनेवाले कौशिकगोत्री, सकल सच्छास्त्रोंके जाननेवाले और शिष्यआदिसे प्रशंसाको प्राप्त होनेवाले, मेरे पिताजी जो केशव दैवज्ञ तिनके चरणकमलोंकी सेवा

करनेसे जो कुछ ज्ञान मुझ गणेशदैवज्ञको प्राप्त हुआ है, तिसके अवलम्बनसे अनेक प्रकार वृत्तोंसे शोभायमान स्पष्टार्थ और बहुत अर्थयुक्त इस करणग्रन्थको मैने रचाहै ॥ ५ ॥

इति श्रीगणेशदैवज्ञकृतौ ग्रहलाघवाख्यकरणग्रन्थे पश्चिमोत्तरदेशीयमुरादाबादना-
स्तव्येन काशीस्थराजकीयप्रधानसंस्कृतविद्यालयप्रधानाध्यापकपण्डित-
स्वामिरामसम्प्रदायाचार्यश्रीराममिश्रशास्त्रिणां सान्निध्याधिगत-
विद्येन भारद्वाजगोत्रोत्पन्नगौडवंशावतंसश्रीयुतभोलानाथात्म-
जतुलसीगर्भजपण्डितरामस्वरूपशर्म्मणा विरचितया-
ऽन्वयसनाथितया भाषाटीकया सहित पूर्णश-
काद्ग्रहानयनप्रकारः समाप्तः ॥
शुभमस्तु ॥

अश्विबाणगविन्द्वब्दे कार्त्तिकस्यापरे दले ।
द्वितीयायां तिथौ मन्दवासरे च निशामुखे ॥ १ ॥
ग्रहलाघवग्रन्थस्य ह्यन्वयेन सनाथिताम् ।
रामस्वरूपशर्म्माहं भाषाटीकामपीपरम् ॥ २ ॥

दोहा–नेत्र बाण गो इन्दु मित, वर्ष कार्तिक मास ।
कृष्णपक्ष तिथि द्वितीया, मन्दवार सुखरास ॥ १ ॥
ता दिन मैं या ग्रन्थके, टीकाको विस्तार ।
अन्वय और भाषा विरचि, पूरण कियो विचार ॥ २ ॥
रामगंगतटपर बसत, नगर मुरादाबाद ।
तहाँ द्विज रामस्वरूपने, कियो सुभग अनुवाद ॥ ३ ॥
ता ग्रहलाघव ग्रन्थको, जो करिहें सुविचार ।
तिनको बहुविधि होयँगे, सुलभ पदारथ चार ॥ ४ ॥
श्रीकृष्णदासात्मज, खेमराज सुखखानि ।
तिन आज्ञासों रची यह, व्याख्या बहु हित जानि ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना–मुंबई.

ज्योतिषग्रंथाः ।

२७९ शीघ्रबोधभाषाटीका	०–६	०–१
२८० संकेतनिधिसटीक पं० रामदत्तजीकृत यह ग्रंथ अत्युत्तम देखने योग्य है	१–०	०–२
२८१ षट्पंचाशिका भाषाटीका	०–४	०–॥
२८२ भुवनदीपक सटीक	०–४	०–॥
२८३ जैमिनिसूत्रसटीक चार अध्यायका	०–७	०–१
२८४ रमलनवरत्न	०–८	०–१
२८५ रमलनवरत्नभाषाटीका	०–१२	०–१
२८६ सर्वार्थचिंतामणि	०–१२	०–२
२८७ लघुजातकसटीक	०–६	०–१
२८८ सामुद्रिकभाषाटीका	०–४	०–॥
२८९ सामुद्रिक शास्त्रबड़ा सान्वय भाषाटीका	१–४	०–२
२९० यवनजातक	०–२	०–॥
२९१ पंचांगतिथिपत्र सम्वत् १९५२ का	०–१॥	०–॥
२९२ पंचांग १०वर्षका (ज्योतिर्विदोंकालोभदायक)	१–८	०–२
२९३ हायन रत्न	१–८	०–४
२९४ अर्घप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इसमें तेजी मंदी वस्तु देखनेका विचार है	०–४	०–॥
२९५ ज्योतिषकी लावणी	०–१	०–॥
२९६ शकुनवसंतराज भाषाटीकासहित	३–०	०–८
२९७ रत्नदीपभाषाटीका	०–५	०–॥
२९८ बृहत मुहूर्त्तसिंधु	२–०	०–४
२९९ मकरंदसारिणी उदाहरण सहित	०–१०	०–१
३०० भावकुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै)	१–०	०–२

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

सेमराज

श्रीवेंकटे

ज्योतिषग्रंथाः ।

२७९ शीघ्रबोधभाषाटीका	०-६	०-१
२८० संकेतनिधिसटीक पं० रामदत्तजीकृत यह ग्रंथ अत्युत्तम देखने योग्य है	१-०	०-२
२८१ षट्पंचाशिका भाषाटीका	०-४	०-॥
२८२ भुवनदीपक सटीक	०-४	०-॥
२८३ जैमिनिसूत्रसटीक चार अध्यायका........	०-७	०-१
२८४ रमलनवरत्न	०-८	०-१
२८५ रमलनवरत्नभाषाटीका	०-१२	०-१
२८६ सर्वार्थचिंतामणि	०-१२	०-२
२८७ लघुजातकसटीक..	०-६	०-१
२८८ सामुद्रिकभाषाटीका	०-४	०-॥
२८९ सामुद्रिक शास्त्रबड़ा सान्वय भाषाटीका....	१-४	०-२
२९० यवनजातक	०-२	०-॥
२९१ पंचांगतिथिपत्र संवत् १९५२ का........	०-२॥	०-॥
२९२ पंचांग १०वर्षका (ज्योतिर्विदोंकालोभदायक)	१-८	०-२
२९३ हायन रत्न	१-८	०-४
२९४ अर्घप्रकाश ज्योतिष भाषाटीका इसमें तेजी मंदी वस्तु देखनेका विचार है	०-४	०-॥
२९५ ज्योतिषकी लावणी	०-१	०-॥
२९६ शकुनवसंतराज भाषाटीकासहित	३-०	०-८
२९७ रत्नद्योतभाषाटीका	०-५	०-॥
२९८ बृहत् मुहूर्त्तसिंधु	२-०	०-४
२९९ मकरंदसारिणी उदाहरण सहित	०-१०	०-१
३०० भावकुतूहलभाषाटीका (फलादेशउत्तमोत्तमहै)	१-०	०-२

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना मुंबई.